विश्वविद्यालय पंचांग दरभंगा के पूर्व-मुद्रक एवं वितरक





जगल्लग्नम्-११।०८

मिथिलादेशीय वैदेही कैलेण्डर 2022

जनवरी

SUN	30	2	9	16	23
MON	31	3	10	17	24
TUE		4	11	18	25
WED		5	12	19	26
THU		6	13	20	27
FRI		7	14	21	28
SAT	1	8	15	22	29

राशि फल

मिथिलादेशीय मकरन्दानुसार

वैदेही पञ्चाङ्गम्

राजा : शुक्रः
वर्षा : १५

मन्त्री : चन्द्रः
धान्य : १३

विदेहभूसमुद्भूतां भूसुतां जगदम्बिकाम् ।
नत्वा वैदेहिपञ्चाङ्गं कुर्वे लोकहिताय वै ॥



विक्रमसंवत्-२०७८-२०७९

शालिवाहन शक-१९४३-४४

ईस्वी सन्-2021-2022

सन् १४२६, लक्ष्मणसंवत् ९१२-१३

आर्द्राप्रवेश-५।२५

वाण-पञ्चक विचार

सूर्य के अंश में क्रम से रोग बाण- ८।१७।२६ उपनयन में। अग्नि बाण- २।११।२०।२९ गृहनिर्माण में। नृप बाण- ४।१३।२२ नौकरी में। चौर बाण-६।१५।२४ यात्रा में। मृत्यु बाण-१।१०।१९।२८ विवाह में निषिद्ध है।

धन्यवादकाः-वि.सवत्२०७८-०७९ तमवर्षं पंचांगनिर्माणे विशेषरूपेण पं.श्रीराधारमण ठाकुर देवघर,पं श्रीभुवनेश्वर मिश्रः सीतामढ़ी, पं.श्रीबाबूलाल मिश्रः सीतामढ़ी, पं.श्रीदेवेन्द्र झा बलिया,सहरसा, पं. श्रीविश्वनाथ झा लहेरियासराय, पं.श्रीसुरेन्द्र पाठकः रघुनन्दनपुर, पं.श्रीकैलाश मिश्रः नेनही-जलेश्वर, इमे सर्वे विद्वासः पंचांगनिर्माणादिकार्ये सहयोगाधिक्यं कृतवन्तः अतस्ते सर्वे विद्यानुरागिणः धन्यवादभाजः सन्ति। समीहेच भारतवाक्यं-

धन्योऽयंभारतोदेशो धन्येयं सुरभारती।
तत्पूजकाः वयं धन्याः केयंधन्यपरम्परा।।

सम्पादकः

मूल्यः रु. 40



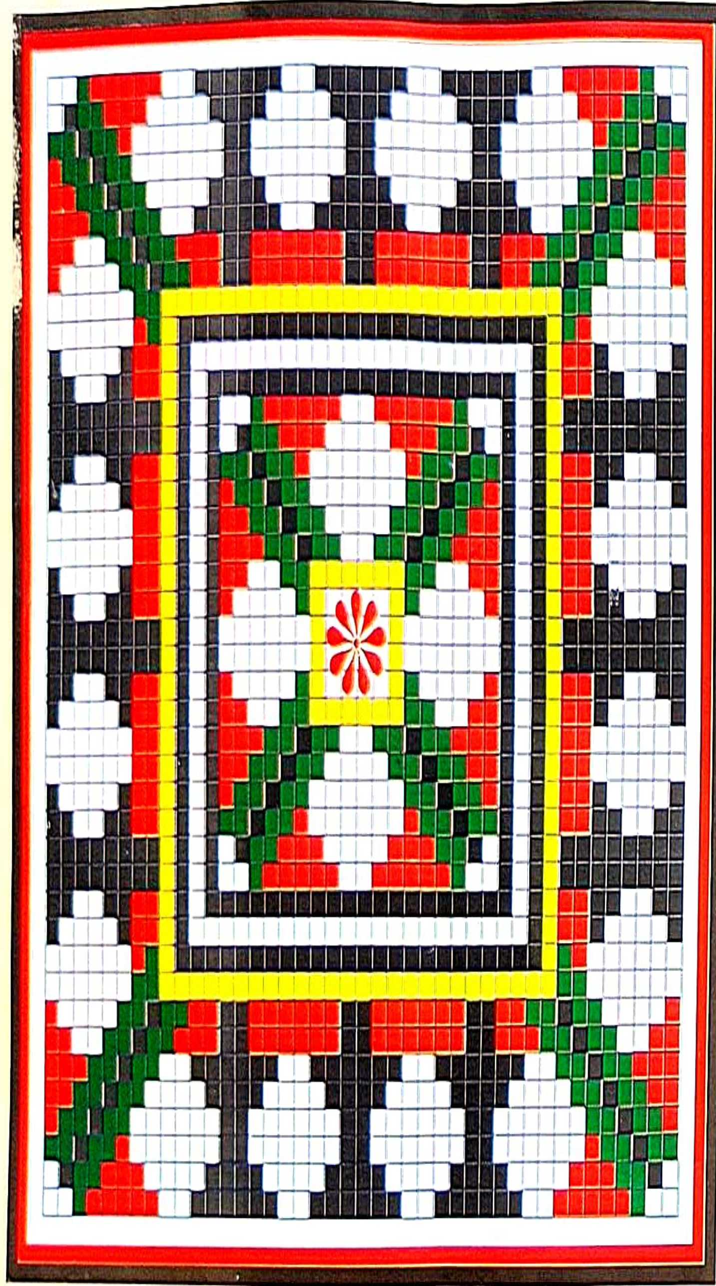
॥ अथ गृहवास्तु चक्रम् ॥

परामर्शकः- पं.श्रीरामचन्द्र झा, सम्पादकः- पं.श्री अजय मिश्र (सिद्धान्त, फलित ज्योतिषाचार्य, बनारस), सहयोगी-पं.श्री तीर्थेश्वर झा(गणित शिक्षक)

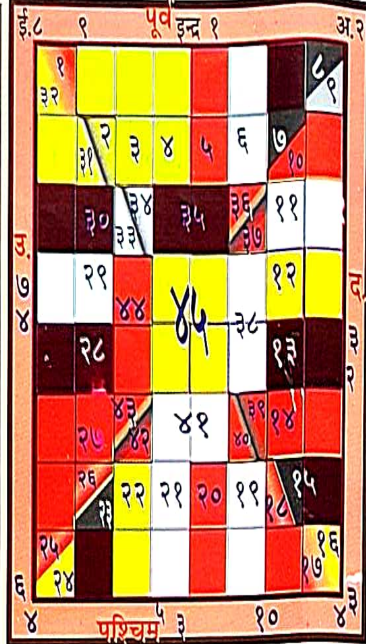
प्रकाशकः- मिथिला पब्लिकेशन, लंगर टोली गली पटना-८०००४, सम्पर्क नं. 8298824189, 7277927536

मुद्रकः- मिथिला प्रेस नालारोड, लंगरटोली शीतला मन्दिर के सामने गली में पटना-०४- हमारे यहाँ सभी प्रकार के प्रिन्टींग सम्बन्धी कार्य होता है। संस्कृत, हिन्दी कम्पोजिंग भी होता है। मिथिला पब्लिकेशन से प्रकाशित सभी पुस्तक यहाँ पर मिलता है। ७२७७९२७५३६

॥ अथ हरिहरात्मक मण्डलचक्रम् ॥

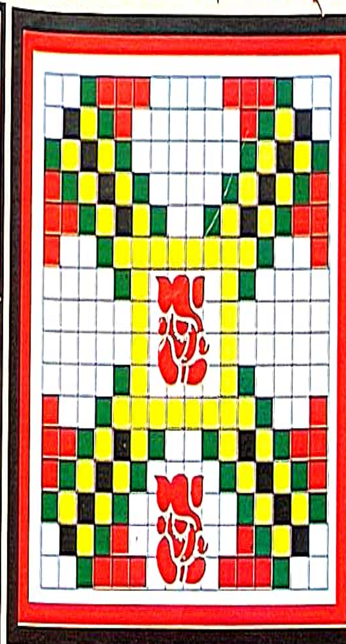


॥ चतुः षष्टिपदं वास्तुमण्डलचक्रम् ॥



॥ एक लिंगतोभद्रचक्रम् ॥

॥ अथ गणपति भद्र मण्डलम् ॥



॥ अथ सूर्यभद्र मण्डलम् ॥

॥ चतुः षष्ठियोगिनीचक्रम् ॥



॥ क्षेत्रपालचक्रम् ॥

षोडशमातृकाचक्रम्



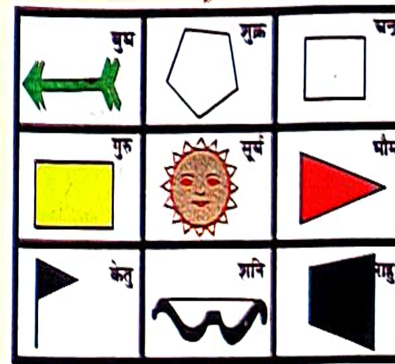
अथ वसोर्धारा चक्रम्

पूर्व

॥श्री॥

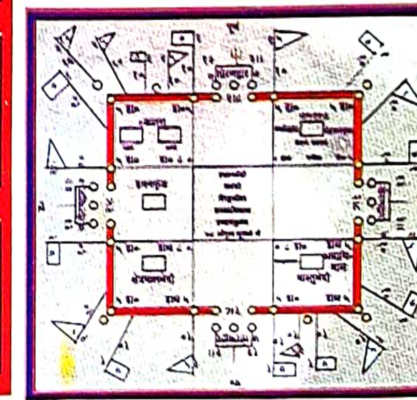
नवग्रह चक्रम्

पूर्व



पश्चिम

तोरणद्वारचक्रम्



वैदेहीपंचांग सदस्य एवं समर्थक

सम्पूर्ण विवरण नहीं होने के कारण कुछ समर्थकों का संकेत नहीं दिया गया है, संपर्क करें-संपादक

पूज्यगुरुदेव स्वर्गीय शक्तिनाथ झा दुल्हा,मधुबनी
श्रीमति उषा मिश्र साहित्याचार्य,
पं.श्री भुवनेश्वर मिश्र हरपुरकला,सीतामढ़ी
पं.श्री बाबू लाल मिश्र हरपुरकला,सीतामढ़ी
पं.श्री गंगाधर झा, भलोहिया,रौतहट,नेपाल
पं.श्री वशिष्ठ मिश्र मत्सरी,रौतहट,नेपाल
पं.श्री कैलाश मिश्र नैनही,महोत्तरी,नेपाल
डॉ.गोविन्द चौधरी जनकपुर,
पं.श्रीचन्द्रभूषण ठाकुर ज्योतिष-साहित्याचार्य
ग्रा.+पो.बड़ी एघु, पं.टोला, बेगूसराय
पं.श्री.संजीव कुमार झा ज्योतिषाचार्य,
ग्रा.कल्याणपुर,पो.सरायरंजन, समस्तीपुर
पं.श्री शिव कुमार मिश्र बजलपुरा,तेघड़ा,बेगूसराय
पं.श्री उमाकान्त ठाकुर, रामदीरी (नकटी), थाना-मटिहानी, बेगूसराय
पं.श्री विजय झा (बिट्टू) पिढ़ौली,तेघरा,जि.बेगूसराय
पं.श्री उमाकातन्त झा व्याकरण-साहित्याचार्य
ग्रा.तीयाय,पो.दादपुर,थाना-भगवानपुर,जि.बेगूसराय
पं.श्री योगेश झा(मन्टुन) ज्योतिषविशेषज्ञ,
रत्नसलाहकार, ग्रा.+पो. गोधना, भाया- बछवाड़ा
पं.श्री राजमोहन झा, वनगॉव,वाजपटी, सीतागढ़ी
आचार्य कैलाश पति झा ज्योतिषाचार्य,
(वास्तुविशेषज्ञ) मोहनपुर, बेगूसराय
पं.श्री शचीन्द्र नाथ मिश्र (रिक्तहस्त)
ग्रा.पो.गोसपुर,जिला-सुपौल
डॉ. कृष्णानन्द झा, सेवानिवृत-शिक्षक,
मिर्चाई वाड़ी, जिला-कटिहार
डॉ. सुशील कुमार झा शिवसिंहपुर, दरभंगा
पं.श्री उदयकान्त मिश्र ग्राम-करिहारा,समस्तीपुर
पं. श्रीवद्रीनारायण चौधरी,परिहारा,
पं. श्रीहितचन्द्र झा,वपौंत, जि.दरभंगा
पं.श्री मोहनानन्द झा, ग्राम-खाड़ा, सहरसा
पं.श्री दयाकान्त झा,ग्राम+पोस्ट-माहे लिम्पिया,समस्तीपुर

पं.श्रीबंशीधरझा ज्योतिषाचार्य,
हाईस्कूल तेलता
आचार्य नीरज कुमार मिश्र,रीगा
पं.श्रीनीरज कुमार,दरभंगा
पं.श्रीदुर्गानन्द झा वेदाचार्य
डॉ.रिपुसूदन झामहेशवाडा,मुजफ्फरपुर
डॉ.विनय कुमार झासिरहुल्ली,दरभंगा
पं.श्रीगोविन्द झा, नरगा,सीतामढ़ी
पं.श्री मदन कुमार चकफतेया सं.वि.
पं.श्री ललित मिश्र मत्सरी,नेपाल
पं.श्री गणेश मिश्र नैनही नेपाल
पं.श्री दीपेन्द्र झा वलरा सर्लाही
पं.श्री ललित झा सीतामढ़ी
पं.श्री मनबोध झा जनकपुर
पं.श्री नवीन झा जनकपुर
डॉ कौशल किशोर झा वैरगनियाँ
पं.श्री बलिराम झा
पं.श्री सुरेन्द्र झा
पं.श्रीकृष्णानन्द झा
पं.श्री चन्द्रकान्त झा
डॉ.मुरलीधर झा
पं.श्री दिनेश ओझा
पं.श्री कौशलकिशोर
पं.श्री सुरेन्द्र झा
पं.श्री कृपानन्द झा
पं.श्री सुमन ठाकुर
पं.श्री देवेन्द्र झा
पं.श्री विनय झा
पं.श्री दुर्गानन्द झा
पं.श्री.वैद्यनाथ मिश्र
पं.श्रीवामदेव झा
पं.श्री अनिरुद्ध मिश्र
पं.श्री विद्यानाथ मिश्र
पं.श्री सुधीर झा
पं.श्री अशोक पाठक
पं.श्री धीरज कुमार मिश्र(गुंजन)
पं.श्री रूपेश कुमार झा

वर्षादिविश्वा २०७८-०७९

वर्षा-१५ धान्यम्-१३, शीतम्-१३, तृण-७,उष्ण-२१, वायु-१३, वृद्धि:१५, विनाश:१५, विग्रह:११, क्षुधा१५, तृष्णा-५, निद्रा-५, आलस्य१३, उद्यम:११, शान्ति:१३, क्रोध:-११, दम्भ:३, भेद:१, मैत्री१३, रसनिप्पत्ति:७, फलनिप्पत्ति:११, उत्साह:६, शलभा:७, शूल:७, मूषक:१६, अतिवृष्टि:५, अनावृष्टि:७, स्वचक्रम्६, परचक्रम१५, परचक्रनाश:७, रत्नानि११, वस्त्राणि६, घृतम्६, तैलम्५, दुकूलम्५,आचार:१३, अनाचार:५, मरणम्११, जन्म१७, देशोपद्रव७,चौरभीति:१५, चौरनाश:१६, अग्निभीति:१३, अग्निनाश:१५

आय-व्यय २०७८-०७९

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५
व्यय	१४	१४	११	११	५	११	१४	१४	१४	८	८	१४
फल	विजय	हानि	हानि	सौख्य	विजय	हानि	हानि	विजय	सौख्य	विजय	विजय	सौख्य

सन- १४२६ वर्ष का समय शुद्धा शुद्धि

वर्षारम्भ से श्रावण शुक्ल दशमी तिथि तक	शुद्धः
श्रावण शुक्ल दशमी मंगलवार से भाद्रशुक्ल पक्ष द्वादशी शनिवार तक	अशुद्ध
भाद्रशुक्ल चतुर्दशी रविवार से अग्रहायण शुक्लपक्ष द्वादशी बुधवार तक	शुद्ध
अग्रहायण शुक्ल त्रयोदशी गुरुवार से पौष शुक्ल द्वादशी शुक्रवार तक	अशुद्ध
पौष शुक्लपक्ष त्रयोदशीतिथि शनिवार से माघशुक्ल पूर्णिमा तक	शुद्ध
फाल्गुन कृष्णप्रतिपदा के क्षीणगुरु५८।५८	अशुद्ध
चैत्रकृष्णपक्ष सप्तमी तिथि गुरुवार के पुष्ट गुरु२१।२५	शुद्धारम्भ
चैत्र शुक्लपक्ष त्रयोदशी गुरु वार से वर्षान्त पर्यन्त	शुद्ध

• अपन पवित्र वस्तु:-आसनं वसनं शय्या जाया ऽपत्यं कमण्डलुः। आत्मनः शुचिरेतानि न परेषां कदाचन।।
अर्थः- आसन, शैय्या, वस्त्र, पत्नी, अपत्य(सन्तान) आ जलपात्र ई सभ केवल अपने टा पवित्र होयत अछि। अनकर ई सभ अपवित्र मानल जायत अछि।
• एक पंक्ति मे भोजन करैत काल बीच में नै उठी आ ने भोजन प्रारम्भ भय गेलाक बाद पंक्ति के बीच में भोजन हेतु बैसि- पङ्क्तिमध्ये न भोक्तव्यं पङ्क्तिं नैव विलङ्घयेत्। पाञ्चाङ्गुलीभिर्भोक्तव्यं नाङ्गुलीपृष्ठमालिहेत्।।
• वाम हाथ सँ जल पिबैत काल जलपात्र के नीचा दहिन हाथक मणिवन्धक संयोग आवश्यक-
वामहस्ते जलं धृत्वा मणिवन्धे निधाय च। भुञ्जानः पिबन् वारि नोच्छिष्टं मनुरब्रवीत्।।
• ककरा सङे की नै खाई-ताम्रपात्रे पयः पानमुच्छिष्टे धृतभोजनम्। क्षीरे च लवणं दद्यात् सद्यो गोमांसभक्षणम्।।
अर्थः- तामक वर्तन में दूध, ऐंठ में घी आ दूध मे नोन नै खयबाक चाही। तामक वर्तन में साक्षात् पानि नै पिबि, नै ओहि मे भोजन करी।

श्री मङ्गलमूर्त्तये नमः,श्रीसरस्वत्यै नमः

कलिसंवत् ५१२२-२३, शकाब्दः१९४३-४४,
विक्रमसंवत् २०७८-७९, सन् १४२९ साल,
लक्ष्मणसंवत् ९१२-९१३, खृष्टाब्दः२०२१-२२ ई.

राजा-शुक्र फल-

गृहणातीह धराधिपो नयवशाच्छास्त्रान्वित धर्मविन्
मेघः कालमवाप्य मुञ्चति पयः स्फीताभवेन्मेदिनी।
चौरोपद्रवसंयुता भृगुसुते पृथ्वी च वर्षाधिपे
राष्ट्रे सोत्सुकताप्रजा च नियतं यज्ञ प्रतिष्ठारताः।।

संवाहक(मन्त्री) चन्द्र फल-

कर्मारम्भपरिश्रमे फलवतां पृथ्वीप्रसन्नाशुभा
वृक्षाः स्फीततराः धनार्जनपराविप्राः प्रलब्धार्थकाः।
वृष्टिः शस्यविवृद्धिकारक जलामेघाः सदा वर्षिणो
राजानो विजितारि शंकरभुवः सम्वाहके शीतगौ।।

पालक-रक्षामन्त्री-गुरुः फल-

विप्राः सत्कर्मसंस्थाः प्रतिदिन मुदिता यज्ञकर्मप्रयुक्ताः
स्वस्थाः भूपालवर्गाः प्रमुदितहृदया राज्यभारं वहन्ति।
दुष्टाः नाशं व्रजन्ति प्रतिदिनजलदास्तोयदा रोगनाशः
शस्यैः सम्पूर्णगात्रा भवति च धरणीपालके देवपूज्ये।।

मेघेश-मेघमन्त्री-गुरुः फल-

बलाधिकं प्रयच्छन्ति जलं जलधराः गुरौ।

तोयेश-सिचाईमन्त्री-शुक्र-फल-

बहुतोययुता पृथ्वी भार्गवे तोयनायके।

शस्येश-खाद्यमन्त्री-बुधः फल-

बहुवृष्टिर्महीपृष्ठे शस्यवृद्धिप्रकारिका।
सर्वोपद्रवशून्या च प्रजा सोमसुते भवेत्।।

लोकेश-गृहमन्त्री-शुक्र-फल-

शुक्रे लोकाधिपे लोका बहुधान्य समन्विताः।
धर्मकनिरता नित्यं सदानन्दाः स्ववृद्धयः।।

पुष्कर नाम-मेघ-फल-

पुष्करे चित्रितं विश्वं चित्रिता जलदाः सदा।
चित्रिता तु भवेद्वृष्टिः शस्यवृद्धिस्तु चित्रिता।।

नवरात्रफलम्:-शुभम्
आर्द्राप्रवेशफलम्:-वार्युवृष्टिप्रद
दीपावलीफलम्:-शुभम्।
मेषसंक्रान्तिफलम्:-शुभम्
होलिकाफलम्:-शुभम
शकाब्दफलम्- मध्यम
विक्रमसंवत्फलम्- सामान्यम्

पञ्चाङ्ग देखने की विधि

वैदेही पंचांग का देशान्तर १।३५, अक्षांश २६।३५ पलभा ६ है।

इस पञ्चाङ्ग में सर्वप्रथम दण्डात्मक दिनमान उसके बाद तिथि, सूर्यादि दिन का नाम एवं तिथि का दण्डात्मक मान तिथि का घण्टा, मिनट उसके बाद नक्षत्र का नाम एवं दण्ड पल एवं घण्टा मिनटात्मक मान उसके बाद योग का नाम, दण्डात्मक एवं मिनटात्मक मान उसके बाद पूर्वार्ध करण का नाम एवं दण्डात्मक मान उसके बाद मेषादि राशि में चन्द्रमा के भुक्तकाल का दण्डात्मक एवं घण्टात्मक मान उसके बाद क्रमशः घण्टा मिनटात्मक सूर्योदय एवं सूर्यास्त तथा मिश्रमान कालिक स्पष्टराश्यादि सूर्य का भोगकाल एवं राष्ट्रिय,नेपाली एवं अंग्रेजी दिनांक तत्पश्चाद् मुहूर्त्त पर्वादि दिये गये हैं। यथा- श्रावण कृष्ण१ रवि वार को प्रतिपदातिथि का दण्डात्मक मान २।२६, दिन६।१६ तक, नक्षत्र श्रवण का दण्डपल १६।०५ दि. १२।५६ तक, योग प्रीति दण्डात्मक मान ००।११, करण कौलव दण्डात्मक मान २।२६, चन्द्र का भुक्त-मकर राशि में रा.१२।३२ तक। सूर्योदय ५ बजकर १८ मिनट पर तथा सूर्यास्त ६ बजकर ४२ मिनट पर, सूर्य कर्क राशि के ८ अंश २१।०३ कला-विकला पर भोग कर रहा है, ऐसा समझना चहिए। राष्ट्रिय ३, नेपाली श्रावण मास के ६ गते तथा अंग्रेजी दिनांक २५ जुलाई समझना चाहिए। उसी पंक्ति में धर्मशास्त्रादि दिया गया है। इस पञ्चाङ्ग के निचले भाग में मिश्रमानकालिक राश्यादि दैनिक स्पष्ट ग्रह एवं दण्डपलात्मक मिश्रमान दिया गया है। तदनन्तर दैनिक लग्न सारणी दी गई है। पण्डितो का सुलभता के लिए अर्धप्रहरा का घण्टात्मक मान दिया गया है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन सूर्योदयकालिक लग्न का समाप्तिकाल मानक समय के अनुसार दिया गया है। साथ ही उपयोगी विविध विषय भी दिये गये हैं।

वर्षफल २०७८-०७९

इस वर्ष राजा शुक्र, मन्त्री चन्द्र , पालक गुरु, मेघपति गुरु तोयपति शुक्र, सस्यपति-बुध, लोकपति शुक्र, रोहिणी सन्धिगत, पुष्कर, मेघ वर्षा१५, धान्य१३, वर्षारम्भ में "राक्षस"नाम संवत्सर, मध्यमें "अनल" नामक संवत्सर । पूजन आदि धार्मिक कार्यो में वर्ष पर्यन्त राक्षस नामक संवत्सर का ही विनियोग-प्रयोग किया जायेगा। वर्षारम्भ मे राक्षस संवत्सर का फल कोद्रवाः शालिमुद्गाश्च पीड्यन्ते च वराननें। शुकयान्यानि ज्ञायन्ते राक्षसे मुखराः प्रजाः।। अर्थात् वर्षारम्भ में शासक वर्ग में क्रूरता के कारण सुचारु रूप के काम काज में कठिनायां होगी। दैविक तथा मानविय प्रकोप से जन्ता अस्त व्यस्त रहेंगे, सितम्बर से करूणा महामारी में शनै शनै स्थिलता देखने को मिलेगा जिस से व्यापार आदि कार्य मे तेजी होगी, आन्तरिक व्यवस्था एवं सीमा सुरक्षा में भारत की स्थिति सुदृढ़ रहेगी। यातायात के क्षेत्र में भारत की प्रसंशनीय प्रगति होगी। आयात-निर्यात में वढ़ोत्तरी होगी। विश्व के लोगों में भारत के प्रति आकर्पण वढ़ेगा। विश्व में भारत का प्रमाव वढ़ेगा तथा विश्व के अधिकतम राष्ट्र भारत में मैत्री के लिए इच्छुक रहेंगे। राष्ट्र की सैन्य शक्ति समृद्ध होगी। इस वर्ष उत्तम होगी। पूर्वोत्तर राज्यों में वर्षा के कारण जन-धन की हानि होगी। खाद्यान्न के मूल्यों में समरसता वनी रहेगी। फलों तथा दुग्ध पदार्थो का उत्पादन उत्तम रहेगा। पूर्वोत्तर सीमाओं पर युद्ध की आशंका रहेगी। देश के पश्चिमोत्तर भाग में हिसंक घटनायें तथा साम्प्रदायिक तनाव होगें।

मासफल

श्रावण-इस महिने में अन्न रसादिक पदार्थ मंहगें होगें। खाद्यान्न के भाव में कुछ कमी रहेगी। मीठे पदार्थ तेलहन ज्वार वाजरा अरण्ड दाल मिर्च कपास सरसों चावल गुड़ खाड़ आदि के भाव तेज रहेगें। तेलहन आदि कारोवार में मंदी का रूख रहेगा। वस्त्र उद्योग में तेजी का रूख रहेगा। सराफा वाजार में तेजी रहेगी । देश के पूर्व-पश्चिम भाग में वायु जन्य रोग का प्रकोप अधिक देखने को मिलेगा। शासक वर्ग में खींचा-ताना के कारण प्रजा अशान्त रहेगा।

भाद्र- चन्द्रदर्शन के अनुसार इस मास में खाद्य पदार्थो में तेजी रहेगी तथा कटु वस्तु, अफीम में तेजी रहेगी, वस्त्र,रुई, सूत तथा चाँदी में उतार-चढाव देखने को मिलेगा। वर्षा का योग बनता है। नमक, गुड़ तथा लाल वस्तु महँग होंगे। नेत्र रोगों से जनजीवन अशान्त रहेगा। आपसीरागद्वेष वढ़ेगा। प्रजा में रोग, अशान्ति, भय तथा उग्रवादियों द्वारा कहीं-कहीं पर उपद्रव की सम्भावना रहेगी। व्यापार में मन्दी का रुख रहेगा। देश के दक्षिण भाग में प्रवल वृष्टियोग है।

आश्विन:- इस महिने में प्रायः खाद्य पदार्थों में तेजी रहेगी। सरसों, मूँगफली, अफीम, गुड़, शक्कर आदि वस्तु में तेजी रहेगी। रुई तथा सूती वस्त्र सस्ते होंगे। दैविक विपदाओं खासकर वाहनादि से घटनाओं अधिक होगी । पश्चिमी क्षेत्र में जलाधिकता पूर्वी में कमी। आपसी जनजीवन पारस्परिक आघात-प्रघात से चिन्तनिय रहेगा।

कार्तिक- खाद्य पदार्थों के मूल्य में सस्ती देखने को मिलेगा, लोगों की मानसिक उग्रता में वृद्धि होगी। आकस्मिक धूप तथा वर्षा आदि से बीमारियों में वृद्धि होगी। मासान्त में अन्न का भाव सम रहेगा। साग- तरकारी के मूल्यों में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। तेलहन का संग्रह करना लाभदायक सिद्ध होगा। गोरस तथा तरकारी के मूल्य में तेजी बनी रहेगी।

अग्रहायण इस मास में खाद्य पदार्थ सस्ते होंगे। सोने चाँदी के भाव में तेजी आयेगी। कृषि विनाशक तत्वोंका उदय होगा । इस माह में भौमान्तरिक्ष उत्पात् अधिक होगा । कहीं-कहीं साम्प्रदायिक उपद्रव भी होंगे। वृष्टि से अन्न हानि संभव है। आपसी विवाद की वृद्धि होगी स्टील के भाव तेज रहेंगें। खनिज उत्पादन,ईधन आदि के भाव तेज होंगें।

पौष-इस मास मे अन्न का भाव सम रहेगा। स्वर्णादि आभूषणों के भाव में पूर्ववत् स्थिति देखने को मिलेगा। दलहन तेलहन के मूल्य में सामान्य सस्ती का रुख रहेगा । कहीं-कहीं सामान्य वर्षा भी होगी। दुर्घटना तथा अपहरण की घटनायें घटित होंगी।

माघ:- इस महिने में खाद्य पदार्थ तथा सामान्य उपभोक्ता वस्तुओं के भाव प्रायःसमभाव रहेंगें। गेंहू जौ चना तिल तेल अलसी मोटे अनाज दलहन के भाव में कुछ वृद्धि होगी। बाजार में कारोबार मंदा रहेगा। मासान्त में सुधार आयेगा। सराफा बाजार में सोना के भाव प्रायः तेज रहेंगें। चांदी के बाजार में उतार चढ़ाव बना रहेगा। तथा मासान्त में भाव तेज होगा। किसी विशिष्ट जन की क्षति की संभावना रहेगी।

फाल्गुन:-इस महिने में गोरस का उत्पादन बढ़ेगा। सराफा बाजार में सुवर्ण के भाव यथावत महगें रहेंगें लेकिन चाँदी के भाव में अस्थिरता रहेगी। मासान्त में मंदी का ही रूख रहेगा। यातायात व संचार प्रणाली में व्यवधान आने की संभावना है। शेयर बाजार में अस्थिरता रहेगी,। कला क्षेत्र से संबंधित लोगो को कष्ट होगा। कागज तथा अन्य लेखन सामाग्री महंगें होगें। कर वसूली में कड़ाई तथा कोई नये कर का प्रावधान संभव है।

चैत्र-इस महिने में सर्दी का प्रकोप रहेगा। रोगादि से जनता को कष्ट अधार्मिक गागलों तथा उद्योग से संबधित कार्य मे तेजी रहेगी। श्रमिक संगठन किसी बात को लेकर सक्रिय होगें। विदेशी व्यापार संबंधित समझौते होंगें। गोरस का उत्पादन बढ़ेगा। कही पर वायु वेग के साथ थोड़ी वर्षा का योग है। श्वेत पदार्थ सस्ते होंगे। किसी राज्य में सत्ता पक्ष को आपसी विरोध का सामना करना पड़ सकता है।

वैशाख-इस मास में सब्जियों तथा चीनी, चावल, गुड़ और तेलहन पदार्थो के भाव में भी सस्ती रहेंगी वृष्टि के कारण कृषि क्षेत्र में लाभ होगा। पीले और लाल पदार्थ महगे होगें। मासान्त मे उपल वृष्टिका योग सुस्पष्ट है। रस पदार्थ महँगी होंगे। तेज वायु के कारण जान-माल का क्षति हो सकता है।

ज्येष्ठ- सराफा बाजार में सामान्य सस्ता का रुख रहेगा। धूप तथा वर्षा आदि से बीमारियों में वृद्धि होगी। तूफान,अग्निकाण्ड तथा उग्रवाद के कारण लोगों को हानि होगा। विदेश व्यापार संबंधित समझौते होंगें। हिंसा आदि की घटना बढ़ेगी। पश्चिमोत्तर सीमान्त राज्यों में आतंकवादी समस्या के कारण आम जीवन अस्त-व्यस्त दीख पड़ेगी।

आषाढ़-इस मास में सब्जियों तथा चीनी, चावल, गुड़ और तेलहन पदार्थो के भाव महँगी रहेगी । खण्ड वृष्टि का योग। आँधी तूफान से वृक्ष,मकान की क्षति होगी। अनेक जगहों पर गृहकलह की स्थिति उत्पन्न होगी। देश के पश्चिमोत्तर क्षेत्रों में प्राकृतिक एवं आतंकवादी दुर्घटनाए घटित होने का प्रवल सम्भवना हैं। किसी राज्य में सत्ता पक्ष को आपसी विरोध का सामना करना पड़ सकता है।

राशिफल-

मेष (चू. चे. चो. ला. ली. लू. ले. लो.अ.)- आप के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। शिक्षा क्षेत्र में विकाश होगा। नौकरी तथा व्यापार में उतार चढ़ाव रहेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधा युक्त रहेगा। घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा। वायु विकार से परेशानी सम्भव है। वर्ष के ३ ६ ८ मास नेष्ट है। विष्णुभगवान के पूजन करने से लाभ होगा।

वृष (ई. उ. ए. ओ. वा. वी. वू. वे. वो.) -आप के लिए यह वर्ष मिश्रित फलदायी रहेगा। वाहन दुर्घटना या चोट-चपेट की सम्भावना बनी रहेगी। शिक्षा क्षेत्र म अधिक परिश्रम से सफलता प्राप्त होगा, नौकरी तथा व्यापार म सामान्य वृद्धि होगा, मित्र से धोखा मिल सकता है, निन्दनीय कार्य से वचना चाहिये। हनुमान जी की उपासना, सुन्दरकान्ड का पाठ अथवा पीपल वृक्ष में दीपदान,लोहा की अगुठी अवश्य धारण करना चाहिये। वर्ष के १, ५, ६, मास अरिष्ट रहेंगें।

• **मिथुन (का.की.कु.घ.ङ.छ.के.को.हा.)**-आप के लिए यह वर्ष शुभाशुभफलदायी रहेगा। शिक्षा, व्यापार तथा नौकरी में वृद्धि होगा, स्वास्थ्य सामान्य अनुकूल रहेगा, धार्मिक कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा तथा मानसम्मान में वृद्धि होगी। सन्तान तथा मित्रों का अभ्युदय होगा। गणेश जी की उपासना से कष्टों से राहत मिलेगी। वर्ष के ४,५,८ मास अशुभ रहेंगे।

• **कर्क (ही. हू. हे. हो. डा. डी. डू. डे. डो.)** - आप के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वाद-विवाद कलह आदि का योग बनेगा। पत्नी की स्वास्थ्य प्रतिकुल रहेगा। व्यापार में सामान्य लाभ होगा। शिक्षा क्षेत्र में अधिक परिश्रम से लाभ होगा, घर मे मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा। किसी विशेष कार्य वास्ते दूर यात्रा सम्भव है जो लाभ दायक होगा। वर्ष के २ ७ १० मास नेष्ट है। गणेश जी का उपासना करने से लाभ होगा।

• **सिंह (मा. मी. मू. मे. मो टा. टी. टू. टे.)**- आप के लिए यह वर्ष सामान्य शुभदायक रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। वैद्धिक कार्यों में सफलता मिलेगी। मानसिक चिन्ता रहेगी। विरोधी पराजित होंगें। यात्रायें करनी पड़ेगी। स्थानपरिवर्तन की सम्भावना बनेगी। वर्ष के १ ६ ११ मास नेष्ट है।

• **कन्या (टो.पा.पी.पू.ष.ण.ठ.पे.पो.)**- शनि के कारण मानसिक चिन्ता तथा कलह से मन अशान्त रहेगा। मित्रों से अकारण विरोध बढ़ेगा। कार्य में बाधायें आती रहेंगी। हनुमान जी का दर्शन, पीपल वृक्ष में जलदान तथा दीपक दान करना चाहिए। वर्ष १ ७ १२ मास नेष्ट है।

• **तुला (रा.री.रु.रे.रो.ता. ती.तू.ते)**- तुला राशि वालो के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। योजनायें सफल होंगी। मित्रों से सहयोग मिलेगा। विरोधियों का शमन होगा। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। भाईयों से सौहार्द्र बढेगा। वर्ष के ५ ६ १२ मास नेष्ट है।

• **वृश्चिक(तो.ना.नी.नू.ने.नो.या.यी.यू.)**- शिक्षा क्षेत्र से सामान्य लाभ मिलेगा। व्यापार में उतार-चढ़ाव के कारण मानसिक परेशानी सम्भव है। सन्तान से लाभ मिलेगा, नेत्र तथा उदर विकार सम्भव है। घर में मांगलिक कार्य का योग बनता है। हनुमान जी की आराधना से परेशानी शान्त होगा। वर्ष ३ ६ ८ मास नेष्ट है।

• **धनु (ये.यो.भा.भी.भु.ध.फ.ढ़.भे)**-यह वर्ष आप के लिए बहुत अच्छा नहीं है। कार्य में बाधा, स्वास्थ्य प्रतिकूल, मित्र से धोखा सम्भव है अतः सावधानी बरते। व्यापार से लाभ होगा, प्रतियोगितात्मक परीक्षा में सफलता प्राप्त होगा। भूमि,भवन से सम्बन्धी कार्य में अधिक परिश्रम से सफलता प्राप्त होगा। भगवती दुर्गा देवी की उपासना से लाभ होगा। वर्ष के ३ ६ ८ मास नेष्ट है।

• **मकर(भो.जा.जी.जू.जे.जो.खा.खू.खे.खो.गा.गी)**- आप के लिए वर्ष अत्यन्त कष्टदायी व्यतीत होगा। शनि की साढ़ेसाती के कारण शिरः शूल शत्रु, प्रकोप,शारीरिक एवं मानसिक विकार तथा पारिवारिक समस्याओं की वृद्धि होगी। अपने किसी सहयोगी से वियोग भी सम्भव होसकता है। इष्ट मित्र भी साथ छोड़ते नजर आयेंगे। जीवन अत्यन्त संघर्षमय बना रहेगा। हनुमान जी की उपासना, शनिवार का व्रत अथवा पीपल वृक्ष में दीपदान से कष्टों से छुटकारा मिलेगा। ५, ७, १२ मास नेष्ट है।

• **कुम्भ-(गू गे गो सा सी सू से सो दा)**-आप के लिए यह वर्ष उत्तम फल दायक है। शत्रु परास्त होंगे, पूर्व से चले आ रहे रोगों से मुक्ति मिलेगी। शिक्षा में उन्नति होगी। सन्तानों के लिये किया गया कार्य अनुकूल होगा। जमीन,वाहन, सम्पत्ति जायदाद क्रय करने का अवसर प्राप्त होगा। व्यर्थ के कार्यो में उलझनो से बचना चाहिये धन का अपव्यय भी सम्भव है। वेरोजगार जातकों को रोजगार अवश्य प्राप्त होंगे, भाग्योदय होने की सम्भावना है। किसी अप्रत्याशित कार्य के सम्पादन हो जाने से उत्साह में वृद्धि होगी। शनिवार को व्रत अथवा शंकर जी की उपासना से समस्त अरिष्टों का शमन होगा। वर्ष के ३,८,१० मास नेष्ट है।

•**मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची)**- आप के यह वर्ष सामान्य लाभदायक रहेगा। पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। घर में मांगलिक कार्य होंगे, सन्तानों की उन्नति होगी। नये भूमि या भवन खरीदने का अवसर मिलेगा। मान सम्मान बढ़ेगा। शिक्षा तथा व्यापार में सफलता मिलेगा। नेत्र तथा कटि विकार से परेशान हो सकते है। सम्पूर्ण वर्ष में अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक प्राप्त होंगे। वृहस्पतिवार का व्रत, भगवान विष्णु की उपासना,पीला पुखराज, गुरु का यंत्र धारण करने से समस्त अरिष्टों का शमन होगा। वर्ष के ६,६,११ मास नेष्ट रहेंगें।

संतान गोपाल मंत्र प्रयोग :-

ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

विनियोग:-ॐ अस्य श्री सन्तानगोपालमन्त्रस्य नारायणऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, पुत्रप्रदः श्रीगोपालो देवता, क्लीं बीजं, श्रीं ह्रीं शक्तिः, जीं कीलकम्, श्रीसन्तानगोपाल प्रसाद सिद्धिपूर्वकं मम(यजमानस्य वा) चिरायु:-पुत्र -प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास:-ॐ नारायणऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। ॐ पुत्रप्रदश्रीगोपालदेवतायै नमः हृदि। ॐ क्लीं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ श्रीं ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ जीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास:-ॐ देवकीसुत गोविन्द अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वासुदेव जगत्पते तर्जनीभ्यां नमः। ॐ देहि मे तनयं कृष्ण मध्यमाभ्यां नमः। ॐ त्वामहं शरणं गतः अनामिकाभ्यां नमः। ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते कनिष्ठिकाभ्यां नमः। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः,करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अंगन्यास:- ॐ देवकीसुतगोविन्द हृदयाय नमः। ॐ वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा। ॐ देहिमे तनयं कृष्ण शिखायै वषट्। ॐ त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम्। ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः,अस्त्राय फट्।

ध्यान- ॐ वैकुण्ठतेजसा दीप्तामर्जुनेन समन्वितम्।
समर्पयन्तं विप्राय अष्टानानीय वालकान्।।
विजयेन युतो रयस्थितः प्रसमानीय समुद्र-मध्यतः।
प्राददत्तनयान् द्विजन्मने स्मरणीयो वसुदेवनन्दनः।।
(इति ध्यात्वा मानसोपचारै सम्पूज्य जपं कुर्यात्। लक्षचतुष्टयजपे पुत्रप्राप्तिः।। कर्मठगुरौ पृष्ठ सं.७३-७४)

बीजसहितसंतान गोपाल मंत्र प्रयोग

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं जीं ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ जीं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ।

|| अथ कर्मकाण्ड विमर्श ||

पंचोपचारपूजा-

गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च।
पंचोपचाराः कथिता देवानां प्रीतिहेतवः।।

षोडशोपचारपूजा-

आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा।
मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च।।
गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा।

पंचगव्यम्-

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्।
पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्।।

पंचामृतम

शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम्।
पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते।।

पञ्चरत्नानि-

वज्रमौक्तिकवैदूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम्।
पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निःक्षिपेत्।।

पञ्चपल्लवाः-

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः।
पञ्चपल्लव इत्युक्तः सर्वकर्मसु शोभनः।।

सप्तमृत्तिका-

गजाश्वरथ्यवल्मीकसंगमाद्ध्रदगोकुलात्।
राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत्।।

सर्वौषधिः-

मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्।
शुण्ठी चम्पकमुस्तं च सर्वौषधिगणः स्मृतः।।
सर्वौषधीनामभावे तु दद्यादेकां शतावरीम्।

सप्तधान्यम्-

यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च।
श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्।।

हवने शाकल्यनिर्णयः-

तिलार्धं तण्डुलं प्रोक्तं तण्डुलार्धं यवा स्मृता।
यवार्द्धं शर्करां दद्यात् सर्वार्धं च घृतं स्मृतम्।।

प्रदक्षिणा विचारः-

एका चण्ड्या, रवेः सप्त,तिस्रःकार्याविनायके।
हरेश्चतस्रः, कर्तव्याः शिवस्यार्धप्रदक्षिणा।।
(आह्निकसूत्र)

नवग्रह-समिधा(लकड़ी)

अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः।
औदुम्बरशमीदूर्वाकुशाश्च समिधः क्रमात्।।
अर्क(मदार),पलाश,खदिर(खैर),अपामार्ग (चिडचिडि), पीपल,औदुम्बर(गूलर), शमी, दूर्वा, और कुशा-ये नव ग्रहोंकी समिधाएँ कही गई हैं।

महिष्यादि प्रसव दोषः-

माघेवृषे च महिषी श्रावणे वडवा दिवा।
सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः।।

बिल्वपत्र विचार-

अर्पितान्यपि बिल्वानि प्रक्षाल्यापि पुनःपुनः।
शंकरायार्पणीयानि न नवानि यदि क्वचित्।।
(स्कन्दपुराण)बिल्वपत्र न मिलने पर चढ़ाये हुये बिल्वपत्र को धोकर चढ़ाना चाहिए

दूर्वादि विचारः-

दूर्वाःस्वाभिमुखग्राःस्युर्बिल्वपत्रमधोमुखम्।
दूर्वाको अपनी ओर और बिल्वपत्र नीचे मुखकर चढ़ाना चाहियें।

धूप विचारः-

पुजनस्थल के बायें भाग में धुपदानी(अगरबती) स्थापित करना चाहिये।

दीपविचारः-

घी का दीपक दायीं ओर और तेल का दीपक बायीं ओर स्थापित करना चाहिये।

जपस्थान विशेषः-

शुचिस्थाने स्वगृहे जलाशये देवालये वा शूचिर्भूत्वा विधिवज्जपं कुर्यात्कारयेद्वा तदुक्तं स्मृतौ।
गृहे त्वेकगुणं जाप्यं नद्यां तु द्विगुणं स्मृतम्।।
गवां गोष्ठे दशगुणं अग्न्यागारे शताधिकम्।।
तीर्थादिषु सहस्रं स्यादनन्तं विष्णुसन्निधौ।।

• प्रतिमाके स्थापनमें दिशाका निर्णय (देवतामूर्तिप्रकाश३।२४-२७)

पूर्वापरास्यं देवानां मुखं, नो दक्षिणोत्तरम्। ब्रह्मा विष्णुः शिवार्केन्द्रा गुहः पूर्वपराङ्मुखः।।
शिवब्रह्मजिना विष्णुः सर्वाशाभिमुखाः शुभाः।।
गणेशो भैरवश्चण्डी नकुलीशो ग्रहास्तथा। भूताद्या धनदाश्चैव दक्षिणास्याः शुभाः स्मृताः।।
मातृणां सदनं कार्यं दक्षिणोत्तरदिङ्मुखम्। हनुमान् वानरश्रेष्ठो नैर्ऋतारयो विदिङ्मुखः।।

• मन्दिरके लिये प्रतिमाका परिमाण (वृहत्संहिता५७।४७)

सौम्या तु हस्तमात्रा वसुदा हस्तद्वयोच्छ्रिता प्रतिमा। क्षेमसुभिक्षाय भवेत् त्रि-चतुर्हस्तप्रमाणा वा।।
मन्दिरके लिये एक हाथकी प्रतिमा सौम्यताको प्रदान करनेवाली, दो हाथकी प्रतिमा धनको देनेवाली, तीन हाथकी प्रतिमा कल्याणको देनेवाली और चार हाथकी प्रतिमा सुभिक्षको देनेवाली होती है।

• घरके लिये प्रतिमाका परिमाण (भविष्यपुराण)

अंगुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिर्यावदेव तु। गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः।।
अंगुष्ठ पर्वसे लेकर वितस्ति(बित्ता) परिमाणतककी प्रतिमा घरोंमें रखनी चाहिये, इससे अधिक प्रमाणकी प्रतिमा विद्वानोंने अप्रशस्त कही है।

• घरमें प्रतिमा रखनेका विचार-

गृहे लिंगद्वयं नार्च्यं शालग्रामद्वयं तथा। द्वे चक्रे द्वारकायास्तु नार्च्यं सूर्यद्वयं तथा।।
शक्तित्रयं तथा नार्च्यं गणेशत्रयमेव च। द्वौ शङ्खौ नार्चयेच्चैव भग्नां च प्रतिमां तथा।।
नार्चयेच्च तथा मत्स्यकूर्मादिदशकं तथा। गृहेऽग्निदग्धा भग्नाश्च नार्च्याः पूज्या वसुन्धरे।।
एतासां पूजनान्नित्यमुद्वेगं प्राप्नुयाद् गृही। घरमें दो लिंग, दो शालग्राम, दो द्वारिकाचक्र, दो सूर्य, तीन शक्ति, तीन गणेश, दो शंख, खण्डित प्रतिमा और मत्स्य, कूर्म आदि दशों अवतारोंकी एकासाथ प्रतिमाओंका तथा अग्निसे दग्ध(जली) एवं भग्न(खण्डित) मूर्तिका पूजन नहीं करना चाहिये। इस प्रकारकी मूर्तियोंके पूजन करनेसे गृहस्थ नित्य ही उद्वेग(संकट) को प्राप्त होता है।

• घरमेंशालीग्रामरखनेका विचारः- (पद्मपुराण)

शालग्रामाः समाः पूज्याःसमेषु द्वितीयं न हि। विषमा नैव पूज्यास्तु विषमेष्वेक एव हि।।
शालग्रामशिला भग्ना पूजनीया सचक्रका। खण्डिता स्फुटिता वापि शालग्रामशिलाशुभा।।
शालग्राम भगवानका सम चार छः आदि रूपसे पूजन करना चाहिये। समरूपमें भी दो शालग्राम की पूजा नहीं करनी चाहिये। विषम रूप में एक शालग्रामका ही पूजन करना चाहिये(तीन शालग्राम आदिकापूजन नहीं करना चाहिये)

खण्डित मूर्ति का विचार

१ खण्डित मूर्ति यदि काष्ठ की हो तो उसे अग्नि में समर्पित कर दें। २. यदि पत्थर की हो तो जल में प्रवाह करें और यदि रत्न या धातु की हो तो उसे आगाध जल में डुवो देना चाहिये। जो मूर्ति खण्डित हो गई हो उन खण्डित अंग को वस्त्र आदि से ढककर मूर्ति को सवारी में रखें। तत्पश्चात् उसे गाजे वाजे के साथ किसी शुद्ध जल वाले जलाशय तक ले जाकर जल में डुवो दें। जिस परिमाण की मूर्ति खण्डित हुई हो उसी परिमाण की दुसरी मूर्ति तैयार करके पहली मूर्ति वाले खाली स्थान पर यथा विधि प्रतिष्ठा करनी चाहिये।

• यज्ञमें दशदान का विवरण-

गो-भू-तिल-हिरण्याज्य-वासो-धान्य-गुडानि च। रौप्यं लवणमित्येवं दशदानं प्रकीर्तितम्।।
गौ, भूमि, तिल, सुवर्ण, घृत, वस्त्र, धान, गुड़, चाँदी और नमक-ये दश वस्तु दानके लिये कही गई है।

• गोदान का महत्त्व-

गोप्रदानं तारयते सप्त पूर्वान् परांस्तथा। यथाकथञ्चिद्दत्त्वा गां धेनुं वाऽधेनुमेव वा।
अरोगामपरिक्लिष्टां दाता स्वर्गे महीयते।।
गोदान से सात पीढ़ीके पूर्वजों तथा सात पीढ़ीके आगे होने वाले वंशजोका निस्तार करती है।

(बृहस्पति) भूमिदान का महत्त्व

षष्टिं वर्षसहस्राणि स्वर्गे वसति भूमिदः। उच्छेत्ता चानुमन्ता च तावन्ति नरके वसेत्।।
यत्किञ्चित्कुरुते पापं जन्मप्रभृति मानवः। अपि गोचर्ममात्रेण भूमिदानेन शुद्ध्यति।।
भूमिदान करनेवाला पुरुष साठ हजार वर्षोतक स्वर्गमें निवास करता है और जो दी हुई भूमि हरण करता है या हरण करनेके सलाह देता है, वह उतने ही वर्ष नरकमें रहता है। मनुष्य जन्मसे लेकर जो कुछ भी पाप करता है उसकी निवृत्तिके लिये यदि वह गायके चामके बराबर भी भूमिदान करे, तो वह शुद्ध हो जाता है।

• अग्निको प्रज्वलित करने का विचारः- (देवीभागवत११।२२।५-६)

न पाणिना न शूर्पेण न च मेध्याजिनादिभिः। मुखेनोपधमेदग्निं मुखादेव व्यजायत ।।
पटकेन भवेद् व्याधिः शूर्पेण धननाशनम्। पाणिना मृत्युमाप्नोति कर्मसिद्धिर्मुखेन तु ।।
यज्ञाग्निको न तो हाथसे दहकावे, न सूपसे और न पवित्र मृगचर्म आदि से (आदि पदसे वस्त्रका ग्रहण है)। मुखसे ही यज्ञाग्निको धौंके, क्योंकि वह मुखसे उत्पन्न हुआ है। वस्त्र(चर्म आदि)से अग्निको धौंकने पर व्याधि(रोग) होती है, सूपसे धौंकने पर धन-नाश होता है, हाथसे धौंकने पर मरण होता है, किन्तु मुखसे धौंकने पर कर्मसिद्धि होती है।

• विधिहीन अग्निमें हवन करने से हानि (वायुपु७५।६२)

अप्रबुद्धे सधूमे च जुहुयाद्यो हुताशने। यजमानो भवेदन्धः सोऽपुत्र इति नः श्रुतिः।।
जो यजमान अग्निके ठीक-ठीक न जलने पर और धूमके रहते हुए अग्निमें हवन करता है, वह अन्धा और पुत्रहीन होता है।

• पूर्णाहुति खड़े होकर ही करना चाहिये

मूर्धानं दिवमन्त्रेण संसुवेण च धारयेत्। दद्यादुत्थाय पूर्णां तु नोपविश्यकदाचन(अग्निपु)
मूर्धानंदिवः०, (शु.य.७।२४) इस मन्त्रके द्वारा सुवसे घृतकी धाराको खड़े होकर पूर्णाहुति करना चाहिये, बैठकर नही

• कर्म-विशेष में अग्निके भिन्न-भिन्न नामः-

प्रत्येक कर्मके लिये अग्निके अलग अलग नाम हैं। अतः जिस कर्मके लिये जिस अग्निका आचार्योने नाम-निर्देश किया है,उसी अग्निका सविधि आवाहन एवं स्थापन कर हवन करना चाहियें- गर्भाधानमें- भरत,पुंसवनसंस्कारमें- वर,सीमन्तोन्नयन संस्कारमें-मंगल,जातकर्ममें-स्वभू और नामकर्ममें बल,अन्नप्राशन संस्कारमें-अंगिरा,चूड़ाकरणमें समुद्भव,उपनयनमें जय,गोदान अर्थात् समावर्तनमें रुद,विवाहमें संयुग अग्नि कहा गया है। अग्निहोत्रमें व्यालिक,गृहकर्ममें भव और पितृकर्ममें विश्वदेव,उदरकी अग्निका नाम अनल है, मृत(शव)का भक्षण करनेमें अग्निका नाम कल्मष है। महाहोममें वहिका,जलमें प्रवाह करनेमें अग्निका नाम जल है। पूर्णिमाके होम में शशांक, प्रलयमें अग्निका नाम संवर्तक है। काठसे उत्पन्न अग्निका नाम घोर है। बाँसोंसे उठी अग्निका नाम परान्त है। समुद्रमें रहनेवाली अग्नि वडवाग्नि है। पाक(अन्नपाक) करनेमें दक्ष,वसोर्धारामें जिसमें हवन किया जाता है उस अग्निका नाम निर्यास है। धूपसे निकली अग्निका नाम कामदेव है। धान आदिके तुष(भूसी) की अग्निका नाम कामहा है। रथ्या(बाजार चौराहे) में स्थित अग्निका नाम कामहा है। क्षुधा उत्पन्न करनेवाली अग्निका अग्निका नाम विभत्सु है, राजाके घरमें उत्पन्न अग्निका नाम विजय है। वृक्षोंसे उत्पन्न अग्निका नाम धूम्र है। दीपकमें स्थित अग्निका नाम कृष्णपथ है। हेमन्त आदिकी अग्निका नाम वाय है। मातृमन्दिरसे उत्पन्न अग्निका नाम अजित है। म्लेछ लोगोंमें जो अग्नि रहती है उसका नाम शंकर है। ईंटोंकी भट्ठीकी अग्निका नाम संघ है। प्रायश्चित्तमें अथवा व्रत खण्डित होनेपर शुद्धि नामक अग्नि और शुक्रके आवानमें अर्थात् वीर्याधानमें जव नामक अग्नि जानना चाहिये।।(देवीपुराण१२३)

• गुरु-शुक्र के अस्तादि में त्याज्य कर्म (मु.चि.शुभाशुभ ४६,४७ श्लो)

जब गुरु-शुक्र, वृद्ध अस्त और बाल हों तथा क्षय मास तथा अधिक मास में बावली, बगीचा, तलाव, कुआँ, मकान इनका आरंभ और प्रतिष्ठा व्रत का आरंभ और उद्यापन, वधु प्रवेश, महादान, सोमयज्ञ, अष्टका श्राद्ध, गोदान (ब्रह्मचारी का केशान्त संस्कार), नवान्न, जलशाला प्रथम श्रावणी कर्म वेद व्रत नील वृषोत्सर्ग अतिपन संस्कार (बालकों का जातकर्मादि संस्कार जो समय पर नहीं हुआ है), देवप्रतिष्ठा, गुरु से दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, मुण्डन प्रथम बार तीर्थ दर्शन, सन्यास, अग्निहोत्र, राज्याभिषेक की यात्रा चतुर्मास यज्ञ समावर्तन कर्णवेध और किसी दिव्यान्तरिक्ष वस्तु की परीक्षा नहीं करनी चाहिए।

• रुद्राक्ष के एक-मुख आदिके नाम और उनका फल

एकवक्त्रः शिवः साक्षाद् ब्रह्महत्यां व्यपोहति। अवध्यत्वं प्रतिस्रोतो वह्निस्तम्भं करोति च।।
द्विवक्त्रो हरगौरी स्याद् गोवधाद्यघनाशकृत्।...............(शिवरहस्य के अनुसार)

'एक मुखवाला रुद्राक्ष साक्षात् 'शिव' है, जो ब्रह्महत्याको दूर करता है और समस्त स्रोतोंको अवध्य तथा अग्निको रोकता है। दो मुखवाला रुद्राक्ष 'हरगौरी' (शिव. पार्वती) है, जो गोहत्या आदि पापोंको दूर करता है । तीन मुखवाला रुद्राक्ष 'अग्निजन्मा' है, जो पाप-समूहोंको दूर करता है। चार मुखवाला रुद्राक्ष 'ब्रह्मा' है, जो गनुष्यकी हत्याके पापको नष्ट करता है । पाँच मुखवाला रुद्राक्ष 'कालाग्नि' है, जो अगम्य स्त्रीके साथ गमन तथा अभोज्यके भोजन करनेके पापको नष्ट करता है। छः मुखवाला रुद्राक्ष 'गुह' है, जो भ्रूण-हत्याके पापको नष्ट करता है।
सात मुखवाला रुद्राक्ष 'अनन्त' है, जो सुवर्णकी चोरीके पापको नष्ट करता है। आठ मुखवाला रुद्राक्ष 'विनायक' है, जो समस्त प्रकारके असत्योंका नाश करता है। नौ मुखवाला रुद्राक्ष 'भैरव' है, जो शिवसायुज्य (मोक्ष) को देता है। दश मुखवाला रुद्राक्ष 'विष्णु' है, जो भूत एवं प्रेतके भयको हरण करता है। ग्यारह मुखवाला रुद्राक्ष 'रुद्र' है, जो अनेक प्रकारके यज्ञोंके फलको देता है। बारह मुखवाला रुद्राक्ष 'आदित्य' है, जो समस्त प्रकारके रोगोंको दूर करता है। तेरह मुखवाला रुद्राक्ष 'काम' है, जो समस्त कर्मोंमें सफलता देता है और चौदह मुखवाला रुद्राक्ष 'श्रीकण्ठ' है, जो वंशका उद्धार करता है।

।। अथ यज्ञ विमर्शः ।।

• अनाधिकारी को यज्ञ करानेसे हानि (मनुस्मृति३।६५)

अयाज्ययाजनैश्चैव नास्तिक्येन च कर्मणाम्। कुलान्याशु विनश्यन्ति यानि हीनानि मन्त्रतः।।

जिनको यज्ञ करानेका अधिकार अथवा योग्यता नहीं है, उसके द्वारा यज्ञ करानेसे, कर्मोंकी नास्तिकतासे और वेदमन्त्रोंसे रहित होनेसे कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाते है।

• पतित को यज्ञ कराने से हानि (महाभारत, अनुशा० १११।४९-५१)

पतितं याजयित्वा तु कृमियोनौ प्रजायते। तत्र जीवति वर्षाणि दश पञ्च च भारत।।

कृमिभावाद् विमुक्तस्तु ततो जायति गर्दभः। गर्दभः पञ्च वर्षाणि पञ्च वर्षाणि सूकरः।।

कुक्कुटः पञ्च वर्षाणि पञ्च वर्षाणि जम्बुकः। श्वा वर्षमेकं भवति ततो जायति मानवः।।

पतित पुरुषको यज्ञ करानेवाला ब्राह्मण कीड़ा बनकर उत्पन्न होता है और हे भरतवंशी राजन्! वह पन्द्रह वर्ष तक कीड़ेकी योनिको भोगता है। कीड़ेकी योनिसे छुटकर वह गधा होता है, फिर वह पाँच वर्षमें गधेकी योनिसे छुटकर सूअर होकर उत्पन्न होता है और पाँच वर्ष तक मुर्गेकी, गीदड़की तथा एक वर्ष तक कुत्तेकी योनिको भोग कर फिर वह मनुष्य योनिमें जन्म लेता है।

• शूद्र को यज्ञ कराने से हानि (पाराशरस्मृति १३।३६)

दक्षिणार्थं तु यो विप्रः शूद्रस्य जुहुयाद्धविः। ब्राह्मणस्तु भवेच्छूद्रः शूद्रस्तु ब्राह्मणो भवेत्।

जो ब्राह्मण दक्षिणा के लोभसे शूद्रको यज्ञ कराता है, वह शूद्र हो जाता है।

• यज्ञ में ब्राह्मणों के पूजन से ही कर्म की पूर्णता होती है:-(यज्ञ-मीमांसा२०४-०५)

ब्राह्मणानां नित्यपूजा कार्या वित्तानुसारतः। यावद् विप्रो न पूज्यन्ते न तावत् पूर्णतां व्रजेत्।

पूजितेषु तु विप्रेषु सर्वं सम्पूर्णतां व्रजेत्। प्रतिमा तेऽधिकं पुण्यं ब्राह्मणस्य तु पूजने।।

यज्ञ में प्रतिदिन अपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणोंका पूजन करना चाहिये। क्योंकि जब तक ब्राह्मणोंका पूजन नहीं किया जाता, तब तक यज्ञ पूर्ण नहीं होता। देवताओंसे भी अधिक यज्ञके ब्राह्मणोंके पूजन करनेका महत्त्व है, अतः ब्राह्मणोंका पूजन होने पर ही यजमानके समस्त कार्य परिपूर्ण होते हैं।

• स्त्री और नपुंसकके द्वारा हवन करनेवाले यज्ञका निषेधः- (मनु.४।२०६)

अश्लीकमेतत्साधूनां यत्र जुह्वत्यमी हविः। प्रतीपमेतद्देवानां तस्मात्तत्परिवर्जयेत्।।

जिस यज्ञमें स्त्री और नपुंसक हवन करते हों वह यज्ञ सज्जनोंके लिये लक्ष्मीका विनाशक है और इस प्रकारका यज्ञ देवताओंके लिये भी विरुद्ध है, अतः ऐसे यज्ञका त्याग कर दें।

• यज्ञादि में धर्मपत्नी कीआवश्क्ताः-

पत्नी धर्मार्थकामानां कारणं प्रवरं स्मृतम्। अपत्नीको नरो भूप कर्मयोग्यो न जायते।

ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यः शूद्रोऽपि वा नरः।। पत्नी धर्म, अर्थ तथा कामकी सिद्धिका श्रेष्ठ साधन है। कोई भी पत्नी-रहित पुरुष चाहे वह ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो, वैश्य हो अथवा शूद्र हो- धार्मिक कर्म करनेके योग्य नहीं हो सकता। "अयज्ञो वा एष योऽपत्नीकः।"(तैत्तिरीयब्राह्मण२।२।२)जो पुरुष पत्नी से रहित हैं वह यज्ञ के अयोग्य है। एकचक्रो रथो यद्वदेकपक्षो यथा खगः। अभार्योऽपि नरस्तद्वदयोग्यः सर्वकर्मसु।(भविष्यपुराण)-जिस प्रकार एक पहियेवाला रथ और एक पाँखवाला पक्षी चलने या उड़ने में असमर्थ होता है उसी प्रकार भार्यारहित पुरुष समस्त कर्मो में अयोग्य हैं।

• पत्नी के अनुपस्थित में:- (वाधूलस्मृति)

यस्य भार्या विदूरस्था पतिता वा रजस्वला। अनिष्टा प्रतिकूला वा तस्याः प्रतिनिधी क्रिया।

अन्यां कुशमयीं पत्नीं कृत्वा तु प्रतिरूपिकाम्। क्वचिच्छरमयीं पत्नीं नित्यकर्मणि कारयेत्।

जिनकी पत्नी दूर हो,पतित हो,रजस्वला हो,अनिष्ट करनेवाली हो अथवा अनुकूल न हो, ऐसी स्थिति में भी अपनी पत्नी के प्रतिनिधिरूपमें कुशा की पत्नी का निर्माण कर नित्यकर्म करें।

• कर्म विशेष में पति के समीप पत्नी के बैठने का निर्णय

सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा।

व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी-सहभोजने। व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे।।

वामे सिन्दुरदाने च वामे चैव द्विरागमे। वामेऽशनैकशय्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी।।

आशीर्वादेऽभिषेके च पादप्रक्षालने तथा। शयने भोजने चैव पत्नी तूत्तरतो भवेत्।।

समस्त धार्मिक कार्योंमें पत्नीके लिये अपने पतिके दक्षिण भागमें बैठना शुभ कहा गया है। व्रतबन्ध में विवाहमें, चतुर्थी कर्ममें, सहभोजनमें, दानमें, यज्ञमें और श्राद्धमें पत्नी को पति के दक्षिण भाग में बैठना चाहिये।

विवाह के समय सिन्दुरदान में, द्विरागमन में, पति के साथ बैठकर भोजन करते समय और पति के साथ शयन करते समय पत्नी को सर्वदा अपने पति के वाम भाग में ही रहना चाहिये। ब्राह्मणोंके द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करते समय, ब्राह्मणोंके पाद-प्रक्षालनके समय, अभिषेकके समय भी अपने पतिसे वामभागमें बैठना चाहिये।

• स्त्री को पति की आज्ञा के बिना यज्ञादि करने का निषेधः- (मनुस्मृति५।१५५)

नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम्। पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते।।

स्त्रियोंको पतिकी आज्ञाके वगैर स्वतन्त्ररूपेण यज्ञ,व्रत तथा उपवास करनेका अधिकार नहीं है। स्त्री तो केवल पति-सेवारूपी यज्ञके प्रभावसे ही स्वर्गमें आदर प्राप्त करती है।

• यज्ञादि में संकल्प की आवश्यकता- (भविष्यपुराण में)

संकल्पेन विना कर्म यत्किञ्चित्कुरुते नरः। फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्यार्द्धक्षयो भवेत्।।

मनुष्य संकल्पके बिना जो कुछ भी कर्म करता है उसका फल बहुत थोड़ा होता है। उसके आधे पुण्यका क्षय हो जाता है। संकल्पमूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः। व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः।। मनु२।३

• यज्ञादि में न्यास की आवश्यकता (शारदातिलक टीका ४ पटल)

पूजाजपार्चना होमाः सिद्धमन्त्रकृता अपि। अङ्गविन्यासविधुरा न दास्यन्ति फलान्यमी।।

न्यासं विना जपं प्राहुरासुरं विफलं बुधाः। न्यासात्तदात्मको भूत्वा देवो भूत्वा तु तं यजेत्।।

सिद्ध मन्त्र करने पर भी पूजन, जप, अर्चन तथा होमकर्म अंगन्यासके बिना फलप्रद नहीं होते। न्यासके बिना किया हुआ जप आसुरी कहाता है, उसका कुछ फल नहीं होता। इसलिये न्यासादि कर्मद्वारा देवस्वरूप होकर देवार्चन करना चाहिये- देवो भूत्वा देवान् यजेत्। न्यासहीनं तु यत्कर्म गृह्णन्त्यद्धं तु राक्षसाः। न्यासके बिना जो कर्म किया जाता है, उसका आधा फल राक्षस ले लेते हैं।

• यज्ञादि में एक वस्त्र धारण निषेध

स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्याच्छ्राद्धभोजनसत्क्रियाः।।(योगियाज्ञवल्क्य)

एकवस्त्रो न भुञ्जीत श्रौते स्मार्ते च कर्मणि। न कुर्याद्दैवकार्याणि दानं होमं जपं तथा।। (गौतम)

• प्रशस्त आसन

शमी काश्मरी शल्लः कदंबो वरणस्तथा। पञ्चासनानि शस्तानि श्राद्धे देवार्चने तथा।।

कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च। दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत्।।

शमी, गम्भार, शोणवृक्ष, कदंब और खैर, रेशम, कंबल, मृगचर्म, काष्ठ और तालपत्र इनका आसन श्राद्ध तथा देवार्चनमें प्रशस्त गहे गये है।

• आसन के विभिन्न फल

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धि-र्मोक्षश्रीव्याघ्रचर्मणा। वंशाजिने व्याधिनाशः, कम्बले दुःखमोचनम्।।

अभिचारे नीलवर्णे रक्तं वश्यादिकर्मणि। शान्तिके कम्बलः प्रोक्तः सर्वेष्टं चित्रकम्बलम्।।

वंशासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधिसम्भवः। धरण्यां दुःखसम्भूतिर्दौर्भाग्यं छिद्रदारुजे।।

तृणे धनयशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः।। काले मृगचर्म पर ज्ञानसिद्धि, व्याघ्र चर्म पर मुक्ति, वंशवल्कल पर व्याधिसे मुक्ति, कम्बल पर दुःखनिवृत्ति। अभिचार कर्ममें(मारण, मोहन, उच्चाटन आदिमें) नीला आसन, किसीको वशमें करनेके लिए लाल आसन पर, ग्रहपीड़ा, महामारी आदिकी शान्तिके निमित्त किये जा रहे कर्ममें कम्बलका आसन कहा गया है। चित्र कम्बल समस्त कार्योंके लिये कहा गया है। बांसके आसन पर दरिद्रता, पत्थर पर व्याधि, भूमि पर दुःख, छिद्रवाले काठ पर दौर्भाग्य, तृणासन पर धन और यशका नाश तथा पल्लवासन पर चित्त-भ्रम होता है।

• पूजन के समय प्रौढपाद(जाँघपर पैर रखकर) नहीं बैठना चाहिए

स्नानं दानं जपं होमं भोजनं देवतार्चनम्। प्रौढपादो न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम्।।

स्नान, दान, जप, होम, भोजन, देवपूजन, वेदका स्वाध्याय और पितृतर्पणमें जांघपर पैर रखकर नहीं बैठना चाहिये। (अत्रिसंहिता३१८)

• दक्षिणा देने की आवश्यकता

यज्ञो दक्षिणया सार्धं पुत्रेण च फलेन च। कर्मिणां फलदाता चेत्येवं वेदविदो विदुः।। देवीभागवत९।४५।१०

कृत्वा कर्म च तस्यैव तूर्णं दद्याच्च दक्षिणाम्। तत्कर्म फलमाप्नोति वेदैरुक्तमिदं मुने।।

कर्ता कर्मणि पूर्णेऽपि तत्क्षणात् यदि दक्षिणाम्। न दद्यात् ब्राह्मणेभ्यश्च दैवेनाज्ञानतोऽथवा।।

मुहूर्ते समतीते च द्विगुणा सा भवेद् ध्रुवम्। एकरात्रे व्यतीते तु भवेद्रसगुणा च सा।।(ब्रह्मवैवर्त प्र.ख.४२।५४)

दक्षिणासे युक्त यज्ञ पुत्ररूप फलके साथ यजमानों को फल प्रदान करता है। तथा कर्म कराकर ब्राह्मणों को शीघ्र दक्षिणा देनेसे यजमानको तत्काल फलकी प्राप्ति होती है। यज्ञादि कर्मके पूर्ण हो जानेपर भी दैववश अथवा अज्ञानवश ब्राह्मणोंको दक्षिणा न देनेसे प्रतिक्षण वह दक्षिणा द्विगुणित हो जाती है। एक रात बीत जाने पर वह छः गुनी हो जाती है।

• तिलक(चन्दन) धारण की आवश्यकता-

स्नानं सन्ध्या पञ्चयज्ञान् पैत्रं होमादिकर्म यः। विना तिलकदर्भाभ्यां कुर्यात्तन्निष्फलं भवेत्।।

जो स्नान, सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ, तर्पण, श्राद्ध आदि पितृ कर्म तथा होम आदि कार्य तिलक और दर्भ(कुश) के बिना करता है, उसका फल निष्फल जाता है।

• यज्ञादि में धौत वस्त्र पहनना चाहिये:-वसिष्ठ

जपहोमोपचारेषु धौतवस्त्रपरो भवेत्। अलंकृतः शुचिर्मौनी श्राद्धादौ विजितेन्द्रियः।।

जप,होम आदि शुभ कृत्योंमें धोती पहन कर ही कर्म करना चाहिये और श्राद्ध आदि कृत्यमें पवित्र वस्त्रको धारण कर तथा जितेन्द्रिय एवं मौनी बनकर श्रद्धापूर्वक कर्म करना चाहिये।

• कुशके पवित्री(अंगुठी) की महत्ताः-

जपहोमहरा ह्येते असुरा दैत्यरूपिणः। पवित्रकृत-हस्तस्य विद्रवन्ति दिशो दश।।

यथा वज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा। त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य ब्राह्मणस्य पवित्रकम्।।

जप और होमके फलको हरण करनेवाले दैत्यरूपी असुर हाथमें पवित्र धारण किये हुए ब्राह्मणको देखकर दशों दिशाओंमें भाग जाते हैं। जैसे इन्द्रका वज्र, विष्णुका चक्र और शिवका त्रिशूल शस्त्र कहा गया है, वैसे ही ब्राह्मणका रक्षक शस्त्र पवित्री कहा गया है।

• पवित्री में कुश की संख्या विचारः-

चतुर्भिर्दर्भपिञ्जूलैर्ब्राह्मणस्य पवित्रकम्। एकैकन्यूनमुद्दिष्टं वर्णे वर्णे यथाक्रमम्।।

सर्वेषां वा भवेद् द्वाभ्यां पवित्रं ग्रथितं नवम्। चतुर्भिः शान्तिके कार्यं पौष्टिके पञ्चभिस्तथा।।

पैतृके तु त्रिदर्भाश्च द्वौ दर्भौ नित्यकर्मणि।। अर्थात् ब्राह्मणके लिये चार कुशोंकी पवित्री धारण करने के लिये कहा है। क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रके लिये क्रमसे एक-एक कुश कम कर देना चाहिये। अथवा सभी वर्णके लिये नूतन और ग्रन्थियुत दो कुशोंका पवित्री होना चाहिए। शान्ति कर्ममें चार कुशोंका, पौष्टिक कर्ममें पाँच कुशोंका, पितृकर्म में तीन कुशोंका और नित्यकर्ममें दो कुशोंकी पवित्री बनाना चाहिये।(मार्कण्डेय)

• जप करते समय हाथसे माला गिरने या टूट जाने पर प्रायश्चित्त

माला यदि पतेद्धस्तात्तया चैव विनश्यति। सहस्रं तत्र सञ्जप्यं ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः।।

भोजनं ब्राह्मणानां तु सर्वानिष्टस्य नाशनम्। गायत्रीं वा जपेत्साष्टशतं भक्त्या समाहितः।।

ततोऽपरां नवां मालां तज्जातीयां वरानने। गृह्णीयात्तु कृते चैवं न विघ्नैरभिभूयते।।

यदि जप करते समय माला हाथसे गिर जाय या टूट जाय तो एक हजार बार मन्त्रका जप करे और ब्राह्मणभोजन करावे। ब्राह्मणको भोजन कराना सकल अरिष्टोंका विनाशक है। अथवा एकाग्र होकर भक्तिसे १०८ बार गायत्रीका जप करे। तदनन्तर दूसरी वैसी ही नई माला ग्रहण करे। ऐसा करनेसे पुरुषको विघ्न क्लेश नहीं देते।

• जप गणनार्थ (गणना हेतु) विहित वस्तु-

लाक्षा कुसीदं(रक्तचन्दनम्) सिन्दूरं गोमयं च करीषकम्। एभिर्निर्माय गुटिकां जपसंख्यां तु कारयेत्।। (पञ्चरात्र)

नाक्षतैर्हस्तपर्वैर्वा न धान्यैर्न च पुष्पकैः। न चन्दनैर्मृत्तिकया च जपसंख्यां तु कारयेत्।।

लाख, लालचन्दन, कमलगट्टा, सिन्दूर, गोबर के गुटिका बनाकर जपकी गणना करनी चाहिए। अक्षतसे, हाथके पर्वसे, धान्यसे, पुष्पसे, चन्दनसे और मृत्तिकासे जपकी गणना न करे।

• यज्ञादि में यज्ञोपवीत धारण की आवश्यकता-

द्विजको सर्वदा यज्ञोपवीती होकर औरशिखा बाँधकर रहना चाहिये। शिखा और यज्ञो पवीतके बिना वह जो कुछ कर्म करता वह न किये हुएके सदृश ही होता है।

• यज्ञ में जलयात्रा की आवश्यकता-

शान्तिकं पौष्टिकं वापि जलयात्रां विना बुधः। कुरुते यदि वा मोहात्कर्म तस्य च निष्फलम्।।

तडागादिप्रतिष्ठासु देवतायतनादिषु। लक्षहोमे कोटिहोमे ऽयुतहोमे तथैव च।।

व्रतोत्सर्गे महादाने यज्ञे वा वितते शुभे। जलयात्रां पुरा कृत्वा श्रेष्ठं कर्म समाचरेत्।।

जो शान्तिक वा पौष्टिक यज्ञादि कर्म जलयात्राके बिना करता है, तो उसका वह कर्म निष्फल जाता है। तडाग आदिकी प्रतिष्ठा करनी हो, देवमन्दिर आदिकी स्थापना करनी हो, लक्षहोम,कोटिहोम तथा अयुत हवन करना हो, एकादशी आदि व्रतका उद्यापन करना हो, सुवर्णका दान तुलादान, भूमिदान आदि महादान करना हो एवं मंगलमय महायज्ञ करना हो, तो पहले जलयात्रा करके तदुपरान्त श्रेष्ठ शुभ कर्मका अनुष्ठान करना चाहिये।(यज्ञमीमांसा४१३)

6

6

गर्भाधान-मुहूर्त्तः-

अश्वि, रो., मृ, उ.३, ह,स्वा, अनु., श्र., ध., श., चि, पुन., पु, नक्षत्रेषु। १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु। चं,वु,वृ,शु वारेषु। रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रिं यावत्। शुभैः केन्द्र त्रिकोणगैः, पापैस्त्र्यायारिगैः, पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम्।

सीमन्त-पुंसवन-मुहूर्त्तः

पुंसवनं गर्भतस्तृतीयेमासि कार्यम्। सीमन्तोन्नयनं च षष्ठेऽष्टमेमासे वा मासि मासाधिपतौ सबले कार्यम्। मृं. पुष्य, श्र., मू., पुन., हस्त, रो., रे, उ. ३, (जन्मर्क्षंविना) नक्षत्रेषु। १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे कृष्णे ५ यावत्। सू., मं., वृ. वारेषु, मतान्तरेण शु.,चं. अपि पूर्वाह्ने, पुम्स्यांशे तदंशे शुभम्। पापैः ३।६।११ स्थितैः,शुभैः १।४।५।७।६।१० स्थितैः, चन्द्रे २।३।४।५।६।१०।११ स्थिते, ४।८।१० पापरहितैः शुभम्।

जातकर्म-मुहूर्त्तः-

जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुः श्रीवृद्ध्ये च जन्मकाल एव जातकर्म पिता कुर्यात्। तदतिक्रमे एकादशे द्वादशेऽह्नि, चि., अनु रे., उ.३, रो, अश्वि,पुन, पु., स्वा, श्र., ध., श., नक्षत्रेषु पूर्णिमां विहाय शुभ तिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

शिशोर्दुग्धपान मुहूर्त्तः-

अश्वि.,रो.,मृ.पुष्य, श्र.,पुन.,हस्त,रे, उ. ३, चि.,अनु.,ध.,शत.नक्षत्रेषु। शुभतिथिषु क्षुभदिनेषु, वृष-सिंह- वृश्चिक-कुम्भ लग्नेषु स्तनपानं शुभम्। अन्नप्राशनोक्त-दिनतिथिनक्षत्रेषु सूतिकापथ्यं शुभम्। भैषज्योक्तनक्षत्रेषु औषधिभक्षणञ्च शुभं वेद्यम्।

सूतिकास्नान मुहूर्त्तः

अश्वि.,रो., मृ. स्वाती अनु., उ.३, रे, नक्षत्रेषु । रवि, मंगल,गुरु दिनेषु, शुभलग्नेषु शुभदृग्युतेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम्। आश्लेषा पू.३, ज्ये, ध., शत. नक्षत्रेषु मध्यम्।

प्रसूति-नखच्छेदन-मुहूर्त्तः-

अश्वि.,रो., मृ., पुन. पु. उ.३,हस्त,चित्रा, स्वाती,वि. अनु.,ज्ये, श्र. ,ध., शतभिषा नक्षत्रेषु । ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।७।८।११ लग्नेषु, शुभदिनेषु पूर्वाह्ने शुभम् ।

स्त्रीणां लाक्षाभरणधारण-मुहूर्त्तः

भ., आ., श्ले,म., वि., शत. रहित नक्षत्रेषु । शनि मंगल रहित दिनेषु शुभतिथौ स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणं (लहठीधारणं) शुभम्।

शिशु निष्क्रमण मुहूर्त्तः-

जन्मतश्चतुर्थे मासि यात्रोक्तदिनतिथिनक्षत्रेषु द्वादशे दिवसे वा शुभं स्यात्।

शिशु-भूम्युपवेशन मुहूर्त्तः

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजवले पंचमे मासि उत्तरा३, रो. मृ. ,ज्ये अनु. अश्वि. हस्त पुष्य. अभिजित् नक्षत्रेषु रिक्तामारहिततिथिषु शुभदिनेषु वृष सिंह वृश्चिक कुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं वद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्।........

शिशु के भूमि पर बैठाने का मन्त्र -

रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभम्। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।।

अत्रैव शिशोरग्रे वस्त्रं, शस्त्रं, लेखिनीं, पुस्तकं सुवर्ण रौप्यञ्च स्थाप्यम्। तेषु वालो यं गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातव्येति।

शिशुदर्शन मुहूर्त्तः

तृतीये मासे शुभ-तिथिदिन-नक्षत्रेषु पुष्य-फल-वस्त्र-द्रव्यादिनी शिशुदर्शनं शुभम्।

नामकरण-मुहूर्त्तः

विप्राणां ११, क्षत्रियाणां १३, वैश्यानां १६, शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम्। अथवा स्वा., पुन.,श्र.,ध., ह.,अश्वि.,पु.,अभि.,उ. ३,रो.,मृ.,रे., चि., अनु, नक्षत्रेषु। १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु। चं., वु., वृ., शु. दिनेषु पूर्वाह्ने शुभम्। मध्याह्ने मध्यमम्। शुभलग्ने शुभैः १।४।५।७।६।१० स्थितैः पापैः ३।६।११ स्थैः । ८।१२ गृहे शुद्धे चन्द्रे २।३।५।६।१० स्थिते। लग्ने शुभांशे पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारानुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम्।

अन्नप्राशन - मुहूर्त्तः

कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेषु वालकानां षष्ठात्सममासेषु रो. उत्तरा.३, मृ., रे., चि., अनु., स्वा., पुन., श्र., ध., शत., ह., अश्वि., पु., अभि नक्षत्रेषु। २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु चं.,वु., वृ., शु., दिनेषु शुक्लपक्षे, पूर्वाह्ने, २।३।४।५।६।७।६।१०।११ लग्नेषु जन्मलग्नराश्योरष्टमलग्नमंशञ्च रहितेषु। शभैः १।४।५।७।६।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ गतैः दशमस्थाने ग्रहरहिते शुभदृग्युतलग्ने, ४।६।८।१२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशनं शुभम्।

कर्णवेध- मुहूर्त्तः

१।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्,चं., वु., वृ.,शु. दिनेषु जन्मतारां विहाय श्र., ध., पुन., ह., अश्वि., पु., अभि.,मृ.,रे, चि., अनुः नक्षत्रेषु ६।७।८। मासे वा विषमवर्षे चैत्र-पौष-हरिशयन-रिक्ता-समवर्षाणि त्यक्त्वा, २।३।४।६।७।६।१२ लग्नेषु शुभैः १।४।५।७।६।१० गतैः, पापैः३।६।११गतैः,लग्नस्थे गुरौ शुद्धसमये शुभः।

चूडाकरण(मुण्डन-आद्यकेशकर्त्तन) मुहूर्त्तः

चैत्ररहितमासादि ६ मासे, ज्येष्ठाग्रहणयोः ज्येष्ठसन्तानं विना विषमवर्षे अश्वि, मृ., पुन., पु., ह., चि., स्वा., ज्ये., अभि., श्र., ध., शत., रे नक्षत्रेषु। चं, वु., वृ., शु. वारेषु २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषुशुक्ल पक्षे, कृष्णे ५ यावत्। २।३।४।८।६।१२ एतद्राशेर्लग्नांशे शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धे, पापैः ३।६।११ गतैः शुभैः १।४।५।७।६।१० गतैः जन्मराशिलग्नयोरष्टमेतरलग्ने ४।६।८। १२ रहित चन्द्रे शुभम्।

अक्षरारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (वालो यदि क्षमस्तदा तत्पूर्वमपि) गणेशविष्णुसरस्वती लक्ष्मी-नवग्रह-कलदेव-ग्रामदेवान् विधिवत् सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भो विधेयः। अश्वि., आ., पुन., पु., ह., चि., स्वा., अनु., अभि.,श्र., रे. नक्षत्रेषु २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। चं., वु., वृ., शु., दिनेषु, वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीन, लग्नेषु तन्वांशे चोत्तमः। कुम्भांशकं विनाऽष्टमशुद्धे गुरौ दशमे वुधे सप्तमे, शुक्रे लग्ने ग्रहवलाढ्ये शुभम्।

विद्यारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे गणेशं विष्णुं लक्ष्मीं सरस्वतीञ्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे दृढे संजाते सति सूर्यबुधगुरुशुक्रवारेषु २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, अश्वि., मृ., आ., पुन., पु., आश्ले., ह., चि., स्वा., मू., पूर्वा. ३, श्र., ध., शत. नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १।४।५।७।६।१० गतैः पापैः ३।६।११ गतैः वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीनान्यतमलग्ने तदंशे वा विद्यारम्भः शुभः।

उपनयन (व्रतवन्ध) मुहूर्त्तः

शुभ समये, उत्तरायणे माघादिषड्मासेषु सू. चं. बु. वृ. शु वारेषु (सामवेदीनां मंगलवारेऽपि) जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम्। २।३।५।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे पूर्वाह्ने च शुभम्। मकरार्के पौषे ११।१२, मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्न मासानां द्वितीया, आषाढे १०।११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्वि., रो., मृ., आ., पुष्य, आश्ले., पूर्वा३,उत्तरा३,ह.,चि., स्वाति, अनु., मू., श्र., ध., शत., रे. नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम् । मन्वादियोगादिषु अपराह्ने सायं, प्रदोषेऽनध्याये, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम्। त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रो द्विद्यूनदिक्त्रिगः। सौम्याः केन्द्र त्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेश-चन्द्र-शुक्र-गुरवः षष्ठगाः न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ। १।५।८ स्थाःपापा न शुभाः । ६।८।१२ गताःशुभाः न शुभ प्रदाः। ३।६।११ गताः पापाः शुभदा पूर्णचन्द्रो वृष-कर्क-लग्न-गतः शुभो नान्यथाः। लग्नेऽर्कः शुभः।

• गुरुशुद्धि- जन्मराशितः उपनयनकाले २।५।७।६।११ स्थानगतः गुरु शुभः। ४।१०।१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः। १।३।६।८ स्थानगतो निषिद्धः। रामाचार्यमतेन १।३।६।१० स्थान गतो गुरुः शान्त्या शुभः। ४।८।१२ स्थानगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चवर्षतः षोडश वर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्य द्वाविंशतिवर्षपर्यन्तं, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भ- कालात्सर्वेषां यथोत्तरं गौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वम् उपनयनं कार्यम्।

• प्रदोषनिर्णयः- यदा तृतीयायां प्रहरात्र्यभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयोदशी, षष्ठ्यां सार्द्धप्रहररात्र्यभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवेत्तदा प्रदोषोऽवगन्तव्यस्तत्रोपनयनं निषिद्धम्।

• वर- वरण मुहूर्त्तः-शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः वरवरणंशुभम्।

• वर वरण मन्त्रओम् तस्मिन् कालेऽग्नि सान्निध्ये, स्नातः स्नातेह्यरोगिणि अव्यंगे अपतिते अक्लीवे(अमुक नाम्नीं)कन्यां पिता तुभ्यं प्रदास्यति।

• कन्या वरण मुहूर्त्तः-शुभतिथि दिन लग्नेषु कृत्तिका पूर्वात्रय विवाहभेषु च पुष्प फल वस्त्रादिभिः कन्यावरणंशुभम्।

• विवाह-उपनयनादौ मण्डपादि निर्माण मुहूर्त्तः

विवाहोपनयनादिशुभकर्मसु चन्द्रतारानुकूले दिने विवाहमुहूर्त्ते वैवाहिकमुपनयनादिमुहूर्त्ते चोपनयनादिकं सम्वद्धं मण्डपादि कार्यं विधेयम्।

विवाहः मुहूर्त्तः

मार्ग-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढमासेषु सौरक्रमेण (देवोत्थानात्परं हरिशयनात्प्रागेव) १।२।३।५।६।७।८।१०।११। १२।१३।१५ तिथिषु, सू. चं. बु. वृ. शु वारेषु, अश्वि. रो. मृ. म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे. नक्षत्रेषु पंचशलाकावेधरहितेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मीन, लग्नेषु, शुभग्रहेषु १।४।५।७।६।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहे यदि गुरुर्वा शुक्रो १।४।५।७।६।१० गतो भवेत्तदा सकलदोषं नाशयति। ज्येष्ठा कन्या, ज्येष्ठो वरः ज्येष्ठमासश्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येष्ठ-कन्यावरयोः ज्येष्ठमासे विवाहो निषिद्धः। ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात्,आवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठमासेऽपि ज्येष्ठवरकन्योर्विवाहः शुभः।

विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम्			
ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	गुरुः
शुभः	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।६।११
पुज्यः	१।२।५।७।६	१।२।५।६	१।३।६।१०
निन्द्यः	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२

• विवाहोपरान्त प्रथम नदी-तलावादि मे स्नान-मुहूर्त्तः-

विवाह दिनात्षोडशदिनमध्ये तदभावे मासपर्यन्तं।२।३।५।७।१० ।१३ तिथिषु, चं.,वु.,गृ.,शु.,दिनेषु, आर्द्रा,पुन.,पु.,आश्ले.,म.,पूफा.,उफा.,ह.,चि.,स्वा.,नक्षत्रेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, लग्नेषु शुभम्।

द्विरागमनमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. उत्तरा ३. पुन. पुष्य, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । सू.चं.बु.वृ.शु.वारेषु मृत्युयोगादिरहितेषु, २।३। ६।७।१२. लग्नेषुशुभयुतेक्षितेषु, शुक्रे १।४।७।१० गते, जीवे ३।६।१०।११ गते । पापैः३।६।११ स्थितैःशुभम्। विषमवर्षे सौरक्रमेण मार्गफाल्गुन वैशाखमासेषु, शुक्रवाल्यास्तवृद्धत्वाभिन्नकाले वामपृष्ठगते शुक्रे, शुक्रोदिते द्विरागमनं शुभम्। प्रथमवर्षे न शुक्रविचारःकार्यः। तृतीयादिविषमवर्षे शुक्र विचारो विधेयः। शुक्रान्धविहित (रे.अश्वि. रो. मृ.) नक्षत्रेषु सम्मुखदक्षिणशुक्रेऽपि द्विरागमनम् शुभम्। व्यतीते पञ्चमे वर्षे न. शुक्रविचारो न वा मुहूर्त्तविचारः। तदानीं यस्मिन् कस्मिन्नपि. शुभतिथिदिननक्षत्रयुक्तकाले द्विरागमनं शुभम्।

नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा ३. पुष्य, कृ. वि. ज्ये. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु, बु. वृ. श. वारेषु, शुभतिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, २।५।८।११ लग्नेषु, लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे, शुभे वलान्विते सप्तमस्थे शुभः।

वधू-प्रवेश-मुहूर्त्तः-

विवाहादिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पचम-सप्तम-नवमदिने (आचारादन्यविषमदिनेऽपि) ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे,चैत्र-पौष-भाद्र-क्षयमास-मलमास- भिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्तः। न अत्र शुक्रविचारः कालविचारो वा १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५। तिथिषु। चं.,गु.,शु.,श.,वारेषु,मतान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्वि.,रो.,मृ.,पु.,उत्तरा-३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मू.,श्र.,ध.,रे., नक्षत्रेषु।२।३।५।६।७।८।६।११।१२। लग्नेषु। शुभैः।१।२।५।७। १०।११ स्थितैः। चतुर्थाष्टमशुद्धे शुभः।

यात्रा मुहूर्त्तः

वामपृष्ठराहौ। मलमासक्षयमास सौरक्रमेण चैत्र,भाद्र,पौष, रहित मासेषु । अ.,मृ.,पुन.,पु.,ह.,ज्ये.,अनु.,श्र.,रे. नक्षत्रेषूत्तमः। रो. पू.३, चि., स्वा., मू.,पूषा.,ध.नक्षत्रेषु मध्यमः। मृत्युयोग, दग्धतिथि मासान्त-संक्रान्ति-मासादि प्रभृतिदोषरहिते। अमृतसिद्ध- सर्वार्थसिद्ध्यादिशुभ योगेषु। अमाशुक्लप्रतिपच्च विहायान्यतिथिषु योगवशेनान्यथा शुभतिथिषु। दिक्शूलरहितदिने २ । ४। ६। ८। ६ तारासु। पञ्चमतारायाः प्रथमाद्वितीयावृत्तेषु च। १ । २।३। ५। ६। ७। ६। १०। ११ चन्द्रेषु। आवश्यके ४ । १२ चन्द्रेऽपि। द्विरागमनान्तरं पितृगृहगतायाः पुनः पतिगृहगमने दक्षिण-सम्मुख-कालौ त्याज्यौ। तदन्तरमावश्यके केवलं सम्मुख-कालस्त्याज्यः। दक्षिणकाले च सम्मुख चन्द्रवशेन-यात्राकार्या

• सर्व दिग्गमन नक्षत्राणि- अश्विनी-मृगशिरा-पुष्य- श्रवणनक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि।

• दिशा शूल विचार -सोमे शनिवारे च पूर्वस्यां, वृहस्पतिवारे दक्षिणस्यां, रवि शुक्र वासरे च पश्चिमायां, मंगल वुध वासरे च उत्तरस्यां दिशि दिक्शूलत्वाद् गमनं निषिद्धम्।

दिशा शूल-परिहारःरव्यादिवासरेषु क्रमेण घृत-पय-गुड-तिल-दधि-यव-माषान्नं भुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये गच्छेत्।

विदिक्(कोन) शूल विचारःशनौ पूर्वे, चन्द्रेऽग्निकोणे, गुरौ याम्यां, वुधे नैर्ऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मंगले वुधे, ऐशान्यां वुधमन्दयोर्न गन्तव्यम्।

कालशूलम् उषाकाले पूर्वस्यां,मध्याह्ने दक्षिणस्यां, सायंकाले(गोधूल्यां)पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत्,कालशूलदोषत्वात्।

लग्न-चन्द्रयोर्वासः-मेषसिंहधनुराशिषु पूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां,मिथुनतुलाकुम्भराशिषु पश्चिमायां, कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वासः। सम्मुखदक्षिणलग्नचन्द्रयोः यात्राशुभा। परं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभा।

• द्वादशचन्द्रस्य विशेष- अधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्धे विवादे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।।

• चन्द्र विचारः- जन्मनामग्रामादिराशितोऽभीष्ट दिनस्य चन्द्रं यावत् गणनीयम्। तत्र १।२।३।५।६।७।६।१०।११ संख्याकश्चन्द्र शुभः प्रदः ८ चन्द्रः मृत्यु प्रदः। ४ कलहदः। १२ हानिकारकः। तत्र दुष्टे चन्द्रे तद् दोषशान्त्यर्थमामतण्डुशंख श्वेतवस्त्रादि दानं कार्यम्।

जन्मराशि-नामराशि वशेन-विचारणीयविषयाः-

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्युते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता।।

जन्म नक्षत्रे त्याज्याः- जन्मनक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। क्षौरभैषज्यवादाध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्।

जन्ममासे त्याज्याः- क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च।

गृहारम्भ(वास्तु)मुहूर्त्तः

वैशाख, आषाढ(पशुगृहं त्यक्त्वा), कार्तिक, अग्रहन, फाल्गुन, श्रावण(सौरक्रमेण). मासेषु। सम्मुख-काल-वर्जित-समये। २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। अ.,रो.,मृ.,पुन, पु.,उ.३, ह.,चि., स्वा.,अनु.,मूल.,श्र. ,ध.,शत.,रे. नक्षत्रेषु। चं, बु, गु, शु, श, वारेषु। दिवा, शुद्धसमये।। शुद्धवास्तु-चक्रे,पृथ्वीशयननक्षत्रेषु २।३।५।६।७।८।९।१२। लग्नेषु। लग्ने शुभदृग्युते। शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः,पापैः ।३।६।११। स्थितैः, ।८।१२। ग्रहरहिते शुभः तृण-काष्ठादि- गृहनिर्माणम् अशुद्धेऽपि परञ्च इष्टिकादि गृहनिर्माणं शुद्धसमये एव। देवालयमठादि- निर्माणमप्येष्वेव मुहूर्त्तेषु शुभम्।

गृहारम्भे वृषचक्रं अर्कभात्

स्थान	न०	फलानी
शीर्षे	३	अग्निभयम्
अ.पा.	४	शून्यम्
पृ.पा.	४	स्थैर्यम्
पृष्ठे	३	धनम्
द.कु.	४	लाभः
पृ.	३	नाशः
वा.कु.	३	धननाशः
मुखे	३	कष्टम्

गृहप्रवेश मुहूर्त्तः

वैशाख, आषाढ, कार्तिक, अग्रहण, फाल्गुन,श्रावण सौरमासेषु। २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु शुक्ल पक्षे। कृष्णे ५ यावत्। अ., रो., मृ.,पुन, पु., उ.३, ह.,चि., स्वा.,अनु.,मूल.,श्र.,ध.,शत.,रे. नक्षत्रेषु। चं. बु. वृ. शु. श. वारेषु। दिवारात्री। शुद्ध समये। शुद्धे कुम्भचक्रे ।२।५।८।११ लग्नेषूत्तमः । ३।६।९।१२ लग्नेषु मध्यमः । जन्मराशि लग्नाभ्यामुपचय- ३।६।१०।११ राश्यांशेः स्थिरराशी, लग्नात् १।३।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभाः। ३।६।११ स्थानेषु पापाः। ४।८ भवने ग्रहरहिते। सम्मुखकाल रहित समये शुभः। इष्टिकादि गृहप्रवेशः शुद्ध-समये तृण-काष्ठादिक- गृह-प्रवेशोऽशुद्धसमयेऽपि। अग्निभय राजकोपे दैविके प्रकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभ मुहूर्त्ते गृहारम्भो गृहप्रवेशश्च कार्यः।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रं अर्कभात्

स्थान	न०	फलानी
मु.	१	अग्निदाहः
पू.	४	उद्वसनम्
द.	४	लाभः
प.	४	धनम्
	४	कलहः
	४	विनाशः
उ.	२	स्थिरताः
क.	३	स्थिरता

• **त्रिविधप्रवेशः-** दिवा नृपप्रवेशः, निशि वधूप्रवेशः, दिवारात्री च गृहप्रवेशः शुभदः प्रोक्तः।

राहु(काल)वासः- सौरक्रमेण मार्गपौषमाघमासेषु पूर्वस्याम्। फाल्गुनचैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्याम्। ज्येष्ठ-आषाढ-श्रावणेषु पश्चिमस्याम्। भाद्र-आश्विन-कार्तिकेषु उत्तरस्यां कालवासः

पृथ्वीशयननक्षत्राणि मुहूर्त्तः- सूर्यनक्षत्रात्। ५।७।९।१२।१९।२६ गिते चन्द्र नक्षत्रे पृथ्वी शेते। एषु तडागवापीकूपवास्तुप्रभृति कार्यं ट्यूबेल ,बोरिंग, प्रभृति स्थापनञ्च न कर्त्तव्यम्।

चरणिविचारः- स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुताम्। अष्टभिश्च हरेद् भागं शेषं चरणिरुच्यते। तत्फलम्-पशुंहानिःपशो रोगः पशुलाभः पशुक्षयः। पशुनाश पशोर्वृद्धिः पशुभेदो वहुपशुः।

योगिनीवासो युद्धयात्रायाम्

तिथयः	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
दिशा	पू.	अ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई
वामपृष्ठगतायोगिनीशुभ, दक्षिण-सम्मुख अशुभ।								

देवालय-गृहारम्भ-जलाशयारम्भे खातदिग्ज्ञानम्

खातंदिक्	नैर्ऋत्याम्	आग्नेयाम्	ऐशान्याम्	वायव्यम्
देवालयारम्भे	ध.म.कु. सूर्ये	मी.मे.वृ.सूर्ये	मि.क.सिं.सूर्ये	क.तु.वृ. सूर्ये
जलाशयारम्भे	तु.वृ.ध. सूर्ये	म.कु.मी. सूर्ये	मे.वृ.मि. सूर्ये	क.सिं.क.सूर्ये
गृहारम्भे	वृ.मि.क. सूर्ये	सिं.क.तु.सूर्ये	वृ.ध.म. सूर्ये	कु.मी.मे.सूर्ये

जलाशयवाटिका-देवादि-प्रतिष्ठा-मुहूर्त्तः-

सौर-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढमासेषु शुक्लपक्षे, सू., चं., बु.,गु.,शु., वारेषु।१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३ ।१५। तिथिषु। मृ.रे.चि.अनु.ह.,अश्वि. पु.,स्वा.,पुन.,श्र.,ध.,श.,रो., उत्तरा-३, नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवताकतिथि-दिननक्षत्रेषु देवादिप्रतिष्ठा शुभा। सिंहे सूय, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शंकरं, स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्यः, चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्रपापैः ।३।६।११। स्थितैः। शुभैः १२।८। भिन्नस्थानगतैः देवादि प्रतिष्ठा शुभा। ग्रहाः पुष्ये,बुधः श्रवणायां, गणेशादयो देवत्यां स्थाप्याः। भगवतो देवोत्थानैकादश्यां रामनवम्यां, कृष्णाष्टम्यां, देव्याः नवरात्री दीपालिकायाञ्च, शंकरस्य शिवरात्रौ वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।

ट्यूववेल, वोरिंग,टंकी प्रभृति स्थापने शुभ मुहूर्त्तः-

कृ.,आश्ले.,म.,पू.३,भ.,वि.,मू., नक्षत्रेषु। २।४।५।६।७।९।१३।१५तिथिषु शुक्लपक्षे,कृष्णपक्षे ५ यावत् ।चं.बु.वृ.शु.वारेषु। पूर्वाह्णेऽपराह्णे वा, २।३।४।६।७।९।१०।११।१२ लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे शुभैः१।४।५।७।९।१० स्थितैः। पापैः३।६।११गतैः शुभम्।

वापी-कूप-तडागादिखनन-मुहूर्त्तः-

सौर-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ- आषाढमासेषु शुक्लपक्षे शुद्धसमये,रो.,मृ.,पुष्य.,म., उत्तरा-३,ह., अनु.,ध. ,श.,रे.,नक्षत्रेषु। पृथ्वीशयन नक्षत्ररहितेषु, शुभतिथिदिनेषु, ।४।१०।११। १२। लग्नेषु राशिषु च, शुक्रे दशमस्थे, गुरुबुधयो- रन्यतरस्थ-लग्ने, पापैःनिर्वलैः,शुभैः सुवलिभिः शुद्धे वापी-कूप-तडागादि-चक्रे शुभम

वापीचक्रंरोहिणीभात्

स्थान	न	फलानि
पृष्ठे	४	शुभजलं
नाभौ	४	वृद्धिनाशः
हृदि	४	स्थिरता
मध्ये	४	कलहः
नेत्रयोः	४	धनागमः
पादायोः	८	दुःखम्

खलस्थापनमुहूर्त्तः- ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम्।

धान्यस्थापन-मुहूर्त्तः- अश्वि.,रो.,मृ.,पुन.,पुष्य,चि.,ह.,उ.३,स्वा.,अनु.,मू.,श्र. ध.,श.,रे. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिन लग्नेषु, २।३।५।८।९।१०।११।१२. लग्नेषु शुभम्।

हल प्रवहण मुहूर्त्तः-

अश्वि. रो. मृ. पुन.पुष्य. म. उत्तरा३, ह. चि. स्वा. वि. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, ।चं. मं. बु. गु. शु. वारेषु, शुभतिथिषु, शुभलग्नेषु, पापैः निर्वलैः। शुभैः सुवलिभिः। चन्द्रे जलचर-राशिस्थे तत्रवांशे वा । गुरौ लग्नस्थे शुक्रे विधौ च पुष्टे शुभम्।

हलचक्रमर्कभुक्तभात्

नक्षत्र-	३	८	९	८
फलम्	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं

बीजवपन-मुहूर्त्तः

अश्वि., रो., मृ., पुष्य,म. चि., ह., उ.३, स्वा., अनु., श्र., मू. रे. नक्षत्रेषु, २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिपु, चं., बु., गु., शु.दिनेषु, शुभलग्नेषु, लग्नेशुभदृग्युते, शुभैः केन्द्रत्रिकोणी पापैः त्रिषडायगैः शुभम्।

बीजवपने फणिचक्र राहुनक्षत्रात्

नक्षत्र-	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फलम्	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं	शुभं	अशुभं

कूपचक्रंरोहिणीभात्

स्थान	न	फलानि
मध्य	३	शीघ्रस्वादु
पूर्व	३	निर्जलम्
अग्नि	३	शीघ्रजलम्
दक्षिण	३	निर्जलम्
नैर्ऋत्य	३	निर्मलजलम्
पश्चिम	३	शीतजलम्
वायु	३	जलहानिः
उत्तर	३	मधुरजलम्
ईशान	३	क्षारजलम्

अथवा सूर्यक्षादप्येवमेवम्

तडागचक्रंसूर्यभात्

स्थान	न	फलानि
पूर्व	२	जलनाशः
अग्नि	३	वहुजलम्
दक्षिण	२	जलहानिः
नैर्ऋत्य	२	अमृतजलम्
पश्चिम	३	स्वादुजलम्
वायु	२	निर्जलम्
उत्तर	३	स्थिरजलम्
ईशान	३	नष्टजलम्
मध्य	५	पूर्णजलम्
वाह्य	३	अमृतजलम्

धान्यरोपणमुहूर्त्तः-

रो. उफ. वि. मू. श. पूभा. नक्षत्रेषु। सू. चं. बु. गु. शु. दिनेषु। शुभतिथिषु शुभलग्नेषु च शुभम्।

धान्यछेदनमुहूर्त्तः-

मू.ज्ये.आश्ले.आर्द्रा, पूभा.ह.कृ. ध.श्र.मृ.स्वा.म. उत्तरा३,पूषा,भ.चि.पुष्य नक्षत्रेषु, सू.चं.बु.गु.शु. दिनेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२। १३।१५ तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम्। अन्यान्यपि यव- गोधूमादीनि एष्वेव छेद्यानि।

मेथिरोपणमुहूर्त्तः-

अ.रो.मृ.पुन.पु.उत्तरा३,ह. चि. स्वा.अनु.श्र.ध.श.रे.नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु च मेथिरोपणं शुभम्।

वर्षेशवशेन मेथिविचारः-

वर्षेश सूर्ये वंशः, चन्द्रे शिम्बरः, मंगले कदम्बकम्, बुधे उदुम्बकम्, गुरौ आम्रम्, शुक्रे पलाशः, शनौ निम्बम् शुभम्।

कणमर्दनमुहूर्त्तः-

मघा.पूफ. उफ. रो. ज्ये. मू. अनु. श्र. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

धान्यवृद्धिमुहूर्त्तः-

अ.रो.पुन.पु.उत्तरा३, स्वा.वि.ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यवृद्धिः शुभा।

बीजस्थापनमुहूर्त्तः-

रो. मृ. म. ह. स्वा. मू. उषा. पूभा. रे. नक्षत्रेषु, चं. बु. गु. शु. वारेषु। शुक्लपक्षे, कृष्ण ५ यावत्। २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५, तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम्।

वृक्षादिरोपण-मुहूर्त्तः-

अश्वि.,रो.,मृ., पुष्य, उ.३, ह चि., वि., अनु., मू., श., रे., नक्षत्रेषु, चं., बु., गु., शु. दिनेषु, शुभतिथिषु च शुभम्।

कदलीरोपणम्-

पञ्चक (ध., श., पू.भा., उ.भा., रे) रहित नक्षेषु। १।२।३।४।६ तिथिषु, शुभदिनेषु शुभम्।

नवान्न भक्षण मुहूर्त्त

अ., रो., मृ., पुन., पु., उ.३, ह., चि., स्वा., अनु., श्र., ध., श., रे. नक्षत्रेषु शुभम्। मूले नवान्नपारवणं मध्यमम्। सू., च., बु., गु. वारेषु। शुक्ल पक्षे २।३।५।७।८।१०। १२।१५ तिथिषु। वृश्चिकस्य ३।२० अंशानन्तरं, १३ अंशयावत् आवश्यके २३ अंश यावदपि। ततः मकरे ७ अंशानन्तरं कुंभस्थे सूर्ये वा कार्यम् २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु, लग्नेशुभयुग्दृष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम्। नवान्नपार्वणे जन्मतारा-विशाखस्थसूर्य-कृष्णपक्षाष्टमचन्द्र-पूर्वात्रय-मघा- भरण्याश्लेषाऽऽर्द्रा-नक्षत्र-सौर-क्रमेणकार्तिक-पौष- चैत्रहरिशयननन्दात्रयोदशी - रिक्तामंगलशनि- शुक्रदिनानि निषिद्धानि। अभावे कृष्णपञ्चमी यावत् ग्राह्यः।

पुराणादि श्रवण मुहूर्त्तः

अश्वि., रो., मृ., पुन., पु., ह., चि.,स्वा, अनु., मू., श्र. नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे २।३।५।७।८।१०। ११।१२।१३।१५ तिथिषु। कृष्णपक्षे५ यावत्। सू.,च., बु., गु., शु. दिनेषु ।शुभलग्ने। लग्ने शुभयुग्दृष्टे वलाढ्ये, शुभैः।१।४।५।७।९।१०। स्थितैः पापैः ३।६।११ स्थितैः। उत्तरायणे,श्रावण., आश्वि., कार्तिक, अग्र. मासेषु। तीर्थक्षेत्रे,देवालये, सिद्धि क्षेत्रे, पर्वविशेषे नवरात्रादौ च मुहूर्त्तविनाऽपि शुभम्।

मन्त्रग्रंहण मुहूर्त्त-

अश्वि,रो.,पुन.,पु.,उत्तरा-३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मू.,अभि. ,श्र.,ध.,श.,रे.,नक्षत्रेषु ।२।३।५।७।१० ।११।१२।१३।१५तिथिषु। अत्यावयके कृष्णपक्षे ५ यावत्। सू.,चं.,बु.,गु.,शु.,वारेषु। शुद्धसमये प्रातः मध्याह्ने वा ।२।३।५।७।९।१२। लग्नेषु,शुभैः ।१।४।५।७।९।१० गतैः,पापैः ।३।६।११ स्थितैः,सौरक्रमेण वैशाख, श्रावण,आश्विन,कार्तिक,अग्रहण,माघ, फाल्गुन,मासेषु। संक्रान्ती पूर्णिमायां नवरात्रमध्ये,ग्रहणे,सिद्धक्षेत्रे मन्वादि-युगादिषु च मुहूर्त्तं विनाऽपि मन्त्रग्रहणं शुभम्

व्रतोद्यापन-मुहूर्त्तः-

अश्वि,रो.,पुन.,मृ.,पु.,उत्तरा-३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मू.,श्र.,ध.,श.,रे.,नक्षत्रेषु । शुद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिषु दिवसे वा। कार्तिक,माघ,फाल्गुन,वैशाख,ज्येष्ठ,आषाढ,मासेषु। शुभलग्नेषु। कार्तिकव्रतोद्यापनं तुलस्याकाशदीपदानव्रतोद्यापनञ्च शुद्धसमये वृश्चिकसंक्रान्तिपूर्वरात्रौ। एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सम्वन्धस्तत्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम्। शुभैः ।१।४। ५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ।३।६।११। स्थितैः,पंचमेशे नवमेशे गुरौ च वलाढ्ये सति शुभमन्यथा ग्रहशुद्ध्यभावेऽपि परमावश्यक ४२ ४२

कल्याणार्थशान्तिःमुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पुन. पु. उ.३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र.ध. शत. रे. नक्षत्रेषु शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। २।३।५।६।७। ८।१०। ११।१२।१३।१५ तिथिषु। सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु शुद्ध समये आवश्यकेऽशुद्धेऽपि चैत्रपौषभाद्रमलमासक्षयमास रहिते शुभम्। शुभलंग्ने लग्नस्थे गुरौ चतुर्थस्थे चन्द्रे दशमस्थे सूर्ये अष्टमे लग्ने च पाप रहिते शान्तिःशुभाः। शुभम्।

नवचण्डी-शतचण्डी-सहस्रचण्डी यज्ञ मुहूर्त्तः-

वैशाख,फाल्गुन,माघ,श्रावण अग्रहण, आश्विन, कार्त्तिक मासाः पूजायां तु शुभावहाः। ३।५।१५।७।१३।१०।१२।६ तिथिषु। सू.चं.बु.गु.शु. वारेषु। अश्वि. रो. स्वा. पु. ज्ये. उत्तरा३, पुन. ।

होमाहुतिविचारः-

सूर्यभात्त्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपंगवः।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले।।

आहुति दोष परिहारः-

विवाहयाग व्रतवन्ध दीक्षा सीमन्तचण्डी गृहवास्तुशान्तौ। आदित्यसौरीकुजराहु केतवो न दोषदा यज्ञविधायिनां खलु।।

दुर्गाहोमे आहुतिचक्र विचारः-

ब्राह्मी च कौमारी च वैष्णवी च वाराहीऐंद्री त्वथ चण्डिका च। मेघा च माहेश्वरीनारसिंही क्रमेण सूर्यादिनभं त्रिकं च। श्रीपुत्रदा शोक भयौ धनाप्तिर्हतस्तथा राजपदाप्तिरोगौ। विद्यासुखाप्तिर्नृपतेश्च लाभः फलानि दुर्गा हवने क्रमेण।।

रक्तमोक्षण(आपरेशन) मुहूर्त:

अ. रो. मृ. पु. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत.नक्षत्रेषु सू. मं. वृ. दिनेषु शुभ तिथि लग्नेषु चन्द्र तारा अनुकूले सति शुभम्।

चिकित्सा मुहूर्त:-

अ. रो. मृ. पु. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत.नक्षत्रेषु सू. चं. मं. वृ. शु. दिनेषु शुभ तिथि लग्नेषु शुभाः।

भैषज्य भक्षण मुहूर्त:

अ. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिषु सू. चं. बु. वृ.शु. दिनेषु ३।६।९।१२ लग्नेषु शुभैः। ३।६।९।१२ राशि स्थितैः लग्नात् ७।८।१२ ग्रह रहितेषु औषधिभक्षणं शुभम्। जन्म नक्षत्रे भैषज्यभक्षणं शुभम्।

विपणि मुहूर्त:-

मृग.रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तरा३, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, नक्षत्रेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२। १३।१५ तिथिषु। सू. चं. बु. वृ. शु. श. वारेषु शुक्लपक्षे। कृष्णे १० यावत्१।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।१२ लग्नेषु लग्ने चन्द्र शुक्रे पापैः ८।१२रहितैःशुभैः२।१०।११स्थितैःशुभाः।

वस्तूनांविक्रयः मुहूर्त:-

भ.,कृ.,.आश्ले.वि.पू.३ नक्षत्रेषु २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु चं.बु.वृ.शु. दिनेषु शुभैः। १।२।४।५।७।९।१० स्थितैः पापैः ३।६।११ स्थितैः कुम्भं विना लग्नेषु शुभः।

वस्तूनांक्रयमुहूर्त:-

शुभतिथिदिनलग्नेषु अ.चि.स्वा.श्र.शत.रे.नक्षत्रेषु शुभः।

स्वामिसेवा(नौकरी) मुहूर्त:-

अश्वि. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. अभि. रे. नक्षत्रेषु। सू. बु. गु. शु. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु। लग्ने शुभयुते। सूर्ये कुजे वा १०।११ स्थे। सेव्यसेवकयोर्योनिमैत्र्यां राशीशयोश्चापि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भः शुभः।

कोषागारादौ द्रव्यस्थापनमुहूर्त: - अश्वि. मृ. पुष्य,पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। सू.मं. बु. गु. शु. दिनेषु, शुद्धसमये ३।५।८।१०।१३।१५ तिथिषु शुभग्रहयुक्तलग्नेषु शुभम्।

ऋणप्रदानमुहूर्त:(द्रव्यप्रयोगमुहूर्त:) -

स्वा. पुन. मृ. रे. चि. अनु. वि.पुष्य. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, शुभतिथिषु,१।४।७।१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे,५।८।९ ग्रहरहिते। चं.गु.शु.शु. वारेषु शुभम्।

ऋणदानं निषिद्धसमयः:- बुधवासरः, भरणी, कृ. आर्द्रा. आश्ले. मघा. पूर्वा३. चि. ज्ये. नक्षत्राणि, भद्रा पातयोगश्च।

ऋणग्रहणेनिषिद्धसमयः:- रविमंगल दिने। संक्रान्तिः। वृद्धियोगः। हस्तनक्षत्रञ्च। एषु ऋणार्पणं शुभम्। कुंभ लग्नेषु, रविगुरुशनिदिनेषु शुभतिथिषु। चैत्रभादवपौषमलमासक्षयमासभिन्न समये शुभः।

मोटर-बस-साइकिल-यानादि-चालयन मुहूर्त:

अश्वि. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. रे. नक्षत्रेषु चं. मं. गु. शु. श. दिनेषु। १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चतुर्थेष बलयुक्ते १।४।५।७।९।१० स्थिते। लग्नेशदशमेशसप्तमेश-नवमेशैरति १।४।५।७।९।१० गतैर्बलयुक्तैः। पापैः ३।६।११ स्थानस्थितैः यानादिचालनं शुभम्।

इष्टिकारम्भ मुहूर्त:

अ., रो., मृ., पुष्य, उ.३, ह., ज्ये., श्र., रे. नक्षत्रेषु। वृषसिंहवृश्चिककुम्भ लग्नेषु, रवि, गुरु, शनिदिनेषु, शुभतिथिषु, चैत्र,भाद्र, पौष, मलमास, क्षयमास भिन्नसमये शुभः।

मील चालन मुहूर्त:

शुभतिथिदिननक्षत्रेषु। १।४।७।१० लग्नेषु। शुभैः१।४।५।७।१० स्थितैः, लग्नेशधनेशसप्तमेशैकादशेशेषु बलयुक्तेषु शुभम्।

उग्रकर्म मुहूर्त::-

पूर्वा३, भ, मघा, मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा नक्षत्रेषु मं. श. दिनेषु। १।८।१०।११ लग्नेषु। १।३।४।५।९।१०।११।१४ तिथिषु शुभम्।

इन्धन स्थापन मुहूर्त:

सूर्याक्रान्तनक्षत्रात् ६ नक्षत्रेषु शुभं, ततः ६ अशुभं, ततः ४ शुभं, ततः ८ अशुभं, ततः ४ शुभम्।

पञ्चक(भदवा)विचार:-

धनिष्ठा-शतभिषा पूर्वभाद्रोत्तरभाद्रे रेवतीनक्षत्राणि पंचकसंज्ञकानि। तत्र दक्षिणदिग्गमन-गृहाच्छादन- प्रेतदाहतृणकाष्ठादि- संग्रहशय्यावितान निर्माणादिकं च त्यजेत्। तत्रापवादः-वस्वादौ शतभिग्मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके। पञ्च पञ्च घटी त्याज्या रेवतीं सकलां त्यजेत्।

दग्धतिथि-मासान्तादिविचार-

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथिः, वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी, मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी, मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्ये अष्टमी, सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति। तत्र शुभकार्यं निषिद्धम्। एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापरदिनञ्च (मासान्तमासादिसंज्ञकम्) यात्रादिसकल शुभकार्येषु त्याज्यम्।

नक्षत्र संज्ञा-

चरसंज्ञक नक्षत्र- स्वाती,पुनर्वसु,श्रवण,धनि.,शतभिषा ये नक्षत्र और सोमवार ये चर और चलसंज्ञक हैं,इनमें हाथी,घोड़ा,पर चढ़ना,फूलवारी आदि लगाना और यात्रादि तथा लघुसंज्ञक नक्षत्रोक्त कर्म करना भी शुभ है।

उग्रसंज्ञ नक्षत्र- पूर्वा३,भ.,म.और मंगलवार ये उग्र और क्रूरसंज्ञक हैं,इनमें घात अग्नि कार्य,विपादिका प्रयोग,शस्त्र वनाना तथा दारुण संज्ञक नक्षों के कार्य शुभ होते है

मिश्रसंज्ञक नक्षत्र- विशाखा,कृत्तिका और बुधवार ये मिश्र और साधरण संज्ञक हैं,इनमें अग्निकार्य और वृषोत्सर्ग,उग्रसंज्ञक नक्षत्र मे भी कार्य करना शुभ होता है। क्षिप्र और लघुसंज्ञक नक्षत्र- हस्त,अश्विनी,पुष्य,अभिजित् नक्षत्र और गुरुवार,क्षिप्र और लघुसंज्ञक हैं,इनमें दूकान लगाना,रति,शास्त्राध्ययन,आभूषण वनाना या वनवाना,चित्र रचना,६४कला सीखना।

मृदुसंज्ञक नक्षत्र- मुगशिरा,रेवती,चित्रा,अनुराधा और शुक्रवार ये मृदु और मैत्र संज्ञक हैं इनमें गीत,वस्त्र,खेल,मित्रकार्य,और आभूषण बनाना या धारण करना शुभ है।

चुल्हिकास्थापन मुहूर्त:

अ.,भ.,वि.,रो.मृ.,उ.३,कृ.,मू.,पू.षा.,ध.,आर्द्रा., नक्षत्रेषु। सू.मं.श. दिनेषु, शुभतिथि लग्नेषु शुभम्।

चुल्हिकाचक्रम् सूर्यभाद्दिनभावधि

स्थान	नं०	फलम्	स्थान	नं०	फलम्
पृष्ठे	६	धनम्	गर्भे	५	नाशः
शीर्षे	४	मृत्युभयम्	हस्ते	२	भोगः
बाहौ	८	सुखम्	चरणे	२	स्त्रीमृति

युद्धयत्रायं कुलकुलचक्रम्

संज्ञ	नक्षत्राणि	तिथय	दिनानि	फलानि
कुल	पू३,अश्वि,पुष्यम,मृ श्र,कृ,ज्ये,वि,चि	४।८।१२।१४	मं,शु.	स्थायिजयद
अकुल	भर,स्वा,अश्ले,ध.,रे.ह रो.,अनु,पुन,उत्तरा.३	१।३।५।७।९ ११।१३।१५	सू,च,वृ,श.	ययिजयद
कुलकुल	अर्द्रा,मू,अभि,श.	२।६।१०	बुधः	उभयोःसन्धिः

पल्लीपतनफलबोधकचक्रम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	जंघयोः	शुभः
ललाटे	वन्धुदर्शनम्	हस्तद्वये	लाभः
भ्रूमध्ये	सम्मानम्	हस्तद्वये	लाभः
उत्तरोष्ठे	धनहानिः	स्कन्धयोः	विजयः
अधरोष्ठे	ऐश्वर्याप्तिः	नाभौ	धनाप्तिः
नासाग्रे	रोगः	कटिभागे	पशुलाभः
दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धिः	द.मणिबंधे	हानिस्तापः
वामकर्णे	लाभः	वा.मणिबंधे	कीर्तिनाशः
नेत्रयोः	धनलाभः	हृदये	धनाप्तिः
द.भुजे	पराक्रमः	मुखे	मधुरभोजनम्
वामभुजे	राजभयम्	केशान्ते	कष्टम्
कण्ठे	शत्रुनाशः	गुल्फयोः	धनम्
स्तनयोः	सौभाग्यम्	द.चरणे	भ्रमणम्
उदरे	भूषणाप्तिः	वा.चरणे	वन्धुनिग्रहः
पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः	पादान्ते मध्ये	स्त्रीनाशः
जानुद्वये	शुभः		

वारतिथिविचार यदिपल्ली(छिपकली)

१।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक होता है। तथा सोम, बुध, गुरू, शुक्र वार में। पुष्य,अश्वि.रो.मू.पुन.उ.फा.ह. चि.स्वा. ध.रे.अनु.शत.नक्षत्रों में गिरे तो शुभ फल देता है। उपरोक्त में निर्दिष्ट सभी फल पुरूषो के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वाम अंग में विचार करना चाहिए। पुरूषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ फल होता है। यदि छिपकिली या गिरगिट शरीर की दाहिनी तरफ से चढकर वांयीं तरफ से नीचे आ जाय तो दोष नही होता। दोष की शान्ति- शान्ति के लिए वस्त्र सहित स्नान कर पंचगव्य(गाय की गोवर,मूत्र, दही,दुध,घी मिलाकर) ग्रहण करना चाहिए। शिव मन्दिर मे दीपजलाना, महामृत्युञ्जय गन्त्र का कम से कम १०८ वार जप, ॐ नमः शिवायै ॐ नमः शिवाय का ११ माला जप कर यथा योग्य भोज्यप्रदार्थ, वस्त्रादि दान करने से दोष की शान्ति हो जाता है।

स्वप्नफल(सपना)विचार-

सवप्न	फल
पत्रपढ़ना=	शुभसंदेश प्राप्ति
कुएँ का पानी=	लाभ,विजय
आकाशदेखना=	ऐश्वर्यवृद्धि, पुत्रप्राप्ती
रत्न-नगीना=	दुःख,व्यय।
अग्नि उठाना=	अनुचितधनलाभ
आगजलाकरपकड़ना=	कष्ट,अपव्यय।
सुखा अन्न खाना=	अनेक कष्ट
मेघदेखना=	दुःख,कष्ट
वादल देखना=	राज्यलाभ
अँगूठी पहनना=	धनधान्य की वृद्धि
सूखा वागदेखना=	आपत्ति आना
वालदेखना=	धनलाभ
कटेवालदेखना=	सन्तानप्राप्ति
मुर्दादेखना=	धनलाभ
जहाजदेखना=	यात्रा
समुद्रदेखना=	यश एवं धनकी प्राप्ति
शरावपीना=	अपयश हो
विल्ली,वन्दर काटना=	रोगी होना।
कमलदेखना=	उन्नति हो।
कुत्ता देखना=	उत्तममित्र मिले।
खाईदेखना=	धन एवं प्रसिद्धि मिले
टोपीदेखना=	दुःख दूर हो।
कैंचीदेखना=	घर मे कलह हो।
पूजाकरना=	पदोन्नति,लाभ।
दीपक जलतेदेखना=	आयुवृद्धि हो।
सुगन्धलगाना=	विद्वान एवं पण्डित हो।
चादर देखना=	वदनामी हो।
झरना देखना=	दुःख दुर हो।
चाँदी देखना=	धन की वृद्धि हो।
सिंहासन देखना=	सुखप्राप्त हो।

स्वप्न	फल
जहाज देखना=	परेशानी दूर हो।
अर्थीदेखना=	रोगमुक्त,आय में वृद्धि।
नदी का पानी पीना=	राज्य से लाभ।
लाल फूल देखना=	पुत्र सुख,भाग्योदय
सफेद फूल देखना=	दुःख हरण।
पत्थर देखना=	मित्र से कष्ट, दुःख
वाजार=	शुभ
सुराही=	कुसंगति।
चश्मा लगाना=	ज्ञाव मे वृद्धि
धनुष खीचना=	लाभ प्रद यात्रा।
रोटी खाना=	धनवृद्धि,पदोन्नति।
रस्सी =	कष्टकर यात्रा।
दाँत टुटना=	दुःख,झण्झट
दरवाजा=	मित्रता वढ़े।
कीचड़ में फँसना=	कष्ट, अपव्यय।
कोयला देखना=	व्यर्थ की झण्झट।
घर बनाना=	प्रसिद्धि प्राप्त हो।
लोहा=	धनलाभ।
घोड़ा=	संकट से छुटकरा।
घास का मैदान=	धन संग्रह।
घोड़ा पर चढ़ना=	पदोन्नति हो।
मोती देखना=	लड़की पैदा हो।
मुर्दे से बात करना=	मनोकामनापुरी हो
वड़ी दीवाल देखना=	सम्मान मिले।
जमीन पर विस्तर लगाना=	आयु वृद्धि
रूई देखना=	स्वस्थ रहना।
भूकम्प देखना=	सन्तान से कष्ट।
खूँटा देखना=	धार्मि कार्य मे रुचि
दतुवन करना=	सुख शान्ति,

स्वप्न फल कब मिलेगा?-रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में द्वितीय प्रहर का ८ मास में तृतीय प्रहर का ३ मास मे अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है। बहुत बड़ा वहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। **अशुभ स्वप्नदोष** शान्ति-दुष्ट स्वप्नदोष दूर करने निमित्त मृत्युञ्जय का जप होम यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, इष्टदेव पूजन,विष्णु सहस्र नाम,गजेन्द्र मोक्ष,वा चण्डी पाठ,ब्राह्मण भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देख फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

अंगस्फुरणफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तके	भूमिलाभः	कुक्षौ	प्रीतिः
ललाटे	पदलाभः	उदरे	वनम्
स्कन्धे	भोगः	लिंगे	स्त्रीसमागमः
भ्रूमध्ये	सुखम्	गुदे	वाहनाप्तिः
भ्रूवोः	सुखम्	वृषणौ	पुत्रलाभः
कपाले	शुभम्	ओष्ठे	इष्टसिद्धिः
नेत्रयोः	धनाप्तिः	हनौ	भयम्
नेत्रकोणयोः	धनम्	कण्ठे	ऐश्वर्यम्
नेत्रसमीपे	प्रियसमागम	ग्रीवायः	शत्रुभयम्
नेत्रपक्ष्मणि	राज्याप्तिः	पृष्ठे	पराजयः
नेत्रपक्ष्मणोः	विजयः	मुखे	मधुरभोजनं
नेत्रापांगे	स्त्रीलाभः	कपोलौ	व्याभिचारः
नासिकयोः	सुखम्	बाहौ	प्रियलाभः
हस्ते	धनलाभः	बाहूमध्ये	धनागमः
वक्षसि	सुखम्	वस्तिदेशे	उन्नतिः
हृदये	इष्टसिद्धिः	उरसी	वस्त्रलाभः
कटिदेशे	प्रमोदः	जानुन्योः	भयम्
नाभौ	स्त्रीनाशः	जंघे	स्वामिप्राप्तिः
कटिपार्श्वे	प्रीतिः	पादयोरुपरि	स्थानलाभः
आन्त्रिके	कोषवृद्धिः	पादतले	पराक्रमः
भगे	पतिसमागम	पादयोः	हानिः

स्वप्न नाशक यन्त्र-

गं	छं	जं	चं
छं	नं	जं	ठं
ठं	जं	ढं	घं
नं	छं	जं	टं

शुभ मुहूर्त में भोजपत्र पर अनार की कलम और अष्टगन्ध की स्याही से लिखकर सविधि पूजन कर गले में धारण करने से दुःस्वप्न दोष दूर होता है

महेन्द्रादियोगचक्रम्

चैत्रवैशाखश्रावणभाद्रमाघफाल्गुनमासेषु

रवि- मा२ अ८ व१० शू८ मा२ शू२ अ६ शू८ व६ मा२ व४ अ२
चन्द्र- मा४ शू६ व१२ मा२ अ२ शू४ व२ मा६ व२२
मंगल-व४ शू२ मा६ व४ शू२ अ४ शू४ अ६ व४ शू२ व८ अ६ शू४,अ४
बुध- व४ अ४ व६ अ४ शू२ व४ मा२ व४ शू४ अ६ शू६ व८ शू६
गुरू-अ६ शू४ व४ अ६ व६ अ४ व४ मा४ अ२ व८ अ४ शू४ अ४
शुक्र-शू२ अ१६ व८ अ२ शू२ व४ शू८ अ६ व८ अ२ शू२
शनि-शू४ व४,शू६,अ४,शू२,अ४,शू२,अ४,शू४,व४,अ४,व४,अ६ व४ अ२,शू२

ज्येष्ठ आषाढमासयोः

रवि-शू४ अ६ मा६ व६ शू२ व४ अ२ शू४ मा६ शू४ व६ शू२ मा४ व४
चन्द्र-व८ अ४ शू६ अ६ मा६ व६ अ८ व८ शू४ व४
मंगल-अ४ शू४ व४ शू२ अ४ व२ मा८ शू२ व६ अ४ व४ अ२ शू२ व२ अ६ व४
बुध-शू२ व४ अ८ व६ अ८ शू२ अ१० शू२ व८ अ६ शू२ अ२
गुरू-अ२ शू२ अ४ व८ अ६ शू२ अ६ शू४ अ४ शू२ व६ अ६ शू४ व४
शुक्र- शू४ अ१४ व८ अ२ शू२ व४ शू२ अ६ शू६ अ८ मा२ शू२
शनि-शू४ व६ अ६ शू२ व४ अ४ शू६ व४ अ६ व४ अ४ शू२ अ२ व६

आश्विन कार्तिक मार्ग पौष मासेषु

रवि- मा६ व८ अ८ शू२ मा४ शू६ व४ अ४ व४ अ६ शू२ अ४ शू२
चन्द्र- अ४ व४ अ६ व२२ अ८ व६ अ४ व६
मंगल- मा२ व६ अ१० व६ शू२ व१२ अ२ शू२ अ६ व४ मा४ व४
बुध- शू४ अ४ मा६ शू४ व६ शू२ व८ अ४ व८ अ६ शू८
गुरू- अ४ व६ अ८ शू४ व६ शू६ अ८ व४ अ६ व६ मा२
शुक्र- अ२ व६ शू६ व६ अ८ व१४ शू४ मा२ अ६ मा६
शनि- मा४ शू४ अ८ शू८ अ४ शू२ अ११ शू४ व७ मा२ शू६

माहेन्द्रादि योग फल-

न वार तिथि नक्षत्रं न योगः करणन्तथा । शिवयात्रां समासाद्य देवकार्यं विचारयेत्।।
माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम्। वक्रे कार्यविनाशः स्याच्छून्ये मरणं ध्रुवम्।।
ज्योतिषां ग्रह शास्त्राणां सारमुद्धृत्य यत्नतः। क्रियते मिहिरेणेदं नाराणां हितकाम्यया।।
अयं रव्यादिवारेषु महेन्द्रादियोगः प्रोक्तघटप्रमाण कालेन वर्तांते भवतीति सफलं चक्रे विलोकनीयम्।।

माहेन्द्रादिचक्र के प्रयोग की विधि- चैत्र वैशाख श्रावण भाद्र माघ फाल्गुन मास हो तो रविवार को सूर्योदय के पश्चात् पहला २ घटी महेन्द्रयोग है, फिर दो घटी अमृतयोग आगे १० घटी वक्रयोग आदि होगा। वक्र एवं शून्य योग अशुभ है, जबकि महेन्द्र एवं अमृतयोग शुभ है। यदि अति आवश्यक हो तो यात्रा मुहूर्त न होने पर भी महेन्द्र एवं अमृत योगों में यात्रा की जा सकती है।

यात्रा में चौघड़िया मुहूर्त्त

उद्वेगश्चामृतो रोगो लाभः मृतिः। सूर्यः शुक्रो बुधश्चन्द्रो मन्दो जीवो धरासुतः।।
सूर्यादी क्रमतो ज्ञेयो रात्री पञ्चमगो हयपट्। सूर्यो बृहस्पतिश्चन्द्रः शुक्रो भौमः शनिर्बुधः।।

शोर्घता में कोई मूहूर्त न मिलता हो तथा अचानक यात्र करनी पड़े, तो उस समय चौघड़िया मूहूर्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर, अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे का रात्रि हो, तब एक चौघड़िया १.३०(डेढ़)घण्टा अर्थात् पौने चार घटी का होगा।

जिस रोज दिन में यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टमांश घटी पल का घण्टा मिनिट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जायें, तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात होते जावेंगे। उस आठों चौघड़ियों में कौन सा ग्राह्य और कौन सा त्याज्य है, यह **दिन की चौघड़ीया** के चक्र में उस दिन के वार के सामने चक्र में देखकर जान लें। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो, तो उसदिन के रात्रि मान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा-मिनिट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमशः रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जायेगा।

शुभ,लाभ,अमृत एवं चंचल शुभ होते हैं। काल,रोग एवं उद्वेग अशुभ होत हैं।

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल
चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल
शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चंचल	काल

अर्धप्रहरा बोधक चक्र

दिन	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दिवा	४।५	२।७	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रि	४।६	४।७	०।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

सर्व कार्य सिद्धि के लिये होरा मुहूर्त-

होरा वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
चन्द्र	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल

सर्व कार्य सिद्धि के लिये होरा मुहूर्त्त- सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त पूर्ण फलदायक और अचूक हैं। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा-** टेण्डर देन व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चन्द्रमा की होरा-** सब कार्यो के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा-**युद्ध यात्रा कर्ज लेने देने, सभा सोसायटी में आना जाना और मुकदमा कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा-** में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन ❖

❖व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थन पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा-** विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ो से मिलना, कोष संग्रह, नविन काव्या लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा-** यात्रा भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्य वर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा-** भूमि मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं। प्रत्येक होरा एक घण्टे का होता है । जिस दिन जो वार होता है, उस वार के आरम्भ(अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा उसी वार को होरा होता है इस के बाद एक घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता हैं। इसी प्रकार दूसरे होरे छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता हैं। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले बार के सूर्योदय समय उसी अगले वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए उपयुक्त होरा लिखि है, उस के अनुसार ही उस होरा में(१घण्टे) में वह कार्य करेंगे, तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियो ने होरा को **क्षणवार** कहा है। वार से भी क्षण वारमें प्रधानता मानी गयी है। इसलिए यदि वार और क्षणवार दोनो अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नही हो तो क्षणवार अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। जैसे- पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो, तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इस लिए समय सोम की होरा(क्षणवार) हो, उस समय

नष्ट(खोई-हुई) वस्तु ज्ञान चक्र

संज्ञा	नक्षण	लाभालाभ	दिशा
अन्धाक्ष	रो.,पुष्य,उ.फा.,वि.,पू.षा.,ध.,रे.	शीघ्रलाभ	पूर्व में
मन्दाक्ष	मृ.,श्ले.,ह.,अनु.,उ.षा.,श.,अश्वि.	प्रयत्न से लाभ	दक्षिण में
मध्याक्ष	आर्द्रा,म.,चि.,ज्ये.,अभि.,पू.भा.,भ.	दूर श्रवण मात्र	पश्चिम में
सुलोचन	पुन.,पू.फा.,स्वाति,मू.,श्र.,उ.भा.,कृ.	अलाभ	उत्तर में

नष्टवस्तुज्ञानम् -

प्रश्नकालीन तिथि वार नक्षत्र और लग्नांक जोड़ में तीन और जोड़कर पाँच से भाग दें।१ शेष बचे तो भूमि पर प्राप्य,२ बचे तो जल में अप्राप्य,३ बचे तो किसी ऊँचे स्थान पर अप्राप्य,४ बचे तो नष्ट,५ शेष में केवल शोक सन्ताप ही होगा।

सिद्धादियोगचक्र तिथि-नक्षत्र-वशेन

दिनानि	रविः	सोमः	कुजः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः
सिद्धियोगाः	३।८।१३	१।६।११	३।८।१३	२।७।१२	५।१०।१५	१।६।११	४।९।१४
अमृतयोगाः	५।१०।१५	५।१०।१५	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	१।६।११
सर्वार्थ- सिद्धियोगाः	अश्वि.मू.पुष्य. हस्त.	रो.मृ.अनु. श्रवण.पुष्य	अश्विनी	रोहि.मृ. हस्त अनु.	अश्वि.पुन. पु.अनु.रे.	अश्वि.पुन. अनु.श्र.रे.	रोहिणी स्वा.श्रवण.
मृत्युयोगाः	१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५
राज्यप्रदयोगः	००	०० ००	४।९।१४	०० ००	०० ००	०० ००	४।९।१४
मध्यमयोगः	१२	११	१०	३	६	२	७

ताराचक्रम्

तारा	जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेमः	वधः	साधकः	प्रत्यरि	मित्रम्	अतिमित्रम्
नक्षत्राणि	१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
फलानि	मध्यमम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	शुभम्
दानानि	शाकम्	००	गुडम्	००	तिलाः	००	लवणम्	००	००

भद्रा वासः- कुंभ,मीन,कर्क,सिंह-इन राशियों में चन्द्रमा रहें तो मृत्युलोक में,मेष, वृष,मिथुन और वृश्चिक के चन्द्रमा में स्वर्ग में, कन्या,तुला, धनु और मकर के चन्द्रमा में पाताल में भद्रा रहती है। भद्रा जहाँ रहती है वहाँ ही इसका फल भी होता है।

भद्रावास फलः-

स्वर्गे च लभते सौख्यं, पाताले च धनागमम्।
मर्त्यलोके भवेन्त्यिन्तां एवं भद्राफलोदितम्।।

स्वर्ग में भद्रा रहे तो शुभ कारक और पाताल में रहें तो धनागमन करने वाला होता है। यदि भद्रा मृत्युलोक में रहें तो सभी कार्यों को विनाश करने वाला होता है।

शिववास एवं फल

तिथिं च द्विगुणीं कृत्य बाणैः संयोजयेत्ततः। सप्तभिस्च हरेद्भागं शिववासं समुद्दिशेत्।।
एकेनवासः कैलाशे द्वितीये गौरी सन्निधौ। तृतीये वृषभारूढः सभायां च चतुर्थके।।
पंचमे भोजने चैव क्रीडायांषष्ठमे तथा। श्मशाने सप्तमे च शिववासः इतीरितः।।

फलम्- कैलाशेलभते सौख्यं गौर्यां च सुखसम्पदः। वृषभेऽभीष्ट सिद्धिः स्यात् सभा सन्तापकारिणी।। भोजने च भवेत् पीड़ा क्रीडायां कष्टमेव च। श्मशाने मरणंज्ञेयं फलमेव विचारयेत्।।

शिववास तिथि

शुक्लपक्ष- २, ५, ६, ९, १२, १३
कृष्णपक्ष- १, ४, ५, ८, ११, १२, ३०
विधि-(शुक्लादितिथिसं.X२+५)÷७=१।२।३ शेष शुभ, अन्याशुभ।

अग्निवास चक्र

शुक्लपक्ष में				कृष्णपक्ष में				र.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
१	५	९	१३	२	६	१०	१४	भू.	भू.	दि.	पा.	भू.	भू.	दि.
२	६	१०	१४	३	७	११	३०	भू.	दि.	पा.	भू.	भू.	दि.	पा.
३	७	११	१५	०	४	८	१२	दि.	पा.	भू.	भू.	दि.	पा.	भू.
०	४	८	१२	१	५	९	१३	पा.	भू.	भू.	दि.	पा.	भू.	भू.

अग्निवास

सैकातिथिर्वारयुताकृताप्ताः शेषे गुणेऽभ्रे भुविवह्निवासः
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशो दिवि भूतले च।।

शुक्लादि पक्ष से वह तिथि जिसमें कर्म हो उसकी संख्या ५ या १० जो भी हो उसमें वर्तमान रव्यादि वार की संख्या जोड़कर १ संख्या और जोड़ देनी चाहिये। फिर ४से भाग देने पर यदि ३ या ०(शून्य)शेष रहे तो अग्नि का वास भूमि में होता और वह सुखकारी होता है। यदि १ या २ शेष रहे तो अशुभ अर्थात् सुख का लेश भी नहीं होता।

अर्थात्-(शुक्लादितिथिसं.+सूर्यादिदिनसं.+१)÷४ =३,० शेष शुभ

अग्निवास की विशेषताः-

विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चुड़ोपनीतिग्रहणेयुगादेः।
दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिंत नीयम्।।

विवाह,यात्रा,व्रत,यज्ञ,नित्यनैमित्तिककार्य, यज्ञोपवीत,ग्रहण, रोग,पीड़ा तथा दुर्गापूजन आदि मे अग्निवास का विचार नहीं करें।

अथ वाजसनेयि सन्ध्या- वन्दन विधि

स्नान कए शुद्ध वस्त्र पहिरि पवित्र आसन पर सुविधानुसार पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुख वा ईशान कोणाभिमुख(पूर्वोत्तर कोणाभिमुख) बैसि चानन कए दहिन हाथक अनामिका आंगुर मे कुशक पवित्र,सोना अथवा चाँदीक अंगूठी पहिरि हाथ मे तेकुशा ग्रहण कए आ जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि आचमन करी

१. ॐ केशवाय नमः,२. ॐ नारायणाय नमः, ३. ॐ माधवाय नमः। हाथ धोली ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ हृषीकेशाय नमः। विनियोग मन्त्र-जल लय- ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णुर्देवता, गायत्रीच्छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः। पुनः हाथ में जल लय अपन शरीर क सिक्त करी-ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः। अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सभ वस्तु के सिक्त करी।

तकर बाद दहिन हाथक अनामिका आँगुर में कुशक पवित्री(अंगुठी) धारण करी- ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।। पुनः जल लय आसन के सिक्त करी(आसन पर छींटी)- ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः। दहिन हाथ सँ आसन स्पर्श कय मन्त्र पढ़ि आसन पवित्र करी- ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

शिखा स्पर्श करी- चिद्रूपिणि ! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

चन्दन करी- ॐ चन्दनं वन्द्यते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम्। आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा।

तकर बाद कुश आ जल लय सन्ध्याक संकल्प करी -ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ अद्य उत्पात्तदुरितक्षयपूर्वक- श्रीपरमेश्वर- प्रीत्यर्थं संध्योपासनं करिष्ये।

जल लय- अघमर्षण सूक्तस्यायमर्षण ऋषि रनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्व मेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोध्यजायत। ततोरात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः।। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।। एहि मन्त्रे जल के अभिमन्त्रित कए ओहि जल सँ तीन बेर आचमन करी।

तदुत्तर बाद निम्न मन्त्रे जल के अभिमन्त्रित कए रक्षा हेतु ओहि जल सँ देह के दहिना सँ पाछू दिश दए वेष्टित करी- ॐ आपो मामभिरक्षन्तु।

• प्राणायाम सँ पूर्व ऋष्यादिक स्मरण करी - ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दो ऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती-पङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्य बृहस्पतिवरुणेन्द्र- विश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः।

गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता प्राणायामे विनियोगः। शिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्माग्नि-वायुसूर्या देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।

ई विनियोग पढ़ैत ऋष्यादि स्मरण कय आसन स्थिर कय आँखि मूनि मौन भय अगिला मन्त्र तीन-तीन बेर अथवा एक-एक बेर पढ़ैत पूरक, कुम्भक आ रेचक नामक प्राणायाम करी-

•प्राणायाम मन्त्रः- ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

१.दहिना हाथक अँगूठा सँ नाकक दहिन पूड़ाकें बन्दकय वाम पूड़ा सँ वायु ग्रहण करैत नाभिमे श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुक ध्यान करैत पूरक नामक प्राणायाम करी।

२.द्वितीय अनामिका आंगुर सँ वाम पूड़ा कें दाबि दीर्घकालधरि वायुकें धारण कनै हृदयसँ कमलासनस्थ रक्तवर्ण चतुर्भुज ब्रह्माक ध्यान करैत कुम्भक नामक प्राणायाम करी।

३.तृतीय दहिन पूड़ा सँ अंगूठा छोड़ाय शनैः शनैः वायु छोड़ैत, ललाटमे शुक्लवर्ण त्रिनेत्र शिवक ध्यान करैत रेचक नामक प्राणायाम करी।

• प्रातः कालीन सन्ध्याक समय-जल लय- सूर्यश्चमेति ब्रह्माऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता प्रातराचमने विनियोगः।

सूर्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्चदुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।। एहि मन्त्रे प्रातः कालमे आचमन करी।

तदुत्तर वाम हाथ मे जल लए विनियोग वाक्य पढ़ि दहिन हाथक अंगुष्ठ आ अनामिका आंगुर सँ एक-एक मन्त्र पढ़ैत कुल सात मन्त्र सँ सात बेर माथ पर जल प्रक्षेप करी- ॐ आपो हिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

१.ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। २.ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३.ॐ महे रणाय चक्षसे। ४.ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५. ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६.ॐ उशतीरिव मातरः। ७.ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ८.ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९.ॐ आपो जनयथा च नः। तदुत्तर दहिन हाथ में जल लए एक बेर विनियोग वाक्य आ तीन बेर "द्रुपदादिव" इत्यादि मन्त्र पढ़ि ओहि अभिमन्त्रित जल के देह पर सिक्त करी- द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवताः सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः।

मन्त्रः-ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।

तदुत्तर दहिन हाथक तरहत्थी मे जल लए नाक मे जलक स्पर्श करैत श्वास धारण कएने निम्नलिखित मन्त्र पढ़लाक बाद ओहि जल कें अपन वाम भाग मे बिना देखने नीचा खसा दी- ॐ अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्या-चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः।। तदुत्तर दहिन हाथ मे जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि ओहि जल सँ आचमन करी- ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।।

तदुत्तर सूर्यसम्मुख ठाढ़ भए अगिला मन्त्रे अर्घ्य दी-

ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं,भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् । एहि मन्त्र सँ सूर्य के अर्घ्य प्रदान कए प्रातः आ सायं काल में बद्धाञ्जलि भए आ मध्याह्न काल मे ऊर्ध्वबाहु भए निम्नलिखित मन्त्र सँ सूर्योपस्थान करी- • ॐ उद्वयमिति हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

• उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उदुत्यञ्जातवेदसं देवँवहन्ति केतवः दृशे विश्वाय सूर्यम्।। चित्रमिति कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

• ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याऽग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ग्वं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।

• ॐ तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीत-पुर उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

• ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

• गायत्री जप विधि :-

षडङ्गन्यासः- गायत्री मन्त्रकें जपसँ पूर्व षडङ्गन्यास करबा क विधान अछि। अतः आगु लिखल एक-एक मन्त्रकें उच्चारण करैत नीचा देल क्रमशः हृदयादि अंगक स्पर्श करी। १.ॐ हृदयाय नमः। २.ॐ भूः शिरसे स्वाहा ३. ॐ भुवः शिखायै वषट्। ४.ॐ स्वः कवचाय हुम्। ५.ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्रत्रयाय वौषट् ६. ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्।

तदनन्तर कलजोड़ि ई विनियोग वाक्य पढ़ी-

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः अग्निर्देवता सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

व्याहृति-मन्त्रस्य प्रजापति-ऋषिर्गायत्री उष्णिग् अनुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि वाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः। गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

तदुत्तर कलजोड़ि गायत्रीक ध्यानमन्त्र पढ़ी-

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च शोभिता।। आदित्यमण्डलान्तस्था ब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।।

अगिला मन्त्रें गायत्रीक विनियोग तदुत्तर आवाहन करी- तेजोऽसीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्रीच्छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः।

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्य-मृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।।आवाहन क' निम्नलिखित विनियोग पढ़ी अगिला मन्त्रे प्रणाम करी- परोरजस इति विमल ऋषिरनुष्टुप् छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थापने विनियोगः।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे। नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसे सावदो मा प्रापत्।

ॐ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि। गायत्रीच्छन्दसां मातजपे मे सन्निधीभव।।

तदुत्तर न्यूनतम १० बेर अथवा यथासाध्य १०८ बेर गायत्री मन्त्र जपी- ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।।

तदनन्तर एहि मन्त्र सँ कलजोड़ि भगवती गायत्री कें जप समर्पित करी- ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

तदनन्तर अर्घा मे जल लए ओहि जल सँ अगिला मन्त्रें गायत्री देवीक विसर्जन करी-ॐ उत्तरे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतवासिनि। ब्रह्मणा समनुज्ञाते गच्छ देवि यथासुखम्।।

तदनन्तर अर्घा वा हाथ मे जल लए अगिला मन्त्रें सूर्य के अर्घ्य दए प्रणाम करी-ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् ! भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।

एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्याय नमः।

तदुत्तर सूर्य के प्रणाम करी-

ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

।। इति सन्ध्या वन्धन विधि।।

नोट- तर्पणाधिकारी व्यक्ति तर्पण कय सूर्य के अर्घ्य देथि।

वाजसनेयि तर्पण विधि-

१.देवतर्पण- नदी या पोखरि में तीतले वस्त्र पहिरि नाभि तक पानि में ठाढ़ भय या स्थल पर तर्पण करबाक हो तँ सुक्खल वस्त्र धारण कय आसन पर पूब मुँह बैसि दहिन हाथ में तेकुशा लय बाम हाथ में उपयमन अर्थात् जुट्टी सन गुहल कुश (विरणी) लय दहिन हाथ में यव ओ जल लय देव तीर्थ सँ नीचाँ में राखल कुश पर जल खसबैत तर्पण करी-

ॐ तर्पणीया देवा आगच्छन्तु। ॐ ब्रह्मास् तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्।

ॐ देवाः यक्षास्तथा नागाः गन्धर्वाऽप्सरसोऽसुराः। क्रूराः सर्पाः सुपर्णाश्च तरवो जम्भकाः खगाः।। विद्याधराः जलाधाराः तथैवाकाशगामिनः। निराधाराश्च ये जीवाः पापे ऽधर्मरताश्चये।। तेषामाप्यायनायै तद् दीयते सलिलं मया।।

तकर बाद उत्तराभिमुख आ नीवीती(यज्ञोपवीत कें कण्ठावलम्बित कए) भए कायतीर्थ(कनिष्ठा आंगुलिक मूल भाग) सँ सनकादि ऋषि समक तर्पण एक-एक बेर जल दए करी-ॐ सनकादय आगच्छन्तु (एहि मन्त्र सँ आवाहन करी)

ॐ सनकश्च सनन्दश्च तृतीयश्च सनातनः। कपिलश्च आसुरिश्चैव वोढुः पञ्चशिखस्तथा।। सर्वे ते तृप्तिमायान्तु मद् दत्तेनाऽम्बुना सदा।।

ऋषि तर्पण-

पुनः पूब मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय देव तीर्थ(अंगुली क अग्रभाग) सँ मरीचि आदि दस ऋषिक तर्पण एक-एक बेर जल दैत करी- ॐ मरीच्यादय आगच्छन्तु। आवहन करी।

ॐ मरीचिः तृप्यताम्। ॐ अत्रिः तृप्यताम्। ॐ अङ्गिराः तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यः तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुः तृप्यताम्। ॐ प्रचेताः तृप्यताम्। ॐ वशिष्ठः तृप्यताम्। ॐ भृगुः तृप्यताम्। ॐ नारदः तृप्यताम्।

दिव्य-पितृ तर्पण

दिव्य-पितृ तर्पण-दक्षिणाभिमुख आ अपसव्य भए भूमि पर रही तऽ वाम जांघ के खसेने दक्षिणाग्र तेकुशा पर अथवा सराय मे राखल जल मे, जल मे रही तऽ ठाढ़ तिल लए पितृतीर्थ(अंगुष्ठ आ तर्जनीकक मध्यक मूल भाग) सं हाथ में मोड़ा राखने तिलसहित अथवा विना तिलो के तीन-तीन वेर जल दैत अग्निष्वात आदिक तर्पण करी।

ॐ अग्निष्वात्तादय आगच्छन्तु। आवाहन करी।

ॐ अग्निष्वात्तास्तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ सौम्याः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ हविष्मन्तः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ उष्मपाः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ सुकालिनः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ वर्हिषदः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ आज्यपाः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

यम तर्पण

ऊपर मे वर्णित विधि के अनुसार १४ यमक तर्पण करी।

ॐ यमादय आगच्छन्तु। आवहन करी।

ॐ यमाय नमः। ॐ धर्मराजाय नमः। ॐ मृत्यवे नमः। ॐ अन्तकाय नमः। ॐ वैवस्वताय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः। ॐ औदुम्बराय नमः। ॐ दध्नाय नमः। ॐ नीलाय नमः। ॐ परमेष्ठिने नमः। ॐ वृकोदराय नमः। ॐ चित्राय नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः। तकर वाद ॐ चतुर्दशैते यमाः स्वस्ति कुर्वन्तु तर्पिताः। ई वाक्य पढ़ी।

पितृ-तर्पण-

(उपर्युक्त विधि सँ पितृ-तर्पण करी। पुरुष पक्ष के ३-३ वेर आ मातृपक्ष के १-१ वेर तिलमिश्रित अथवा तिलरहित जल दी। तिलक अभाव मे "सतिलम्" नहि पढ़ी।) अगिला मन्त्र सँ सब पितरकें तीन-तीन अञ्जलि जल दी

ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु अपोऽञ्जलिम्।

पितर क आवाहन क अगिला मन्त्रे तर्पण करी-

ॐ अद्य अमुक गोत्रः(अपन गोत्र) पिता अमुक (पिताक नाम)शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा (ई पांढ़ि पहिल वेर जल दी)। तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि दोसर वेर जल दी), पुनः तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि तेसर वेर जल दी) एहिना आगुओ सभ मे। ॐ अद्य अमुकं गोत्रः(अपन गोत्र) पितामहः अमुक (बाबा क नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ३ वेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(अपन गोत्र) प्रपितामहः अमुक (प्रपितामहक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।३वेर।। अन्त मे-"ॐ तृप्यध्वम्-३" ई वाक्य३ वेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नानाक गोत्र) मातामहः अमुक (नानाक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा ३ वेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नाना क गोत्र) प्रमातामहः अमुक(परनानाक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा३ वेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नानाक गोत्र) वृद्धप्रमातामहः अमुक (वृद्धप्रमातामहक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ।। अन्त मे ॐ तृप्यध्वम्- ई वाक्य ३ वेर पढ़ि जल दी।।

स्त्रीपक्ष में १-१ अंजलि जल दी-

ॐ अद्य अमुक गोत्रा (अपन गोत्र) माता अमुकी (माताक नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १ वेर।। ॐ अद्य अमुक (अपन गोत्र) गोत्रा पितामही अमुकी (दादी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । ॐ अद्य अमुक (अपन गोत्र) गोत्रा प्रपितामही अमुकी (पर दादी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। अन्त मे "ॐ तृप्यध्वम्" ई वाक्य एक वेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुकी (नानाक गोत्र) गोत्रा मातामही अमुकी (नानी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुकी(नानाक गोत्र)गोत्रा प्रमातामही अमुकी (पर नानी नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्य स्वधा-१। ॐ अद्य अमुकी(नानाक गोत्र)गोत्रा वृद्धप्रमातामही अमुकी (वृद्ध परनानी कनाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । अन्त मे "ॐ तृप्यध्वम्" ई वाक्य एक वेर पढ़ि जल दी।।

एहि तर्पणक वाद अपन अन्य समवन्धी लोकनि के गोत्र ओ नाम लय अपना रुचि अनुसारें तर्पण करी। तकर बाद आँजुर में जल लय अपन वन्धु अबन्धु एवं अन्य जन्मक बन्धु के जल दी-

ॐ येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि वान्धवाः।
ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति।।

पुनः नीचाँ लिखल मंत्र पढ़ि स्नान कयल भिजलाहा कटिवस्त्रक (धोती) जल तेकुशा पर दक्षिण मुँहे मंत्र पढ़ि पितृ तीर्थ सँ गाड़ि अपना वंशक अतृप्त पित्र के दी-

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।।

एहि मंत्रें वस्त्रक जल कुश पर गाड़ि पूव मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय सूर्य के तीन वेर अर्घ दी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् ! भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।
एषो अर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।१।।

ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते।
अनुकम्पय माम् भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।
एष द्वितीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।२।।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन् नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। एष तृतीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।३।। अर्घक बाद हाथ में लाल फूल लय सूर्य के प्रणाम करी-

ॐ जपा कुसुम संकाशं कास्य पेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

इति वाजसनेयि तर्पण समाप्तिः

छन्दोगक तर्पण विधि-

दहिन हाथ मे तेकुशा लए सव्य(वामस्कन्धस्थापित यज्ञोपवीती) भए वाम हाथ के दहिनं हाथक नीचा भाग मे स्पर्श कयने भूमि पर रही तऽ पूव, उत्तर अथवा ईशानकोणाभिमुख बैसि दहिना जांघ के खसेने पवित्र भूमि पर राखल तकुशा पर अथवा एक टा सराय मे राखल जल मे(ओहि जल मे विना तेकुशा राखने), यदि जल मे ठाढ़ रही तऽ पूर्वाभिमुख भए देवतीर्थ (अंगुलिसभक अग्रभाग) सँ पहिने देवतर्पण करी। यथा परिस्थिति तेकुशा पर अथवा जल मे तीन वेर जल दैत पढ़ी- **ॐ देवास्तृप्यन्ताम्** । तकर बाद उत्तराभिमुख आ नीवीती(यज्ञोपवीत कें कण्ठावलम्बित कए) भए कायतीर्थ(कनिष्ठा आंगुलिक मूल भाग) सँ नीचा लिखल मन्त्र सँ ऋषि तर्पण तीन वेर जल दैत करी -**ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्**। पुनः पूर्वाभिमुख भए प्रजापत्य तीर्थ(कनिष्ठा अंगुलीक मूल भाग) सँ नीचा लिखल मन्त्र सँ प्रजापति तर्पण एक वेर जल दैत करी-**ॐ प्रजापतिस्तृप्यन्ताम्।**

दक्षिणाभिमुख आ अपसव्य भए भूमि पर रही तऽ वाम जांघ के खसेने दक्षिणाग्र तेकुशा पर अथवा सराय मे राखल जल मे, जल मे रही तऽ ठाढ़े तिल लए पितृतीर्थ(अंगुष्ठ आ तर्जनीकक मध्य मूल भाग) सँ हाथ मे मोड़ा राखने तिलसहित अथवा विना तिलो पुरुष पक्ष के ३-३ वेर आ मातृपक्ष के १-१ वेर तिलमिश्रित अथवा तिलरहित जल दी। तिलक अभाव मे "सतिलम्" नहि पढ़ी।)

अगिला मन्त्र सँ सब पितरकें तीन-तीन अञ्जलि जल दी **ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु अपोऽञ्जलिम्।**

पितर क आवाहन क अगिला मन्त्रे तर्पण करी-

ॐ अद्य अमुक गोत्रः(गोत्र) पिता अमुक (पिताक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा (ई पढ़ि पहिल वेर जल दी)।तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि दोसर वेर जल दी), पुनः तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि तेसर वेर जल दी) एहिना आगुओ सभ मे। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(अपन गोत्र) पितामहः अमुक(वावा क नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ३ वेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(अपन गोत्र) प्रपितामहः अमुक (प्रपितामहक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।३वेर।। अन्त मे-"ॐ तृप्यध्वम्-३" ई वाक्य३ वेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नानाक गोत्र) मातामहः अमुक (नानाक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा ३ वेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नाना क गोत्र) प्रमातामहः अमुक(परनानाक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा३ वेर।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः(नानाक गोत्र) वृद्धप्रमातामहः अमुक (वृद्धप्रमातामहक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ।। अन्त मे ॐ तृप्यध्वम्- ई वाक्य ३ वेर पढ़ि जल दी।।

स्त्रीपक्ष मे १-१ अंजलि जल दी-

ॐ अद्य अमुकी गोत्रा (अपन गोत्र) माता अमुकी (माताक नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १ वेर।। ॐ अद्य अमुक (गोत्र) गोत्रा पितामही अमुकी (दादी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । ॐ अद्य अमुक (गोत्र) गोत्रा प्रपितामही अमुकी (पर दादी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा- १। अन्त मे "ॐ तृप्यध्वम्" ई वाक्य एक वेर पढ़ि जल दी।।

ॐ अद्य अमुकी (नानाक गोत्र) गोत्रा मातामही अमुकी (नानी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुकी(नानाक गोत्र)गोत्रा प्रमातामही अमुकी (पर नानी नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्य स्वधा-१। ॐ अद्य अमुकी(गोत्र)गोत्रा वृद्धप्रमातामही अमुकी(वृद्ध परनानी कनाम)देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा - १। अन्त मे "ॐ तृप्यध्वम्" ई वाक्य एक वेर पढ़ि जल दी।।

एहि तर्पणक बाद अपन अन्य समवन्धी लोकनि के गोत्र ओ नाम लय अपना रुचि अनुसारें तर्पण करी। तकर बाद आँजुर में जल लय अपन वन्धु अवन्धु एवं अन्य जन्मक वन्धु के जल दी-

ॐ येऽवान्धवा वान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि वान्धवाः।
ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति।।

पुनः नीचाँ लिखल मंत्र पढ़ि स्नान कयल भिजलाहा कटिवस्त्रक (धोती) जल तेकुशा पर दक्षिण मुँहे मंत्र पढ़ि पितृ तीर्थ सँ गाड़ि अपना वंशक अतृप्त पित्र के दी-

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।।

एहि मंत्रें वस्त्रक जल कुश पर गाड़ि पूव मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय सूर्य के तीन वेर अर्घ दी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् ! भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।
एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।१।।

ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते।
अनुकम्पय माम् भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।
एष द्वितीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।२।।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन् नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। एष तृतीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः।।३।। अर्घक बाद हाथ में लाल फूल लय सूर्य के प्रणाम करी-

ॐ जपा कुसुम संकाशं कास्य पेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

इति छन्दोगानां तर्पण समाप्तिः

छन्दोग सन्ध्या- वन्दन विधि

स्नान कए शुद्ध वस्त्र पहिर पवित्र आसन पर सुविधानुसार पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुख वा ईशान कोणाभिमुख(पूर्वोत्तर कोणाभिमुख) बैसि चानन कए दहिन हाथक अनामिका आंगुर मे कुशक पवित्री अथवा सोना अथवा चाँदीक अंगूठी पहिरि अथवा हाथ मे तेकुशा ग्रहण कए आ जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि आचमन करी।

१. ॐ केशवाय नमः,२. ॐ नारायणाय नमः, ३.ॐ माधवाय नमः। हाथ धोली ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ हृषिकेशाय नमः। मार्जन विनियोग मन्त्र-जल लय- ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णुर्देवता, गायत्रीच्छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः। पुनः हाथ मे जल लय अपन शरीर क सिक्त करी-ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः। अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सभ वस्तु के सिक्त करी। तकर बाद दहिन हाथक अनामिका आँगुर में कुशक पवित्री(अंकुठी) धारण करी-ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यं छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।। पुनः जल लय आसन के सिक्त करी(आसन पर छींटी)- ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः। दहिन हाथ सँ आसन स्पर्श कय मन्त्र पढ़ि आसन पवित्र करी-

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

शिखा स्पर्श करी- चिद्रूपिणि ! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

चन्दन करी-ॐ चन्दनं वन्द्यते नित्यं पवित्रं पाप नाशनमूआपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा। तकर बाद कुश आ जल लय सन्ध्याक

• सकल्प करी - ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ अद्य... उपात्तदुरितक्षयपूर्वक-श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं संध्योपासनं करिष्ये।

आचमन- अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतञ्च सत्यचाभीद्धत्तपसोध्यजायत। ततोरात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः।। समुद्रादर्णवादधि सम्वत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।।

एहि मन्त्रे जल के अभिमन्त्रित कए ओहि जल सँ तीन बेर आचमन करी।

तकर बाद निम्न मन्त्रे जल के अभिमन्त्रित कए रक्षा हेतु ओहि जल सँ देह के दहिना सँ पाछू दिश दए वेष्टित करी- ॐ.आपो मामभिरक्षन्तु।

तदुत्तर •प्राणायाम सँ पूर्व ऋष्यादिक स्मरण करी-ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवताः उपनयने प्राणायामे विनियोगः।

शिरसः प्रजापतिऋषिः ब्रह्माग्नि-वायुसूर्यो देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।

ई विनियोग पढ़ैत ऋष्यादि स्मरण कय आसन स्थिर कय आँखि मूनि मौन भय अगिला मन्त्र तीन-तीन बेर अथवा एक-एक बेर पढ़ैत पूरक, कुम्भक आ रेचक नामक प्राणायाम करी-

•प्राणायाम मन्त्रः- ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

१.दहिना हाथक अँगूठा सँ नाकक दहिन पूड़ाकेँ दाबि वाम पूड़ा सँ वायु ग्रहण करैत नाभिमे श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुक ध्यान करैत पूरक नामक प्राणायाम करी।

२.द्वितीय अनामिका आंगुर सँ वाम पूड़ा केँ दाबि वायुकेँ धारण कने हृदयसँ कमलासनस्थ रक्तवर्ण चतुर्भुज ब्रह्माक ध्यान करैत कुम्भक नामक प्राणायाम करी।

३.तृतीय दहिन पूड़ा सँ अंगूठा छोड़ाय शनैः शनैः वायु छोड़ैत, ललाटमे शुक्लवर्ण त्रिनेत्र शिवक ध्यान करैत रेचक नामक प्राणायाम करी।

प्राणायामक बाद तीन बेर आचमन कए वाम हाथ मे जल राखि तेकुशा लए चारि बेर मार्जन करी अर्थात् ओहि जल सँ माथ कें सिक्त करी-

• पहिल बेर- ॐ ई पढ़ी। •दोसर बेर- भूर्भुवःस्वः ई पढ़ी।

• तेसर बेर- ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ई पढ़ी।

• चारिम बेर - ॐ आपो हिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

१. ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। २. ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३. ॐ महेरणाय चक्षसे। ४. ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५. ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६.ॐ उशतीरिव मातरः। ७.ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ८.ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९.ॐ आपो जनयथा च नः ई पढ़ी। दुत्तर दहिन हाथक तरहत्थी मे जल लए नाक मे जल के स्पर्श करैत श्वास धारण कएने निम्नलिखित मन्त्र पढ़लाक बाद ओहि जल के अपन वाम भाग में बिना देखने नीचा खसा दी-

ॐ अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत| ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्- विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्या-चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः।। तदुत्तर दहिन हाथ मे जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि ओहि जल सँ आचमन करी- ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।।

तदुत्तर सूर्यसम्मुख ठाड़ भए अगिला मन्त्रे अर्घ्य दी- ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् । एहि मन्त्र सँ सूर्य के अर्घ्य प्रदान कए प्रातः आ सायं काल में बद्धाञ्जलि भए आ मध्याह्न काल मे ऊर्ध्वबाहु भए निम्नलिखित मन्त्र सँ सूर्योपस्थान करी-

• प्रातः' कालीन सन्ध्याक समय मे सूर्योपस्थापन :-

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याऽग्नेः।

आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।

ॐ उद्वयं तमसः परिस्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

(नोट तर्पणाधिकरी व्यक्ति तर्पण कयलाक बाद गायत्री मन्त्रक जप करथी)

• गायत्री जप विधि :-

षडङ्गन्यासः- गायत्री मेन्त्रकें जपसँ पूर्व षडङ्गन्यास करवा क विधान अछि। अतः आगु लिखल एक-एक मन्त्रकें उच्चारण करैत निचा देल क्रमश हृदयादि अंगक स्पर्श करी।

१. ॐ हृदयाय नमः २.ॐ भूः शिरसे स्वाहा। ३. ॐ भुवः शिखायै वषट् । ४. ॐ स्वः कवचाय हुम्। ५. ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट् । ६. ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट

तदनन्तर कलजोड़ि ई विनियोग वाक्य पढ़ी-

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः अग्निर्देवता सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

• व्याहृतित्रयस्य प्रजापतिऋषिर्गायत्री उष्णिग्-अनुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि वाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः।

• गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

तदुत्तर कलजोड़ि गायत्रीक ध्यानमन्त्र पढ़ी-

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च शोभिता।। आदित्यमण्डलान्तस्था ब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।।

कलजोड़ि अगिला मन्त्रे गायत्रीक आवाहन करी-

ॐ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि। गायत्रीच्छन्दसां मातर्जपे मे सन्निधीभव।। गायन्तं त्रायसे यस्माद् गायत्री त्वं ततः स्मृता।।

तदुत्तर न्यूनतम १० बेर अथवा यथासाध्य १०८ अथवा १००० बेर गायत्री मन्त्र जपी-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

तदनन्तर एहि मन्त्र सँ कलजोड़ि भगवती गायत्री कें जप समर्पित करी- ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

तदनन्तर अर्घा मे जल लए ओहि जल सँ अगिला मन्त्रे गायत्री देवीक विसर्जन करी-

ॐ उत्तरे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतवासिनि। ब्रह्मणा समनुज्ञाते गच्छ देवि यथासुखम्।।

तदनन्तर अर्घा वा हाथ मे जल लए अगिला मन्त्रे सूर्य के अर्घ्य दए प्रणाम करी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् ! भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।। एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्याय नमः।

तदुत्तर सूर्य के प्रणाम करी-ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।

ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

।। इति सन्ध्या वन्दन विधि।।

नित्य पार्थिव पूजन विधिः-

देवताओं की पूजा दिन में उत्तर या पूर्वाभिमुख होकर और रात्रि में उत्तराभिमुख होकर करें। पूजा के आरम्भ में दिन में सूर्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की तथा रात्रि में गणपत्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की पूजा करें। (सधवा विष्णु की जगह गौरी पूजा करें। गौरि इहा., गौर्यै नमः)

१.पञ्चदेवता पूजा– तेकुशा अक्षत् लेकर आवाहन करी–ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादिपञ्चदेवताः इहागच्छत इह तिष्ठत। जल लेकर- एतानि पाद्य-अर्घ्य- आचमनीय- स्नानीय- पुनराचमनीयानि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। चन्दन- इदमनुलेपनम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। अक्षत्-इदमक्षतम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः । पुष्प- एतानि पुष्पाणि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग नानाविध -नैवेद्यानि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। जल-इदमाचमनीयम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। फूल लें पुष्पांजलि दें- एष पुष्पाञ्जलिः ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।

२ विष्णु पूजा' : जौ तिल लेकर आवाहन करें- ॐ भूर्भुवः स्वः भगवन् श्रीविष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ। जल-एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय पुनराचमनीयानि ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। चन्दन- इदमनुलेपनम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। यवतिल- एते यवतिलाः ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। पुष्प लय- इदं पुष्पम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। तुलसी पत्र- इदं तुलसी पत्रम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप- ताम्बूल-यथाभाग-नानाविध नैवेद्यानि ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। जल- इदमाचमनीयं भगवते श्रीविष्णवे नमः। दुनू हाथें फूल ल-एष पुष्पाञ्जलिः ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। (मूर्ति या शालग्राम हो तो आवाहन-विसर्जन नहीं करें) इसके बाद स्वेष्टदेवता की पूजा जप आदि करें।)

३ कीर्त्तिमुख पूजा' : तेकुशा अक्षत् लेकर आवाहन करी- ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्त्तिमुख इहागच्छ इह तिष्ठ। जल लेकर- एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय- स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्त्तिमुखाय नमः। चन्दन- इदमनुलेपनम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। अक्षत्- इदमक्षतम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः । पुष्प- एतानि पुष्पाणि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। विल्वपत्र-एतानि विल्वपत्राणि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः । जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्ध-पुष्प- धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग नानाविध -नैवेद्यानि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। जल- इदमाचमनीयम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। फूल लें पुष्पांजलि दें- एष पुष्पाञ्जलिः ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः।।

४.पार्थिव पूजन - ॐ हराय नमः इस मन्त्र से पवित्र मृत्तिका ग्रहण कर ॐ महेश्वराय नमः इस मन्त्र से महादेव बनाकर शूलपाणये नमः ॐ शूलपाणे इह सुप्रतिष्ठितो भव। इस मन्त्र से अक्षत् लगाकर पात्र में शिव को सामने रख ध्यान कर-

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं।
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं ।
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

पश्चात् ॐ पिनाकधृगिहागच्छ इह तिष्ठ से आवाहन कर। जल लेकर एतानि पाद्य-अर्घ्य- आचमनीय- स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। चन्दन- इदमनुलेपनम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, अक्षत्- इदमक्षतम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। पुष्प- एतानि पुष्पाणि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। विल्वपत्र-एतानि विल्वपत्राणि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें- एतानि गन्धपुष्प- धूपदीपताम्बूल-यथाभागनानाविधनैवेद्यानि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः। जल- इदमाचमनीयम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः। फूल लें पुष्पांजलि दें- एष पुष्पाञ्जलिः ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः।। इसके बाद पुष्पाक्षत चन्दन-जल से महादेव के पूर्व, ईशान, उत्तर आदि चारों ओर तथा अन्त में महादेव के उपर अष्टमूर्ति की पूजा करें- १.ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः पूर्व मे। २. ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः ईशानकोण में। ३ ॐ रुद्रायाग्निमूर्त्तये नमः उत्तर दिशा में। ४ ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः वायव्यकोण में। ५ ॐ भीमायाकाशमूर्त्तये नमः पश्चिम में। ६ ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः नैऋत्यकोण में। ७ ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नमः दक्षिण मे। ८ ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः अग्निकोण में। ९ ॐ महादेवाय नमः पार्थिव लिंग पर। अन्त में जलपुष्पाक्षतचन्दनादि से ॐ ब्रह्मणे नमः इस मन्त्र से ब्रह्मा की पूजा भूमि पर करें। उसके यथा योग्य पाठ-जप स्तुत्यादि कर, पूजाक्रम से जल लेकर विसर्जन करें। ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताः पूजिताः स्थः क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत। ॐ भगवन् विष्णो पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ कीर्त्तिमुख पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ साम्बसदाशिव पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। तदुत्तर ॐ विष्वक्सेनाय नमः मन्त्र से भगवान पर से तथा ॐ चण्डेश्वराय नमः इससे महादेव पर से निर्माल्य हटावें।

अथ कलश-स्थापन

व्रती अर्थात् पूजन कर्ता नित्यकर्म(सन्ध्या-वन्दन आदि) कय पूजास्थान आबि शुद्धासन पर बैसि, तीन बेरि आचमन करथि १. ॐ केशवाय नमः,२. ॐ नारायणाय नमः, ३.ॐ माधवाय नमः। हाथ धोली ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ हृषिकेशाय नमः। पुनः दहिन हाथ में जल लय ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः। अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सम वस्तु कें सिक्त करी। तकर बाद दहिन हाथक अनामिका आँगुर में कुशक पवित्री(अंकुठी) धारण करी- ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।। पुनः जल लय आसन कें सिक्त करी(आसन पर छींटी)- ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः। आसन पवित्र करथि-ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।। शिखा स्पर्श करी- चिद्रूपिणि ! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।। तकर बाद चन्दन करी-ॐ चन्दनं वन्द्यते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा।

कलश-स्थापन

सोन चाँनी वा माटिक छिद्र रहित चिक्कन कलश पखारि क८,२१ आंगुर वा ८ आंगुर चाकर ६ आंगुर ऊँच पीढ़ी (वेदी)बनाय पहिने अक्षत् पुष्प, चन्दन, जल लय ॐ आधारशक्त्ये नमः एहि मन्त्र सँ वेदी क पूजन कय तदुत्तर मध्यमा आ अनामिका आंगुर सँ भूमि स्पर्श-ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ९९ ह पृथिवीं माहि गुं सीः।।

- आगुक मन्त्र सँ गोवरसँ के नीपथि-ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषुरीरिषः मानो वीरान्रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।
- आगुक मन्त्रे गंगाजल सँ सिक्त करथि-ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यायते प्रणीतो अग्निरग्निना।
- आगुक मन्त्र सँ यव वा धान देथि। धान्यप्रक्षेपणः-ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषेधां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।।

ॐ यव त्वं यवरूपोऽसि यज्ञार्थे निर्मितो विधेः। देवानां तृप्तिकृद्यस्मात् तस्मात्त्वं वरदो भव।। तखन अगिला मन्त्र सँ सुन्दर अलंकृत सुदृढ़ कशल पीढ़ी(वेदी) पर मध्य मे राखथि- कलश स्थापन- ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।।

- कलश में दही-अक्षत् मिलाक लगावथि-ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखाकरत् प्रणऽआयू ९९ षि तारिषत्।।

- जलपूर्ण कलश में वरुण के आवाहन करथि-कलशमें जल- ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।। • कलश में गंगा जल देथि- ॐ गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च। सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम(यजमानस्य) दुरितक्षयकारकाः।। • सप्तमृत्तिकाः-ॐ स्योना पृथिवि नो भवा नृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः ।। • सर्वौषधीः-ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूनामह शतं धामानि सप्त च।।
- पञ्चरत्न-ॐ परिवाज पतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।
- सुपाड़ी आर जायफलः-ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ९९ हसः ।।
- द्रव्य(पैसा)-ॐ हिरण्य गर्भः समवर्त ताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।
- दूभि(दूर्वा)देथिः-ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।। • पञ्चपल्लव वा आम्रपल्लव देथिः-ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वंसतिष्कृता। गोभाज्ऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्। ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः। तेषा गूं सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।। • पूर्णपात्र राखथिः-ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ९९ शतक्रतो ।।
- नारियल :-ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनो व्यात्तम्। इष्ण न्निषाण मुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण ।।
- वस्त्रक स्पर्श करथि-ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् सउश्रेयान् भवति। जायमानः। तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।
- दुनु हाथ सँ कलश स्पर्शक स्थिर करथि-ॐ स्थिरो भव वीडवङ्ग आशुर्भव वाज्यर्वन्। पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहणः। • पुष्प अर्पण करथि-ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनो व्यात्तम् । इष्णन्निषाणमुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण।। • चन्दनःॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
- पुन यवादि(सप्तधान्य)जयन्तीनिमित वपन करथि-ॐ व्रीहयश्च मे यवाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मे प्रणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्। • अक्षत अर्पण करथि-ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। • सिन्दुर -ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा अरुषो न वाजीकाष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।

कलश क स्पर्श क- ॐ मनोजूतिर्जुषता-माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो- त्वरिष्टं यज्ञ ॐसमिमं दधातु विश्वे देवा स इहमादयन्तामों प्रतिष्ठ।।

प्राण-प्रतिष्ठा क शान्तिकलश क पूजन करथि- ॐ शान्तिकलश इहागच्छ इह तिष्ठ आवाहन क ॐ शान्तिकलशाय नमः सँ पञ्चोपचार पूजन क पुष्प सँ पुष्पाञ्जलि देथि-

ॐ शान्तिकुम्भ महाभाग सर्वकामफलप्रद।
पुष्पं गृहाण शुभं वच्छ देवाधार नमोऽस्तु ते।।

कलश पर गणपति क आवाहन आ पूजन करथि- अक्षत पुष्प लऽ- गणानान्त्वा गणपति ॐ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ॐ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ॐ हवामहे वसो मम ऽआहम जानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्। ॐ सर्वविघ्नहरो देव एकदन्त गजानन। पुष्पं गृहाण शुभं वच्छ देवाधार नमोऽस्तु ते।। ॐ भूर्भुवः स्वर्भगवन् गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ सँ आवाहन क ॐ गं गणपतये नमः सँ पंचोपचार पूजन क पुष्पाञ्जली देथि- ॐ एकदन्तं महाकायं लंबोदरगजाननम्। विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्।। एष पुष्पाञ्जलिः ॐ गंगणपतये नमः।

।। इति कलश स्थापनम्।।

आश्विनदुर्गा पूजनक संकल्प- ॐ अद्य आश्विने मासि शुक्ले पक्षे प्रतिपत्तिथौ एतद्(गामक नाम) ग्रामवासिनां नानानां गोत्राणां सकलजनानाम् एतत्पूजोप- कारकाणामन्यग्राम वासिन, उपस्थि-शरीराविरोधेन (व्यक्तिगत पूजन मे- अमुक (गोत्र) गोत्रस्य अमुक(नाम)शर्म्मण: ममसदारापत्यमित्रस्य सकलवाहनस्य च उपस्थितशरीराविरोधेन) नवग्रहोपग्रह जनितसकलारिष्ट झटिति-प्रशमनपूर्वकदीर्घायुष्व बलपुष्टि-नैरुज्य- प्राप्तिपूर्वक- धनधान्याकण्टक- राज्यभोग्य- सन्तति- सुखान्वितनिखिल- मनोऽभिलषित- फलप्राप्तिपूर्वक- साङ्गसायुध सवाहन सपरिवार श्रीदुर्गाप्रीतिकामो वार्षिकशरत्कालीन श्रीदुर्गापूजाङ्गभूत कलशस्थापनमहं करिष्ये।

हवन-विधि

बनायल हवन कुण्ड या हवन वेदी क कुश सँ बहारि ओहि कुश कें ईशान कोन मे फेकि गोबर जल सँ नीपि स्रुवक जड़ि सँ पाहिने दक्षिण भाग प्रादेश मात्र पूर्वाग्र रेखा कय पुनः ताहि सँ उत्तर द्वितीय रेखा ताहि सँ उत्तर तृतीय रेखा कऽ तीनू रेखाक मध्य सँ दहिन हाथ क अनामिका अंगुष्ठा सँ माटि फेकि जल सँ सिक्त कऽ कासाक पात्र मे आगि लऽ अपना सम्मुख चूप्पहि रेखा पर अग्नि स्थापित कराथि।

ब्रह्मास्थापन-अग्निक दक्षिण भाग कुश पर अक्षत- चन्दन-पुष्पादि लय- ॐ अस्मिन्कर्मणि त्वम्मे ब्रह्मा भव।

•प्रणीता पात्र आगाँ राखि जल सँ भरि कुश सँ झाँपि ब्रह्मादिश देखैत आगिक उत्तर कुश पर प्रणीता पात्र राखि देथि। •तखन ६४ कुश सँ अग्नि कें परिस्तरण करी तदुत्तर सोलह कुश हाथ में लऽ अग्नि कोन सँ ईशान कन धरि कुश राखि पुनः ब्रह्मा सँ अग्नि पर्यन्त, नैऋत्य कोन सँ वायव्य कोन धरि, अग्नि सँ प्रणिता पर्यन्त कुश रखथिन। •तखन पैता वनेवाक कुश दोसर कुश सँ लगाय तोड़ि प्रादेश मात्रक दू गोट पैता वनाय पैता सहित दहिन हार्थे प्रणीताक जल तीनि वेरि प्रोक्षणीपात्र में दऽ दुहू हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ उतराग्र पैता धऽ प्रोक्षणीक जल तीनि वेरिं अपना ऊपर छीटथि। •तखन प्रोक्षणीपात्र वाम हाथ मे लऽ दहू पैता दहिन हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ धऽ पुनः तीनि वेरि प्रोक्षणीक ज अपना ऊपर छीटथि। •तखन प्रणीताक जल सँ प्रोक्षणी कें सिक्त कऽ प्रोक्षणीक जल सँ संघटित सभ वस्तु कें सिक्त कराथि। •तखन अग्नि प्रणीताक बीच प्रोक्षणी पात्र राखि देथि। •घृतक पात्र मे घी दऽ आगि पर चढ़ाय जरैत खढ़ घीक ऊपर प्रदक्षिणक क्रमे घुमाय आगि मे छोड़ि देथि। तखन स्रुव कें तपावथि •कुश सँ स्रुव के जडि से जडि वीच सँ वीच अन्त सँ अन्त भाग के झाड़ि स्रुव के पुनः तीन वेरि तपाय दहिन भाग स्रुव कें राखि देथि। •घी कें तीन वेरिं आगि पर सँ उतारि दुहू हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ पैता लऽ प्रोक्षणी जेकाँ घी कें तीन वेरि अपना ऊपर छीटि पुनः दुहू पैता दहिना हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ लऽ वाम हार्थे घीक पात्र धयने पैता सँ तीनि वेरि अपनां उपर छीटि पैता प्रोक्षणी मे दऽ •घी कें देखि किछु अधलाह वस्तु होतँ वाहर कऽ विरनी कुश वाम हाथ मे लऽ तीनि गोट आमक काठी मे घी लगाय ऊठि मन सँ प्रजापतिक ध्यान कऽ चुप्पहि आगि मे छोड़ि देथि। तखन वैसि पैता सहित प्रोक्षणीक जल सँ प्रदक्षिण क्रमें आगि कें सिक्त कऽ प्रणीता पात्र मे पैता राखि •घी सँ बारह आहुति हवन करथि-

ॐ प्रजापतये स्वाहा — इदं प्रजापतये।।(एहि मन्त्र क मन मे ही उच्चारण करी)
ॐ इन्द्राय स्वाहा — इदं इन्द्राय। ॐ अग्नये स्वाहा — इदं अग्नये ।।
ॐ सोमाय स्वाहा — इदं सोमाय। ॐ भूः स्वाहा — इदं भूः।
ॐ भुवः स्वाहा — इदं भुवः। ॐ स्वः स्वाहा — इदं स्वः। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं भूर्भुवः स्वः।

ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ॐसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा इदमग्निवरुणाभ्याम्। (प्रत्येक वेर स्रुवक अवशेष....जल में त्यागथि)

ॐ सत्त्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणॐ रराणो व्वीहिमृडीक ॐसुहवोन ऽएधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम्।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभि शस्ति पाश्चसत्य मित्त्व मया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ॐस्वाहा इदमग्नये।

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्क्केभ्यः।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ॐश्रथाय। अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा,इदं वरुणाय।

•नवग्रह समिधा सँ हवन- • सूर्य-अर्क(आकन) लकड़ी लऽॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्, स्वाहा, इदं सूर्याय।

• चन्द्र-पलाशक लकड़ी लऽ- ॐ इमं देवा असपत्नवं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाॐ राजा स्वाहा, इदं चन्द्राय। • मंगल-खैरक क लकड़ी लऽॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् अपाॐ रेताॐ सि जिन्वति स्वाहा, इदं कुजाय। • बुध-चिरचिर लकड़ी लऽॐ उद्बुध्यस्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सॐ सृजेथामयञ्च। असमिन्तसधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा इदं बुधाय।

• वृहस्पति-पीपरक लकड़ी लऽॐ वृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रग्वं स्वाहा, इदं वृहस्पतये • शुक्र-गुलरकके लकड़ी लऽॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानॐ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा, इदं शुक्राय। • शनि-समि लऽ- ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः स्वाहा, इदं शनैश्चराय। • राहु- दूवि लऽ-ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा इदं राहवे। • केतु-कुश लऽॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा इदं केतवे

• शाकल्य सँ प्रधान देवता क हवन प्रारम्भ करी तदुपरान्त आवाहित पूजितादि देवता क हवनोपरान्त तर्पण ,मार्जन कऽ

• तदुत्तर परिस्तरण वला कुश सभ समेटि घी लगाए आगुक मन्त्र सँ हवन मे देथि- ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित। मनसस्पतऽइमं देव यज्ञॐ स्वाहा वाते धाः स्वाहा।

ब्रह्मा क दक्षिणा • ब्रह्मदक्षिणा- कुश,तिल,यव,द्रव्य लऽ- ॐ अद्य अमुके मासे अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुक गोत्रोत्पन्न (यजगानक गोत्र) अमुकशर्मा(यजमानक नाम), कृतैतत् अमुक(जप,पाठ) होमकर्म प्रतिष्ठार्थम् इदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतम् अमुक- गोत्राय (ब्राह्मण क गोत्र,नाम) अमुकशर्मणेब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणान्तुभ्यमहं सम्प्रददे। इ कहि ब्रह्मा कें देथि।

• प्रणीता सँ दुहू पैता दुहू हाथक अनामिका अंगूष्ठा सँ उत्तराग्र धऽ-ॐ सुमित्रियानऽ आप ओषधयः सन्तु। एहि मन्त्र सँ दुहू पैता सँ प्रणीताक जल अपना ऊपर छींटि शेष जल-ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः। कहि ईशान कोन में पलटि देथि। •पूर्णाहुति- स्रुव मे पाम, नारियल दहिन हार्थे लऽ ऊठि आगु क मन्त्र सँ पूर्णाहुति करी- ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्यां वैश्वानर मृतऽ आजातमग्निम्। कविॐ सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा। • तदुत्तर घी सँ अखण्ड धार सँ वसोधारा करी- ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुत्त्वा कामधुक्षः स्वाहा। वसुभ्यः। अग्नि में अखण्ड घीक धार देथि, आ स्रुवक अवशेष प्रोक्षणीक पात्र मे त्यागी।

•स्रुवक पृष्ठ भाग सँ भस्म लऽ त्र्यायुष करथि- ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे। ललाट मे लगावथि। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् इति ग्रीवायाम्। गरदनि मे लगावथि। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्। इति दक्षिणबाहुमूले। दहिना बाँह मे लगावथि। ॐ तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम्। इति हृदि हृदय मे लगावथि।

।।। इति हवनम्।।

सर्व कर्म उपयोगी शान्तिकलश अभिषेक मन्त्र-

कलश हाथ में उठवैत- ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्ते महे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्रप्राशुर्भवासवाः। आमक पल्लव सँ कलशक जल मे घुमवैत आगुक मन्त्र पढ़ि-

ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः।।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा।।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहितः शेषो दिक्पालाः पान्तु ते सदा।।
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः तुष्टिः कान्तिश्च मातरः।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः।।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।।
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः।।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये।।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थ सिद्धये।।
ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः।

।। इति व्यास रचित अभिषेकम्।।

१४	३१	२	२८
२०	३०	१५	१४
२०	१५	१६	१९
४४	६	१६	१६

रोग भगाने का यन्त्र-

इस यन्त्र को भोजपत्र पर शुभ मुहूर्त में लिखकर काले धागे में बांधकर रोगी के गले में धारण कराने से रोग जल्द ठीक हो जाता है।

गर्भ सम्बन्धि प्रश्नः -

नवद्वयं गर्भिणीनामयुक्तं तिथिप्रयुक्तं रससंयुतञ्च।
एकेन उनं नवभागधेयं समे कुमारी विषमे कुमारः।।

स्त्री के नाम राशि को ७ से गुणाकर तत्कालिक तिथि का योगकर उसे ६ का भाग दे। भाग देने पर समराशि,२,४,६,८ शेष रहे तो कन्याजन्म, विषम राशि १,३,५,७ शेष रहे तो पुत्र जन्म और शून्य रहने पर गर्भस्थ जातक की मृत्यु होगी ऐसा कहना चाहिये।

अपर विधिः-तिथिवारं च नक्षत्रं गर्भिणी नामसंयुतम्। सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं च फलमादिशेत्।। समे च कन्या विषमे पुत्रो निःशेषभागं मरणाय नूनम्।

पुत्र पुत्री जन्म विचार :- प्रश्नवर्णामात्रांतिथिवारर्क्षं च संयुतम्। सप्तभिर्विशेषे समेस्त्री विषमे पुमान्।। सन्तानचिन्ता प्रश्नः- प्रश्न के दिन की संख्या को ३ से गुणा करके उसमें प्रश्नकाल की तिथि को भी जोड़ देवे और उसमें २ से भाग दे यदि १शेष बचे तो सन्तान की सम्भावना होगी, किन्तु २ या ० शून्य बचे तो संतान की सम्भावना नहीं करनी चाहिये।

गर्भ स्थिर रहने का यन्त्र-

ओं	ओं	ओं	ओं
ओं	ओं	ओं	ओं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	१
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	७

जिस रविवार को मूल नक्षत्र पड़े,उसी दिन यह यन्त्र बनाकर गर्भवती स्त्री को धारण कराने से गर्भ खण्डन (गर्भपात) नहीं होता है और गर्भ स्थिर रहता है। यन्त्र,भोजपत्र पर अष्ट गन्ध की स्याही तथा अनार की कलम से लिखें।

गर्भवती स्त्री की पीड़ा(प्रसव पीड़ा) दूर करने का यन्त्र-

६२	६९	२	७
७	३	६२	६५
६८	६३	८	२
६४	५	६४	६७

कांसे की थाली में इस यन्त्र को लिखें और उसमें जल भरकर पिलाने से गर्भवती स्त्री की पीड़ा या प्रसव पीड़ा दूर होती है।

कार्य भविष्यतिनवा :-

दिशा प्रहर संयुक्तम तारकावारमिश्रिततम्।
अष्टाभिश्च हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम्।।
पंचेके त्वरिता सिद्धिः षट्तुर्ये च दिनत्रयम्।
त्रिसप्तके विलम्बं च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ।।

वरप्राप्ति हेतु उपाय :-

प्रथमविधि- स्वयं कन्या स्नान करके दीपक व धूप जलाकर गन्धाक्षत पुष्प से श्री माँ पार्वती की अर्चना कर वं पं क्लीं का १०८ वार जप करें तदन्तर अधोलिखित मन्त्र का प्रतिदिन प्रातः व सायं पाँच पाँच माला जप करें। यह प्रयोग ४५ दिन का है। रजस्वला समय में पाँच दिनों तक बन्द रखें। मन्त्रः-

ॐ क्लीं कात्यायनी महामाये महायोगिन्य धीश्वरी क्लीं ॐ दं पं नन्दगोप सुतं देवि पतिं मे कुरूते नमः पं द । अन्त में ७ कन्याओं एवं २ वटुक को खीर व बेसन के बने पदार्थों का भोजन करावें।

द्वितीय विधि-

८	३	१०	पं	लं	ह्रीं
६	७	५	ऐं	क्लीं	पं
४	११	६	दं	लं	पं

इस मन्त्र को कन्या प्रारम्भ कर मृगशिरा नक्षत्र में केला के पत्ते पर प्रतिदिन नौ बार लिखें। यह प्रयोग ७२ दिन का है। ५ दिनरजस्वला काल के समय में बन्द रखें। अन्तमें ६ कन्या तथा ५ बटुक को दूध से बने पदार्थों का भोजन करावें एवं वस्त्र,श्रीफल,द्रव्यादि दक्षिणा दें लिखे मन्त्र को ॐ क्लीं पं दं लं मन्त्र का उच्चारण करते हुए देवी पार्वती के चरणों में अर्पित करें।

अथ विवाह प्रश्नः -

कर्क तौली वपाश्चन्द्रयुक्ताः शुभनिरीक्षिताः ।
पृच्छाकाले तदा नृणां कन्या लाभो भवेद् ध्रुवम् ।।
योपिद् ग्रहस्थिताश्चेपाः पश्यन्ति स्त्रीनवांशकम् ।
लग्ने च स्यात्तदा लाभः स्त्रियां पुंसोऽपि तादृशः ।।

वशीकरणमन्त्र - ॐ नमो महायक्षिणी मम पतिं वश्यं आनय कुरू कुरू स्वाहा इस मन्त्र को गुरू पुष्य योग में या शुभ मुहूर्त में ११ माला जप ११ दिन तक करें। तदनन्तर कपूर, चन्दन और तुलसीदल को गो दुध में पीसकर मस्तक पर तिलक लगाने से पति वश में हो जाता है।

तिल- विचार :-

मस्तकपर	धनवान
दाहिने आँखपर-	स्त्री से प्रेम
बायीं आँखपर-	स्त्री से कलह
दोनो भौहों के बीच-	अधिक यात्रा
ठुड्डी पे-	स्त्री से कटुता
दाहिने गाल पर-	धनवान
बाये गाल पर-	खर्चअधिक
ओष्ट पर-	कामसक्ति
गर्दनपर-	आराम-मयजीवन।
कानपर-	अल्पायु
नाकपर-	अधिकयात्रा
नाक के अग्रभागपर-	काम मे सरलता
ओष्ठ के नीचे-	निरधनता
नाक के बाई तरफ-	धूर्त
नाक के अग्रभाग पर-	कार्यसिद्धि
ओष्ठ के नीचे की भाग पर-	निरधनता
नाक के बाई तरफ-	धूर्त
दाहिनें भुजा पर-	सम्मान व यशप्राप्ति
बायी भुजा पर-	झगड़ालू
दाहिनी छाती पर	स्त्री से प्रेम ।
बांयीछातीपर-	स्त्री से कलह।
दोनो छाती के बीच-	सुखमयजीवन।
कमर मे-	कष्टमय जीवन।
पेटपर-	उत्तमभोजनप्रिय
पीठपर-	यात्रामय जीवन
दाहिने हाथ के पृष्ठपर-	धनवान ।
बायी हाथ के पृष्ठपर-	अल्पव्ययी।
दाहिने हथेलीपर-	शक्तिशाली
बायी हथेलीपर-	अधिक खर्चालु
पेट के मध्य में-	डरपोक
दाहिने पैर पर-	बुद्धिमान
बाये पैरपर-	अधिकव्ययी।

ग्रहों का विशेष विवरण तथा यन्त्र

ग्रह-सूर्य (Sun)

रत्न- माणिक्य(Ruby)
उपरत्न- लालड़ी, लालतामड़ा, लालहकीक
धातु- स्वर्ण, ताम्बा
अंगुली- तर्जनी,अनामिका
रत्ती में- ३, ५
दिन- रवि. सोम. गुरु
दानवस्तु- गेहूँ,गुड़,कमल-पुष्प,लालचन्दन,लालवस्त्र,सोना, तांवा,दक्षिणा
दान समय रविवार सूर्योदय समय।
जपसंख्या- ७०००। कलियुग में-२८०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- सूर्य के अरिष्ट निवारण एवं कुष्ठरोग, क्षयरोग, सिर दर्द,रक्तचांप,नेत्रदोष, रक्तविकार आदि रोगों में लाभ

सूर्य-यन्त्रम्		
६	१	८
७	५	३
२	९	४

मंगल(Mars)

रत्न- मूँगा(Coral)
उपरत्न- गारनेट, लाहकी लालगोमेद
धातु- स्वर्ण,ताम्बा
अंगुली- अनामिका,तर्जनी
रत्ती- ६,८,१०,१२
दानवस्त- मूँगा, भूमि, मसूरदाल, लालवृष, गुड़,लालचन्दनवस्त्रपु प, सुवर्ण
जपसंख्या- १०००० कलियुग में४०,०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- रक्तविकार, भूतप्रेतबाधा, हृदयरोग, वायु, कफ विकार, पित्तादि विकार,उदर विकार आदि।

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

बुध(Mercury)

रत्न- पन्ना(Emerald)
उपरत्न- फिरोजा,हरा हकीक,मरगज,ओनेक्स
धातु- स्वर्ण या कांसा
अंगुली- कनिष्ठा
रत्ती-३,५,७। दिन-बुधवार
दानवस्तु-कांस्यपात्र, हरित वस्त्र, गजदन्त घृत मूँग सुवर्ण,सर्वपुष्प,कपूर
जप संख्या ८००० कलियुग में-३२,०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-त्वचा विकार,पथरी,वहुमूत्र,दमा, गुर्दा रोग,पाण्डुरोग या मानसिक रोग में लाभ।

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

चन्द्रमा(Moon)

रत्न- मोती(Pearl)
उपरत्न- शंखमूगा, दुधिया, हकीक, सीप
लग्न से शुभ- १, ४, ८, १२
धातु- चाँदी
अंगुली- अनामिका
रत्ती- २, ४,६,११
दिन- सोम
दानवस्तु- घृत, चावल, श्वेतवस्त्र,श्वेतचन्दन,श्वेतपुष्प, चाँदी, शंख, दक्षिणा
जपसंख्या- ११००० कलियुग में४४,०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-चन्द्रमा जन्यअरिष्ट, मानसिकरोग, मुर्च्छा, मिर्गी, उन्माद,दमा, श्वांस, कैंसर आदि।

चन्द्रयन्त्रम्		
७	२	९
८	६	४
३	१०	५

बृहस्पति(Jupiter)

रत्न- पुखराज(Sapphire)
उपरत्न-पीला मोती,सुनैलापीला, जिरकान
धातु- स्वर्ण
अंगुली- तर्जनी
रत्ती- ५,७
दिन- गुरुवार
दानवस्तु- चने की दाल,पीतवस्त्रपुष्प, हरदी, पुस्तक, मधु, लवणादि
जप संख्या १६००० कलियुग में-६४,०००
ग्रहजन्य बाधा-मधुमेह,लीवर,पीलिया,प्रेत बाधा।

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

शुक्र(Venus)

रत्न- हीरा(Diamond)
उपरत्न- सफेदहकीक,स्फटिक,ओपल,
धातु- प्लेटीनम
अंगुली- मध्यमा/कनिष्ठा
रत्ती- ३,५
दिन- शुक्र
दानवस्तु- तण्डुल, श्वेतचन्दनवस्त्र, घृत, दधि, श्वेतगौ
जप-संख्या ११०००, कलि में ४४०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-वीर्य विकार, दौर्वल्य,नपुंसकता,वायु प्रकोप, प्रमेह, श्वेदप्रदर,हृदय रोग,मानसिक कमजोरी आदि।

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शनि(Saturn)

रत्न- नीलम(Sapphire)
उपरत्न-नीली जिरकान,कटैला,नीला [illegible]
धातु- पंचधातु वाजुवा स्टोन।
अंगुली-मध्यमा। रत्ती-५,७, ९,१२। दिन-शनिवार।
दानवस्तु माष, तैल, तिल, कालवस्त्रगोपुष्प कुरथी,लोहा,कस्तूरी, सुवर्णादि
जप संख्या २३००० ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- दमा,क्षय,ग्रन्थीय, अजीर्ण, हृदय रोग, कुष्ठ रोग आदि।

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहु(Rahu)

रत्न- गोमेद(Zircon)
उपरत्न- गोमेद रंग का हकीक
धातु-अष्टधातु या चाँदी अंगुली-मध्यमा
रत्ती-७,९। दिन-शनि, दानवस्तु-माषान्न,कस्तूरी,हेमनाग, नीलवस्त्र, तिलतैल,लोहासूप,कम्बल। जप संख्या १८०००
ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ-लकवा, त्वचा रोग, मस्तिष्क दुर्बलता, वातजन्य रोग आदि।

१३	८	८
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु(Ketu)

रत्न- लहसुनिया Cats Eye
धातु- पंचधातु या चाँदी,
अंगुली- मध्यमा, रत्ती-७,९ दिन-शनि-वुध ,
दानवस्तु-माषान्न,कम्बल,कस्तूरी, तिल,तोला,बकरा,शस्त्र,सप्तधानादि
जप संख्या-७०००। ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- वायु विकार, प्रमेह,हृदयरोग, श्वेदप्रदर,मानसिक दुर्बलता, आँत की बीमारी आदि।

८	३	१०	पं	लं	ह्रीं
६	७	५	ऐं	क्लीं	पं
४	११	६	दं	लं	पं

व्यापार वृद्धि यन्त्र -

इस यन्त्र को भोजपत्र पर केसर की स्याही एवं अनार की कलम से दीपावली की रात्रि में लिखकर सविधि पूजन कर-ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः मन्त्र का ११०० सौ जप करें। तदनन्तर यन्त्र को दुकान में रखकर प्रतिदिन पूजन करें।

१६	६	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

कामना पूरक यन्त्रम् -

इस यन्त्र को लाल चन्दन से बिल्व पत्र पर १०८ वार लिखकर श्रावण मास के सोमवार को शिव लिंग पर चढ़ाने से इच्छा शक्ति एवं मनो कामना पूर्ति होती है।

वं	वं	वं	वं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

सौभाग्य वृद्धि यन्त्र-

इस यन्त्र को गुरु पुष्य योग में अष्ट गन्ध की स्याही एवं अनार के कलम से भोजपत्र पर लिखकर तथा सविधि त्रिगुणात्मिका दुर्गा की पूजन कर स्त्री धारण करें तो सौभाग्य की वृद्धि होती है।

५	६	३	६
४	४	७	७
६	६	३	५
५	४	७	४

गये हुए व्यक्ति को वापस बुलाने का यन्त्र-

६२	६९	२	७
७	३	६२	६५
६८	६३	८	२
६४	५	६४	६७

इस यन्त्र को जमीन पर उंगली से लिखें, तो गया आदमी शीघ्र घर लौट आता है। वापसी तक प्रतिदिन यन्त्र लिखा करें।

महामृत्युञ्जय मन्त्र जपविधिः-

श्रीगणेशादिस्मरणपूर्वकंशान्तिपाठं कृत्वा कुशत्रय तिलजलान्यादाय संकल्पः-ॐ अद्य अमुके मासि अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रस्य श्री अमुक शर्मणः उपस्थित शरीरा-विरोधेन अखिलारिष्टशान्ति प्रशमनपूर्वक-दीर्घायुष्ट्व-बलपुष्टिनैरूज्य-प्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गत माध्यन्दिनशाखीय 'ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ' इति महामृत्युंजय मन्त्रस्य एतत्सहस्रसंख्यकजपमहं करिष्ये।

विनियोगः-ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेवकहोल-वशिष्ठाः ऋषयः, पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युंजयरूद्रा देवता हौं बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः -वामदेव कहोल-वशिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि। पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे। सदाशिवमहामृत्युञ्जय- रूद्रदेवताभ्यो नमः हृदि। हौं बीजाय नमः नाभौ। जूं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

हृदयादिन्यासः-ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्त्तये मां जीवय शिरसे स्वाहा, ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हाँ हीं हौं कवचाय हुम्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवतेरुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्रयाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमोभगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वालनाय मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट्। इति षडङ्गन्यासः

ध्यान-चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयुषपात्रं वहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदीप्तममलं हास्यास्यपंकेरुहम्। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोज विभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत् इत्यनेन ध्यात्वा यथोपचारैः सम्पूज्य मन्त्र जपेत्। जपसमाप्तौ च शाकल्यादिभिः दशांशक्रमेण होम तर्पणमार्जनं ब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्।

लघुमृत्युंजयमन्त्रः- ॐ जूं सः।

यजुर्वेदीय न्यास सहित शान्ति मन्त्र-

सूर्य मन्त्र- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्न-मृतम्मर्त्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

विनियोगः-ॐ आकृष्णेति मन्त्रस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरा ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖देहाङ्गन्यास- आकृष्णेन शिरसि। रजसा ललाट। वर्तमानो मुखे। निवेशयन् हृदये। अमृतं नाभा। मर्त्यं च कट्याम्। हिरण्ययेन सविता ऊर्व्वोः। रथेना जान्वोः। देवो याति जंघयोः। भुवनानि पश्यन् पादयोः।

❖करन्यासः- आकृष्णेन रजसा अंगुष्ठाभ्यां नमः। वर्तमानो निवेशयन् तर्जनीभ्यां नमः। अमृतं मर्त्यं च मध्यमाभ्यां नमः। हिरण्ययेन अनामिकाभ्यां नमः। सविता रथेना कनिष्ठिकाभ्यां नमः। देवो याति भुवनानि पश्यन् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः-आकृष्णेन रजसा हृदयाय नमः। वर्तमानो निवेशयन् शिरसे स्वाहा। अमृतं मर्त्यं च शिखायै वषट्। हिरण्ययेन कवचाय हुँ। सविता रथेना नेत्रत्रयाय वौषट्। देवो याति भुवनानि पश्यन् अस्त्राय फट्। ध्यानम्-पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरङ्गवाहनः। दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।।

❖चन्द्र का वैदिक मन्त्र- ॐ इमन्देवा असपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा।

❖विनियोगः- इमन्देवेतिमन्त्रस्य गौतम ऋषिः, सोमो देवता, विराट् छन्दः, सोमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖देहाङ्गन्यास- इमं देवा शिरसि। असपत्न ग्वग ललाट। सुवध्वं नासिकायाम। महते क्षत्राय मुख। महते ज्येष्ठ्याय हृदये। महते जानराज्याय उदरे। इन्द्रस्येन्द्रियाय नाभा। इममुष्य कट्याम। पुत्रममुष्यै मेढ्। पुत्रमस्यै ऊर्व्वोः। विशऽएष वो जान्वोः। मीराजा जंघयोः। सोमोऽस्माकं गुल्फयोः। ब्रह्मणानां ग्वङ गजा पादयोः।

❖करन्यास- इमं देवा असपत्न ग्वङ सुवध्वं अंगुष्ठाभ्यां नमः। महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय तर्जनीभ्यां नमः। महते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय मध्यमाभ्यां नमः। इगममुष्य पुत्रमगस्यै पुत्रागस्यै अनामिकाभ्यां नमः। विशऽएष वो मीराजा कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सोमोऽस्माकं ब्रह्मणानां ग्वङ राजा करतलकरपृष्ठा भ्यां नमः। हृदयादिन्यासः-इमं देवा असपत्न ग्वङ सुवध्वं हृदयाय नमः। महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय शिरसे स्वाहा। महते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय शिखायैवौषट्। इमममुष्य पुत्रममस्यै पुत्रमस्यै कवचाय हुम्। विशऽएष वो मीराजा नेत्रत्रयायवौषट्। सोमोऽस्माकं ब्रह्मणानां ग्वङ राजा अस्त्राय फट्। ❖ध्यान-श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः। चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।।

❖मंगल वैदिक मन्त्र-

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या, अयमपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति।

❖विनियोगः- ॐ अग्निर्मूर्द्धेति मन्त्रस्य विरूपाङ्गिरस ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्री छन्दः, भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖देहांगन्यासः- ॐ अग्निः शिरसि। मूर्द्धा ललाटे, दिवः मुखे, ककुत् हृदये, पतिः उदरे। पृथिव्या नाभौ, अयं कट्याम्, अपाग्वं जान्वो, रेताग्वंसि गुल्फयोः, जिन्वति पादयोः। ❖करन्यासः-ॐ अग्निः मूर्द्धा अंगुष्ठाभ्यां नमः, दिवः ककुत् तर्जनीभ्यां नमः,पतिः मध्यमाभ्यां नमः। पृथिव्या अयम् अनामिकाभ्यां नमः, अपाग्वं रेताग्वंसि कनिष्ठिकाभ्यां नमः, जिन्वतिं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः- ॐ अग्निः मूर्द्धा- हृदयाय नमः, दिवः ककुत् शिरसे स्वाहा, पतिः शिखायै वषट्। पृथिव्या अयं कवचाय हुम्। अपाग्वं रेताग्वंसि नेत्रत्रयाय वौषट्, जिन्वति अस्त्राय फट्। ध्यान- रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगतो गदाभृत्। धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदायमस्मद्वरदः प्रसन्नः।।

❖बुध का वैदिक मन्त्र-

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने: प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

❖विनियोगः- ॐ उद्बुध्यस्वेति मन्त्रस्य परमेष्ठी प्रजापति ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बुधो देवता, बुधप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। देहांगन्यासः-ॐ उद्बुध्यस्वेति शिरसि, अग्ने: प्रति ललाटे, जागृहि त्वं मुखे, इष्टापूर्ते हृदये, सग्वं सृजेथामयञ्च नाभौ, अस्मिन्त्सधस्थे कट्याम्, अध्युत्तरस्मिन् ऊवाः, विश्वेदेवा जान्वोः, यजमानश्च गुल्फयोः, सीदत पादयोः। ❖करन्यासः-ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने: प्रतिजागृहि त्वम् अंगुष्ठाभ्यां नमः, इष्टापूर्ते तर्जनीभ्यां नमः, सग्वं सृजेथामयञ्च मध्यमाभ्यां नमः, अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् अनामिकाभ्यां नमः, विश्वेदेवा यजमानश्च कनिष्ठिकाभ्यां नमः, सीदत करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः-ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने: प्रतिजागृहि त्वम् हृदयाय नमः, इष्टापूर्ते शिरसे स्वाहा, सग्वं सृजेथामयञ्च शिखायै वषट्, अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् कवचाय हुम्, विश्वेदेवा यजमानश्च नेत्रत्रयाय वौषट्, सीदत अस्त्राय फट्। ध्यान-पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी। चर्मासिधृक् सोमसुतो गदाभृत् सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च।।

❖गुरु(बृहस्पति) वैदिक मन्त्र-

ॐ वृहस्पते अतियदर्य्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्।।

❖विनियोगः- वृहस्पतेति मन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, ब्रह्मा देवता, वृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖देहांगन्यासः-ॐ वृहस्पते शिरसि,अतियदर्य्यो ललाटे,अर्हाद्युमत् मुखे, विभाति क्रतुमत् हृदये,जनेषु नाभौ, यद्दीदयत् कट्याम्, शवसऋतप्रजात ऊर्व्वो,तदस्मासु द्रविणं जान्वोः,धेहि गुल्फयोः,चित्रं पादयोः। ❖करन्यासः ॐ वृहस्पते अतियदर्य्यो अंगुष्ठाभ्यां नमः,अर्हाद्युमत् तर्जनीभ्यां नमः, विभाति क्रतुमत् मध्यमाभ्यां नमः, जनेषु अनामिकाभ्यां नमः, यद्दीदयत् शवसऋतप्रजात-तदस्मासु कनिष्ठिकाभ्यां नमः, द्रविणं धेहि चित्रम् करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।❖हृदयादिन्यासः-ॐ वृहस्पते अतियदर्य्यो हृदयाय नमः, अर्हाद्युमत् शिरसे स्वाहा, विभाति क्रतुमत् शिखायै वषट्, जनेषु कवचाय हुम्, यद्दीदयत् शवसऋतप्रजात-तदस्मासु नेत्रत्रयाय वौषट्, द्रविणं धेहि चित्रम् अस्त्राय फट्। ध्यानम्- पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशान्तः। तथाऽक्षसूत्रं च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्।।

❖शुक्र का वैदिक मन्त्र-

ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धस इन्द्रस्ये-न्द्रियमिदं पयोऽमृत मधु।।

❖विनियोगः-अन्नात्परिस्रुतेति मन्त्रस्य प्रजापतिऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शुक्रो देवता, शुक्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖देहांगन्यासः-ॐ अन्नात् परिस्रुतः शिरसि, रसं ब्रह्मणा ललाटे, व्यपिबत्क्षत्र मुखे, पयःसोमं हृदये, प्रजापतिः नाभौ, ऋतेन सत्य कट्याम्, इन्द्रियं विपानम् गुदे, शुक्रमन्धस ऊर्व्वोः, इन्द्रस्ये-न्द्रिय जानुनोः, इदं पयः गुल्फयोः, अमृतं मधु पादयोः। ❖करन्यासः-ॐ अन्नात् परिस्रुतः रसं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं तर्जनीभ्यां नमः, पयःसोमं प्रजापतिः मध्यमाभ्यां नमः, ऋतेन सत्यमिन्द्रियं अनामिकाभ्यां नमः, विपानम् शुक्रमन्धस कनिष्ठिकाभ्यां नमः, इन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोमृतं मधु करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः-ॐ अन्नात् परिस्रुतः रसं हृदयाय नमः, ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं शिरसे स्वाहा, पयःसोमं प्रजापतिः शिखायै वषट्, ऋतेन सत्यमिन्द्रियं कवचाय हुम्, विपानम् शुक्रमन्धस नेत्रत्रयाय वौषट्, इन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोमृतं मधु अस्त्राय फट्। ❖ध्यानम्- श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशान्तः। तथाऽक्षसूत्रञ्च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च विभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्।।

❖शनि का वैदिक मन्त्र-

ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः।

❖विनियोगः- शन्नो देवीति मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः, गायत्रीछन्दः, आपो देवता, शनिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖देहांगन्यासः- शन्नो शिरसि, देवीः ललाटे, अभिष्टय मुखे, आपो कण्ठे, भवन्तु हृदये, पीतये नाभौ, शं कट्याम्। योः ऊर्व्वो, आभि जान्वोः, स्रवन्तु गुल्फयोः, नः पादयोः। ❖करन्यासः- शन्नो देवीः अंगुष्ठाभ्यां नमः, रभिष्टये तर्जनीभ्यां नमः, आपो भवन्तु मध्यमाभ्यां नमः, पीतये अनामिकाभ्यां नमः,शंय्योरभि कनिष्ठिकाभ्यां नमः, स्रवन्तु नः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

❖हृदयादिन्यासः- शन्नो देवीः हृदयाय नमः, रभिष्टये शिरसे स्वाहा, आपो भवन्तु शिखायै वषट्, पीतये कवचाय हुम्, शंय्योरभि नेत्रत्रयाय वौषट्, स्रवन्तु नः अस्त्राय फट्। ध्यानम्:- नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्। चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यं वरदोऽल्पगामी।।

राहु का वैदिक मन्त्र-

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

❖विनियोगः- कया नश्चित्रेति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, राहुर्देवताः, राहुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖देहांगन्यासः- कया शिरसि, न ललाटे, चित्र मुखे, आ कण्ठे, भुव हृदये, दूती नाभौ, सदा कट्याम्। वृधः मेढ्रे, सखा ऊर्व्वोः। कया जान्वोः, शचिष्ठया गुल्फयोः, वृता पादयोः।

❖करन्यासः- कया नः अंगुष्ठाभ्यां नमः, चित्र आ तर्जनीभ्यां नमः, भुवदूती मध्यमाभ्यां नमः, सदावृधः सखा अनामिकाभ्यां नमः। कया कनिष्ठिकाभ्यां नमः, शचिष्ठया वृता करतल करपृष्ठाभ्यां।

❖हृदयादिन्यासः- कया नः हृदयाय नमः,चित्र आ शिरसे स्वाहा, भुवदूती शिखायै वषट्, सदावृधः सखा कवचाय हुम् । कया नेत्रत्रयाय वौषट्, शचिष्ठया वृता अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशूली। चतुर्भुजश्चक्रधरश्च राहुः सिंहाधिरूढो वरदोऽस्तु मह्यम्।।

केतु का न्यास सहित वैदिक मन्त्र-

ॐ केतुङ् कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।

❖विनियोगः-केतुं कृण्वन्निति मन्त्रस्य मधुच्छन्द ऋषिः,गायत्रीच्छन्दः, केतुर्देवता, केतुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖देहांगन्यासः- केतुं शिरसि, कृण्वन् ललाटे, अकेतवे मुखे, पेशो हृदये, गर्या नाभौ, अपेशसे कट्याम्। सं ऊर्व्वोः। उषद्भिः जान्वोः, अजायथाः पादयोः। ❖करन्यासः-केतुं कृण्वन् अंगुष्ठाभ्यां नमः,अकेतवे तर्जनीभ्यां नमः, पेशो गर्या मध्यमाभ्यां नमः, अपेशसे अनामिकाभ्यां नमः, सगुषद्भिः कनिष्ठिकाभ्यां नमः, अजायथाः करतल करपृष्ठाभ्यां । ❖हृदयादिन्यासः- केतुं कृण्वन् हृदयाय नमः, अकेतवे शिरसे स्वाहा, पेशो मर्या शिखायै वषट्, अपेशसे कवचाय हुम्, समुषद्भिः नेत्रत्रयाय वौषट्, अजायथाः अस्त्राय फट्। ध्यानम्- धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाधरो गृध्रासनस्थो विकृताननश्च। किरीट-केयूरविभूषितो यः सदाऽस्तु मे केतुगणः प्रशान्तः।

सूर्यादि ग्रहो का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र-

सूर्य का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ ह्राँ ह्रीं सः

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीसूर्यमन्त्रस्य अज ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता ह्रां वीजम्, ह्रीं शक्तिः, सः कीलकम् श्रीसूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ऋष्यादिन्यास-ॐ अज ऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुख। ॐ सूर्यदेवतायै नमः हृदि। ॐ ह्राँ वीजाय नमः गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। अंगन्यास-ॐ आं ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ईं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऊँ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ औं ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अः ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। हृदयादिन्यासः-ॐ आं ह्रीं हृदयाय नमः। ॐ ईं ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ऊँ ह्रीं शिखायै वषट्। ॐ ऐं ह्रीं कवचाय हुम। ॐ औं ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट। ॐ अः ह्रीं अस्त्राय फट्। ध्यान- ॐ रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं, भानुं समस्त जगतामधिपं भजामि। पद्मद्वयाभय-वरान्द- धतं कराब्जैर्माणिक्य-मौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम्।।

चन्द्र का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ सों सोमाय नमः।

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीसोममन्त्रस्य भृगुर्ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, सोमो देवता, सों वीजम्, नमः शक्तिः, सोमप्रीतये जपे विनियोगः।❖ऋष्यादिन्यासः- ॐ भृगुऋषये नमः शिरसि, ॐ पंक्तिः छन्दसे नमः मुखे, ॐ सोमदेवतायै नमः हृदि, ॐ सों वीजाय नमः गुह्ये, ॐ नमः शक्त्ये नमः पादयोः,।। ❖करन्यासः-ॐ सां अंगुष्ठाभ्यां नमः,ॐ सीं तर्जनीभ्यां नमः,ॐ सूं मध्यमाभ्यां नमः,ॐ सैं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ सौं कनिष्ठकाभ्यां नमः,ॐ सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। ❖हृदयादिन्यासः-ॐ सां हृदयाय नमः, ॐ सीं शिरसे स्वहा, ॐ सूं शिखाये वषट्, ॐ सैं कवचाय हुम, ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ सः अस्त्राय फट्। ध्यान्- ॐ कर्पूरस्फटिकावदातमनिशं पूर्णेन्दु-बिम्बाननं, मुक्तादामविभूषितेन वपुषा निर्मूलयन्तं तमः। हस्ताभ्यां कुमुदं वरञ्च दधतं नीलालकोद्भासितं,स्वीयांकस्थमृगोदिताश्रयगुणं सोमं सुधाब्धिं भजे।।

मंगल का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र- ॐ अं अंगारकाय नमः।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीभौममन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, अंगारको देवता, अं बीजं, आपः शक्तिः, अंगारकप्रीतये जपे विनियोगः। ❖देहांगन्यासः-ॐ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि, ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे, ॐ अंगारक देवतायै नमः हृदये, ॐ अं बीजाय नमः गुह्ये, ॐ आपः शक्तये नमः पादयोः। ❖करन्यास-ॐ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः,ॐ ईं तर्जनीभ्यां नमः,ॐ ऊं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः, ❖हृदयादिन्यास-ॐ आं हृदयाय नमः, ॐ ईं शिरसे स्वाहा, ॐ ऊं शिखायै वषट्, ॐ ऐं कवचाय हुम्, ॐ औं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ अः अस्त्राय फट्। ध्यानम्- नमाम्यंगारकं देवं रक्ताम्बरविभूषणम्। जानुस्थवामहस्ताढ्यं साभयेतरपाणिकम्।

बुध का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र- ॐ बुं बुधाय नमः।

❖विनियोगः-ॐ अस्य श्रीबुधमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, बुधो देवता,बुं बीजं,आपः शक्तिः, बुध प्रीतये जपे विनियोगः।❖देहांगन्यासः-ब्रह्माऋषये नमः शिरसि। ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे। ॐ बुधदेवतायै नमः हृदये। ॐ बुं बीजाय नमः गुह्य। ॐ आपः शक्तये नमः पादयोः। ❖करन्यासः-ॐ बुं अगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ बुं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ बुं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ बुं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ बुं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ बुं करतलकर- पृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः-ॐ बुं हृदयाय नमः। ॐ बुं शिरसे स्वाहा; ॐ बुं शिखायै वषट्, ॐ बुं कवचाय हुम्, ॐ बुं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ बुं अस्त्राय फट्।
ध्यानः- ॐ बन्दे बुधं सदा देवं पीताम्बरसुभूषणम्। जानुस्थवामहस्ताढ्यं साभयेतरपाणिकम्।।

गुरु(बृहस्पति) का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ बृं बृहस्पतये नमः।

विनियोगः- ॐ अस्यश्रीबृहस्पतिमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, बृहस्पतिर्देवता, बृं बीजम्, नमः शक्तिः, श्रीबृहस्पतिप्रीतये जपे विनियोगः। ❖ऋष्यादिन्यासः-ॐ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि, ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे,ॐ बृहस्पतिर्देवतायै नमः हृदये, ॐ बृं बीजाय नमः गुह्य, ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः,❖करन्यासः-ॐ ब्राँ अंगुष्ठाभ्यां नमः,ॐ ब्रीं तर्जनीभ्यां नमः,ॐ ब्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ब्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ब्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ब्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः-ॐ ब्राँ हृदयाय नमः, ॐ ब्रीं शिरसे स्वाहा,ॐ ब्रूं शिखायै वषट्,ॐ ब्रैं कवचाय हुम्, ॐ ब्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ब्रः अस्त्राय फट्। ❖ध्यानम्-तेजोमयं शक्तित्रिशूलहस्तं सुरेन्द्रसंघस्तुतपादपंकजम्। मधानिधिं मत्स्यगतं द्विबाहुं गुरुं भजे मानस पंकजेऽहम्।।

शुक्र का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र- ॐ शुं शुक्राय नमः।

❖विनियोगः-ॐ अस्य श्रीशुक्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, शुक्रो देवता, शुं बीजं स्वाहम्, स्वाहा शक्तिः, श्रीशुक्र प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖ऋष्यादिन्यास-ॐ ब्रह्मऋषये नमःशिरसि, ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, ॐ शुक्रदेवतायै नमः हृदये, ॐ शुं बीजाय नमः गुह्ये, ॐ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः, ❖करन्यासः-ॐ शुं अंगुष्ठाभ्यां नमः,ॐ शुं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ शुं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ शुं अनामिकाभ्यां नमः,ॐ शुं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ शुं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यास-ॐ शुं हृदयाय नमः,ॐ शुं,शिरसे स्वाहा, ॐ शुं शिखायै वषट्, ॐ शुं, कवचाय हुम्, ॐ शुं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ शुं अस्त्राय फट्।
•ध्यानम्- ॐ सन्तप्त-काञ्चननिभं द्विभुजं दयालुं पीताम्बरं धृतसरोरुह- केशयुग्मम्। क्रौञ्चासनं असुरसेवितपादपद्मं शुक्रं भजे द्विनयनं हृदि पंकजेऽहम्।।

शनि का मन्त्र- ॐ शं शनैश्चराय नमः।

❖विनियोगः-ॐ अस्य श्रीशनैश्चरमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्री छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजम्, आपः शक्तिः, श्रीशनैश्चरप्रीतये जपे विनियोगः।
❖ऋष्यादिन्यासः- ॐ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि, ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे, ॐ शनैश्चरदेवतायै नमः हृदये, ॐ शं बीजाय नमः गुह्ये, ॐ आपः शक्तये नमः पादयोः। ❖करन्यासः-ॐ शं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ शं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ शं मध्यमाभ्यां नमः,ॐ शं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ शं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ शं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।
❖हृदयादिन्यासः- ॐ शं हृदयाय नमः, ॐ शं शिरसे स्वाहा, ॐ शं शिखायै वषट्, ॐ शं कवचाय हुम्, ॐ शं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ शं अस्त्राय फट्। ध्यानम्- ॐ नीलांजनाभं मिहिरस्य पत्रं ग्रहेश्वरं पाशभुजंगपाणिम्। सुरासुराणां भयदं द्विबाहुं भजे शनिं मानस पंकजेऽहम्।।

राहु का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ रां राहवे नमः

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीराहु मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, राहुर्देवता, रां बीजम्, वेशः शक्तिः, श्रीराहुप्रीतये जपे विनियोगः। देहांगन्यासः-ॐ ब्रह्मऋषये नमःशिरसि, ॐ पंक्तिछन्दसे नमः मुखे, ओं राहुदेवतायै नमः हृदये, ओं रां बीजाय नमः गुह्ये, ओं वेशः शक्तये नमः पादयोः,। करन्यासः-ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ रां तर्जनीभ्यां नमः, ॐ रां मध्यमाभ्यां नमः, ॐ रां अनामिकाभ्यां नमः, ॐ रां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ रां करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। हृदयादिन्यासः- ॐ रां हृदयाय नमः, ॐ रां शिरसे स्वाहा, ॐ रां शिखायै वषट्, ॐ रां कवचाय हुम्, ॐ रां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ रां अस्त्राय फट्। ध्यान- वन्दे राहुं धूम्रवर्णं अर्धकायं कृताञ्जलिम्।
विकृतास्यं रक्तनेत्रं धूम्रालङ्कारमन्वहम् ।।

केतु का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ कें केतवे नमः

❖विनियोगः- ॐ अस्य श्रीकेतुमन्त्रस्य श्रीब्रह्माऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, केतुर्देवता, कें बीजं, वेशः शक्तिः, श्रीकेतुप्रीतये जपे विनियोगः। ❖ऋष्यादिन्यासः-ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि,ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, ॐ केतुर्देवतायै नमः हृदये, ॐ कें बीजाय नमः गुह्ये, ॐ वेशः शक्तये नमः पादयोः ❖करन्यासः-ॐ कें अंगुष्ठाभ्यां नमः,ॐ कें तर्जनीभ्यां नमः, ॐ कें मध्यमाभ्यां नमः,ॐ कें अनामिकाभ्यां नमः, ॐ कें कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ कें करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः- ॐ कें हृदयाय नमः, ॐ कें शिरसे स्वाहा, ॐ कें शिखायै वषट्, ॐ कें कवचाय हुम्, ॐ कें नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ कें अस्त्राय फट्। ध्यानम्- ॐ वन्दे केतुं कृष्णवर्णं कृष्णवस्त्रविभूषणम्। वामोरुन्यस्ततद्धस्तं साभयेतरपाणिकम्।

ग्रहों का सामवेदीयशान्ति मन्त्र-

सूर्य-ॐ उदुत्यञ्जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वायसूर्यम्।
चन्द्र-ॐ सन्ते पयांसि समयन्तुवाजाः संवृष्ण्यान्यभिमातिषाहः।
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानिधिष्व।।
कुजस्य-ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयमपागु रेतागुंसि जिन्वति।
बुधः- ॐ अग्ने विवश्वदुषसश्चित्रां राह्नो अमर्त्य आदाशुषे।
जातवेदो वहात्वमद्या देवो उषर्व्बुधः।।
गुरोः-ॐ वृहस्पते परिदीयारथेन रक्षोहामित्रां अपबाधमानः ।
प्रभञ्जत्सेनाः प्रमृणो युधाजयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्।।
शुक्रस्य-शुक्रन्ते अन्यद्यजन्ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि विश्वाहि माया।
अवसि स्वधावन् भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु।
शनेः- ॐ शन्नो देवीरभिष्टय शन्नो भवन्तु पीतये। संयोरभिस्रवन्तु नः।
राहोः- ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता।
केतोः- ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः।

ग्रहों का बीज मन्त्र-

सूर्य-ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः।
चन्द्र-ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।
मंगल-ॐ हुँ श्रीं भौमाय नमः।
बुध-ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।
गुरु-ॐ ह्रीं क्लीं हुँ बृहस्पतये नमः।
शुक्र-ॐ ह्र श्रीं शुक्राय नमः।
शनि-ॐ ऐं ह्री श्रीं शनैश्चराय नमः।
राहु- ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।
केतु- ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः।

योगिनीशान्तिमन्त्रः-

मङ्गला-ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा। पिङ्ला-ॐ ग्लौं पिंगले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा।
धान्या-ॐ श्रीं धनदे धान्यायै स्वाहा। भ्रामरी-ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरि क्लीं स्वाहा।
भद्रिका- ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा। उल्का-ॐ उल्के मम रोगं नाशय जृंभय स्वाहा।
सिद्धा-ॐ ह्रौं सिद्धे मे सर्व मानसं साधय स्वाहा। संकटा-ॐ ह्रीं संकटे मम रोगं नाशय स्वाहा।

शत्रुनाशक बगलामुखी प्रयोगः मन्त्र-

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

विनियोगः- ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषिःत्रिष्टुप् छन्दः श्रीबगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थे च शत्रुणां स्तंभनार्थे जपे विनियोगः। करन्यासः- ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐश्रीबगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः, सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः, वाचं मुखं पदं स्तंभय अनामिकाऽभ्यां नमः। जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। षडङ्गन्यासः- ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, ॐ श्रीबगलामुखी शिरसे स्वाहा, सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, वाचं मुखं पदं स्तंभय कवचाय हुम्, जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।
ध्यानः- सौवर्णासन संस्थिता त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम् हेमाभाङ्गरुचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम्। हस्तैर्मुद्गर पाश वज्र रसनाः संबिभ्रतीं भषणै र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिंतयेत्।।

बगलामुखी शाबर मन्त्र- शावर मंत्र शीघ्र प्रभावी होते हैं- ॐ मलयाचल बगला भगवती महाक्रूरी महाकराली राजमुखबंधनं ग्राम मुखबंधनं ग्राम पुरुमुखबंधनं कालमुख बंधनं चौरमुखबंधनं व्याघ्रमुखबंधनं सर्वदुष्टग्रहबंधनं सर्वजनबंधनं वशीकुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।

विष्णु द्वादश अक्षर मन्त्रजप प्रयोग

मन्त्र- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीद्वादशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापति ऋषिर्गायत्रीछन्दः, श्रीविष्णुः परमात्मा देवता, मम सर्वपापविनाश-पूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖करन्यासः- ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, नमो तर्जनीभ्यां नमः, ॐ भगवते। मध्यमाभ्यां नमः, ॐ वासुदेवाय अनामिकाभ्यां नमः, ॐ नमो भगवते कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ वासुदेवाय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः- ॐ हृदयाय नमः, नमो शिरसे स्वाहा, ॐ भगवते शिखायै वषट्, ॐ वासुदेवाय कवचाय हुम्, ॐ नमो भगवते नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ वासुदेवाय अस्त्राय फट्।

❖ध्यानम्- ॐ विष्णु शारदचन्द्रकोटिसदृशं शंखं रथाङ्गदहारकुण्डलं- महामौलिं स्फुरत्कंकणं श्रीवत्सांकमुदार-कौस्तुभधरं वन्दे मनीन्द्रैः स्तुतम्॥

शिवपञ्चाक्षर मन्त्र जप विधिः-

ॐ नमः शिवायः।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, सदाशिवो देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः, शिवायेति कीलकं, चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

❖ऋष्यादिन्यासः- ॐ वामदेवऋषये नमः शिरसि, ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, ॐ श्रीसाम्बसदाशिवदेवतायै नमः हृदये, ॐ बीजाय नमः गुह्ये, क्षों नमः शक्तये नमः पादयोः। ॐ शिवाय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे, ❖करादिन्यासः- ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ मं ❖मध्यमाभ्यां नमः, ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ यं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः- ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ नं शिरसे स्वाहा, ॐ मं शिखायै वषट्, ॐ शिं कवचाय हुम्, ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ यं अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं,चारुचन्द्रावतंसं, रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं, विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥ ॐ नमः शिवाय।

न्यास सहित नवार्ण मन्त्र जपः- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम् ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

❖ऋष्यादिन्यासः- ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि, ऐं बीजाय नमः गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, क्लीं कीलकाय नमः नाभौ, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इस मूल मन्त्र से हाथोंकी शुद्धि करके करन्यास करें। ❖करन्यासः- ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः,ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः, ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖हृदयादिन्यासः-ॐ ऐं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्लीं शिखायै वषट्, ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्, ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्,ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्। ❖अक्षरन्यासः-ॐ ऐं नमः शिखायाम्, ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे, ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे, ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे ॐ मुं नमः वामकर्णे, ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे ॐ यै नमः वामनासापुटे, ॐ विं नमः मुखे, ॐ च्चे नमः गुह्ये। ❖दिङ्न्यासः- ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः, ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्- खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः, शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्। नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां, दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्। शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां, सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्। घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं, हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्। गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥

मालापूजन- ॐ ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः इस मन्त्र से मालाकी पूजा करके प्रार्थना करे-ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥ ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥ ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा। इसके बाद ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इस मन्त्र का जप करे। गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥ इस श्लोक से भगवति को जप अर्पण करदें।

नवार्णमन्त्र के विविध कामना मन्त्रभेद(षट्कर्म प्रयोग)-मन्त्रों के स्वरूपः-

१. वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अमुक(नाम) नामानं वषट् कुरुकुरु स्वाहा। वशीकरण के लिए।

२. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं(व्यक्ति नाम) फट् उच्चाटनं कुरुकुरु स्वाहा। उच्चाटन के लिए।

३. क्लीं क्लीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं(नाम) क्लीं क्लीं मोहनं कुरुकुरु क्लीं क्लीं स्वाहा। सम्मोहन के लिए।

४. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं रं रं खे खे मारयमारय रं रं शीघ्रं भस्मी कुरुकुरु स्वाहा। मारण के लिए।

५. ॐ ठं ठं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तंभयस्तंभय

ह्रीं जिह्वांकीलयकीलय ह्रीं बुद्धिं विनाशयविनाशय ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा। स्तम्भन के लिए।

६. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं यं यं शीघ्रमाकर्षय आकर्षय स्वाहा। आकर्षण के लिए।

७. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हुं अमुकामुकेन सह विद्वेषणं कुरुकुरु स्वाहा । विद्वेषण के लिए।

नवार्ण महामन्त्र स्वरूप- यह महानवार्ण मन्त्र अचूक फल दायक है इसका न्यासादि पूर्ववत् ही होगा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादुर्गे नवाक्षरीनवदुर्गे नवात्मिके नवचण्डीमहामाये महामोहे महायोगनिद्रे जये मधुकैटभ विद्राविणि महिषासुरमर्दिनि धूम्रलोचनसंहंत्रि चंडमुंडविनाशिनि रक्तबीजांतके निशुंभध्वंसिनि शुंभदर्पघ्नि देवि अष्टादशबाहुके कपाल-खट्वांग-शूलखड्ग-खेटकधारिणि छिन्नमस्तक धारिणि रुधिरमांसभोजिनि समस्तभूत प्रेतादियोगध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादिस्तुते देव मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् नाशय नाशय ह्रीं फट् हूँ फट् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

संपुटित पाठ मे होम आहुति विचार-

संपुटित पाठ होम में किसी आचार्य का मत हैं

संपुटे हवनं नास्ति के अनुसार ७०० होम-आहुति होगी तो किसी आचार्य के अनुसार संपुट होम आहुति संख्या २१०० होगी। कर्मठगुरु- सम्पुटे हवनं नास्ति प्रत्यहेऽपि तथैव च। नानार्थसिद्धिवैकल्पे होमन्तु विपुलं चरेत्॥ अर्थात् संपुट का हवन नहीं करे परन्तु बहुधा करते हैं, दुर्गाकल्पतरु एवं अनुष्ठान प्रकाश मे आहुति संख्या २१०० स्पष्ट लिखी गई हैं। यथा- होमकाले बीजसंयोगे दुर्गा मन्त्रेण पृथक् हुनेत्। कामना बीज संयोगो दुर्गा मन्त्रेण हुनेत्॥ दुर्गास्तवन मन्त्राणां संख्यां सप्तशतं भवेत्। कामना मन्त्र संख्या च शतं चैव चतुर्दश॥ मध्ये मन्त्रान् सप्तशतं होमकाले तु योजयेत्। पाठे मन्त्रं पुटं वाच्यं होम मन्त्राः पृथक् पृथक्॥ होमसंख्या च मन्त्राणां शतं वै चैकविंशतिः। पाठे बीजं पुटं वाच्यं होमे बीज पुटं हुनेत्। दुर्गापाठ मन्त्र को अगर किसी ऐं, ह्रीं, श्रीं, या किसी बीज मन्त्र से संपुटित किया जाता हैं तो पुटित कामना मन्त्र के अलग होम की आवश्यकता नहीं हैं। बीज मंत्र एकाक्षरी हो या५-७ बीजाक्षर होवे तो भी एक ही आहुति होगी। अतः ७०० आहुति देवे। अस्त संपुट- में एक ही आहुति होगी क्यों कि इसमें अंत में कामना मंत्र या बीजाक्षर विलोम होगा। व्याहृति व बीजाक्षरों का संपुट मंत्र के आदि व अंत में लोम विलोम ही लगता है अतः विलोमाक्षर का पृथक् होम नहीं करने पर केवल७०० आहुति देवे। मरणादि मंत्रों में लोम कामना मंत्र फिर दुर्गा मंत्र फिर विलोमाक्षर कामना मन्त्र की आहुति देने पर २१०० आहुति देवे।

निष्कर्ष- प्राय उदय संपुट पठ ही करते हैं अर्थात् दुर्गा मन्त्र के आदि-अंत में कामना मंत्र लोम ही लगाते हैं अतः २१०० आहुति देवे।

संपुटित पाठ प्रकार एवं विधि- पाठ मंत्र से आगे पीछे कामना मंत्र लगाने से

संपुटीकरण कहते हैं। संपुट पाठ ३ प्रकार के होते हैं। १.उदय संपुट, २.अस्त संपुट, ३.अर्द्धसंपुट

१.उदय संपुट- उदय संपुट में कामना मंत्र सप्तशतीपाठ मंत्र के आदि व अंत में लगाया जाता हैं।

२.अस्तसंपुट-अस्तसंपुट बीजमंत्र या कामना मंत्र पाठ के आदि में पढे फिर दुर्गापाठ मंत्र पढे अंत में कामना मंत्र विलोम रूप से उच्चारण करे यथा- ह्रीं जूं सः ऐं मार्कण्डेय उवाच सः जूं ह्रीं। ३.अर्द्धसंपुट- कामनामंत्र दुर्गापाठ मंत्र के आदि या अन्त में केवल एक बार पढें। इसका फल न्यून हैं परन्तु विपरित प्रभाव नहीं होता है। प्राय सर्वत्र उदय संपुट का ही प्रचलन है। ४. तंत्र मार्ग के अनुसार व्याहृति व बीजाक्षर का संपुट प्रारंभ में लोम तथा कामना मंत्र इष्ट के बाद विलोम क्रम से होता है तथा इनकी आहुति भी एक ही होती है। ५.मित्रपाद प्रयोग- मंत्र के चरण भेद मध्य में बीजमंत्र या अन्य मन्त्र के संयोजन से मंत्र उपासना या दुर्गा उपासना कि जा सकती है।

कामनानुसार दुर्गा पाठ के द्वादश क्रमभेद-

दुर्गा सप्तशती में तीन चरित्र है, इनको अलग अलग क्रम से करने पर अलग-अलग कामना फल विशेष रूप से मिलता है। जो निम्न प्रकार हैं-(तन्त्रग्रन्थ एवं निर्णय सिन्धु) १.महाविद्या क्रम- प्रथम, मध्यम उत्तर चरित्र- सर्वकामना हेतु। २.महातन्त्री- उत्तर, मध्यम, प्रथम चरित्र- शत्रुनाश,लक्ष्मीप्राप्ति हेतु। ३.चण्डी- उत्तर, मध्यम, प्रथम चरित्र- शत्रुनाश। ४.महाचण्डी-उत्तर, प्रथम, मध्यम चरित्र- शत्रुनाश,लक्ष्मीप्राप्ति हेतु। ५.सप्तशती- मध्यम,प्रथम,उत्तर चरित्र- लक्ष्मी व ज्ञान प्राप्ति एवं उच्चाटन। ६.मृतसंजीवनी- मध्यम, उत्तर, प्रथम चरित्र- आरोग्यलाभ। ७.रूप दीपिका- प्रथम, उत्तर, मध्यम चरित्र-विजय व आरोग्य। (रूपं देहि जयं देहि से संपुटित)। ८.निकुंभला-मध्यम, प्रथम, उत्तर चरित्र- रक्षा हेतु, विजय हेतु(शूलेन पाहि नो देवि से संपुटित)। ९.योगिनी- बालोपद्रव शमन। (प्रत्येक चरित्र से पहले सम्बन्धित योगिनियों का पाठ एवं प्रत्येक मंत्र को वं शं षं सम्पुटित)। १०.विलोम(संहार क्रम)-७०१ वें श्लोक से प्रथम श्लोक तक विलोम क्रम से। ११.असरशः विलोम पाठ- १३ वें अध्याय से प्रथम अध्याय तक काशी के पुराने विद्वानों के पास मिल सकती है१०० वर्ष पहले छपी हुई है। इसी तरह प्रत्येक चरित्र के पहले भैरव नामावलि पाठ का विधान भी मिलता। गढ़वाल क्षेत्र व अन्य सम्प्रदायों में हर अध्याय पहले भैरव नामावलि का पाठ करने का क्रम भी मिलता है। कई विद्वान कहते है कि सप्तशती के बाहर के मंत्र का संपुट नहीं लग सकता, परन्तु योगिनी क्रम से यह साफ जाहिर है कि अन्य मंत्रों के संपुट लग सकते हैं। दुर्गा सप्तशती के सभी रत्नमहाविद्याओं के मंत्र, गायत्री मन्त्र, भागवत के मन्त्रों का, वैदिक मंत्रों का व अन्य कई मंत्रों का संपुट लगाया जा सकता है। दुर्गार्चनसृति, अनुष्ठान प्रकाश में दुर्गा के बाहर के मंत्रों के संपुट के विषय में लिखा है। स्वयं रावण भी निकुंभला का उपासक था वह भी सप्तशतीक्रम से पाठन शूलेन पाहिनो..। का संपुट लगाता था।

दुर्गापाठ मे निषिध आहुति विचार-

चण्डी स्तवे प्रतिश्लोकेमेकाहुतिरिहेष्यते। रक्षा कवचार्गमन्त्रे तत्र न कारयेत्॥ अर्थात्- १.कवच मंत्र एवं अस्त्र शस्त्र मंत्रों का हवन नहीं होता हैं। वैसे अगर कवच सिद्ध करना हो तो गुग्गुल व घृत से होम करें। क्यो कि घृत से अग्नि का आचमन होता है। २.सौभाग्य द्रव्य सिन्दुरादि का भी होम नही होता है मरण कर्म में सिन्दुरादि से हवन अवश्य होता हैं उसमे तो अग्नि का १६वां मृतक संस्कार कुण्डानि का होता है पश्चात् विधि होम प्रारम्भ होता है। ३. चतुर्थ अध्याय के शूलेन पाहिनो देवि इत्यादि चार मन्त्रो का हवन नही होता, इसी तरह खड्गिनी शूलिनी मन्त्र का भी उच्चारण कर हवन नही करना चाहिए उक्त मन्त्र के स्थान पर नवार्ण मन्त्र अथवा श्री महालक्ष्म्यै स्वाहा से हवन करें अथवा मन्त्र को मानसिक उच्चारण कर हवन करें।४. पांचवे अध्याय में दूत उवाच दो बार आया है इस मन्त्र से आहुति देने से फल का भाग दूत को जाता है अतः कर्मफल में न्यूनता आती है। अतः मनसा पठकर ऐं सरस्वत्यै नमः से आहुति प्रदान करें।

दुर्गासप्तशती के प्रति अध्याय के अन्त मे महा आहुति विधान-

प्रति अध्याय के अन्त में आहुति समय स्रुक पर आहुति द्रव्य रखकर मंत्र से आहुति देवे। पश्चात् घी की आहुति इन मन्त्रो से देवे। घृताहुति के मन्त्र तो एक ही है, महाहुति क्रम अलग अलग है। घृत आहुति मंत्र- ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः। पिवतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशः आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।

प्रथम-अध्याय- एक पान पर कपित्थफल,मधु, कमलगट्टा,गुग्गल, शाकल्य, गंधाक्षत, पुष्प, लौंग, इलायची सब एक साथ लेवे। सुपारी रखे घी से भिगाये एवं स्रुक में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र से आहुति देवे-मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥ अथवा ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥ साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै वाग्भव बीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

द्वितीय-अध्याय :- हवनीयद्रव्य- पान, कमलगट्टा, गुग्गल, नारिकेलखण्ड, पुष्प, लौंग, इलायची, शाकल्य, सुपारि- नमो देव्यै महादेव्यै ......अथवा ॐ जयन्ती मंगला ....साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सशक्त्यै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै श्रीमहालक्ष्मी भुवनेश्वरी देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। **तृतीय-अध्याय**:- पान, विजोरा, चंदन, नीमगिलोय, दधि, माष, मधु, भैंसागुग्गल, कमलगट्टा, लौंगर, इलायचीर, सुपारी, शाकल्य, पुष्प, फल लेकर महाहुति देवे- नमो देव्यै महादेव्यै ......अथवा ॐ जयन्ती मंगला ....साङ्गायै सपरिवारायै सशक्त्यै सायुधायै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै श्रीमहालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। **चतुर्थ-अध्याय**-द्रव्य-पान, शाकल्य, पायस, कमलगट्टा, विल्वफल, लौंग, इलायची, गुग्गल, फल, पुष्प, मन्त्र-नमो देव्यै महादेव्यै ......अथवा ॐ जयन्ती मंगला ....साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सशक्त्यै सायुधायै श्री'लक्ष्मीबीज अधिष्ठात्र्यै। त्रिवर्णात्मिकायै श्री महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। **पञ्चम-अध्याय**- द्रव्य- पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारी, गुग्गल, कमलगट्टा, कपूर, श्वेतचन्दन, पुष्प, फल, विल्वफल,विजोरा। मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ......अथवा जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा.सश. सायु. शताक्ष्यै श्री धूम्राक्षी देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। **षष्ठ-अध्याय**:- द्रव्य- पान, शाकल्य, कमलगट्टा, गुग्गल, भोजपत्र, कुष्माण्डखण्ड, नारंगी, नारिकेलखण्ड, फल, पुष्प मन्त्र-नमो देव्यै महादेव्यै ......अथवा जयन्ती मंगला .. ..सांगा. सप. सवा.सश. सायु. शताक्ष्यै श्री धूम्राक्षी देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। **सप्तम-अध्याय**:-द्रव्य-पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारी, चिरोंजी, लाजवन्ती, पुष्प, कमलगट्टा, जयफल, कुष्माण्ड- फलखण्ड, कर्पूर- मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै.. ......जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा. श्रीकर्पूर बीजाधिष्ठात्र्यै श्री धूम्राक्षी काली चामुण्डा देवता महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

अष्टम-अध्याय:-द्रव्य-पान, शाकल्य,कमलगट्टा, लौंग, इलायची, सुपारी, फल, गुग्गल, कुष्माण्डखण्ड, लालचन्दन, मधु, पुष्प- मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ...... जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा. सश.सायु. अष्टमातृकासंहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। **नवम-अध्याय**- द्रव्य-पान, शाकल्य,कमलगट्टा, लौंग, इलायची, सुपारी, विजोरा नींबू,फल, कुष्माण्डखण्ड, इक्षुखण्ड, विलवफल,मनफल- मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ...... जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा. सश.सायु. श्री वाग्भव बीजाधिष्ठात्र्यै भगवति महाकाल्यै तारादेव्यै नमः महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। **दशम-अध्याय**- द्रव्य-पान, शाकल्य,कमलगट्टा, लौंग, इलायची, सुपारी, विजोरा, कस्तूरी, गुग्गल,फल, कुष्माण्डखण्ड, पुष्प, मेनसिल, विलवफल,मेनसिल- मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ...... जयन्ती मंगला ....सांगा. सप. सवा. सश.सायु. सिंहवाहनायै शूलपाशधारिण्यै अंबिका भैरवी देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

एकादश-अध्याय-द्रव्य-पान, पुष्प, फल, शाकल्य, लौंग, इलायची, कर्पूर, शर्करा, कमलगट्टा, सुपारी, मिश्री, पायसान्न, गुग्गल, इक्षुखण्ड, दाडिमफल मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै ...जयन्ती मंगला ...सांगा. सप. सवा. सश.सायु. सर्वनारायण्यै शक्त्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। **द्वादशदश-अध्याय**- द्रव्य- पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारि, अगर,कस्तूरी, कमलगट्टा, पत्र, पुष्प, फल, जायफल, विल्वफल, मिश्री, पायसान्न मन्त्र- नमो देव्यै महादेव्यै..जयन्ती मंगला..सांगा. सप.सवा.सश.सायु.श्री बालात्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। **त्रयोदश-अध्याय**- द्रव्य-पान, शाकल्य, लौंग, इलायची, सुपारि, विल्वफल, गुग्गल, कमलगट्टा, फल, समीपत्र, कदलीफल, श्वेतार्कपुष्प, कसर, कर्पूर, श्वेतपुष्प, नारिकेलखण्ड, पुष्प, मन्त्र-नमो देव्यै महादेव्यै ... जयन्ती मंगला ..सांगा. सप. सवा. सश.सायु. श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

॥ शत्रुनाशक बगला माला मन्त्र॥

ॐ नमो भगवति ॐ नमो वीरप्रतापविजयभगवति बगलामुखि मम सर्वनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं गतिं स्तम्भय स्तम्भय ब्रह्मीं मुद्रय मुद्रय बुद्धिं विनाशय विनाशय, अपराबुद्धिं कुरु कुरु, आत्म विरोधिनां शत्रूणां शिरो ललाट मुख नेत्र कर्ण नासिकोरु पद अणुरेणु दन्तोष्ठ जिह्वा तालु गुह्य गुद कटि जानु सर्वाङ्गेषु केशादिपादपर्यन्तं पादादिकेशपर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय, खें खीं मारय मारय, परमन्त्र परतन्त्राणि छेदय छेदय, आत्ममन्त्रयन्त्रतन्त्राणि रक्ष रक्ष, सर्वग्रहं निवारय निवारय, व्याधिं विनाशय विनाशय दुःखं हर हर, दारिद्र्यं निवारय निवारय, सर्वमन्त्र-स्वरूपिणि, सर्वतन्त्र स्वरूपिणि, सर्वशिल्प-प्रयोग-स्वरूपिणि, सर्वतत्व-स्वरूपिणि, दुष्टग्रह भूतग्रह आकाशग्रह पाषाणग्रह सर्वचाण्डालग्रह यक्षकिन्नर -किम्पुरुषग्रह भूतप्रेत-पिशाचानां शाकिनी डाकिनी-ग्रहाणां पूर्वदिशं बन्धय बन्धय वार्तालि मां रक्ष रक्ष दक्षिणदिशां बन्धय बन्धय, किरात- वार्तालि मां रक्ष रक्ष, पश्चिमदिशां बन्धय बन्धय, स्वप्नवार्तालि मां रक्ष रक्ष उत्तरदिशां बन्धय बन्धय, कालि मां रक्ष रक्ष ऊर्ध्वदिशं बन्धय बन्धय, उग्रकालि मां रक्ष रक्ष, पातालदिशं बन्धय बन्धय, बगलापरमेश्वरि मां रक्ष रक्ष, सकलरोगान् विनाशय विनाशय, सर्वशत्रून् पलायनाय पञ्चयोजनमध्ये राजजन-स्त्रीवशतां कुरु कुरु शत्रून् दह दह, पच पच स्तम्भय, स्तम्भय, मोहय मोहय, आकर्षय आकर्षय, मम शत्रून् उच्चाटय, उच्चाटय हुं फट् स्वाहा।

॥ इति वगलामालामन्त्रः॥

श्रीसूक्त

विनियोग:—ॐ अस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द कर्दम चिक्लीथ ऋषिः, अग्निर्देवता: आद्यंत्रयस्य अनुष्टुप् छंदः शेषांसा प्रस्तार पंक्तिः, त्रिष्टुप्, अनुष्टुप् पुनः प्रस्तार पंक्तिश्छंदः, हिरण्य वर्णा बीजं, तां आवह इति शक्तिः कीर्तिमृद्धिं ददातु इति कीलकं श्री महालक्ष्मी वर प्रसाद सिद्ध्यर्थं पाठे जपे विनियोगः।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥१॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ ४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वांनिर्णुद मे गृहात् ॥ ८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ।१४॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।१६॥
पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सं नि धत्स्व।१७॥
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे। तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्।१८॥ अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने। धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे।१९॥
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम् । प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे।२०॥ धनमग्नि र्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः। धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना।२१॥ वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा। सोमं धनस्य सोमिनो महं ददातु सोमिनः।२२॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः। भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम्।२३॥ सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे। भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्।२४॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्। लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युत—वल्लभाम्।२५॥ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्र चोदयात्।२६॥
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः। ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः।२७॥ ऋणरोगादि— दारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।२८॥
श्रीवर्चस्वमायुष्य— मारोग्य—माविधाच्छोभमानं महीयते। धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।२९॥

॥ ऋग्वेदोक्त श्रीसूक्त सम्पूर्णम्॥

चमत्कारी लक्ष्मी महामन्त्र प्रयोग विधि- २०

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः॥

विनियोग:-अस्य श्रीमहालक्ष्मीमन्त्रस्य ब्रह्माऋषि गायत्री छन्दः, महालक्ष्मी देवता, श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः सर्वार्थसिद्धये जपे विनियोगः।(एक अयांजल छोड़ दें)।

ऋष्यादिन्यास-ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमः मुखे, ॐ महालक्ष्मीदेवतायै नमः हृदये, ॐ श्रीं बीजाय नमः गुह्ये,ॐ ह्रीं शक्त्ये नमः पादयोः।

करन्यास-

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रींश्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं कनिष्ठाभ्यां नमः,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमःश्रीं ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः,

करन्यासः ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट्,
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय हुम्।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट्।

ध्यान-सिन्दूरारुणकान्तिमब्जवसतिं सौन्दर्यवारां निधिं, कोटी-रांगद-हार- कुण्डल-कटी- सूत्रादि- भिर्भूषिताम्॥ हस्ताब्जैर्वसुपात्राब्जयुगलादर्शौ वहन्तीं परा,मावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत्प्रियां शार्ङ्गिणः॥

दीपावली या किसी शुभ मुहूर्त मे (धन– धान्यादि वृध्यर्थं श्रीमहालक्ष्म्याः पूजन तथा जप करिष्ये या कारिष्ये)लक्ष्मी जी का विधिवत् पूजनादि कर जप करना चाहिए यदि केवल दीपावली दिन ही करना चाहते है तो ११००० जप कर अन्तमे दशांश हवन,तर्पण,मार्जनोपरान्त पूर्णाहूति दे उत्तरपूजन आरती कर यथा ज्ञान सन्तुष्ट करने से लक्ष्मी जी साक्षात् निवास करते है। जपमाला–स्फटिक/कमलगट्टा। जप संख्या–११०० प्रतिदिन। पुरश्चरण–१,२५,०००। हवन द्रव्य–घी,शहद एव शक्कर से युक्त बेलफल।

5-B | 5-B

॥ पुरुषसूक्त ॥

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुष: सहस्राक्ष: सहस्रपात् ।
स भुमिँ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुष एवेदँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुष: ।
पादोऽस्य विश्वा भुतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ ३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुष: पादोऽस्येहाभवत् पुन: ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ४॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुष: ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुर: ॥ ५॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत: सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋच: सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाँसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादत: ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावय:॥ ८॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रत: ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ ९॥
यत्पुरुषं व्यदधु: कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।१०
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्य: कृत: ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्याँ शूद्रो अजायत।११॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो: सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षँ शीर्ष्णो द्यौ: समवर्तत ।
पद्भ्यां भुमिर्दिश: श्रोत्रात्तथा लोकाँ२अकल्पयन्। १३।
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्म: शरद्धवि: ॥ १४॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रि: सप्त समिध: कृता: ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा:॥ १६॥

॥ इति पुरुष सूक्तम्॥

॥ रुद्रसूक्त ॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नम: ।
बाहुभ्यामुत ते नम: ॥
या ते रुद्र शिवा तनुरघोराऽपापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिँसी: पुरुषं जगत्।
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।
यथा न: सर्वमिज्जगदयक्ष्मँ सुमना असत् ॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराची: परा सुव ॥
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रु: सुमङ्गल: ।
ये चैनँ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिता: सहस्रशोऽवैषाँ हेड ईमहे ॥
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहित:।
उतैनं गोपा अदृश्रन् नदृश्रन्नुदहार्य: स दृष्टोमृडयाति न: ॥
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नम: ॥
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् ।
याश्च ते हस्त इषव: परा ता भगवो वप ॥
विज्यं धनु: कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत ।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधि: ॥
या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनु: ।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज ॥
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वत:।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्॥
अवतत्य धनुष्ट्वँ सहस्राक्षशतेषुधे ।
निशीर्यशल्यानां मुखा शिवो न: सुमना भव ॥
नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥
मा नो महान्तमुत मा नो
अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।
मा नो वधी: पितरं मोत
मातरं मा न: प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिष: ॥
मा नस्तोके तनये मान आयुषि
मा नो गोषु मानो अश्वेषु रीरिष: ।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो
वधीर्हविष्मन्त: सदमित्त्वा हवामहे ।१६॥

॥ इति रुद्रसूक्त॥

सङ्कटा–स्तुति:

प्रयोजन–महालक्ष्मी, महासरस्वती व महाकाली की कृपा तथा दर्शन कराने वाला अमोघ व परम तेजस्वी स्तोत्र। इसी स्तोत्र द्वारा महाकवि कालिदास ने मां भद्रकाली की उपासना कर साक्षात् दर्शन किये थे तथा वेद उपनिषदों का ज्ञान आशीर्वाद स्वरूप पाकर ज्ञानियों मे सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी हुए थे।)

अयि गिरि–नन्दिनि नन्दित–मेदिनि विश्व–विनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवर-विन्ध्य-शिरोऽधि-निवासिनि विष्णु-विलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठ–कुटुम्बिनि भूरि–कुटुम्बिनि भूतिकृते ।
जय जय हे महिषासुर–मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।१॥
सुर–वरवर्षिणि दुर्धर–धर्षिणि दुर्मुख–मर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवन–पोषिणि शंकरतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते।
दनुज–निरोषिणि दुर्मदशोषिणि दुर्मुनिरोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुर–मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।२॥
अयि जगदम्ब कदम्बवन–प्रियवासिनि तोषिणि हासरते
शिखरि–शिरोमणि–तुङ्ग–हिमालय–शृङ्ग–निजालय–मध्यगते।
मधु–मधुरे मधु कैटभ–गञ्जिनि महिष–विदारिणि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।३॥
अयि निजहुंकृति–मात्रनिराकृत–धूम्रविलोचन – धूम्रशते
समरविशोषित–रोषित–शोणित–बीजसमुद्भव–बीजलते।
शिव-शिव शुम्भ-निशुम्भ-महाहव-तर्पित-भूत-पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।४॥
अयि शतखण्ड–विखण्डित–रुण्ड– वितुण्डित–शुण्ड–गजाधिपते
निजभुजदण्ड- निपातितचण्ड विपाटित–मुण्ड–भटाधिपते।
रिपुगजगण्ड–विदारण–चण्डपराक्रम–शौण्ड–मृगाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।५॥
धनुरनुषङ्ग–रणक्षणसङ्ग–परिस्फुरदङ्ग–नटत्कटके
कनक–पिशङ्ग–पृषत्कनिषङ्ग–रसद्भटशृङ्ग–हताबटुके
हत–चतुरङ्ग–बल–क्षितिरङ्ग–घटद्–बहुरङ्ग–रटद् -बटुके
जय जय हे महिषासुर–मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।६॥
अयि रणदुर्मद–शत्रुवधाद्धुर–दुर्धर– निर्भर– शक्तिभृते
चतुर-विचार-धुरीण -महाशय - दूतकृत-प्रमथाधिपते
दुरित–दुरीह–दुराशय– दुर्मति–दानवदूत–दुरन्तगते
जय जय हे महिषासुर–मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।७॥
अयि शरणागत–वैरिवधूजन– वीरवराभय–दायिकरे
त्रिभुवनमस्तक–शूलविरोधि–शिरोधिकृतामल – शूलकरे
दुमिदुमितामर–दुन्दुभिनाद–मुहुर्मुखरीकृत–दिङ्निकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।८॥
सुरललना–ततथेयित–थेयित–थाभिनयोत्तर–नृत्यरते
कृतकुकुथा–कुकुथोदि–डदादिक–तालकुतूहल– गानरते।
धुधुकुट-धूधुट–धिन्धि–मितध्वनि–घोरमृदङ्ग –निनादरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।९॥
जय जय जाप्यजये जयशब्द–परस्तुति–तत्पर- विश्वनुते
झणझण-झिंमझिम-झिंकृत-नूपुर- शिञ्जित-मोहित-भूतपते।
नटितनटार्ध- नटीनटनायक-नाटन-नाटित-नाट्यरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१०॥
अयि सुमन:-सुमन:-सुमन:-सुमन: सुमनोरमकान्तियुते
श्रितरजनी-रजनी-रजनी- रजनी- रजनीकर - वक्त्रभृते।
सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराभिद्वृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।११॥
महित–महाहव–मल्ल–मतल्लिक–वल्लित–रल्लित–भल्लिरते
विरचितवल्लि-कपालिक पल्लिक-झिल्लिक-भिल्लिक-वर्गवृते
श्रुतकृत फुल्ल- समुल्ल सितारुण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते
जय जय हे महिषासुर–मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१२॥
अयि सुदतीजन–लालस–मानस–मोहन– मन्मथराजसुते
अविरल- गण्ड- गलन्- मदमेदुर- मत्त- मत्तङ्गजराजगते
त्रिभुवन–भूषण–भूत–कलानिधिरूप- पयोनिधि - राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१३॥
कमल- दलामल- कोमलकान्ति-कलाकलितामल - भालतले
सकल- विलास- कलानिलय- क्रमकेलिचलत्- कलहंसकुले
अलिकुल–सङ्कुल–कुन्तल–मण्डल–मौलिमिलद्–बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१४॥
करमुरलीरव– वर्जित– कूजित –लज्जित–कोकिल–मञ्जुमते

मिलित–मिलिन्द–मनोहरगुञ्जित–रञ्जित–शैल– निकुञ्जगते
निजगण–भूतमहा–शबरीगण –रङ्गणसम्भृत –केलिरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१५।।
कटितटपीत – दुकूलविचित्र –मयूख–तिरस्कृत –चण्डरुचे
जितकनकाचल – मौलिमदोर्जित-गर्जित-कुञ्जर-कुम्भकुचे।
प्रणत–सुराऽसुर–मौलिमणि–स्फुरदंशुलसन्नखचन्द्ररुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।। १६।।
विजित– सहस्त्रकरैक – सहस्त्रकरैक – सहस्त्रकरैकनुते
कृतसुरतारक – सङ्गरतारक – सङ्गरतारक – सूनुसुते
सुरथसमाधि – समानसमाधि– समानसमाधि–सुजाप्यरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।। १७।।
पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलय: स कथं न भवेत्।
तव पदमेव परं पदमस्त्विति शीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। १८।।
कनकलसत् – कलशीक जलै रनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवं
भजति स किं न शची-कुच -कुम्भ–नटीपरिरम्भ–सुखानुभवम्
तव चरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवं
जय जय हे महिषासुर–मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१९।।
तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्न नुकूलयते
किमु पुरुहूत–पुरीन्दुमुखी– सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।। २०।।
अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे।
यदुचितमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भवि देवि दयां कुरु मे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।। २१।।
स्तुतिमिमां स्तिमित: सुसमाधिना, नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत्
परमया रमया स निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत्।। २२।।

।। इति श्रीसङ्कटा–स्तुति: सम्पूर्णा।।

भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता,
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्मैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।१।।
भवाब्धावपारे महादु:खभीरु:
प्रतप्त: प्रकामी प्रलोभी प्रमत्त: ।
कुसंसारपाशप्रबद्ध: सदाहं।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।२।।
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्।
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।३।।
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मात:
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।४।।
कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धि: कुदास:
कुलाचारहीन: कदाचारलीन:।
कुदृष्टि: कुवाक्यप्रबद्ध: सदाहम्
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।५।।
प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।६।।
विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।७।।
अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीन: सदा जाड्यवक्त्र:।
विपत्तौ प्रविष्ट: प्रणष्ट: सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।८।।

रुद्राष्टक

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।।१।।
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं
गुणागार संसारपारं नतोऽहम्।।२।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा
लसद्भालबालेन्दु कण्ठेभुजंगा।।३।।
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।४।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं
अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं ।
त्रय: शूल निर्मूलनं शूलपाणिं
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्।।५।।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानंद संदोह मोहापहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।६।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं
भजंतीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।।७।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां।
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यं ।
जरा जन्म दु:खौघ तातप्यमानं
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो।।८।।
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भु: प्रसीदति।।९।।

इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम्।

श्रीकाल भैरवाष्टकम्

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। १।।
भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। २।।
शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। ३।।
भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम् ।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। ४।।
धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। ५।।
रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। ६।।
अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। ७।।
भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम्।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। ८।।
कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम्। शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसंनिधिं ध्रुवम्।।

।। श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचित कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम्।।

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।१।।
वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम् ।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।२।।
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुर: पाणिर्मधुर: पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।३।।
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम् ।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।४।।
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम् ।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।५।।
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा ।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं धुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।६।।
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम् ।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।७।।
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा ।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।८।।

।। इति श्रीमद्वाल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि नक्षत्र	समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः योगाः	समा.कालः द. प.	करण द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	राश्यादिस्पष्टसूर्यः	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.
१ र.	२।२६	दि.६।१६	श्रवण	१९।०५	दि.१२।१६	प्रीति	००।११	कौलव २।२६	मकर ४८।०४	रा.१२।३२	३।०८।२१।०३	३३।३०	५।१८	६।४२	३	६	२५
३ चं.	५७।४८	रा.४।२६	धनिष्ठा	१८।२४	दि.१२।३६	सौभाग्य	५१।१५	वणिज् २८।४०	कुम्भ	अहोरात्र	३।०६।१८।०६	३३।२८	५।१८	६।४२	४	१	२६
४ मं.	५७।१८	रा.४।१४	शतभिषा	१८।५६	दि.१२।५३	शोभन	४८।१०	बव २६।३३	कुम्भ	अहोरात्र	३।१०।१५।१५	३३।२६	५।१९	६।४१	५	११	२७
५ बु.	५८।०५	रा.४।३४	पूर्वाभाद्रपद	२०।४०	दि.१।३६	अतिगण्ड	४६।१०	कौलव २७।४२	कुम्भ ५।१४	दि.७।२६	३।११।१२।२१	३३।२२	५।२०	६।४०	६	१२	२८
६ गु.	६०।००	अहोरात्र	उत्तराभाद्रपद	२३।४३	दि.२।४८	सुकर्मा	४५।११	गर २६।०८	मीन	अहोरात्र	३।१२।०८।२७	३३।१८	५।२०	६।४०	७	१३	२९
६ शु.	००।१०	प्रा.५।२५	रेवती	२७।५१	दि.४।२६	धृति	४५।०४	वणिज् ००।१०	मीन २७।५१	दि.४।२६	३।१३।०६।३३	३३।१६	५।२१	६।३९	८	१४	३०
७ श.	३।२३	दि.६।४२	अश्विनी	३३।०८	सं.६।३६	शूल	४५।४४	बव ३।२३	मेष	अहोरात्र	३।१४।०३।४०	३३।१३	५।२१	६।३९	९	१५	३१
८ र.	७।३२	दि.८।२२	भरणी	३९।०७	रा.६।०१	गण्ड	४७।०१	कौलव ७।३२	मेष ५५।४४	रा.३।४०	३।१५।००।४७	३३।१०	५।२२	६।३८	१०	१६	१
९ चं.	१२।१६	दि.१०।१८	कृत्तिका	४५।३५	रा.११।३७	वृद्धि	४८।३६	गर १२।१६	वृष	अहोरात्र	३।१५।५८।००	३३।०७	५।२३	६।३७	११	१७	२
१० मं.	१७।२४	दि.१२।२०	रोहिणी	५२।०५	रा.२।१३	ध्रुव	५०।११	भद्रा १७।२४	वृष २५।०६	दि.३।२६	३।१६।५५।१३	३३।०४	५।२३	६।३७	१२	१८	३
११ बु.	२२।१८	दि.२।१६	मृगशिरा	५८।१२	रा.४।४०	व्याघात्	५१।२६	बालव २८।१८	मिथुन	अहोरात्र	३।१७।५५।२७	३३।००	५।२४	६।३६	१३	१९	४
१२ गु.	२६।३६	दि.४।०५	आर्द्रा	६०।००	अहोरात्र	हर्षण	५२।१६	तैतिल २६।३६	मिथुन	अहोरात्र	३।१८।४६।४१	३२।५७	५।२५	६।३५	१४	२०	५
१३ शु.	३०।०६	दि.५।२७	आर्द्रा	०३।३५	प्रा.६।५१	वज्र	५२।१४	वणिज् ३०।०६	मिथुन ५१।५३	रा.२।१०	३।१९।४६।५५	३२।५४	५।२५	६।३५	१५	२१	६
१४ श.	३२।२३	सं.६।२३	पुनर्वसु	०७।५६	दि.८।३७	सिद्धि	५१।२०	भद्रा १।१५	कर्क	अहोरात्र	३।२०।४४।०६	३२।५१	५।२६	६।३४	१६	२२	७
३० र.	३३।२६	सं.६।५१	पुष्य	११।१४	दि.६।५६	व्यतीपात्	४६।२५	चतुष्पद२।५६	कर्क	अहोरात्र	३।२१।४१।२४	३२।४८	५।२७	६।३३	१७	२३	.८

श्रावणकृष्णपक्षः

शक १९४३, संवत्२०७८, सन् १४२६,दक्षिणायणं, उत्तरगोलः, वर्षा ऋतुः, पश्चिमे कालः, शुद्धः,
दिनांक २५ जुलाईतः ८ अगस्त यावत् सन् २०२१ ड। वक्री पूर्वोदितः गुरु, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

ने.	अं.	
६	२५	द्वितीया तिथिमानं५७।०६ रा.४।०८,आयुष्यमान ५५। ०६, श्रावणेवर्जयेच्छाकम्। मैथिल नववर्षारम्भः। अशून्यशयन २ व्रत, पञ्चकारम्भः(भदवा) दि.१२।५६ उपरि,
१	२६	सोमव्रतम्, दीक्षाग्रहणम्,गृहारम्भः, पश्चिमयात्रा दि.१२।३६ यावत्, भद्रा २८।४० उ.५७।४८ या.,
११	२७	गणाधित ४ व्रतं, शिववासः,अग्निवासः। शिववास दि.६।१६ या. ततः अग्निवासः,पश्चिमां विनायात्रा दि.६।१६तः दि.१२।५६ या.ततः पूर्वयात्रा रा.१२।३६यावत्।
१२	२८	मौना५, नागपंचमी५, मनसादेवीपूजन-मुत्थापनञ्च। मधुश्रावणीपूजारम्भः। दग्धतिथि रा.४।३४ उपरि। शिववासः,
१३	२९	सर्वार्थसिद्धियोगः दि.२।४८ उपरि, अग्निवासः, दग्धतिथि अहोरात्रं, भद्रा ००।१० उ. ३१।४७ या.
१४	३०	श्रीशीतलासप्तमी(मध्याह्ने),पञ्चक(भदवा) समाप्तिः दि.४।२६ उपरि, दग्धतिथि प्रा.५।२५ या., सर्वार्थसिद्धियोगः अहोरात्रं,
१५	३१	कालाष्टमीव्रतं, पूर्वाविनायात्रा, शिववासः-अग्निवासः दि.६।४२ उपरि,
१६	१	अगस्त८, शिववासः दि.८।२२ या., सिद्धियोगः दि.८।२२ या.,
१७	२	इन्द्रसावर्णिमन्वादि, सोमव्रतम्, अमृतयोगः दि.१०।१८ उपरि, अग्निवासः, दक्षिणयात्रा रा.११।३७ उपरि, भद्रा ४४।५२ उ.,
१८	३	शिववासः दि.१२।२०उ., पूर्व-दक्षिणयात्रा दि.१२।२० यावत्, भद्रा १७।२४ यावत्। आश्लेपायां रवि ३०।३५(सं.५।३७), स्त्री.पु.चं.सू.योगे चातकवाहनं
१९	४	कामदाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषां, शिववासः, अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.४।४० या., अमृतयोगः दि.२।१९ या., उत्तरां विनायात्रा रा.४।४० यावत्।
२०	५	दूर्वादलेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, प्रदोषेशिवार्चनं, शिववासः दि.४।०५ यावत् ततः अमृतयोगः। वक्रगत्याः धनिष्ठायां गुरुः६।५५।
२१	६	प्रदोष १४ व्रतं, अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः प्रा.६।५१ उपरि, दक्षिणयात्रा प्रा.६।५१ उपरि, भद्रा३०।६ उ.,
२२	७	भद्रा १।१५ या., राज्यप्रदयोगः सं.६।२३ यावत्। वातनाड़ी तदीशो रविः वायुवृष्टियोगः।
२३	.८	श्रावणी३०, अमावस्या स्नानदान-श्राद्धादौ। रविपुष्ययोगः दि.६।५६या, शिववास सं.६।५१ या., अग्निवासः।

मूलविचारः-रेवती/अश्विनी ति.६ गुरु दि.२।४६ तः ति.७ शनि सं.६।३६ यावत्
आश्लेषा/मघा ति.३० रवि दि.६।५६ तः............

विविधविषयाः—श्रावणकृष्णपञ्चम्यां मनसादेव्याः उत्थापनं पूजनञ्च कार्यम्। अरवानत्तिक्तं (निम्बपत्रवान्पूर) रससेवनं पुष्टिकरम्। सायंकाले च नूपकमृत्तिकादुग्धलाजान् सर्पमन्त्रेणाभिमन्त्र्य गृहेषु विकिरेत्। सर्प मन्त्र-दू सर्पा चौसर्पा झाड़े सारे कारे विषा आस्तीक आस्तीक आस्तीक। आस्तीकेति वचः श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्त्तते। शतधा भिद्यते मूर्ध्ना शिंशवृक्षफलं यथा।

सोमवारव्रत- सोमवारे व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधि। शक्तयानुसारेणं कार्यमथवा निशिभोजनम्। कृत्यापि कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता नन्दिपुराणे- कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत्तु तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्री गुरु राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि
१ र.	४।०२।२५।३९	३।०५।१५।३४	१०।०८।०४।२६	४।१२।३२।४२	६।१३।१०।३१	७।१६।०२।२६
३ चं.	४।०३।०३।२०	३।०७।०५।३८	१०।०७।५७।२६	४।१३।४५।५७	६।१३।०५।५५	७।१५।५९।१८
४ मं.	४।०३।४१।०१	३।०८।५५।४२	१०।०७।५०।३२	४।१४।५९।११	६।१३।०१।१९	७।१५।५६।०७
५ बु.	४।०४।१८।४२	३।१०।४५।४६	१०।०७।४३।३५	४।१६।१२।२५	६।१२।५६।४३	७।१५।५२।५६
६ गु.	४।०४।५६।२३	३।१२।३५।५०	१०।०७।३६।३८	४।१७।२५।३९	६।१२।५२।०७	७।१५।४९।४५
६ शु.	४।०५।३४।०४	३।१४।२५।५४	१०।०७।२९।४१	४।१८।३८।५३	६।१२।४७।३१	७।१५।४६।३४
७ श.	४।०६।११।४५	३।१६।१५।५८	१०।०७।२२।४४	४।१९।५२।०७	६।१२।४२।५५	७।१५।४३।२४
८ र.	४।०६।४९।२४	३।१८।०६।०१	१०।०७।१५।४८	४।२१।०५।२१	६।१२।३८।१९	७।१५।४०।१४
९ चं.	४।०७।२७।१९	३।१९।१८।५२	१०।०७।०८।०४	४।२२।१८।३०	६।१२।३३।३१	७।१५।३७।०३
१० मं.	४।०८।०५।१४	३।२०।३१।४३	१०।०७।००।२०	४।२३।३१।३९	६।१२।२८।४३	७।१५।३३।५२
११ बु.	४।०८।४३।०८	३।२१।४४।३४	१०।०६।५२।३६	४।२४।४४।४८	६।१२।२३।५५	७।१५।३०।४१
१२ गु.	४।०९।२१।०२	३।२२।५७।२५	१०।०६।४४।५२	४।२५।५७।५७	६।१२।१९।०७	७।१५।२७।३०
१३ शु.	४।०९।५८।५६	३।२४।१०।१६	१०।०६।३७।२९	४।२७।११।०६	६।१२।१४।१९	७।१५।२४।१९
१४ श.	४।१०।३६।५०	३।२५।२३।०६	१०।०६।२९।२६	४।२८।२४।१५	६।१२।०९।३१	७।१५।२१।०९
३० र.	४।११।१४।४३	३।२६।३५।५६	१०।०६।२१।४३	४।२९।३७।२४	६।१२।०४।४३	७।१५।१७।५९

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

मिश्रमानं	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४६।४५	०।३४	२।३०	४।४३	७।०१	९।१७	११।३२	१३।४६	१६।०६	१८।११	१९।५७	२१।२८	२२।५७
४६।४४	०।३०	२।२६	४।३९	६।५७	९।१३	११।२८	१३।४५	१६।०२	१८।०७	१९।५३	२१।२४	२२।५३
४६।४३	०।२७	२।२३	४।३६	६।५४	९।१०	११।२५	१३।४२	१५।५९	१८।०४	१९।५०	२१।२१	२२।५०
४६।४१	०।२३	२।१९	४।३२	६।५०	९।०६	११।२१	१३।३८	१५।५५	१८।००	१९।४६	२१।१७	२२।४६
४६।३९	०।१९	२।१५	४।२८	६।४६	९।०२	११।१७	१३।३४	१५।५१	१७।५६	१९।४२	२१।१३	२२।४२
४६।३८	०।१५	२।११	४।२४	६।४२	८।५८	११।१३	१३।३०	१५।४७	१७।५२	१९।३८	२१।०९	२२।३८
४६।३७	०।११	२।०७	४।२०	६।३८	८।५४	११।०९	१३।२६	१५।४३	१७।४८	१९।३४	२१।०५	२२।३४
४६।३६	०।०८	२।०३	४।१७	६।३५	८।५१	११।०६	१३।२३	१५।४०	१७।४५	१९।३१	२१।०२	२२।३१
४६।३५	०।०४	१।५९	४।१३	६।३१	८।४७	११।०२	१३।१९	१५।३६	१७।४१	१९।२७	२०।५८	२२।२७
४६।३४	००।००	१।५५	४।०९	६।२७	८।४३	१०।५८	१३।१५	१५।३२	१७।३७	१९।२३	२०।५४	२२।२३
४६।३२	२३।५६	१।५१	४।०५	६।२३	८।३९	१०।५४	१३।११	१५।२८	१७।३३	१९।१९	२०।५०	२२।१९
४६।३०	२३।५२	१।४७	४।०१	६।१९	८।३५	१०।५०	१३।०७	१५।२४	१७।२९	१९।१५	२०।४६	२२।१५
४६।२८	२३।४८	१।४३	३।५७	६।१५	८।३१	१०।४६	१३।०३	१५।२०	१७।२५	१९।११	२०।४२	२२।११
४६।२६	२३।४४	१।३९	३।५३	६।११	८।२७	१०।४२	१२।५९	१५।१६	१७।२१	१९।०७	२०।३८	२२।०७
४६।२४	२३।४०	१।३५	३।४९	६।०७	८।२३	१०।३८	१२।५५	१५।१२	१७।१७	१९।०३	२०।३४	२२।०३

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि,		दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	र.	दि.१०:१९-१:४१।	रा.१०:४१-१२:०० रा.१:१९-२:३८।
३	चं.	दि.६:५८-८:३६। दि.३:२३-५:०३।	रा.१०:४२-१२:०१। रा.२:३९-३:५८।
४	मं.	दि.६:५९-८:४०। दि.३:२२-५:०२।	रा.८:०२-९:२२।
५	बु.	दि.८:४१-१०:२१। दि.१२:०१-१:४१।	रा.१२:०१-१:२६। रा.४:००-५:१९।
६	गु.	दि.३:२९-६:४१।	रा.९:२०-१०:४०।
६	शु.	दि.८:४०-१२:००।	रा.६:४०-८:००। रा.१:२०-२:४०। रा.४:००-५:२०
७	श.	दि.५:२०-७:००। दि.१:४०-३:२०। दि.५:००-६:४०	रा.१०:४०-१२:००। रा.१:२०-२:४०।
८	र.	दि.१०:२०-१:४०।	रा.१०:४१-१२:०१। रा.२:४१-४:०१।
९	चं.	दि.७:०१-८:४१। दि.३:२१-५:००।	रा.७:५९-९:२०।
१०	मं.	दि.७:०२-८:४२। दि.१:४१-३:२०।	रा.१२:०२-१:२२। रा.२:४२-४:२।
११	बु.	दि.८:४२-१०:२२। दि.१२:०२-१:४१।	रा.१२:०२-१:२२ रा.२:४२-४:२१।
१२	गु.	दि.३:१९-६:३७।	रा.१२:१-१:२२। रा.४:०३-५:२३।
१३	शु.	दि.८:४३-१२:०१।	रा.९:१९-१०:४०।
१४	श.	प्र.५:२४-७:०३। दि.१:३९-३:१८। दि.४:५७-६:३६।	रा.६:३६-७:५७। रा.१:२१-२:४२। रा.४:३-५:२४
३०	र.	दि.१०:२२-१:४०।	रा.१०:३९-१२:००। रा.१:२०-२:४१।

रुद्राभिषेक में विशेष द्रव्य विचार-

ज्वरप्रकोपशान्त्यर्थं जलधारा शिवप्रिया।। घृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्रकम्। तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः।। प्रमेहरोगशान्त्यर्थं प्राप्नुयान्मानसेप्सितम्। केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः।। शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत्। श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शंकरस्य च।। सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह। मधुना यक्ष्मराजोऽपि गच्छेद्वै शिवपूजनात्।। पापक्षयार्थी मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा। जीवनार्थी तु पयसा श्रीकामीक्षुरसेन वै।। पुत्रार्थी शर्करायास्तु रसेनार्चेच्छिवं तथा। महालिंगाभिषेकेण सुप्रीतः शंकरो मुदा।। कुर्याद्विधानं रुद्राणां यजुर्वेदविनिर्मितम्।।

बिल्वाष्टकम्-

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्। त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१।। त्रिशाखैर्बिल्व पत्रैश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः। शिवपूजां करिष्यामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।२।। अखण्डबिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे। शुद्ध्यन्ति सर्वपापेभ्यो बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।३।। शालिग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत्। सोमयज्ञमहापुण्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।४।। दन्तिकोटि-सहस्राणि वाजपेयशतानि च। कोटिकन्या- महादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।५।। लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्। बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।६।। दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्। अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।७।। मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे। अग्रतः शिवरूपाय बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।८।। बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ। सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात्।।९।।

पञ्चम्यां नाग पूजनं—श्रावणे मासि पञ्चम्यां कृष्णपक्षेऽथवा सिते। द्वारस्योभयतो लेख्यो गोमयेन विषोल्वणः। पूजयेद्विधिवद्वीर दधि दूर्वांकुरैः कुशैः। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानां च तर्पणैः। ये तस्यां पूजयन्तीह नागान् भक्तिपुरस्सराः। तेषां सर्पतो वीर भयं भवति न कुत्रचित्। **पञ्चम्यां-शकुनम्-** श्रावणशुक्लपञ्चम्यां दक्षिणपश्चिमवायौ दुर्भिक्षमन्यथा शुभिक्षम्। नभसि शुक्ल दलेऽचलसंज्ञके रवितिथावुदयो रविचन्द्रयोः। भवति चेज्जलदैरिह संवृता वसुमती जलदा बहुतोयदाः।

१ रवौ वल्ली
८।३६।४२।३६
अयनांशाः २२।५०।०१

२ रा. | १२ | ल.१ | गु.११ | ३ | सु ४ बु | १० चं. | ७ | श | शु.५ मं | ६ | ८ के. | ९

८ रवौ वल्ली
८।३६।४२।४३
अयनांशाः २२।५०।०२

२ रा. | १२ | ल.१ चं. | गु.११ | ३ | सू ४ बु | १० श | ७ | शु.५ मं | ६ | ८ के. | ९

३० रवौ वल्ली
८।३६।४२।५०
अयनांशाः २२।५०।०३

ल.१ रा. | ११ | १२ | गु.१० | २ | सू ३ बु चं. | ९ श | ६ | शु.४ मं | ५ | ७ के. | ८

श्रावणशुक्लपक्षः

शक १९४३, संवत्२०७८, सन् १४२८,दक्षिणायनं, उत्तरगोल, वर्षा ऋतुः,पश्चिमे कालः ता.१७ तः उत्तरे कालः, शुद्धः ता.१७ तः अशुद्धः
दिनांक ९ अगस्त तः २२ यावत् सन् २०२१ इ। वक्री पूर्वोदितः गुरु, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

तिथयः दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	राशिः	द. प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	रा.	दिनांक ने.	अं.
१ चं.	३३।१७	सं.६।४६	आश्लेषा	१३।१३	दि.१०।४४	वरीयान्	४६।२६	किंस्तुघ्न ३।२३	कर्क	१३।१३	दि.१०।४४	३।२२।३९।४८	३२।४५	५।२७	६।३३	१८	२४	९
२ मं.	३१।५०	सं.६।१२	मघा	१३।५६	दि.११।०२	परिघ	४२।४३	वालव ३।३४	सिंह		अहोरात्रं	३।२३।३६।१२	३२।४२	५।२८	६।३२	१९	२५	१०
३ बु	२८।११	दि.५।०८	पूर्वाफाल्गुनी	१३।२८	दि.१०।५१	शिव	३७।४५	तैतिल ००।३१	सिंह	२८।०५	दि.४।४२	३।२४।३३।३६	३२।३६	५।२८	६।३२	२०	२६	११
४ गु.	२५।३२	दि.३।४२	उत्तराफाल्गुनी	११।५५	दि.१०।१५	सिद्ध	३२।०८	भद्रा २५।३२	कन्या		अहोरात्रं	३।२५।३१।००	३२।३६	५।२६	६।३१	२१	२७	१२
५ शु.	२१।०२	दि.१।५४	हस्त	०९।३६	दि.६।५६	साध्य	२५।४८	वालव २१।०२	कन्या	३८।०१	रा.८।४१	३।२६।२८।२४	३२।३३	५।२६	६।३१	२२	२८	१३
६ श.	१५।५०	दि.११।५०	चित्रा	०६।२५	दि.८।०४	शुभ	१८।४४	तैतिल १५।५०	तुला		अहोरात्रं	३।२७।२५।४८	३२।३०	५।३०	६।३०	२३	२९	१४
७ र.	१०।०६	दि.६।३३	स्वाती	०३।४४	दि.०७।००	शुक्ल	११।३७	वणिज् १०।०६	तुला	४७।४६	रा.१२।३७	३।२८।२३।१३	३२।२७	५।३१	६।२९	२४	३०	१५
८ चं.	४।०२	दि.७।०८	अनुराधा	५४।२६	रा.३।१८	ब्रह्म	०४।०४	वव ४।०२	वृश्चिक		अहोरात्रं	३।२९।२०।४६	३२।२५	५।३१	६।२८	२५	३१	१६
१० मं.	५१।४३	रा.२।१३	ज्येष्ठा	५०।२३	रा.१।४१	वैधृति	४८।४५	तैतिल २४।४६	वृश्चिक ५०।२३		रा.१।४१	४।००।१८।२५	३२।२२	५।३२	६।२८	२६	१	१७
११ बु.	४५।५३	रा.११।५३	मूल	४६।२६	रा.१२।०७	विष्कुम्भ	४१।२१	वणिज् १८।४८	धनु		अहोरात्रं	४।०१।१६।०१	३२।१८	५।३२	६।२८	२७	२	१८
१२ गु.	४०।३०	रा.६।४५	पूर्वाषाढ़ा	४३।०४	रा.१०।४६	प्रीति	३४।१८	वव १३।१२	धनु	५७।२३	रा.४।३०	४।०२।१३।३७	३२।१५	५।३३	६।२७	२८	३	१९
१३ शु.	३५।४६	रा.७।१२	उत्तराषाढ़ा	४०।१६	रा.०६।४१	आयुष्मान्	२७।४४	कौलव ८।०८	मकर		अहोरात्रं	४।०३।११।१३	३२।१२	५।३४	६।२६	२९	४	२०
१४ श.	३१।५१	सं.६।१८	श्रवण	३८।२६	रा.०८।५६	सौभाग्य	२१।४८	गर ३।४६	मकर		अहोरात्रं	४।०४।०८।४९	३२।०६	५।३४	६।२६	३०	५	२१
१५ र.	२८।५६	सं.५।०६	धनिष्ठा	३७।५८	रा.०८।४६	शोभन	१६।४१	भद्रा ००।२४	मकर	८।१२	दि.८।५२	४।०५।०६।२५	३२।०६	५।३५	६।२५	३१	६	२२

दोलोत्सवारम्भः(झूलन)। चन्द्रदर्शनं, मु.३० फलं सौम्यशृंग सुभिक्षप्रजासुखम्। सोमव्रतं, सिद्धियोगः-अग्निवास सं.६।४६ या.। कन्यायां शुक्रः ५।१९।

धर्मसम्राट स्वामीकरपात्री जयन्ती। शिववासः सं.६।१२ या. ततः अग्निवास, पूर्वयात्रा दि.११।०२ उपरि, अमृतयोगः सं.६।१२ यावत् ततः सिद्धियोगः। मघायां सिंहे च बुधः १०।२०।

मधुश्रावणीव्रत समाप्तिः। स्वर्णगौरी व्रतं, श्रीगणेश ४ व्रतं, विपणि दि.१०।५१ उपरि, अग्निवासः दि.५।०८ या., भद्रा ५७।२२ उ.। मद्रा १०।०६ उ. ३७।४० यावत्

शिववासः-अग्निवासः-पूर्वयात्रा-सिद्धियोगश्च दि.३।४२ उपरि, विपणि-यानादिचालनं दि.३।४२ उपरि, भद्रा २५।३२ या.। दि.१।५४ या. ततः सिद्धियोगः,पूर्व-दक्षिणयात्रा दि.१।५४यावत्। द्यूतिथि दि.१।५४ उ.।

नागपञ्चमी नागपूजनं, द्वारमुभयतः गोमयनिर्मिता नागाः सिन्दूरदूर्वादुग्धलाजादिभिः पूज्याः। ऋग्वेदिनामुपाकर्म(श्रावणी)। गृहप्रवेशः चित्रायां पञ्चम्यां च दि.६।१९तः दि.१।५४ यावत्। शिववासः, अग्निवासः

गृहप्रवेशः सप्तम्यां दि.११।५० उपरि। शिववासः दि.११।५० यावत् ततः अग्निवासः, अमृतयोगः दि.११।५० या., सर्वार्थसिद्धियोगः दि.८।०४ उपरि, द्यूतिथि दि.११।५० यावत् ततः दक्षिण-पश्चिमयात्रा।

विशाखानक्षत्रमानं ५४।५८ रा.३।३०, शीतलाष्टमी, श्रीशीतलापूजनं। गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती। भारतीय स्वतन्त्रतादिवसः ७५ तमः। दक्षिणयात्रा दि.७।०० यावत्, सिद्धियोगः दि.६।३३ उपरि,

मासान्तः। सोमवासर व्रतं, दुर्गाष्टमी ८ व्रत, नवमी तिथिमानं ५३।४६ रा.३।०१, ऐन्द्र ५२।१८, शिववासः दि.७।०८ उ., अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.३।१८ यावत्,

मघायां सिंहे च रविः २७।०१ (दि.४।२०), मु.१५ महर्घताकारं, स्त्री-नपु.चं.सु.योगो नागवाहनं वातनाड़ी तदीशो रविवृष्टियोगः। विष्णुपदीसंक्रान्ति पुण्यकालः दि.१२।०० उपरि पुण्याहः, ने.भाद्रपदमासारम्भः,

मासादिः, पुत्रदाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। पञ्चदिनात्मकदोलोत्सवारम्भः, अग्निवासः, अमृतयोगः रा.११।५३ या., भद्रा १८।४८ उ. ४५।५३ यावत्। अशुद्धारम्भः, उत्तरेकालः,

दूर्वादिलेपारणम्। श्रीधर१२। शिववासः, पूर्व-उत्तरयात्रा रा.१०।४६ यावत्। अमृतयोगः रा.५।४६ यावत्, भद्रा.००।२४ या.।

प्रदोष १३-१४ व्रतं, शिववासः, अग्निवासः

पञ्चकारम्भः(भदवा) रा.८।५६ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.८।५६ यावत्, भद्रा ३१।५१ उपरि,

श्रावणी१५ पूर्णिमा, स्नानदानव्रतादौ, भाद्रीरविव्रतं रक्षाबन्धनम् दि.५।४५ उपरि। संस्कृतदिवसः, दोलोत्सवान्तः, हयग्रीवावतारः। पूर्वदक्षिणयात्रा दि.८।५२ यावत् ततः दक्षिण यात्रा रा.८।४६ यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्री गुरु राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि
१ चं.	४।११।१२।४६	३।२६।०५।१२	१०।०६।३३।१८	५।०१।१०।०६	९।११।१६।५७	७।१५।१४।१८
२ मं.	४।१२।२०।४६	४।०१।२४।१०	१०।०६।०५।१३	५।०२।०२।१४	९।११।१५।११	७।१५।११।३३
३ बु	४।१३।०८।४२	४।०३।४२।१७	१०।०६।४७।१७	५।०३।१५।३६	९।११।१०।२५	७।१५।०८।४६
४ गु.	४।१३।४६।५५	४।०६।५६।१४	१०।०६।२९।२९	५।०४।२८।२३	९।११।१५।३६	७।१५।०५।५९
५ शु.	४।१४।२४।१८	४।०८।४४।४६	१०।०६।११।२१	५।०५।४१।१०	९।११।४०।५४	७।१५।०२।०४
६ श.	४।१५।०२।००	४।११।१०।२६	१०।०५।५३।३६	५।०६।५३।५१	९।११।३६।०८	७।१४।५८।४४
७ र.	४।१५।४१।०२	४।१३।३३।२९	१०।०५।३५।२२	५।०८।०६।२५	९।११।३१।२४	७।१४।५५।४४
८ चं.	४।१६।१६।३६	४।१५।५६।१४	१०।०५।१७।०८	५।०९।१८।०५	९।११।२७।०६	७।१४।५२।३३
१० मं.	४।१६।५८।१०	४।१७।०६।१०	१०।०४।५९।४०	५।१०।३१।०५	९।११।२२।४८	७।१४।४६।२२
११ बु.	४।१७।३६।४३	४।१८।४५।००	१०।०४।४१।३०	५।११।४३।०९	९।११।१८।३०	७।१४।४६।११
१२ गु.	४।१८।१५।१६	४।२०।०१।२३	१०।०४।२३।१८	५।१२।५२।२५	९।११।१४।१३	७।१४।४३।००
१३ शु.	४।१८।५३।४६	४।२२।१०।४६	१०।०४।०५।०८	५।१४।०४।०५	९।११।०९।४६	७।१४।३६।४९
१४ श.	४।१९।३२।२२	४।२३।५३।३६	१०।०४।३६।१८	५।१५।१५।३५	९।११।०५।३६	७।१४।३६।३६
१५ र.	४।२०।१०।५४	४।२५।३६।३१	१०।०४।२७।५८	५।१६।२७।०५	९।११।०१।२२	७।१४।३३।२६

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अ. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अ. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अ. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४६।२२	२३।३७	१।३३	३।४६	६।०४	८।२०	१०।३४	१२।५२	१५।०९	१७।१४	१९।००	२०।३१	२२।००
४६।२१	२३।३३	१।२९	३।४२	६।००	८।१६	१०।३१	१२।४८	१५।०५	१७।१०	१८।५६	२०।२७	२१।५६
४६।१९	२३।२९	१।२५	३।३८	५।५६	८।१२	१०।२७	१२।४४	१५।०१	१७।०६	१८।५२	२०।२३	२१।५२
४६।१७	२३।२५	१।२१	३।३४	५।५२	८।०८	१०।२३	१२।४०	१४।५७	१७।०२	१८।४८	२०।१९	२१।४८
४६।१५	२३।२१	१।१७	३।३०	५।४८	८।०४	१०।१९	१२।३६	१४।५३	१६।५८	१८।४४	२०।१५	२१।४४
४६।१४	२३।१७	१।१३	३।२६	५।४४	८।००	१०।१५	१२।३२	१४।४९	१६।५४	१८।४०	२०।११	२१।४०
४६।१३	२३।१३	१।०९	३।२२	५।४०	७।५६	१०।११	१२।२८	१४।४५	१६।५०	१८।३६	२०।०७	२१।३६
४६।१२	२३।०९	१।०५	३।१८	५।३६	७।५२	१०।०७	१२।२४	१४।४१	१६।४६	१८।३२	२०।०३	२१।३२
४६।०९	२३।०५	१।०१	३।१४	५।३२	७।४९	१०।०३	१२।२०	१४।३७	१६।४२	१८।२८	१९।५९	२१।२८
४६।०८	२३।०२	०।५८	३।११	५।२९	७।४६	१०।००	१२।१७	१४।३४	१६।३९	१८।२५	१९।५६	२१।२५
४६।०६	२२।५८	०।५४	३।०७	५।२५	७।४१	९।५६	१२।१३	१४।३०	१६।३५	१८।२१	१९।५२	२१।२१
४६।०५	२२।५४	०।५०	३।०३	५।२१	७।३७	९।५२	१२।०९	१४।२६	१६।३१	१८।१७	१९।४८	२१।१७
४६।०४	२२।५१	०।४७	३।००	५।१८	७।३४	९।४९	१२।०६	१४।२३	१६।२८	१८।१४	१९।४५	२१।१४
४६।०३	२२।४७	०।४३	२।५६	५।१४	७।३०	९।४५	१२।०२	१४।१९	१६।२४	१८।१०	१९।४१	२१।१०

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन		दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	चं.	दि.७:०५-८:४४। दि.३:१२-४:५६।	रा.१०:३९-१२:०२। रा.२:४४-४:०५।
२	मं.	दि.७:५-८:४४। दि.१:४०-३:१८।	रा.७:५५-९:१६।
३	बु	दि.८:४५-१०:२३। दि.१२:१-१:३६।	रा.१२:१-१:२३। रा.२:४५-४:६।
४	गु.	दि.३:१७-६:३३।	रा.१२:१-१:२३। रा.४:६-५:२७।
५	शु.	दि.८:४४-१२:००।	रा.६:१६-१०:३८।
६	श.	दि.५:२६-७:७ दि.१:३६-३:१७। दि.४:५४-६:३५।	रा.६:३१-७:५४ रा.१:२३-२:४५ रा.४:७-५:२६
७	र.	दि.१०:२३-१:३६।	रा.१०:३६-१२:१। रा.२:४५-४:०७।
८	चं.	दि.७:०८-८:४६। दि.३:१६-४:५३।	रा.१०:३८-१२:१। रा.२:४४-४:०७।
१०	मं.	दि.७:८-८:४५। दि.१:३६-३:१३।	रा.७:५२-९:१५।
११	बु.	दि.८:४५-१०:२२ दि.१२:०१-१:३६।	रा.१२:१-१:२४। रा.२:४७-४:६।
१२	गु.	दि.३:१५-६:२७।	रा.१२:००-१:२४। रा.४:१०-५:३३।
१३	शु.	दि.८:४७-१२:१।	रा.६:१५-१०:३८।
१४	श.	प्रा५:३४-७:१०। दि१:३५-३:१२। दि४:४९-६:२६।	सा६:२६-७:४९ रा१:२२-२:४६। रा४:१०-५:३४
१५	र.	दि.१०:२५-१:३८।	रा.१०:३८-१२:०२। रा.१:२५-२:४८।

रक्षाबन्धनमन्त्रः- येन वद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महावलः। तेन त्वां प्रतिवध्नामि रक्षे माचल माचल।।

वृक्षारोपणमन्त्रः- वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च। नमस्ते सुभगे देवि द्रुमोऽयं वर्धतामिति।।

प्रदक्षिणाविधिः - एका चण्ड्या रवौ सप्त त्रिर्दद्याच्च विनायके। चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणम्।।
आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा। उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात्प्रदक्षिणाम्।।

मूलविचारः- आश्लेषा/मघा- ति.२ मंगल दि.११।०२ यावत्
ज्येष्ठा/मूल- ति.८ चन्द्र रा.३।१८ तः. ति.११ बुध रा.१२।०७ यावत्।

पूजन विशेष- मंगलागौरी व्रतक विशेषता आ संकल्प-स्कन्द पुराण में कहल गेल अछि जे- विवाह क बाद पहिल साओन शुक्लपक्षक मंगल दिन ई व्रत कराथि। एहिव्रत क केनिहार वैधव्य दुःख नहिँ पवैत छाथि। विवाह क बाद पाँच वर्ष ई व्रत कराथि। संकल्प- व्रत केनिहार स्नान सँ पवित्र भय शुद्ध आसन पर वैसि पञ्च देवता तथा गौरीक पूजा कऽ दूवि अक्षत जल चन्दन आ द्रव्य लय-नमो अद्य श्रावणे मासि शुक्ल-पक्षस्य प्रथम भौमवारे अमुकगोत्रायाः (अपन गोत्र)अमुक देव्या(अपन नाम)इह जन्मनि जन्मान्तरे च सकल- कल्याणोत्पत्तिपूर्वक पुत्रपौत्र-अवैधव्य-धनधान्य-समृद्धि -सकल मनोरथ-सिद्धयर्थं यथाशक्ति- गन्ध पुष्पधूपदीप ताम्बूल वस्त्र- नानाविध नैवेद्यादिभिः श्रीमङ्गलागौरीव्रतपूजनमहं करिष्ये।

७ रवी वल्ली ८।३९। ४२।५७
अयनांशाः २२।५०।०४

ल.१ रा.	१२	११
२		गु.१०
सू ३	६	९ श
४ बु मं		८
५ शु.	चं.	७ के.

१५ रवी वल्ली ८।३९। ४३।०४
अयनांशाः २२।५०।०५

ल.१ रा.	१२	११
२		गु.१० चं.
३	६	९ श
सू ४ बु मं		८
५ शु.		७ के.

रक्षाबन्धनम्-श्रावणपूर्णिमायां भद्राशून्यायां रक्षार्थं रक्षिकाबन्धनम्। भद्रायां तन्निषेधमाह स्मृतिः- भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं हन्ति च फाल्गुनी।। इयं तु पूर्वविद्धा ग्राह्या-श्रावणी दौर्गनवमी दूर्वा चैव हुताशनी। पूर्वविद्धास्तु कर्त्तव्या शिवरात्रिर्बलेर्दिनम्।। श्रावणी,दुर्गापूजा की नवमी,दुर्वा और होलिका ये पूर्वविद्धा ही करनी चाहिए । इसी तरह शिवरात्रि एवं गोपूजा भी पूर्वविद्धा ही करना चाहिए।आद्या मधुश्रावणिका कज्जली हरितालिका। चतुर्थीमिश्रिता स्त्रीभिर्दिवानक्ते विधीयते।। पहली मधुश्रावणी,कजली, हरितालिका या तीज व्रत, स्त्रीयों को चतुर्थीमिश्रित दिनरात में करने का विधान है। रम्भा नामक व्रत को छोड़कर तृतीया में इत्यादि वचनों से चतुर्थीयुतेव करना चाहिए।

गणेशचतुर्थीनिर्णय- श्रावणशुक्लचतुर्थीगणेशचतुर्थी। सा च पूर्वविद्धा ग्राह्य। तृतीयासंयुता या तु सा चतुर्थी फलप्रदा। कर्तव्या व्रतिभिः सा तु गणनाथसुतोषिणी।। **नागपञ्चमी**-श्रावणशुक्लपञ्चमी नागपूजादौ षष्ठीयुता अन्य पञ्चम्यस्तु चतुर्थीयुताः कार्याः। पञ्चमी नागपूजादौ कार्या षष्ठीसमन्विता। तस्यान्तु तुषिता नागा इतरासु चतुर्थिका। **स्मृति**-श्रावणे पञ्चमी शुक्ला सम्प्रोक्ता नागपञ्चमी। तां परित्यज्य पञ्चम्यश्चतुर्थीसहिताः स्मृताः। **ग्रहयोगेनवृष्टिविचारः**-बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकराशिगाः। निःसंशयः तदा काले जायते वृष्टिरुत्तमा।। समागमे ज्ञसितयोस्तथा च गुरुशुक्रयोः। तथैव जीवबुधयोर्वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः।। यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलम्बिनः। पुरतो वा यदा यान्ति तदा त्वेकार्णवा मही।।

भाद्रकृष्णपक्षः।।

शक १९४३, संवत्२०७८, सन् १४२६,दक्षिणायणं, उत्तरगोलः, वर्षा ऋतुः, उत्तर काल। अशुद्ध
दिनांक २३ अगस्त तः ७ सितम्बर यावत् सन् २०२१ ई। वक्री पूर्वोदितः गुरु, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

तिथयः दिनानि	तिथिमानानि द. प. घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.कालः द. प. घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	ने.	अं.	
१ चं.	२७।१० दि.४।२७	शतभिषा	३७।४० रा.८।३६	अतिगण्ड	१२।२३	कालव २७।१०	कुम्भ	अहोरात्र	४।०६।०४।१४	३२।०३	५।३५	६।२५	१	७	२३	दधिभाद्रपदे त्यजेत्। अशून्यशयन २ व्रतं, अग्निवासः, शिववासः-सिद्धियोगः दि.४।२७ यावत्।
२ मं.	२६।३६ दि.४।१४	पूर्वाभाद्रपद	३६।०६ रा.०६।१४	सुकर्मा	०६।०५	गर २६।३६	कुम्भ २३।४५	दि.३।०६	४।०७।०२।०३	३२।००	५।३६	६।२४	२	८	२४	कज्जलीनिमित्तकं रात्रौ जागरणं(रतजगा)। अमृतयोगः दि.४।१४ यावत् ततः सिद्धियोगः भद्रा ५६।१६ उपरि।
३ बु	२७।२१ दि.४।३३	उत्तराभाद्रपद	४१।४६ रा.१०।२०	धृति	०६।४७	भद्रा २७।२१	मीन	अहोरात्र	४।०७।५६।५२	३१।५६	५।३७	६।२३	३	६	२५	कजली(कजरी)३ व्रत, गोपूजा३, विशालाक्षीपूजनं३, श्रीविनायक ४ व्रतं, अग्निवासः, भद्रा २७।२१ या.। कन्यायां बुध ३५।००।
४ गु.	२६।२६ दि.६।२४	रेवती	४५।४१ रा.११।५४	शूल	०५।३२	बालव २६।२६	मीन ४५।४१	रा.११।५४	४।०८।५७।४१	३१।५२	५।३८	६।२२	४	१०	२६	बहुलापूजा, पञ्चक(भदवा)समाप्तिः रा.११।५४ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः, शिववासः, पश्चिम-उत्तरयात्रा रा.११।५४ यावत् ततः दक्षिणां विनायात्रा।
५ शु.	३२।३६ सं.६।४०	अश्विनी	५०।४१ रा.०१।५४	गण्ड	०५।०७	कौलव १।०१	मेष	अहोरात्र	४।०६।५५।३१	३१।४८	५।३८	६।२२	५	११	२७	रक्षापञ्चमी५। अग्निवासः, शिववासः सं.६।४० यावत्, पश्चिमां विनायात्रा-सर्वार्थसिद्धियोगश्च रा.१।५४ यावत्।
६ श.	३६।४५ रा.८।२१	भरणी	५६।३१ रा.०४।१५	वृद्धि	०५।३५	गर ४।४१	मेष	अहोरात्र	४।१०।५३।२१	३१।४४	५।३६	६।२१	६	१२	२८	हलषष्ठ६ व्रत(ललहीछठ)। कपिला षष्ठी, अमृतयोगः रा.८।२१ यावत्। भद्रा ३६।४५ उपरि,
७ र.	४१।३४ रा.१०।१७	कृत्तिका	६०।०० अहोरात्र	ध्रुव	०६।४२	भद्रा ६।१०	मेष १३।२२	दि.११।०१	४।११।५१।११	३१।४०	५।४०	६।२०	७	१३	२९	शीतला ७, रविव्रतं, अग्निवासः, भद्रा ६।१० या.। ← इति मन्त्रेण कुशग्रहणं, अग्निवासः दि.७।०३ यावत् ततः शिववासः। कन्यायां मंगल ४८।२८।
८ चं.	४६।४१ रा.००।२१	कृत्तिका	०३।५४ प्रा.७।१४	व्याघात	०८।१०	बालव १४।०८	वृष	अहोरात्र	४।१२।४९।११	३१।३६	५।४१	६।१९	८	१४	३०	श्रीकृष्णाष्टमी व्रतं, श्रीकृष्णजन्माष्टमी ८ व्रतं सर्वेषां, जन्मोत्सवः, मोहरात्रिर्निशीथे शक्तिपूजनं, गोकुलाष्टमी, बाबा गणिनाथजयन्त्युत्सवः। शिववासः, दक्षिणयात्रा-सर्वार्थसिद्धियोगश्च प्रा.७।१४ उपरि।
९ मं.	५१।४१ रा.२।२२	रोहिणी	६।२६ दि.६।२८	हर्षण	१०।४३	तैतिल १६।११	वृष ४२।३३	रा.१०।४३	४।१३।४७।११	३१।३२	५।४२	६।१८	९	१५	३१	श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतपारणं, अग्निवासः, पूर्वाफाल्गुन्यां रविः ५।४२, स्त्री-पु.सू.सू.योगे मेष वाहनं वह्निनाड़ी तदीशो भौमः वायु वृष्टियोगः। दग्धतिथि रा.२।२२ उपरि।
१० बु.	५६।०५ रा.४।०८	मृगशिरा	१५।३६ दि.११।५६	वज्र	११।०१	वणिज् २३।५३	मिथुन	अहोरात्र	४।१४।४५।११	३१।२८	५।४२	६।१८	१०	१६	१	सितम्बर ६, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.११।५७ यावत्, भद्रा २३।५३ उ. ५६।०५ यावत्। दग्धतिथि रा.४।०८ यावत्।
११ गु.	५९।३६ रा.शे.५।३४	आर्द्रा	२९।१४ दि.०२।१२	सिद्धि	११।५७	वव २७।५२	मिथुन ४८।२८	रा.१।०६	४।१५।४३।११	३१।२४	५।४३	६।१७	११	१७	२	जयाएकादशी ११ व्रतं स्मार्तानां, पश्चिमयात्रा-सर्वार्थसिद्धियोगश्च दि.२।१२ उपरि, शिववासः, अग्निवासः,
१२ शु.	६०।०० अहोरात्र	पुनर्वसु	२५।५१ दि.०४।०४	व्यतीपात	११।५७	कौलव ३०।५२	कर्क	अहोरात्र	४।१६।४१।११	३१।२०	५।४४	६।१६	१२	१८	३	वैष्णवानां एकादशी व्रतं, कुष्माण्डेनपारणा, शिववासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.४।०४ यावत्। तुलायां शुक्रः ११।३४।
१२ श.	०२।०४ प्रा.६।३४	पुष्य	२६।२३ दि.५।३०	वरीयान्	११।१२	तैतिल २।०४	कर्क	अहोरात्र	४।१७।३९।१२	३१।१६	५।४५	६।१५	१३	१९	४	शनिप्रदोष१३ व्रतं। पूर्वविनायात्रा दि.५।३० यावत्, शिववासः प्रा.६।३४ या., अग्निवासः।
१३ र.	०३।१६ दि.७।०५	आश्लेषा	३१।३६ सं.६।२५	परिघ	०६।२८	वणिज् ३।१६	कर्क ३१।३६	सं.६।२५	४।१८।३७।१३	३१।१२	५।४६	६।१४	१४	२०	५	प्रदोष १४, रविव्रतं, सिद्धियोगः दि.७।०५ यावत् ततः अग्निवासः, भद्रा३१।१६ उ. ३३।१६ यावत्।
१४ चं.	०३।१३ दि.७।०३	मघा	३२।३८ सं.६।४६	शिव	०६।४५	शकुनी ३।१३	सिंह	अहोरात्र	४।१९।३५।२६	३१।०९	५।४६	६।१४	१५	२१	६	अघोरचतुर्दशी। दुर्श१४, श्रीभैरवपूजनं, द्वापरयुगादिः। श्राद्धादौ अमावस्या,सोमवतीअमावस्या दि.७।०३ उपरि, सोमवारीव्रतं, कुशीअमावस्या, कुशोत्पाटन ॐ हुं फट् ←
३० मं.	०१।५४ प्रा.६।३२	पूर्वाफाल्गुनी	३२।२५ सं.६।४५	सिद्ध	०२।५८	नाग १।५४	सिंह ४७।०५	रा.१२।३७	४।२०।३३।४५	३१।०६	५।४७	६।१३	१६	२२	७	प्रतिपदातिथिमानं५७।२६ रा.शे४।४५, साध्ययोगमानं ५५।२०, भाद्रीअमावस्या ३०, स्नानदानादि, शिववासः प्रा.६।३२ यावत्।

७ रवौ वल्ली ८।३६।४३।११
अयनांशा: २२।५०।०७

त.१ रा. च, ११, २, १२, गु.१०, ३, ९, ६, शु, मं, ४, ५, बु ५ गु., ७ के., ८

१३ रवौ वल्ली ८।३६।४३।१८
अयनांशा: २२।५०।०८

१२ रा., ११, १०, ल.१, गु.६, २, ८, शु, मं, ३ च, ९, ५ शु., ७, बु ४, ६ के.

मूलविचारः- रेवती/अश्विनी ति.३ बुध रा.१०।२० तः ति.५ शुक्र रा.१।५४ यावत्
आश्लेषा/मघा ति.१२ शनि दि.५।३० तः ति.१४ चन्द्र स.६।४६ यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	वक्रीगुरु राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ चं.	४।२०।४८।४२	४।२७।१०।३६	१०।०४।१९।५३	५।०३।१३।०८	६।११।५१।३८	७।१५।१४।४८	४६।०१
२ मं.	४।२१।२६।३०	४।२८।४४।४१	१०।०४।११।४८	५।०६।४८।५२	६।११।३८।३३	७।१५।११।३७	४५।५९
३ बु	४।२२।०४।१७	५।००।१८।४५	१०।०४।०३।४२	५।१०।२४।३५	६।११।२५।२८	७।१५।०८।२६	४५।५७
४ गु.	४।२२।४२।०४	५।०१।५२।५०	१०।०३।५५।३६	५।१४।००।१९	६।११।१२।२३	७।१५।०५।१५	४५।५५
५ शु.	४।२३।१९।५१	५।०३।२६।५४	१०।०३।४७।३०	५।१७।३६।०१	६।१०।५९।१८	७।१५।०२।०४	४५।५३
६ श.	४।२३।५७।३८	५।०५।००।५८	१०।०३।३९।२४	५।२१।११।४४	६।१०।४६।१४	७।१४।५८।५४	४५।५१
७ र.	४।२४।३५।२४	५।०६।३५।०१	१०।०३।३१।१८	५।२४।४७।२७	६।१०।३३।१०	७।१४।११।१४	४५।५०
८ चं.	४।२५।१३।५४	५।०७।५४।३६	१०।०३।२३।०२	५।२५।५७।५९	६।१०।२९।४५	७।१४।०८।०३	४५।४८
९ मं.	४।२५।५२।२४	५।०९।१४।११	१०।०३।१४।४७	५।२७।०८।३१	६।१०।२६।२०	७।१४।०४।५२	४५।४६
१० बु.	४।२६।३०।५४	५।१०।३३।४६	१०।०३।०६।३२	५।२८।१९।०३	६।१०।२२।५५	७।१४।०१।४१	४५।४४
११ गु.	४।२७।०९।२३	५।११।५३।२०	१०।०२।५८।१७	५।२९।२९।३४	६।१०।१९।३०	७।१३।५८।३०	४५।४२
१२ शु.	४।२७।४७।५२	५।१३।१२।५४	१०।०२।५०।०२	६।००।४०।०५	६।१०।१६।०५	७।१३।५५।१९	४५।४०
१२ श.	४।२८।२६।२१	५।१४।३२।२०	१०।०२।४१।४७	६।०१।५०।३६	६।१०।१२।४०	७।१३।५२।०९	४५।३८
१३ र.	४।२९।०४।५०	५।१५।५२।०२	१०।०२।३३।३२	६।०३।०१।०७	६।१०।०९।१६	७।१३।४८।५९	४५।३६
१४ चं.	४।२९।४३।३१	५।१६।४८।२८	१०।०२।२६।३३	६।०४।१०।४६	६।१०।०६।१७	७।१३।४५।४८	४५।३५
३० मं.	५।००।२२।१२	५।१७।४४।५४	१०।०२।१९।३४	६।०५।२०।२५	६।१०।०३।१८	७।१३।४२।३७	४५।३३

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ चं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१।०६
२ मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१।०३
३ बु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।५९
४ गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।५६
५ शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।५२
६ श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।४८
७ र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।४५
८ चं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।४१
९ मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।३७
१० बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।३४
११ गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।३०
१२ शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।२६
१२ श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०।२३
१३ र.	२१।५६	२३।५२	२।०५	४।२३	६।३९	८।५४	११।११	१३।२८	१५।३३	१७।१९	१८।५०	२०।१९
१४ चं.	२१।५२	२३।४८	२।०१	४।१९	६।३५	८।५०	११।०७	१३।२४	१५।२९	१७।१५	१८।४६	२०।१५
३० मं.	२१।४६	२३।४५	१।५८	४।१६	६।३२	८।४७	११।०४	१३।२१	१५।२६	१७।१२	१८।४३	२०।१२

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ चं.	दि.७:१०-८:४६। दि.३:१२-४:४६।	रा.१०:३६-१२:०० ।रा.२:४६-४:१०।
२ मं.	दि.७:१२-८:४६। दि.१:३७-३:१५।	रा.७:४८-९:१२।
३ बु	दि.८:४८-१०:२४। दि.१२:००-१:३६।	रा.१२:००-१:२४, रा.२:४८-४:१२
४ गु.	दि.३:१२-६:२४।	रा.१२:००-१:२४। रा.४:१२-५:३६।
५ शु.	दि.८:४९-१२:०१	रा.९:१३-१०:३७
६ श.	प्रा.५:३७-७:१३दि.१:३७:३:१३दि.४:४८-६:२३।	रा.६:२३-७:४८रा१:२५-२:४९रा४:१३-५:३७
७ र.	दि.१०:२६-१:३७।	रा.१०:३७-१२:०२। रा.१:२६-२:५०
८ चं.	दि.७:१५-८:५१। दि.३:११-४:४६।	रा.१०:३६-१२:१। रा.२:५१-४:१५।
९ मं.	दि.७:१५-८:५०। दि.१:३५-३:१०।	रा.७:४५-९:१०।
१० बु.	दि.८:५०-१०:२५। दि.१२:००-१:३५।	रा.१२:००-१:२५। रा.२:५०-४:१५।
११ गु.	दि.३:११-६:१९।	रा.१२:०१-१:२६। रा.४:१६-५:४१।
१२ शु.	दि.८:५२-१२:०१।	रा.९:१०-१०:३६।
१२ श.	प्रा५:४३-७:१८दि.१:३५-३:९दि.४:४३-६:१७।	रा.६:१७-७:४३। रा१:२७-२:५३रा.४:८-५:४३
१३ र.	दि.१०:२९-१:३७।	रा.१०:३४-१२:००। रा.१:२६-२:५२।
१४ च.	दि.७:१६-८:५४ दि.३:१०-४:४३।	रा.१०:३४-१२:०० ।रा.२:५२-४:१८।
३० म.	दि.७:१६-८:५३, दि.१:३५-३:६।	रा.७:४२-९:०८।

कृष्ण दर्शन मन्त्र हाथ मे फूल देकर

ॐ अनघं वामनं शौरिं वैकुण्ठं पुरुषोत्तमम्।
वराहं पुण्रीकाक्षं नृसिंहं दैत्यसूदनम्।।
दामोदरं पद्मनाभं केशवं गरुड़ध्वजम्।
गोविन्दमच्युतं कृष्णमनन्तमपराजितम्।।
अधोक्षजं जगद्बीजं सृष्टिस्थित्यन्तकारकम्।
अनादिनिधनं विष्णुं त्रिलोकेशं त्रिविक्रमम्।।
नारायणं चतुर्बाहुं शंखचक्रगदाधरम्।
पीताम्बरधरं नित्यं वनमालाविभूषितम्।।
श्रीवत्सांकं जगत्सेतुं श्रीपतिं श्रीधरं हरिम्।
प्रणतोऽस्मि सदा देवं देवदेवं जगत्पतिम्।।
नामान्येतानि संकीर्त्य ईप्सितं प्राप्नुयान्नरः।
त्राहि मां देवदेवेश ! हरे ! संसारसागरात्।।
त्राहि मां दुःखशोकघ्नं रोगशोकार्णवाद्धरे।
दुर्गतांस्त्रायसे विष्णो ये स्मरन्ति सकृत् सकृत्।।
सोऽहं देवातिदुर्वृत्तस्त्राहिमां शोकसागरात्।
पुष्कराक्ष निमग्नोऽहं महत्यज्ञानसागरे।।
त्राहि मां देव देवेश त्वदृतेऽन्यो न रक्षकः।।

कृष्णाष्टमी व्रत संकल्प-(उपवासक संकल्प)

ॐ अद्य अमुक गोत्र/गोत्रा (व्रती क गोत्र) अमुकशर्मा/देव्या (व्रती क नाम) भाद्रकृष्णाष्टम्यां मनोवांछित फल प्राप्त्यर्थं श्रीकृष्ण पूजनोपवास- व्रतमहमाचरिष्यामि।

कृष्णाष्टमी पूजन संकल्प-(रात्रि मे पूजन संकल्प)

ॐ अद्य भाद्र मासि कृष्णे पक्षे रोहिणी युक्त अष्टम्यां तिथौ अमुक गोत्रस्य अमुक शर्मणः(स्त्री हेतु-अमुकी गोत्रायाः अमुकी देव्याः)कोटिजन्मावच्छिन्न-बाल्य-कौमारयौवन वार्धक्यकृतकायिक-वाचिक-मानसिक- ज्ञाताज्ञात- सकलपातक- क्षयपूर्वक सहस्रमन्वन्तर-ब्रह्मप्रीतिपूर्वक प्रेतयोनिगत - पितृगणोद्धारणपूर्वक शतवर्षकृतगयाधिकरणक पिण्डदान जन्यफल- समफलसहस्र कपिलादान जन्यफलसमफल युगादि दिनकृत यावत् पुण्यफल-समफल- कल्पवासरकृत- यावत्पुण्य फलकोटि-गुणाधिक फल-समफल-मथुराधिकरणक-सहस्रसुवर्ण- भारदान- जन्यफलसमफल-प्राप्ति- पूर्वान्तकालिक- श्रीकृष्ण- सायुज्यमुक्तिकामः सपरिवार- श्रीकृष्ण पूजनं तदंग देवता पूजनं च अहं करिष्ये।

विविधविषयाः-भाद्रकृष्णचतुर्थ्यां बहुलापूजा। सा च तृतीयायुता ग्राह्या, परयुक्ताया दोषश्रवणात्। भादों कृष्ण चौथ को बहुला पूजा होती है, यह तृतीया युक्तग्राह्य है। परयुक्त दोषवह कहा गया है। भाद्रकृष्णाष्टम्यां **कृष्णजन्माष्टमीव्रतम्**-तत्र निशीथव्यापिन्यां जयन्तीव्रतं उदयव्यापिन्यां कृष्णाष्टमीव्रतम्। व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशनम्। तस्मादिदं व्रतं सर्वैरवश्यमेव कार्यमिति। भाद्रामायां **श्राद्धे निषिद्धवस्तूनि** मात्स्ये- कुष्माण्डं महिषीक्षीरं विल्वपत्रभगाद्विजाः। श्राद्धकाले समुत्पन्ने पितरो यान्त्यनाश्रिताः। **श्राद्धे प्रशस्तानि**-उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्तपवित्राणि दौहित्रः कुतुपस्तिलाः। **महिष्यादिप्रसवदोष**-माघे बुधे च महिषी श्रावणे वडवा दिवा। सिंहे गावः प्रसयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः। अतस्तच्छान्तिर्विधेयेति। **भादो मे गायप्रसव दोषकारक होता है**- भानौ सिंहगते चैव यस्य गौसम्प्रसूयते। मरणान्तस्य निर्दिष्टं षड्भिर्मासैर्न संशयः।।

मांसाभक्षणफलं महाभारते-मासि मास्यश्वमेधेन यो यजेत्तु शतं समाः। न खादति च यो मांसं सममेतद्युधिष्ठिर।। यस्तु वर्षशतं पूर्णं तपस्तप्येत् सुदारुणम्। यश्च वै वर्जयेन्मांसं समौ तौ न च संशयः।। कस्यापि कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता, **नन्दिपुराणे**कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत्तु तद्व्रतं निष्फलं भवेत्।। **श्रेष्ठव्रतानि**ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम्। व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरीयांसीति निश्चयः।।

कुशोत्पाटन-मन्त्रः-कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि।। कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितःपुरा। देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्।। **वर्ज्यकुशाः**-चितिदर्भाः पथिदर्भा ये दर्भा यज्ञभूमिषु। स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत्।।

भाद्रशुक्लपक्षः

शक १९४३, सवत्२०७८, सन् १४२६,दक्षिणायण, उत्तरगोलः, वर्षा/शरद् ऋतुः, अशुद्ध ता.१८ तः शुद्धः। उत्तर कालः।
दिनांक ८ सितम्बर तः २० सितम्बर यावत् सन् २०२१ इ। वक्री पूर्वोदितः गुरु, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

तिथयः दिवाः	तिथिमानानि द. प. घं. मि.	नक्षत्राणि	समा.कालः द. प. घं. मि.	योगाः	समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	ने.	अं.
२ बु.	५५।४६ रा.४।०७	उत्तराफाल्गुनी	३१।०६ सं.६।१४	शुभ	५२।४७	वालव २८।१६	कन्या	अहोरात्र	४।२१।३२।०१	३१।०२	५।४८	६।१२	१७	२३	८
३ गु.	५१।२५ रा.२।२२	हस्त	२८।५८ दि.५।२३	शुक्ल	४६।३५	तैतिल २३।३७	कन्या ५७।२८	रा.४।४७	४।२२।३०।१७	३०।५८	५।४८	६।१२	१८	२४	९
४ शु.	४६।१६ रा.१२।२०	चित्रा	२५।५७ दि.४।११	ब्रह्म	३६।४७	वणिज १८।५२	तुला	अहोरात्र	४।२३।२८।३३	३०।५४	५।४९	६।११	१९	२५	१०
५ श.	४०।३६ रा.१०।०५	स्वाती	२२।२२ दि.२।४६	ऐन्द्र	३३।२८	वव १३।२६	तुला	अहोरात्र	४।२४।२६।५०	३०।५०	५।५०	६।१०	२०	२६	११
६ र.	३४।४० रा.७।४३	विशाखा	१८।२२ दि.१।११	वैधृति	२४।५५	कौलव ७।५०	तुला ४।२२	दि.७।३६	४।२५।२५।०७	३०।४६	५।५१	६।०९	२१	२७	१२
७ च.	२८।३१ दि.५।१६	अनुराधा	१४।१० दि.११।३२	विष्कुम्भ	१७।११	गर १।३६	वृश्चिक	अहोरात्र	४।२६।२३।४२	३०।४२	५।५२	६।०८	२२	२८	१३
८ म.	२२।२७ दि.२।५०	ज्येष्ठा	०९।५७ दि.६।५०	प्रीति	०९।३१	वव २२।२७	वृश्चिक ९।५७	दि.६।५०	४।२७।२२।१७	३०।३८	५।५२	६।०८	२३	२९	१४
९ बु.	१६।४० दि.१२।३३	मूल	०६।०० दि.८।१७	आयुष्मान	१।५६	कौलव १६।४०	धनु	अहोरात्र	४।२८।२०।५३	३०।३४	५।५३	६।०७	२४	३०	१५
१० गु.	११।१६ दि.१०।२५	पूर्वाषाढ़ा	०२।२७ प्रा.६।५२	शोभन	४७।५२	गर ११।१६	धनु १४।५३	दि.११।५१	४।२९।१९।२९	३०।३०	५।५४	६।०६	२५	३१	१६
११ शु.	०६।३८ दि.८।३४	श्रवण	५७।२६ रा.४।५३	अतिगण्ड	४१।४५	भद्रा ६।३८	मकर	अहोरात्र	५।००।१८।०५	३०।२६	५।५५	६।०५	२६	१	१७
१२ श.	०२।४४ दि.७।०१	धनिष्ठा	५६।११ रा.४।२४	सुकर्मा	३६।२०	वालव २।४४	मकर २६।४८	दि.४।३६	५।०१।१६।४१	३०।२२	५।५६	६।०४	२७	२	१८
१४ र.	५८।०४ रा.५।०६	शतभिषा	५६।०६ रा.४।२२	धृति	३१।४६	गर २६।१६	कुम्भ	अहोरात्र	५।०२।१५।१६	३०।१८	५।५६	६।०४	२८	३	१९
१५ चं.	५७।३० रा.४।४७	पूर्वाभाद्रपद	५७।१० रा.४।४६	शूल	२८।०६	भद्रा २७।४७	कुम्भ ४१।५४	रा.१०।४३	५।०३।१३।५७	३०।१४	५।५७	६।०३	२९	४	२०

चन्द्रदर्शनम्। मु.३० समा समताकरम्। पौराणिकअगस्त्योदयः। शिववासः, अग्निवासः, पूर्वदक्षिणयात्रा-सिद्धियोगश्च रा.४।०७ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः सं.६।१४ उपरि।

हरितालिका ३(तीज) व्रत, वाराहावतार३, रुद्रसावर्णिमन्वादि। पूर्वयात्रा-अमृतयोगश्च रा.२।२२ यावत्। वक्रगत्याः उत्तराषाढ़ायां शनि ३६।०८।

चतुर्थीचन्द्रपूजन(चौरचन), श्रीगणेश४ व्रतं,श्रीगणेशपूजारम्भः, अग्निवासः, अमृतयोगः रा.१२।२० यावत् ततः दक्षिणयात्रा। भद्रा १८।५२ उपरि ४६।१६ यावत्।

ऋषिपञ्चमी, सप्तर्षिपूजनं, पञ्चगव्यप्राशनञ्च। शिववासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.२।४६ यावत्।

श्रीलोलार्क६ व्रतं, सूर्यपूजनम्। भाद्री रविव्रतविसर्गः, शिववासः, अग्निवासः, उत्तरयात्रा रा.७।४३ उपरि। ज्येष्ठा/मूल ति.७ चन्द्र दि.१२।३२ तः ति.६ बुध दि.८।१७ या.।

अपराजिता७। सन्तानसप्तमी। सर्वार्थसिद्धियोगः दि.११।३२ यावत्, पश्चिम-उत्तरयात्रा-अग्निवासश्च दि.५।१६ यावत्, भद्रा २८।३१ उ. ५५।२६ यावत्।

राधाष्टमी,दूर्वा ८ व्रतं,महालक्ष्मीव्रतारम्भ १६ दिनात्मक। अग्निवासः दि.२।५० या. ततः शिववासः, पश्चिमयात्रा दि. ६।५० यावत् ततः पूर्वयात्रा दि.२।५० यावत्। सिद्धियोगः

महानन्दानवमी ९ व्रतम्। सौभाग्य ५२।४३, शिववासः दि.१२।३३ यावत् ततः अग्निवासः। उत्तराफाल्गुन्यां रवि २१०२(प्रा.६।४९), स्त्री-नुपुं-सू-सू-योगे महिष वाहनं वात नाड़ी तदोशो रविः सामान्यवृष्टिः,

मासान्तः, उत्तराषाढ़ा५७।०३ रा.४।५४। अग्निवासः-सिद्धियोगः दि.१०।२५ यावत्। भद्रा ३८।५६ उपरि। खरमासमसमाप्तिः,पञ्चकारम्भ(मदवा) रा.४।५३ उपरि, शिववासः-अग्निवासः दि.८।३४ उपरि,

कर्माधर्मा ११ व्रतं सर्वेषाम्। हरेःपार्श्वपरिवर्त्तनं। कन्यायां रविः २६।४२(दि.४।३६) मु.३० समासमताकरं, शडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो दि.१२।०० उपरि पुण्याहः, विश्वकर्मापूजा। ने.आश्विनमासारम्भः, शरद्-ऋतुः,

त्रयोदशीतिथिमानं५७।०७ रा.४।४६, मासादि:,कुष्माण्डपारणा, श्रीवामन१२, वामनावतार, इन्द्रपूजारम्भः, प्रदोष१३ व्रतं, शिववासः, अग्निवासः दि.७।०१ यावत्।

प्रदोष१४ व्रतं, अनन्त १४ व्रतं, अनन्तपूजनं, तद्डोरकधारणञ्च। श्रीगणेशविसर्जनम्। अग्निवासः, भद्रा ५८।०४ उपरि। सर्वार्थसिद्धियोगः रा.४।५३ यावत्। भद्रा ६।२८ यावत्।

भाद्रीपूर्णिमा१५,स्नानदानादि। अगस्त्यार्घदानं, श्रीशिवपूजनं,अमृतयोगः, दक्षिण-पश्चिमयात्रा रा.१०।४३ यावत् ततः पश्चिम-उत्तरयात्रा। भद्रा २७।४७ यावत्।

१४ रवी वल्ली ८।३६।४३।३२
अयनांशा: २२।५०।१०

१२ रा.	११	१० गु.वृ.
ल.१	९	
२	मूलविचार	८ श
३	गु. ५	७
मंबु ४ सू		६ के.

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु वक्री राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्रीशनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
२ बु.	५।०१।००।५२	५।१८।४१।२०	१०।०२।१२।२५	६।०६।३०।०४	९।१०।००।१६	७।१३।३६।२६	४५।३१
३ गु.	५।०१।३९।३२	५।१९।३७।४५	१०।०२।०५।३६	६।०७।३६।४३	९।०९।५७।२०	७।१३।३६।१५	४५।२९
४ शु.	५।०२।१८।१२	५।२०।३४।१०	१०।०१।५८।३७	६।०८।४६।२१	९।०९।५४।२१	७।१३।३३।०४	४५।२७
५ श.	५।०२।५६।५२	५।२१।३०।३५	१०।०१।५१।३८	६।०९।५८।५६	९।०९।५१।२३	७।१३।२९।५४	४५।२५
६ र.	५।०३।३५।३२	५।२२।२७।००	१०।०१।४४।४०	६।११।०८।३७	९।०९।४८।२५	७।१३।२६।४४	४५।२३
७ च.	५।०४।१४।२८	५।२२।४८।५१	१०।०१।३८।१२	६।१२।१७।३०	९।०९।४६।०५	७।१३।२३।३३	४५।२१
८ म.	५।०४।५३।२४	५।२३।१०।४२	१०।०१।३१।४४	६।१३।२६।२३	९।०९।४३।४५	७।१३।२०।२२	४५।१९
९ बु.	५।०५।३२।२०	५।२३।३२।३३	१०।०१।२५।१६	६।१४।३५।१६	९।०९।४१।२५	७।१३।१७।११	४५।१७
१० गु.	५।०६।११।१६	५।२३।५४।२४	१०।०१।१८।४८	६।१५।४४।०९	९।०९।३९।०५	७।१३।१४।००	४५।१५
११ शु.	५।०६।५०।१२	५।२४।१६।१४	१०।०१।१२।२०	६।१६।५३।०२	९।०९।३६।४६	७।१३।१०।४९	४५।१३
१२ श.	५।०७।२९।०८	५।२४।३८।०४	१०।०१।०५।५३	६।१८।०१।५५	९।०९।३४।२७	७।१३।०७।३९	४५।११
१४ र.	५।०८।०८।०३	५।२४।५६।५४	१०।००।५९।२६	६।१९।१०।४७	९।०९।३२।०८	७।१३।०४।२९	४५।०९
१५ चं.	५।०८।४६।४५	५।२४।३४।४४	१०।००।५५।२४	६।२०।१८।२०	९।०९।३०।२९	७।१३।०१।१८	४५।०७

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि दिन	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
२ बु.	२१।४५	२३।४१	१।५४	४।१२	६।१८	८।४३	११।००	१३।१७	१५।२२	१७।०८	१८।३६	२०।०८
३ गु.	२१।४१	२३।३७	१।५०	४।०८	६।१४	८।३९	१०।५६	१३।१३	१५।१८	१७।०४	१८।३५	२०।०४
४ शु.	२१।३८	२३।३४	१।४७	४।०५	६।११	८।३६	१०।५२	१३।१०	१५।१५	१७।०१	१८।३२	२०।०१
५ श.	२१।३४	२३।३०	१।४३	४।०१	६।०७	८।३२	१०।४८	१३।०६	१५।११	१६।५७	१८।२८	१९।५७
६ र.	२१।३०	२३।२६	१।३९	३।५७	६।०३	८।२८	१०।४४	१३।०२	१५।०७	१६।५३	१८।२४	१९।५३
७ च.	२१।२६	२३।२२	१।३५	३।५३	६।०६	८।२४	१०।४१	१२।५८	१५।०३	१६।४९	१८।२०	१९।४९
८ म.	२१।२३	२३।१८	१।३१	३।५०	६।०६	८।२१	१०।३८	१२।५४	१५।००	१६।४६	१८।१७	१९।४६
९ बु.	२१।१९	२३।१४	१।२८	३।४६	६।०२	८।१७	१०।३४	१२।५१	१४।५६	१६।४२	१८।१३	१९।४२
१० गु.	२१।१५	२३।११	१।२४	३।४२	५।५८	८।१३	१०।३०	१२।४७	१४।५२	१६।३८	१८।०९	१९।३८
११ शु.	२१।१२	२३।०८	१।२१	३।३९	५।५५	८।१०	१०।२६	१२।४४	१४।४८	१६।३५	१८।०६	१९।३५
१२ श.	२१।०८	२३।०४	१।१७	३।३५	५।५१	८।०६	१०।२३	१२।४०	१४।४५	१६।३१	१८।०२	१९।३१
१४ र.	२१।०४	२३।००	१।१३	३।३१	५।४७	८।०२	१०।१९	१२।३६	१४।४१	१६।२७	१७।५८	१९।२७
१५ चं.	२१।०१	२२।५७	१।१०	३।२८	५।४४	७।५९	१०।१६	१२।३३	१४।३८	१६।२४	१७।५५	१९।२४

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
२ बु.	दि.८:५४-१०:२८। दि.१२:०२-१:२८।	रा.१२:०२-१:२८। रा.२:५४-४:२०।
३ गु.	दि.३:७-६:१३।	रा.१२:०१-१:२८। रा.४:२१-५:४७।
४ शु.	दि.८:४४-१२:००।	रा.६:०६-१०:३३।
५ श.	दि.५:४८-७:२१दि.१:३३-३:६,दि.४:३९-६:१२	रा.६:१२-७:३९ रा.१:२७-२:५४,रा४:२१-५:४८
६ र.	दि.१०:२८-१:३४।	रा.१०:३४-१२:०१ रा.१:२८-२:५५।
७ च.	दि.७:२३-८:५६,दि.३:६-४:३८।	रा.१०:३४-१२:०१ रा.२:५६-४:२४।
८ म.	दि.७:२४-८:५७ दि.१:३३-३:५।	रा.७:३७-६:०५।
९ बु.	दि.७:२४-८:५६ उि.१:३२-३:०४।	रा.१२:००-१:२८। रा.२:५६-४:२४।
१० गु.	दि.३:०४-६:०८।	रा.१२:००-१:२८। ४:२४-५:५२।
११ शु.	दि.८:५७-१२:०१।	रा.६:०५-१०:३३।
१२ श.	प्रा५:५४-७:२६ दि१:३३-३:०४ दि४:३५-६:०६	रा.६:६-७:३५ रा.१:३०-२:५८ रा४:२६-५:५४
१४ र.	दि.१०:३०-१:३३।	रा.१०:३३-१२:२। रा.१:३०-२:५८।
१५ च.	दि.७:२७-८:५६। दि.३:०३-४:३४।	रा.१०:३१-१२:००। रा.२:५८-४:२६।

भाद्रचतुर्थी-चन्द्र अर्घ्य दान मन्त्र- शंख मे फल-पुष्प-दुध लय चन्द्रार्घ्य दी-ॐ अत्रि नेत्र समुद्भूतं क्षीरोदार्णवसम्भव। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रोहिण्या सहितप्रभो।। इदं दुग्धार्घ्यं नमो रोहिणीसहितभाद्रशुक्लचतुर्थीचन्द्राय नमः।

चतुर्थी-चन्द्र दर्शन मन्त्रः- दही आ डाली समके एका-एकी हाथमे लऽ निम्न मंत्र पढ़ाये।
नमः सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यन्मतकः।

तदुत्तर आगुक मन्त्र सँ प्रणाम करी- नमः शुभ्रांशवे तुभ्यं द्विजराजाय ते नमः। रोहिणीपतये तुभ्यं लक्ष्मी भ्रात्रे नमोऽस्तु ते।।
दिव्यशंख- तुषाराभं क्षीरो-दार्णव- सम्भवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुट-भूषणम्।।

चतुर्थी चन्द्र के प्रार्थना मन्त्र- मृगांक-रोहिणीनाथ शम्भोः शिरसि भूषण। व्रतं सम्पूर्णतां यातु सौभाग्यं च प्रयच्छ मे।।
रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवन् देहिमे। धर्मान् देहि, धनं देहि सर्वान् कामान् प्रदेहिमे।।

श्रीहरि-पार्श्व-परिवर्तन-मन्त्रः- प्राप्ते भाद्रपदे मासि एकादश्यां सितेऽह्नि। कटिदानं भवेद्विष्णोर्महापूजा प्रवर्त्तते।। वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव। पार्श्वं संपरिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधव।। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्। विबुद्धे त्वयि बुध्येत जगदेतच्चराचरम्।। देवदेव जगन्नाथ योगिगम्य निरंजन। कटिदानं कुरुष्वाद्य मासि भाद्रपदे शुभे।।

अनन्त-धारण मन्त्र- अनन्तसंसार महासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धरवासुदेव। अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपायनमोनमस्ते।।

अगस्त्य-अर्घ्यदान-मन्त्रः- ऋषि तर्पण के वाद शंख मे जल अक्षत श्वेतपुष्प(काशपुष्प) फल द्रव्य आदि लय जनउ सब्य ही क दक्षिण दिशा मे मुह कय आगुक मन्त्र सँ अर्घ्य दी- कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानिविविधानि च। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। काशपुष्पप्रतीकाश वह्निमारुतसंभव। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

अगस्त्य-प्रार्थना मन्त्रः- आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः। समुद्रःशोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु।।

६ रवी वल्ली ८।३६।४३।२५
अयनांशा: २२।५०।०९

१२ रा.	११	१० गु.९
ल.१	९	
२		८ श
३	शु. ५	७
मंबु ४		६ चं.के.

धर्मशास्त्र-हरितालिका- चतुर्थीसहिता यातु सातृतीया फलप्रदा। अवैधव्यकरा स्त्रीणां पुत्रपौत्रप्रवर्धिनी।। तिथितत्त्वचिन्तामणि-कृतिसागराद्यवाधुनिक-निबन्धे साचतुर्थीयुताग्राह्या। हरितालिका व्रतस्यैव नामान्तरं लोके तीज इति। कलाकाष्ठा मुहूर्त्ताऽपि द्वितीया यदि दृश्यते। सा तृतीया न कर्त्तव्या कर्त्तव्या गणसंयुता।। **चतुर्थीचन्द्र-** प्रदोषव्यापिनीयं ग्राह्य उभयदिने प्रदोषव्याप्तौ पंचमी युक्ता "युगाग्निकृतुभूतानि" इत्यादि निगमात्। अर्थात् चतुर्थी प्रदोष व्यापिनी ग्राह्य हैं यदि दोनो दिन प्रदोष व्यापिनी हो तो पंचमी युक्त ही ग्राह्य हैं। चतुर्थीतः त्रयोदशी यावत् गणेशं सम्पूज्य चतुर्दश्यां पूजनोत्तरं विसर्जनम्। **भाद्रशुक्लषष्ठी-** सूर्यषष्ठी सा च सर्वमते स्कन्दव्रातातिरिक्ता परयुता ग्राह्या युग्मात्। नागविद्धा न कर्तव्या षष्ठी चैव कदाचन।। इति स्कन्दे। **राधाव्रतं-** राधाव्रतं सप्तमीयोगेन कार्यम्।। **दूर्वाष्टमी-** भाद्रशुक्लाष्टमी दूर्वाख्या सा च पूर्व युता ग्राह्या। अस्यां राधाजयन्त्युत्सवः महालक्ष्मीव्रतारम्भश्च। तथा च द्वादशीत इन्द्रपूजारम्भः।

अथ संकल्प-(१) **हरितालिका व्रत संकल्प-** नमोऽस्यां रात्रौ भाद्रमासीय-शुक्लपक्षीय तृतीयायां तिथौ अमुकगोत्राया अमुकीदेव्याामम दीर्घायुष्ट्व-पुत्रपौत्रादि- चिरजीवित्व- जन्मजन्मान्तरार्जित - सकल- पापक्षय पूर्वक श्रीगौरि-प्रीतिकामनया यथा वर्षपर्यन्तं भाद्रशुक्ल- तृतीयायां हरितालिका-व्रतं गौरीपूजन तदंग देवता पूजनं च अहं करिष्ये। (२) **भाद्रशुक्लचतुर्थी सिद्धिविनायक पूजन संकल्पः-** (सिद्धिविनायक क पूजन जाहि दिन चतुर्थी मध्याह्न व्यापिनी ग्राह्य थीक) ॐ अद्य भाद्रे मासे शुक्ले पक्षे चतुर्थ्यां तिथौ अमुकगोत्रस्य अमुकशर्मणो-मम विद्याधन -जय- पुत्रपौत्रादि-सौभाग्य-लाभपूर्वकं श्री सिद्धिविनायक-प्रीतिकामः- श्रीसिद्धिविनायक पूजनं तदंग देवता पूजनं च अहं करिष्ये। (३) **चौठचन्द्र पूजन संकल्पः-** कुश-तिल- जल-द्रव्य- सुपारी- फूल आदि लय-नमोऽस्यां रात्रौ भाद्रपद मासि शुक्लेपक्षे चतुर्थ्यां तिथौ अमुक गोत्राया अमुकी देव्याः सपरिवारस्य सकल- दुरितोप- सर्गापच्छान्ति-पूर्वक सकल-मनोरथ-सिद्ध्यर्थं यथाशक्ति गन्ध -- पुष्प-धूप-दीप- नैवेद्यादिभिः पूर्वाङ्गीकृत रोहिणी सहित भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्र पूजनं महं करिष्ये।

आश्विनकृष्णपक्षः।।

शक १९४३, संवत्२०७८, सन् १४२६,दक्षिणायणं, उत्तरगोलः, शरद् ऋतुः, उत्तरे कालः।
दिनांक २१ सितम्बर तः ६ अक्टूबर यावत् सन् २०२१ इ.। वक्री पूर्वोदितः गुरु, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

वैदेहीपञ्चाङ्ग

तिथयः दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः	द. प.	समाप्तिकाल घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	ने.	अं.	आश्विनकृष्णपक्षः
१ मं.	५८।१८	रा.शे.५।४७	उत्तराभाद्रपद	५६।३३	रा.शे.४।४७	गण्ड	२५।३२	वालव	२७।५४	मीन		अहोरात्र	५।०४।१२।३८	३०।१०	५।५८	६।०२	३०	५	२१	आश्विनेदुर्ग्धं त्यजेत्, महालयारम्भः। पितृपक्षीयतर्पणपार्वणारम्भः। प्रतिपदृएकोदिष्टं। शिववासः, अग्निवासः,
२ बु.	६०।००	अहोरात्र	रेवती	६०।००	अहोरात्र	वृद्धि	२३।५८	तैतिल	३०।२२	मीन		अहोरात्र	५।०५।११।१६	३०।०६	५।५९	६।०१	३१	६	२२	अशून्यशयन २ व्रतं, एकोदिष्ट२, भद्रा ३३।०२ उ., सिद्धियोगः, पश्चिमयात्रा। शिववासः-अग्निवासः दि.३।१५ उपरि, उत्तरे विनायात्रा दि.३।१५ यावत्।
२ गु.	००।२५	प्रा.६।१०	रेवती	०३।११	प्रा.७।१५	ध्रुव	२३।१३	गर	००।२५	मीन	३।११	दि.७।१५	५।०६।१०।००	३०।०२	६।००	६।००	१	७	२३	एकोदिष्ट३, ललितादेवीयात्रा, पञ्चक(भदवा)समाप्तिः प्रा.७।१६ उ.,अग्निवासः,सर्वार्थसिद्धियोगः, पश्चिम-उत्तरयात्रा प्रा.७।१६ यावत् ततः दक्षिणे विनायात्रा। भद्रा ३।३८ प.।
३ शु.	०३।३८	दि.७।२७	अश्विनी	०७।१४	दि.६।०६	व्याघात्	२३।२८	भद्रा	३।३८	मेष		अहोरात्र	५।०७।०८।४१	२९।५८	६।००	६।००	२	८	२४	श्रीगणेशश्च व्रतं, एकोदिष्ट४, मध्याह्ने भरणीश्राद्धं, पश्चिमे विनायात्रा-सर्वार्थसिद्धियोगश्च दि.६।६ यावत्। शिववासः दि.७।२७ उपरि।
४ श.	०७।५१	दि.९।१३	भरणी	१३।३२	दि.११।२५	हर्षण	२४।२०	वालव	७।५१	मेष	३०।०७	सा.६।०४	५।०८।०७।२२	२९।५४	६।०१	५।५९	३	९	२५	इन्द्रविसर्जनं,एकोदिष्ट५, शिववासः, अग्निवासः। अग्निवासः-दक्षिणयात्रा दि.९।१३ यावत्। भद्रा १७।५६ उ.५०।२६ यावत्।
५ र.	१२।४५	दि.११।०८	कृत्तिका	१६।५१	दि.१।१८	वज्र	२५।३६	तैतिल	१२।४५	वृष		अहोरात्र	५।०९।०६।०३	२९।५०	६।०२	५।५८	४	१०	२६	श्रीचन्द्रषष्ठीव्रतं(चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्य), शिववासः दि.११।०८ यावत् ततः अग्निवासः, अमृतयोगः दि.११।०८ यावत्।
६ चं.	१७।५६	दि.१।१३	रोहिणी	२६।२३	दि.४।३६	सिद्धि	२७।१०	वणिज्	१७।५६	वृष	५६।३३	रा.शे.५।१२	५।१०।०६।०३	२९।४७	६।०३	५।५७	५	११	२७	एकोदिष्ट६, हस्ते रविः ३८।४६(रा.६।३५), स्त्री. पुं.सु.सु. योगो जम्बुक वाहनं वह्नी नाडी तदीशो भौमः वायुवृष्टियोगः। सर्वार्थसिद्धियोगः अहोरात्रं
७ मं.	२३।०१	दि.३।१५	मृगशिरा	३२।४४	रा.७।०८	व्यतीपात्	२८।३१	वव	२३।०१	मिथुन		अहोरात्र	५।१०।०५।०६	२९।४४	६।०३	५।५७	६	१२	२८	एकोदिष्ट७। महालक्ष्मीव्रतं, जीमूतवाहन व्रतं(जितिया)। जीमूतवाहनपूजा, दग्धतिथि दि.३।१५ उपरि, अमृतयोगः दि.३।१५ यावत् ततः सिद्धियोगः,
८ बु.	२७।३०	सं.५।०४	आर्द्रा	३८।३१	रा.९।२७	वरीयान्	२६।२७	कौलव	२७।३०	मिथुन		अहोरात्र	५।११।०४।०६	२९।४०	६।०४	५।५६	७	१३	२९	महालक्ष्मी, जीमूतवाहन व्रतस्यपारणा सं.५।०४ उपरि, एकोदिष्ट८, अष्टकाश्राद्धं, दग्धतिथि सं.५।०४ यावत्। शिववासः-अग्निवासः सं.५।०४ यावत्। वृश्चिके शुक्रः२५।१६
९ गु.	३१।१२	सं.६।३३	पुनर्वसु	४३।२५	रा.११।२७	परिघ	२६।३८	गर	३१।१२	मिथुन	२७।१२	दि.४।५८	५।१२।०३।१२	२९।३६	६।०५	५।५५	८	१४	३०	मातृकानवमी, एकोदिष्ट९, अन्वष्टकाश्राद्धं, गुरुपुष्ययोगः रा.११।२७ उ.,अग्निवासः सं.६।३३ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः,
१० शु.	३३।४३	रा.७।३५	पुष्य	४७।१३	रा.१२।५६	शिव	२६।०४	वणिज्	२।२८	कर्क		अहोरात्र	५।१३।०२।१५	२९।३२	६।०६	५।५४	९	१५	१	अक्टूबर १०, एकोदिष्ट१०, पश्चिमे विनायात्रा रा.१२।५६ यावत्। अग्निवासः रा.७।३५ यावत्। भद्रा २।२८ उ.३३।४३ यावत्। वक्रगत्याः मकरे गुरुः १३।३१।
११ श.	३५।०३	रा.८।०७	आश्लेषा	४६।४६	रा.२।०१	सिद्ध	२७।३४	वव	४।२३	कर्क	४६।४६	रा.२।०१	५।१४।०१।१६	२९।२८	६।०६	५।५४	१०	१६	२	इन्दिराएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। एकादशीश्राद्धं, गौन्धी-शास्त्री जयन्ती, शिववासः, अमृतयोगः रा.८।०७ यावत्।
१२ र.	३५।०५	रा.८।०६	मघा	५१।०७	रा.२।३३	साध्य	२५।०२	कौलव	५।०४	सिंह		अहोरात्र	५।१५।००।२३	२९।२४	६।०७	५।५३	११	१७	३	गुडेनपारणा, एकोदिष्ट १२, मघाश्राद्धं,शिववासः। पश्चिम-उत्तरयात्रा सं.६।३३ तः रा.११।२७ यावत् ततः दक्षिणे विनायात्रा।
१३ चं.	३३।५२	रा.७।४०	पूर्वाफाल्गुनी	५१।१२	रा.२।३६	शुभ	२१।२६	गर	४।२६	सिंह		अहोरात्र	५।१५।५९।२८	२९।२०	६।०८	५।५२	१२	१८	४	सोमप्रदोष १३ व्रतं,पुत्रार्थिभिरेतद्व्रतारम्भो विधेय, एकोदिष्ट१३, अग्निवासः, उत्तरयात्रा रा.७।४० यावत्। भद्रा ३३।५२ उपरि।
१४ मं.	३१।२६	सं.६।४३	उत्तराफाल्गुनी	५०।०७	रा.२।११	शुक्ल	१६।५८	भद्रा	२।३६	सिंह	५।५५	दि.८।३१	५।१६।५८।४६	२९।१६	६।०८	५।५१	१३	१९	५	प्रदोष १४ व्रतं, एकोदिष्ट१४, भद्रा २।३६ यावत्।
३० बु.	२७।५८	सं.५।२६	हस्त	४८।१०	रा.१।२६	ब्रह्म	११।३७	नाग	२७।५५	कन्या		अहोरात्र	५।१७।५८।०४	२९।१२	६।१०	५।५०	१४	२०	६	आश्विन अमावस्या स्नान-दान श्राद्धादौ अमावस्या। महालया३०,पितृपक्षीयतर्पणान्तः। सर्वार्थसिद्धियोगः,शिववासः,अग्निवासः सं.५।२१ यावत्।

१२ रवी वल्ली ८।३६।४३।४६
अयनांशाः २२।५०।१२

५ रवी वल्ली ८।३६।४३।३६
अयनांशाः २२।५०।११

मूलविचार-रेवती/अश्विनी ति.१ मंगल रा.शे.५।४७ तः ति.३ शुक्र दि.६।०६ यावत्।
आश्लेषा/मघा ति.१० शुक्र रा.१२।५६ तः ति.१२ रवि रा.२।३३ यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	वक्री बुध राश्यादि	गुरुः वक्री राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि वक्री राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ मं.	५।०६।२५।२७	५।२४।१७।३५	९।००।५१।२२	६।२१।२५।५३	९।६।२८।५०	७।१२।५८।०७	४५।०५
२ बु.	५।१०।०४।०६	५।२३।५६।२६	९।००।४७।२१	६।२२।३३।२६	९।६।२७।११	७।१२।५४।५६	४५।०३
२ गु.	५।१०।४२।५१	५।२३।३५।१७	९।००।४३।२०	६।२३।४०।५८	९।६।२५।३२	७।१२।५१।४५	४५।०१
३ शु.	५।११।२१।३१	५।२३।१४।०८	९।००।३९।१९	६।२४।४८।३०	९।६।२३।५३	७।१२।४८।३४	४४।५९
४ श.	५।१२।००।१३	५।२२।५२।५९	९।००।३५।१८	६।२५।५६।०२	९।६।२२।१४	७।१२।४५।२४	४४।५७
५ र.	५।१२।३८।५४	५।२२।३१।५०	९।००।३१।१७	६।२७।०३।३४	९।६।२०।३५	७।१२।४२।१४	४४।५६
६ चं.	५।१३।१७।५२	५।२१।४१।३०	९।००।२५।३७	६।२८।०९।३३	९।६।१९।५४	७।१२।३९।०३	४४।५४
७ मं.	५।१३।५६।५०	५।२०।५१।१०	९।००।१९।५७	६।२९।१५।३२	९।६।१९।१३	७।१२।३५।५२	४४।५२
८ बु.	५।१४।३५।४८	५।२०।००।५०	९।००।१४।१७	७।००।२१।३१	९।६।१८।३२	७।१२।३२।४१	४४।५०
९ गु.	५।१५।१४।४६	५।१९।१०।३०	९।००।०८।३७	७।०१।२७।३०	९।६।१७।५१	७।१२।२९।३०	४४।४८
१० शु.	५।१५।५३।४४	५।१८।२०।१०	९।००।०२।५७	७।०२।३३।२९	९।६।१७।१०	७।१२।२६।१९	४४।४६
११ श.	५।१६।३२।४२	५।१७।२९।५०	८।२९।५७।१७	७।०३।३९।२८	९।६।१६।३०	७।१२।२३।०९	४४।४४
१२ र.	५।१७।११।४०	५।१६।३९।३१	८।२९।५१।३७	७।०४।४५।२९	९।६।१५।५०	७।१२।१९।५९	४४।४२
१३ चं.	५।१७।५०।५६	५।१६।११।५६	८।२९।४८।४९	७।०५।५०।०२	९।६।१५।२६	७।१२।१६।४८	४४।४०
१४ मं.	५।१८।३०।१२	५।१५।४४।२२	८।२९।४६।०१	७।०६।५४।३८	९।६।१५।०२	७।१२।१३।३७	४४।३८
३० बु.	५।१९।०९।२७	५।१५।१६।४८	८।२९।४३।१३	७।०७।५७।१४	९।६।१४।३५	७।१२।१०।२६	४४।३६

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ मं.	२०।५७	२२।५३	१।०६	३।२४	५।४०	७।५५	१०।१३	१२।२६	१४।३४	१६।२०	१७।५१	१९।२०
२ बु.	२०।५३	२२।४९	१।०२	३।२०	५।३६	७।५१	१०।०९	१२।२५	१४।३०	१६।१६	१७।४७	१९।१६
२ गु.	२०।५०	२२।४६	०।५९	३।१७	५।३३	७।४८	१०।०५	१२।२२	१४।२७	१६।१३	१७।४४	१९।१३
३ शु.	२०।४६	२२।४२	०।५५	३।१३	५।२९	७।४४	१०।०१	१२।१८	१४।२३	१६।०९	१७।४०	१९।०९
४ श.	२०।४२	२२।३८	०।५१	३।०९	५।२५	७।४०	९।५७	१२।१४	१४।१९	१६।०५	१७।३६	१९।०५
५ र.	२०।३९	२२।३५	०।४८	३।०६	५।२२	७।३७	९।५४	१२।११	१४।१६	१६।०२	१७।३३	१९।०२
६ चं.	२०।३५	२२।३१	०।४४	३।०२	५।१८	७।३३	९।५०	१२।०७	१४।१२	१५।५८	१७।२९	१८।५८
७ मं.	२०।३१	२२।२७	०।४०	२।५८	५।१४	७।२९	९।४६	१२।०३	१४।०८	१५।५४	१७।२५	१८।५४
८ बु.	२०।२८	२२।२४	०।३७	२।५५	५।११	७।२६	९।४३	१२।००	१४।०५	१५।५१	१७।२२	१८।५१
९ गु.	२०।२४	२२।२०	०।३३	२।५१	५।०७	७।२२	९।३९	११।५६	१४।०१	१५।४७	१७।१८	१८।४७
१० शु.	२०।२०	२२।१६	०।२९	२।४७	५।०३	७।१८	९।३५	११।५२	१३।५७	१५।४३	१७।१४	१८।४३
११ श.	२०।१७	२२।१३	०।२६	२।४४	५।००	७।१५	९।३२	११।४९	१३।५४	१५।४०	१७।११	१८।४०
१२ र.	२०।१३	२२।०९	०।२२	२।४०	४।५६	७।११	९।२८	११।४५	१३।५०	१५।३६	१७।०७	१८।३६
१३ चं.	२०।०९	२२।०५	०।१८	२।३६	४।५२	७।०७	९।२४	११।४१	१३।४६	१५।३२	१७।०३	१८।३२
१४ मं.	२०।०६	२२।०२	०।१५	२।३३	४।४९	७।०४	९।२१	११।३८	१३।४३	१५।२९	१७।००	१८।२९
३० बु.	२०।०२	२१।५८	०।११	२।२९	४।४५	७।००	९।१७	११।३४	१३।३९	१५।२५	१६।५६	१८।२५

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन		दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	मं.	दि.७:२७-८:५८। दि.१:३१-३:२।	रा.७:३३-९:०२।
२	बु.	दि.८:५६-१०:३०। दि.१२:१-१:३८।	रा.१२:१-१:३०, रा.२:५६-४:२८।
२	गु.	दि.३:२-६:०२।	रा.१२:०२-१:३० रा.४:२६-५:५४।
३	शु.	दि.९:००-१२:०२।	रा.९:०२-१०:३२।
४	श.	प्र.५:५९-७:३० दि.१:३१-३:१ दि.४:३१-६:१।	रा.६:१-७:३१ रा.१:३१-३:०१ रा.४:३०-५:५९।
५	र.	दि.१०:३०-१:३०।	रा.१०:३०-१२:०० रा.१:३०-३:००।
६	चं.	दि.७:३१-९:१। दि.३:१-४:३०।	रा.१०:३१-१२:०१, रा.३:०१-४:३१।
७	मं.	दि.७:३२-९:०२। दि.१:३१-३:००।	रा.७:२९-९:३०।
८	बु.	दि.९:०२-१०:३२। दि.१२:०२-१:३१।	रा.१२:०२-१:३२। रा.३:०२-४:३८।
९	गु.	दि.२:५९-५:५७।	रा.१२:०१-१:३२ रा.४:३३-६:०३।
१०	शु.	दि.९:२-१२:००।	रा.८:५८-१०:२९।
११	श.	प्र.६:५-७:३४,दि.१:३०-२:५९ दि.४:२७-५:५५।	प्र.५:५५-७:२७ रा.१:३२-३:०२ रा.४:३४-६:०५।
१२	र.	दि.१०:३३-१:३०।	रा.१०:३०-१२:०२ रा.१:३३-३:०४।
१३	चं.	दि.७:३५-९:०४, दि.२:५८-४:२६।	रा.१०:३०-१२:०२ रा.३:४-४:३५।
१४	मं.	दि.७:३६-९:०५, दि.१:२९-२:५७।	रा.७:२५-८:५७।
३०	बु.	दि.९:४-१०:३२,दि.२:००-१:२८।	रा.१२:००-१:३२ रा.३:०५-४:३६।

धर्मशास्त्रम्- आश्विनकृष्णपक्षे प्रतिदिनं श्राद्धं कुर्यादिति प्रथमकल्पः। पंचमीमारभ्यामां यावदिति द्वितीयकल्पः। अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयकल्पः। दशमीमारभ्यामां यावदिति चतुर्थः कल्पस्तदभावे एकस्मिन्नपि दिने श्राद्धं कर्त्तव्यमेव। हेमाद्रौ- आषाढ्याः पंचमे पक्षे कन्यासंस्थे सूर्ये यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे। तस्य संवत्सरं यावत्सन्तृप्ताः पितरो ध्रुवम्। श्राद्धकालः-पूर्वाह्ने मातृकं श्राद्धमपराह्ने तु पैतृकम्। एकोद्दिष्टन्तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्। श्राद्धसमय-कुतुपकाल- द्वौ यामौ घटिकान्यूनौ द्वौ यामौ घटिकाधिकौ। स कालः कुतुपो ज्ञेयः पितृणां दत्तमक्षयम्।। श्राद्धेनिषिद्धवस्तुनि(मत्स्य-पुराणे)- कूष्माण्डं, महिषीक्षीरं, विल्वपत्रमगद्विजाः।

श्राद्धकालेसमुत्पन्ने-पितरो यान्त्यनाश्रिताः। श्राद्धेप्रशस्तानि-उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्तपवित्राणि दौहित्रः कुतुपस्तिलाः। जीमूतवाहनव्रतं-इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका।। शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः। तस्यां पूज्यःस नारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया।।

खञ्जन दर्शनमन्त्रः-नीलग्रीवस्वरूपेण सर्वकामफलप्रद। पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तु ते।।

फलम - तद्दर्शनमाकाशदपूर्व- पश्चिमोत्तर- वायव्यादिसु शुभमन्यादिस्व शुभम्।

पुनश्च- अब्जेषु गोषु गजवाजिमहोरगेषु राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाद्वलेषु। भस्मास्थिकेशतुषलोमनखेषु दृष्टो दुःखं ददाति बहुशः खलु खञ्जरीटः।

मिथिलादेशीय सदाचार पद्धति

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

मनुक एहि वचनक अनुसार धर्म अर्थात् कर्त्तव्य कर्म के बुझवाक वास्ते वेद, स्मृति= धर्मशास्त्र, सदाचार आ आत्मतुष्टि एहि चारि साधन कें प्रत्यक्ष साधन कहल गेल छैक । अहू चारू मे सदाचारक स्थान सर्वोपरि मानल गेल छैक, कियैक तऽ वेद, स्मृति आ आत्मतुष्टि में बहुतो स्थल में विविधताक स्थिति में सदाचारक निर्णायक भूमिका होइत अछि। जेना कि श्रीमद्भगवद्गीता में कहल गेल छैक-

यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत् तदेवेतरो जनः। स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

महाभारत में कहल गेल अछि- श्रुतिर्विभिन्ना स्मृतियो विभिन्ना नैको मुनिर्यस्य मतं न भिन्नम्।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्थाः।।

सदाचार ककरा कही ? विष्णुपुराणक वचनानुसार-

साधवः क्षीणदोषाः स्युः सच्छब्दः साधुवाचकः। तेषामाचरणं यत्स्यात् सदाचारः स उच्यते।।

अर्थ-दोषरहित पुरुष के साधु कहल जाइत छैक। सदाचार शब्द मे "सत्" शब्दक अर्थ अछि- साधु। तैं "सताम् आचारः" इति सदाचारः एहि व्युत्पत्तिक अनुसार साधु पुरुषक जे आचरण अर्थात् व्यवहार ओ"सदाचार" कहवैत अछि। परिस्थिक अनुसार भिन्न- भिन्न स्थानक सदाचारो मे विविधता देखल जाइत अछि। एहेन स्थिति मे कोन जगहक सदाचार कें प्रमाण मानैत अपनावी ? एहि जिज्ञासाक समाधान मे आचार-मर्मज्ञ आचार्य देवलक कथन छैन्ह जे जाहि देश मे जे व्यवहार परम्परा सँ आवि रहल अछि आ ओ व्यवहार यदि वेद आ स्मृतिक अविरोधी हो तऽ तत्तद् देशवासी कें ओकरे अनुपालन करक चाही-

आश्विनशुक्लपक्षः

शक १९४३, संवत्२०७८, सन् १४२९,दक्षिणायण, उत्तरगोलः ता.१७ तः दक्षिणगोलः, शरद् ऋतुः, उत्तरे कालः। शुद्धः
दिनांक ७ अक्टूबर तः २० अक्टूबर यावत् सन् २०२१ इ। वक्री पूर्वोदितः गुरु, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.
१	गु.	२३।३८	दि.३।३७	चित्रा	४५।२०	रा.१२।१८	ऐन्द्र	५।३३	बव	२३।३८	कन्या १६।४४	दि.१२।५२	५।१९।५६।४०	२९।०८	६।१०	५।५०	१५	२१	७
२	शु.	१८।३८	दि.१।३८	स्वाती	४१।५२	रा.१०।५८	विष्कुम्भ	५१।३६	कौलव	१८।२८	तुला	अहोरात्र	५।२०।५५।५८	२९।०४	६।११	५।४९	१६	२२	८
३	श.	१३।०३	दि.११।२५	विशाखा	३७।५७	रा.९।२२	प्रीति	४४।०३	गर	१३।०३	तुला २३।५५	दि.३।४६	५।२१।५५।१६	२९।००	६।१२	५।४८	१७	२३	९
४	र.	०५।१०	दि.८।१७	अनुराधा	३३।४६	रा.७।४४	आयुष्मान	३६।१४	भद्रा	५।१०	वृश्चिक	अहोरात्र	५।२२।५४।३४	२८।५६	६।१३	५।४७	१८	२४	१०
५	चं.	०१।०५	प्रा.६।४०	ज्येष्ठा	२९।३५	सं.६।०४	सौभाग्य	२८।२२	बालव	१।०५	वृश्चिक२९।३५	सं.६।०४	५।२३।५४।०८	२८।५२	६।१४	५।४६	१९	२५	११
७	मं.	४६।२३	रा.१।५६	मूल	२५।३३	दि.४।२७	शोभन	२०।३८	गर	२२।१५	धनु	अहोरात्र	५।२४।५३।४२	२८।४८	६।१४	५।४६	२०	२६	१२
८	बु.	४४।०६	रा.११।५३	पूर्वाषाढ़ा	२१।५३	दि.३।००	अतिगण्ड	१३।११	भद्रा	१६।४५	धनु३६।०६	रा.८।४१	५।२५।५३।१६	२८।४४	६।१५	५।४५	२१	२७	१३
९	गु.	३६।२६	रा.१०।०३	उत्तराषाढ़ा	१८।४५	दि.१।४६	सुकर्मा	०६।११	बालव	११।४८	मकर	अहोरात्र	५।२६।५२।५०	२८।४०	६।१६	५।४४	२२	२८	१४
१०	शु.	३५।४०	रा.८।३३	श्रवण	१६।३०	दि.१२।५३	शूल	५४।३२	तैतिल	७।३५	मकर ४५।४५	रा.१२।३५	५।२७।५२।२४	२८।३६	६।१७	५।४३	२३	२९	१५
११	श.	३२।५१	रा.७।२६	धनिष्ठा	१५।००	दि.१२।१८	गण्ड	४६।१३	वणिज्	१।३६	कुम्भ	अहोरात्र	५।२८।५१।५६	२८।३२	६।१८	५।४२	२४	३०	१६
१२	र.	३१।१०	सं.६।४७	शतभिषा	१४।३८	दि.१२।१०	वृद्धि	४५।१४	बव	२।०१	कुम्भ	अहोरात्र	५।२९।५१।३४	२८।२८	६।१९	५।४१	२५	३१	१७
१३	चं.	३०।३०	सं.६।२१	पूर्वाभाद्रपद	१५।२७	दि.१२।२६	ध्रुव	४२।१५	कौलव	००।५०	कुम्भ ००।१५	प्रा.६।२५	६।००।[illegible]।२४	२८।२४	६।१९	५।४१	२६	१	१८
१४	मं.	३१।३०	सं.६।५६	उत्तराभाद्रपद	१७।३१	दि.१।२०	व्याघात	४०।१६	गर	००।३०	मीन	अहोरात्र	६।०१।५१।१४	२८।२०	६।२०	५।४०	२७	२	१९
१५	बु.	३३।४१	रा.७।४९	रेवती	२०।५२	दि.२।४१	हर्षण	३६।१८	भद्रा	३।०६	मीन २०।५२	दि.२।४१	६।०२।५१।०४	२८।१६	६।२१	५।३९	२८	३	२०

दिनांकाः ने.	अं.	
२१	७	वैधृति ५२।२७, शारदीयनवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, नवरात्रव्रतारम्भः; दोलायां भगवत्याः आगमनं फलं मरणंध्रुवम्। चन्द्रदर्शनं मु३० समताकरम्। शिववासः-अग्निवासः दि.३।३७ उपरि। विपणि, ◆ वृक्षादिरोपणं, क्रयविक्रय, स्वामीसेवारम्भः,यानादिचालनम्।
२२	८	श्रीरेमन्त पूजा। ब्रह्मचारिणी देवी दर्शनं। पट्टदोरं द्वितीयायां केशसंयम हेतवे। शिववासः दि.१।३८ यावत्। क्रय-विक्रय।
२३	९	दर्पणं च तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा। चन्द्रघण्टा देवी दर्शन। श्रीगणेश४ व्रतं, भद्रा ३६।०७ उ., अग्निवासः। ॐ तदीशो रविः वायु वृष्टियोगः। शिववासः,अग्निवासः प्रा.६।४० या.ततः सिद्धियोगः, यानादिचालनं।
२४	१०	श्रीगणेशपूजनं। कुष्माण्डादेवी दर्शनं, मधुपर्क चतुर्थ्यांतु तिलकं नेत्रमण्डनम्। शिववासः-अग्निवासः दि.८।१७ उपरि, भद्रा ५।१० यावत्, अमृतयोगः दि.८।१७ उपरि। विपणि दि.८।१७ उपरि।
२५	११	षष्ठीतिथिमानं ५४।०१, विल्वाभिमन्त्रणं, गजपूजा, स्कन्दमाता व कात्यायनीदेवी दर्शनं, पंचम्यामंगरागं च शक्त्यालंकरणानि च। चित्रायां रविः १०।०२(दि.१०।१४), स्त्री. नपुं सू.सू. योगो चातक वाहनं वात नाड़ी ॐ
२६	१२	नवपत्रिकाप्रवेशः, मूलेसरस्वत्याः आवाहन,भगवतीदर्शन। अन्नपूर्णापरिक्रमारम्भः। कालरात्रीदर्शनं, अग्निवासः, अमृतयोगः रा.१।५६ या., दग्धतिथि रा.१।५६ उ., भद्रा ४६।२३ उ.,
२७	१३	महाष्टमी ८ व्रतं, महारात्रिनिशापूजा, रात्रिजागरण, दीक्षाग्रहणं, महागौरीदेवीदर्शनं, श्रीदुर्गाष्टमी८ व्रतम्। दग्धतिथि रा.११।५३ या., भद्रा १६।४५ यावत्।
२८	१४	महानवमी ९ व्रतं। त्रिशूलिनीपूजा, प्रभूततरबलिदानं,दीक्षाग्रहणं, हवनादिः। धृति ५३।३८, शिववासः,
२९	१५	विजयादशमी१०, नवरात्रव्रतपारण, देवीविसर्जनं, जयन्तीधारणं, अपराजितापूजा, समीपूजा, नीलकण्ठदर्शनम्। सीमोल्लंघनम्। गजवाहनया देव्याः गमनं फलं शुभवृष्टिकर। दक्षसावर्णिमन्वादिः,ॐ
३०	१६	पाशांकुशाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। अग्निवासः, अमृतयोगः रा.७।२६ या., पश्चिमयात्रा दि.१२।१८ या., भद्रा ४।१६ उ. ३२।५१ या.। ॐ पञ्चकारम्भः(भदवा) दि.१२।५३ उपरि।
३१	१७	गुडेन पारणा, श्रीपद्मनाभ १२। मासान्तः, तुलायां रविः ५२।४०(रा.३।२३), मु.३० समासमताकरम्। मासान्त, शिववासः, सिद्धियोगः सं.६।४७ उपरि।
१	१८	प्रदोष१३ व्रतं, धान्यविपुवसंक्रान्तिपुण्यकालः सूर्योदयात् दि.१२।०० यावत् पुण्याहः, कार्तिकस्नानारम्भः, सिमरियाधाम्नि, कल्पवासारम्भः, दक्षिणगोलारम्भः, ने. कार्तिकमासारम्भः,
२	१९	प्रदोष १४ व्रतं, मासादिः, कौमुदीमहोत्सव(कोजागरा), श्रीमहालक्ष्मीपूजा। दीक्षाग्रहणम्।
३	२०	शरद्पूर्णिमा१५,स्नानदानादि, आदिकवि वाल्मीकीजयन्ती। दीक्षाग्रहणं,गृहारम्भः, स्वामीसेवारम्भ,अग्निवासः, पश्चिमयात्रा दि.२।४१ यावत् ततः उत्तरां विनायात्रा। पञ्चक(भदवा)समाप्ति दि.२।४१ उपरि,भद्रा ३।१६ या.।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	वक्री बुध राश्यादि	गुरु वक्री राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि वक्री राश्यादि	केतु राश्यादि
१ गु.	५।१९।४८।४२	५।१४।४९।१४	९।२९।४०।२५	७।०९।०३।५०	९।९।१४।१५	७।१२।०७।१५
२ शु.	५।२०।२७।५७	५।१४।२१।४०	९।२९।३७।३७	७।१०।०८।२६	९।९।१३।५२	७।१२।०४।०४
३ श.	५।२१।०७।१२	५।१३।५४।०६	९।२९।३४।५०	७।११।१३।०२	९।९।१३।२९	७।१२।००।५४
४ र.	५।२१।४६।२७	५।१३।२६।३५	९।२९।३२।०३	७।१२।१७।३८	९।९।१३।०६	७।११।५७।४४
५ चं.	५।२२।२५।५३	५।१३।३८।०७	९।२९।३०।४४	७।१३।२०।१३	९।९।१४।०२	७।११।५४।३३
७ मं.	५।२३।०५।१९	५।१३।४९।४१	९।२९।२९।२५	७।१४।२२।४८	९।९।१४।५८	७।११।५१।२२
८ बु.	५।२३।४४।४५	५।१४।०१।१५	९।२९।२८।०६	७।१५।२५।२२	९।९।१५।५४	७।११।४८।११
९ गु.	५।२४।२४।११	५।१४।१२।४९	९।२९।२६।४७	७।१६।२७।५६	९।९।१६।५०	७।११।४५।००
१० शु.	५।२५।०३।३६	५।१४।२४।२३	९।२९।२५।२८	७।१७।३०।३०	९।९।१७।४६	७।११।४१।४९
११ श.	५।२५।४३।०१	५।१४।३५।५७	९।२९।२४।०९	७।१८।३३।०४	९।९।१८।४२	७।११।३८।३९
१२ र.	५।२६।२२।२६	५।१४।४७।३१	९।२९।२२।५०	७।१९।३५।३८	९।९।१९।३७	७।११।३५।२९
१३ चं.	५।२७।०१।५७	५।१५।३५।५५	९।२९।२२।५९	७।२०।३५।३७	९।९।२०।५०	७।११।३२।१८
१४ मं.	५।२७।४१।२८	५।१६।२४।१९	९।२९।२३।०४	७।२१।३५।३६	९।९।२२।०२	७।११।२९।०७
१५ बु.	५।२८।२०।५८	५।१७।१२।४३	९।२९।२३।११	७।२२।३५।३५	९।९।२३।१४	७।११।२५।५६

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

मिश्रमान	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.	तिथि	दिन
४४।३४	१९।५८	२१।५४	०।०७	२।२५	४।४१	६।५६	९।१३	११।३०	१३।३५	१५।२१	१६।५२	१८।२१	१	गु.
४४।३२	१९।५५	२१।५१	०।०४	२।२२	४।३८	६।५३	९।१०	११।२७	१३।३२	१५।१८	१६।४९	१८।१८	२	शु.
४४।३०	१९।५१	२१।४७	०।००	२।१८	४।३४	६।४९	९।०६	११।२३	१३।२८	१५।१४	१६।४५	१८।१४	३	श.
४४।२८	१९।४७	२१।४३	२३।५६	२।१४	४।३०	६।४५	९।०२	११।१९	१३।२४	१५।१०	१६।४१	१८।१०	४	र.
४४।२६	१९।४४	२१।४०	२३।५३	२।११	४।२७	६।४२	८।५९	११।१६	१३।२१	१५।०७	१६।३८	१८।०७	५	चं.
४४।२४	१९।४०	२१।३६	२३।४९	२।०७	४।२३	६।३८	८।५५	११।१२	१३।१७	१५।०३	१६।३४	१८।०३	७	मं.
४४।२२	१९।३६	२१।३२	२३।४५	२।०३	४।१९	६।३४	८।५१	११।०८	१३।१३	१४।५९	१६।३०	१७।५९	८	बु.
४४।२०	१९।३३	२१।२९	२३।४२	२।००	४।१६	६।३१	८।४८	११।०५	१३।१०	१४।५६	१६।२७	१७।५६	९	गु.
४४।१८	१९।२९	२१।२५	२३।३८	१।५६	४।१२	६।२७	८।४४	११।०१	१३।०६	१४।५२	१६।२३	१७।५२	१०	शु.
४४।१६	१९।२५	२१।२१	२३।३४	१।५२	४।०८	६।२३	८।४०	१०।५७	१३।०२	१४।४८	१६।१९	१७।४८	११	श.
४४।१४	१९।२२	२१।१८	२३।३१	१।४९	४।०५	६।२०	८।३७	१०।५४	१२।५९	१४।४५	१६।१९	१७।४५	१२	र.
४४।१२	१९।१८	२१।१४	२३।२७	१।४५	४।०१	६।१६	८।३३	१०।५०	१२।५५	१४।४१	१६।१६	१७।४१	१३	चं.
४४।१०	१९।१४	२१।१०	२३।२३	१।४१	३।५७	६।१२	८।२९	१०।४६	१२।५१	१४।३७	१६।१२	१७।३७	१४	मं.
४४।०८	१९।१०	२१।०६	२३।१९	१।३७	३।५३	६।०८	८।२५	१०।४२	१२।४७	१४।३३	१६।०८	१७।३३	१५	बु.

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	गु.	दि.२:५७-५:५१।	रा.१२:०१-१:३३ रा.४:३७-६:०६।
२	शु.	दि.९:०५-१२:०१।	रा.८:५६-१०:२६।
३	श.	दि.६:१०-७:३८ दि.१:२९-२:५६ रा.४:२३-५:५०	सा५:५०-७:२३रा.१:३४-३:०६ रा४:३८-६:१०
४	र.	दि.१०:३४-१:२८।	रा.१०:२८-१२:०१ रा.१:३४-३:०७।
५	चं.	दि.७:३९-९:०६ दि.२:५४-४:५१।	रा.१०:२७-१२:०० रा.३:०६-४:३९।
७	मं.	दि.७:३९-९:६ दि.१:२७-२:५४।	रा.७:२१-८:५४।
८	बु.	दि.९:७-१०:३४ दि.१२:१-१:२८।	रा.१२:०१-१:३५ रा.४:४१-६:१४।
९	गु.	दि.२:५४-५:४६।	रा.१२:०२-१:३५ रा.४:४१-६:१४।
१०	शु.	दि.९:०९-१२:०१।	रा.८:५३-१०:२७।
११	श.	दि.६:१६-७:४२ दि.१:२६-२:५३ दि.४:२८-४:४४	सा५:४४-७:१८ रा.१:३४-३:८ रा४:४२-६:१६
१२	र.	दि.१०:३४-१:२६।	रा.१०:२६-१२:०० रा.१:३४-३:०८।
१३	चं.	दि.७:४३-९:९ दि.२:५३-४:१८।	रा.१०:२७-१२:१ सा.३:९-४:४३।
१४	मं.	दि.७:४४-९:१० दि.१:२७-२:५२।	रा.७:१७-८:५२
१५	बु.	दि.९:११-१०:३६ दि.१२:०१-१:२६।	रा.१२:१-१:३६ रा.३:११-४:४५।

मूलविचारः-ज्येष्ठा/मूल ति.४ रवि रा.७।४४ तः ति.७ मंगल दि.४।२७ यावत्।
रेवती/अश्विनी ति.१४ मंगल दि.१।२० तः ..

❖कलशस्थापन का संकल्पः- ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मवर्तैकदेशे पुण्य बिहारप्रदेशे मिथिलांचले....अमुक मण्डले(जिला)...अमुकग्रामे(गाम), स्वगृहे(यदिअपनाघर में हो),अमुक देवालये(यदिमन्दिर में हो)प्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने आनन्द नामसंवत्सरे, दक्षिणायने, उत्तरगोले, महामाङ्गल्यप्रदे मासानाम् उत्तमे आश्विने मासे, शुक्ले पक्षे, प्रतिपदायां तिथौ, गुरु वासरान्वितायां, चित्रा नक्षत्रे ऐन्द्र योगे, वव करणे, कन्या राशिस्थिते श्रीसूर्ये, कन्या राशिस्थिते श्रीचन्द्रे,यथा-यथा राशिस्थितेषु भौम- बुध-गुरु-शुक्र-शनिषु सत्सु शुभे योगे शुभे करणे एवं गुण-गण-विशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्र श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्तिकामः*अमुकगोत्रोत्पन्नः (यजमानक गोत्र), अमुकशर्मा (यजमानक नाम)अहं ममात्मनः सपुत्रस्त्री बान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृत-राजकृत-सर्वविधपीडा- निवृत्ति-पूर्वकं- नैरुज्यदीर्घायुः पुष्टिः धनधान्यसमृद्ध्यर्थं श्रीनवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निवृत्ति- सर्वाभीष्ट फलावाप्ति-धर्मार्थ- काम-मोक्ष- चतुर्विध -पुरुषार्थप्राप्त्यर्थं साङ्गसायुध सवाहनसपरिवार श्रीदुर्गाप्रीतिकामो वार्षिकशरत्कालीन श्रीदुर्गापूजा अङ्गभूतकलशस्थापनं पूजनं च अहं करिष्ये।

* यदि सामाजिकसम्मिलितपूजा हो तो- अमूकग्रामवासीनाम(गामक नाम) नानानां गोत्राणां सकल जनानामेतत्पूजोपकारकाणामन्यग्रामवासिनां च उपस्थितशरीराविरोधेन श्रीनवदुर्गानुग्रहतो...।

४ रवौ वल्ली ८।३९। ४३।५३
अयनांशाः २२।५०।१३

१२ रवौ वल्ली ८।३९। ४४।००
अयनांशाः २२।५०।१५

(कुण्डली: ११ रा., ९, १२, १०, गु. ८, ल.१, ७, ४, श, ६, २, मंबु ३ सू, ५ शु.के.चं.)

(कुण्डली: ११ रा., ९, १२, १०, गु. ८ चं., ल.१, ७, ४, श, ६, २, मंबु ३ सू, ५ शु.के.)

दुर्गा-आगमन-शशिसूर्ये गजारूढा शनिभौमे तुरंगमे। गुरौशुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्तिता। फल- गजे च जलदा देवी क्षत्रभंगस्तुरंगमे। नौकायां सर्वसिद्धिः स्याद्दोलायां मरणं ध्रुवम्।

दुर्गा-गमनफल-शशिसूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमने रुजशोककरा, शनिभौमदिने यदि सा विजया चरणायुध यानकरी विकला। बुधशुक्रदिने यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा, सुरराजगुरौ यदि सा विजया नरवाहनगा शुभसौख्यकरा।

अपराजिता पूजन निर्णय- आश्विने शुक्लपक्षे तु दशम्यां पूजयेत्ततः। एकादश्यां न कुर्वीत पूजनं चापराजितम्।
अपराजिता धारण मन्त्र- ॐ जयदे वरदे देवि दशम्यामपराजिते। धारयामि भुजे दक्षे जयलाभाभिवृद्धये।।
शमी की पूजाकर यात्रा करनी चाहिए। मन्त्र- शमी शमयते पापं शमी लोहितकण्टका। धारिण्यर्जुनवाणानां रामस्य प्रियवादिनी।। करिष्यमाणा या यात्रा यथाकालं सुखं मया। तत्र निर्विघ्नकर्त्री त्वं भव श्रीरामपूजिते।।कोजागरा-कौमदी निशीथे वरदा लक्ष्मीः को जागर्तीति भाषिणी। तस्मै वित्तं प्रदास्यामि अक्षैः क्रीडां करोति यः।।

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि नक्षत्र	समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगः योगाः	समा.कालः द. प.	करण द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	राश्यादिस्पष्टसूर्यः	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१	गु.	३६।५६	रा.६।०६	अश्विनी	२५।२०	दि.४।३०	वज्र	३६।१२	०बालव ५।२०	मेष	अहोरात्रं	६।०३।५०।५४	२८।१२	६।२२	५।३८	२९
२	शु.	४१।१६	रा.१०।५३	भरणी	३०।४६	सं.६।४०	सिद्धि	४०।५१	तैतिल ६।०६	मेष ४७।२१	रा.१।१८	६।०४।५०।४४	२८।०८	६।२२	५।३८	३०
३	श.	४६।१६	रा.१२।५३	कृत्तिका	३६।५८	रा.६।१०	व्यतीपात्	४१।०१	वणिज् १३।४८	वृष	अहोरात्रं	६।०५।५०।३४	२८।०४	६।२३	५।३७	१
४	र.	५१।३५	रा.३।०२	रोहिणी	४३।२८	रा.११।४७	वरीयान्	४२।२८	वव १८।५६	वृष	अहोरात्रं	६।०६।५०।२४	२८।००	६।२४	५।३६	२
५	चं.	५६।४५	रा.शे५।०७	मृगशिरा	४९।५३	रा.२।२२	परिघ	४३।४६	कौलव २४।१०	वृष १६।३०	दि.१।०१	६।०७।५०।२९	२७५७	६।२५	५।३५	३
६	मं.	६०।००	अहोरात्र	आर्द्रा	५५।४८	रा.४।४४	शिव	४४।४८	गर २६।०३	मिथुन	अहोरात्रं	६।०८।५०।३४	२७।५४	६।२५	५।३५	४
६	बु.	०१।२१	प्रा.६।५८	पुनर्वसु	६०।००	अहोरात्रं	सिद्ध	४५।१३	वणिज् १।२१	मिथुन ४३।५७	रा.१२।०१	६।०९।५०।३९	२७।५०	६।२६	५।३४	५
७	गु.	०५।०५	दि.८।२६	पुनर्वसु	००।५७	प्रा.६।४६	साध्य	४४।४७	वव ५।०५	कर्क	अहोरात्रं	६।१०।५०।४४	२७।४७	६।२७	५।३३	६
८	शु.	०७।४१	दि.६।३१	पुष्य	०६।५६	दि.६।१४	शुभ	४३।३१	कौलव ७।४१	कर्क	अहोरात्रं	६।११।५०।४९	२७।४४	६।२७	५।३३	७
९	श.	०९।०८	दि.१०।०७	आश्लेषा	०७।५३	दि.६।३७	शुक्ल	४१।१२	गर ६।०८	कर्क ७।५३	दि.६।३७	६।१२।५०।४९	२७।४१	६।२८	५।३२	८
१०	र.	०९।१३	दि.१०।०९	मघा	०९।३१	दि.१०।१७	ब्रह्म	३७।५३	भद्रा ९।१३	सिंह	अहोरात्रं	६।१३।५०।५९	२७।३८	६।२८	५।३२	९
११	चं.	०८।०४	दि.६।४२	पूर्वाफाल्गुनी	०९।५४	दि.१०।२६	ऐन्द्र	३४।३५	वालव ८।०४	सिंह २४।४२	दि.४।२१	६।१४।५१।१९	२७।३५	६।२९	५।३१	१०
१२	मं.	०५।४२	दि.८।४६	उत्तराफाल्गुनी	०९।०८	दि.१०।०९	वैधृति	२८।२६	तैतिल ५।४२	कन्या	अहोरात्रं	६।१५।५१।३९	२७।३२	६।३०	५।३०	११
१३	बु.	०२।१८	दि.७।२५	हस्त	०७।२१	दि.६।२६	विष्कुम्भ	२२।२९	वणिज् २।१८	कन्या ३५।०१	रा.८।३०	६।१६।५१।५९	२७।२८	६।३०	५।३०	१२
३०	गु.	५३।०२	रा.३।४३	चित्रा	०४।४३	दि.८।२४	प्रीति	१५।५२	चतुरघ्न २५।३२	तुला	अहोरात्रं	६।१७।५२।१९	२७।२४	६।३१	५।२६	१३

कार्त्तिककृष्णपक्षः।।

शक १९४३, संवत्२०७८, सन् १४२९, दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतुः, उत्तरे कालः, शुद्धः
दिनांक २१ अक्टूबर तः ४ नवम्बर यावत् सन् २०२१ ई। पूर्वोदितः गुरु, पश्चिमोदितः शुक्रः।

दिनांकाः ने.	अं.	
४	२१	कार्त्तिकेद्विदलं त्यजेत्। कार्त्तिकेयमुनास्नानं महापुण्यप्रदं, स्वामीसेवारम्भः, इष्टिकारम्भः, यानादिचालनं, वृक्षादिरोपणं, विपणि, क्रयविक्रय। शिववासः, दक्षिणविनायात्रा-सर्वार्थसिद्धियोगश्च दि.४।३० यावत्, **मूलविचारः**-रेवती/अश्विनी ति.१ गुरु दि.४।३० यावत्।
५	२२	अशून्यशयन २ व्रतं। अग्निवासः। तुलायां मंगल १४।२८। आश्लेषा/मघा ति.८ शुक्र दि.६।१४ ततः१० रवि दि.१०।१७ यावत्
६	२३	भद्रा १३।४८ उ. ४६।१६ यावत्।
७	२४	करकचतुर्थी(करवाचौठ), श्रीकृष्णपिंगाक्ष ४ व्रतं, स्वात्यां रविः ३३।३४(रा.७।५०), स्त्री.पुं.सु.सू.योगो खरवाहनं वात नाड़ी तदीशो रवि मध्यम वृष्टियोगः, शिववासः,
८	२५	गृहारम्भः, यानादिचालनं, वृक्षादिरोपणं, विपणि, क्रयविक्रय। शिववासः, अग्निवासः, पूर्वविनायात्रा, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.२।२२ यावत्।
९	२६	अशोकचन्दन ६। ⚹अग्निवासः दि.८।२६ या. ततः शिववासः, पश्चिम-उत्तरयात्रा प्रा.६।४६ या. ततः दक्षिणं विना यात्रा।
१०	२७	क्रयविक्रय। सिद्धियोगः-अग्निवासः प्रा.६।५८ उ., दक्षिण-पश्चिमयात्रा रा.१२।०१ या. ततः पश्चिमयात्रा, भद्रा १।२१ उ. ३३।१३ यावत्।
११	२८	अहोई ८ व्रतं, चन्द्रोदयव्यापनी, कालाष्टमी, स्वामीसेवारम्भः, इष्टिकारम्भः सप्तम्यां, वृक्षादिरोपणं, विपणि, सर्वार्थसिद्धि। मूलेषनुपि च शुक्र११।१५ ⚹
१२	२९	श्रीराधाजयन्ती ८, स्वामीसेवारम्भः अष्टम्यां, वृक्षादिरोपणं, पश्चिमं विना यात्रा दि.६।५४ यावत्, शिववासः दि.६।३१ या. ततः अग्निवासः,
१३	३०	सिद्धियोगः दि.१०।७ या., अग्निवासः दि.१०।०७ यावत्, भद्रा ३६।११ उपरि। ♍अकृतपितृपक्षीयपार्वणेऽवश्यमेव पार्वणं विधेयम्। शिववासः, अग्निवासः,
१४	३१	अग्निवासः, शिववासः दि.१०।१६ उपरि, भद्रा ६।१३ यावत्। ←अमृतप्राप्त्युत्सवः, यानादिचालनं। दग्धतिथि दि.८।४६ यावत्। अग्निवासः, अमृतयोगः-शिववासश्च दि.८।४६ यावत् ततः पूर्व-दक्षिणयात्रा,
१५	१	नवम्बर ११, रम्भाएकादशी११ व्रतं सर्वेषां, दग्धतिथि दि.६।४२ उ., शिववासः, उत्तरयात्रा-सिद्धियोगश्च दि.६।४२ या.। तुलायां बुध ३४।१८। ♁मेषलग्नेऽञ्जनीगर्भात् स्वयं जातो हरः शिवः।।
१६	२	विल्वदलेनतुलसीदलेन वा पारणं, भौमप्रदोष१३ व्रत, गोवत्सद्वादशी१२। श्रीधनवन्तरि जयन्ती(धनतेरस)। ब्रह्मवैवर्ते-नारायणांशो भगवान् स्वयं धन्वन्तरिर्महान्। पुरा समुद्रमंथने समुत्तस्थौ महोदधेः। सिमरियाधाम्नि ←
१७	३	चतुर्दशीतिथिमानं ५५।४४ रा.४।४७, भद्रा २।१८ उपरि २६।०१ यावत्। प्रदोष १४ व्रतं, यमदीपदानं, हनुमज्जन्मोत्सवः,हनुमद्ध्वजदान, वायुपुराणे- कार्त्तिकस्यासिते पक्षे स्वात्यां भौमे चतुर्दशी। ♁
१८	४	कार्तिकी३०,स्नानदानादिः, दीपावली, सुखरात्रिः, प्रदोषे रा.७।१६ यावद्रात्रौ लक्ष्मि-कुबेरपूजा, उल्काभ्रमण,रात्रीशेषे द्ररिद्रानिःसारणं,दीक्षाग्रहण, कालीपूजा, निशीथे कालीतारामुवनेश्वरीप्रादुर्भावः। ♍

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

२६२६ **दैनिकलग्नसारणी चक्रम्**

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुधः राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ गु.	५।२६।००।२८	५।१८।०१।०७	९।२६।२३।१८	७।२३।३५।३४	९।०६।२४।२६	७।११।२२।४५	४४।०६	१८।०६	२१।०२	२३।१५	१।३३	३।४६	६।०४	८।२१	१०।३८	१२।४३	१४।२६	१६।०४	१७।२६
२ शु.	५।२६।३६।१८	५।१८।४६।१३	९।२६।२३।२५	७।२४।३५।३२	९।०६।२५।३८	७।११।१६।३४	४४।०४	१८।०२	२०।५८	२३।११	१।२६	३।४५	६।००	८।१७	१०।३४	१२।३६	१४।२२	१६।००	१७।२५
३ श.	६।००।१६।२८	५।१६।३७।५३	९।२६।२३।२८	७।२५।३५।३०	९।०६।२६।५०	७।११।१६।२४	४४।०२	१७।५८	२०।५५	२३।०८	१।२६	३।४२	५।५७	८।१४	१०।३१	१२।३२	१४।२२	१५।५५	१७।२२
४ र.	६।००।५८।१८	५।२०।२६।१६	९।२६।२३।३१	७।२६।३५।२८	९।०६।२८।०२	७।११।१३।१४	४४।००	१७।५५	२०।५१	२३।०४	१।२२	३।३८	५।५३	८।१०	१०।२७	१२।२८	१४।१८	१५।५३	१७।१८
५ चं.	६।०१।२८।४५	५।२१।३६।४०	९।२६।२५।११	७।२७।३५।२६	९।०६।३०।१७	७।११।१०।०३	४३।५८	१७।५१	२०।४७	२३।००	१।१८	३।३४	५।४६	८।०६	१०।२३	१२।२४	१४।१४	१५।४६	१७।१४
६ मं.	६।०२।१८।३२	५।२२।५३।०४	९।२६।२६।४४	७।२८।२८।२३	९।०६।३२।३२	७।११।०६।५२	४३।५६	१७।४७	२०।४३	२२।५६	१।१४	३।३०	५।४५	८।०२	१०।१९	१२।२०	१४।१०	१५।४२	१७।१०
६ बु.	६।०२।५८।१६	५।२४।०६।२८	९।२६।२८।१६	७।२९।२६।२०	९।०६।३४।३७	७।११।०३।४१	४३।५४	१७।४३	२०।३६	२२।५२	१।१०	३।२६	५।४१	७।५८	१०।१५	१२।१६	१४।०६	१५।३८	१७।०६
७ गु.	६।०३।३८।०६	५।२५।१६।५२	९।२६।२९।४८	८।००।२१।१७	९।०६।३७।०२	७।११।००।३०	४३।५२	१७।३६	२०।३५	२२।४८	१।०६	३।२२	५।३७	७।५४	१०।११	१२।१२	१४।०२	१५।३४	१७।०२
८ शु.	६।०४।१७।५२	५।२६।२३।१६	९।२६।३१।२०	८।०१।१७।४४	९।०६।३९।१७	७।१०।५७।५६	४३।५१	१७।३६	२०।३२	२२।४५	१।०३	३।१६	५।३४	७।५१	१०।०८	१२।०६	१३।५६	१५।३३	१६।५६
९ श.	६।०४।५७।३८	५।२७।४६।३६	९।२६।३२।५२	८।०२।१३।४१	९।०६।४१।३२	७।१०।५४।०६	४३।५०	१७।३२	२०।२८	२२।४१	०।५६	३।१५	५।३०	७।४७	१०।०४	१२।०५	१३।५५	१५।२६	१६।५५
१० र.	६।०५।३७।२४	५।२६।००।०२	९।२६।३४।२४	८।०३।१०।२२	९।०६।४३।४७	७।१०।५०।५६	४३।४८	१७।२८	२०।२४	२२।३७	०।५५	३।११	५।२६	७।४३	१०।००	१२।०१	१३।५१	१५।२२	१६।५१
११ चं.	६।०६।१७।१५	६।००।११।१६	९।२६।३७।२७	८।०४।०२।२६	९।०६।४६।३४	७।१०।४७।४६	४३।४७	१७।२४	२०।२०	२२।३३	०।५१	३।०७	५।२२	७।३९	९।५६	११।५७	१३।४७	१५।१८	१६।४७
१२ मं.	६।०६।५७।०६	६।०१।२२।३०	९।२६।४०।३०	८।०४।५४।२०	९।०६।४६।२१	७।१०।४४।३७	४३।४५	१७।२०	२०।१६	२२।२६	०।४७	३।०३	५।१८	७।३५	९।५२	११।५३	१३।४३	१५।१४	१६।४३
१३ बु.	६।०७।३६।५७	६।०२।३३।४३	९।२६।४३।३२	८।०५।४६।११	९।०६।५२।०८	७।१०।४१।२६	४३।४३	१८।१६	२०।१२	२२।२५	०।४३	२।५६	५।१४	७।३१	६।४८	११।५३	१३।३६	१५।१०	१६।३६
३० गु.	६।०८।१६।४८	६।०३।४४।५६	९।२६।४६।३४	८।०६।३८।०२	९।०६।५४।५५	७।१०।३८।१५	४३।४१	१८।१२	२०।०८	२२।२१	०।३६	२।५५	५।१०	७।२७	६।४४	११।४६	१३।३५	१५।०६	१६।३५

कार्त्तिकविशेष-कार्त्तिके वर्जयेत्तैलं कार्त्तिके वर्जयेन्मधुः। कार्त्तिके वर्जयेन्मासं कार्त्तिके शुक्तसन्धितम्। धातृ छाया में ब्राह्मणभोजन फल-धात्रीच्छायां समाश्रित्य भुङ्क्ते योऽन्नं हि मानवः। ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु वार्षिकं किल्विषं हरेत्।। आकाशदीपदानफलम्- तुलायां तिलतैलेन सायंकाले समागते। आकाशदीपं यो दद्यात् मासमेकं हरिं प्रति। महतीं श्रियमवाप्नोति रूपसौभाग्यसंपदः।। कार्तिकस्नानः- कार्तिके सकलं मासं प्रातःस्नायी जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यभुक् शान्तःसर्वपापैः प्रमुच्यते।। स्नानमन्त्रः-कार्त्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दन। प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर रमा सह।।

अमायां लक्ष्मीपूजा-देशकालौ संकृत्य मम गृहेऽचललक्ष्मी निवासाय लक्ष्मी पूजनम् अहं करिष्ये। विहितोपचारैः संपूज्यान्ते प्रार्थना -नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।। लक्ष्मी-अर्घ्यमंत्र-व्रतिनः कार्तिके मासि स्नातस्य विधिसम्मतम्। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं दनुजेन्द्रनिषूदन।। नित्यनैमित्तिके कृष्ण कार्तिके पापनाशिने। गृहाणार्घ्यंमया दत्तं राधया सहितो हरेः।। दीपदानमन्त्रः- दामोदराय नभसि तुलायां लोलया सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे।। उल्काभ्रमणमन्त्रः-जरवा योग्य खढ़ सनकाठी सँ बनाओल उक में एक दिशि आगि लगाऽ घर क बाहर दक्षिण मुँह ठाढ़भऽउल्का भ्रमण करथि। मन्त्र- शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः। उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना।। तखन दक्षिण दिशि आकाश में ऊक देख वैत आगाँ मन्त्र पढ़थि- अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमाङ्गतिम्।। विसर्जनक मन्त्र-ॐ यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये। उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते।। ई कहि दक्षिण दिशि उक के फेकिं देथि। नीचा केवल फेकल ऊक के तीनि बेरि नांघि ओहि में सँ अधजरल सनकाठी गोसाओन क लग राखथि ओही सँ सूप वजेवाक व्यवहार अछि।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा१ घण्टा मिनट
१ गु.	दि.२:५०-५:४०।	रा.१२:००-१:३५ रा.४:४५-६:२०।
२ शु.	दि.६:१०-१२:००।	रा.८:५०-१०:२५।
३ श.	दि६:२१-७:४६ दि.१:२६-२:५१ दि४:१५-५:३६	सा५:३६-७:१५ रा१:३६-३:११ रा.४:४६-६:२६
४ र.	दि.१०:३७-१:२६।	रा.१०:२५-१२:०१। रा.३:१३-४:४८।
५ चं.	दि.७:४८-६:१३ दि.२:४६-४:१३।	रा.१०:२५-१२:०१। रा.३:१३-४:४८।
६ मं.	दि.७:४८-६:१२। दि.१:२४-२:४८।	रा.७:१२-८:४८।
६ बु.	दि.६:१२-१०:३६ दि.१२:००-१:२४।	रा.१२:००-१:३६ रा.३:१२-४:४८।
७ गु.	दि.२:४६-५:३५।	रा.१२:०१-१:३७ रा.४:४६-६:२५।
८ शु.	दि.६:१४-१२:०२।	रा.८:४८-१०:२५।
६ श.	दि६:२६-७:५० दि१:२५-२:४८ दि४:११-५:३४	प्रा५:३४-७:११ दि१:३८-३:१४ रा.४:५०-६:२६
१० र.	दि.१०:३८-१:२४।	रा.१०:२४-१२:१ रा१:३८-३:१५।
११ चं.	दि.७:५१-६:१४। दि.२:४६-४:०६।	रा.१०:२३-१२:०० रा.३:१४-४:५१।
१२ मं.	दि.७:५१:६:१४ दि.१:२३-२:४६।	रा.७:६-८:४६
१३ बु.	दि.६:१५-१०:३८ दि.१२:१-१:२४।	रा.१२:१-१:३८ रा.३:१५-४:५२।
३० गु.	दि.२:४६-५:३०।	रा.१२:२-१:३६ रा.४:५३-६:३१।

४ रवौ वल्ली ८।३६। ४४।०७
अयनांशाः २२।५०।१६

चं.११ रा. | ६ | गु.८ | १२ | १० | ७ | ल.१ | श | ६ | २ | मं. | ४ सू | बु ३ | ५ शु.के.

१० रवौ वल्ली ८।३६। ४४।१४
अयनांशाः २२।५०।१७

११ रा. | ६ | गु.८ | १२ | १० | ७ | ल.१ | श | २ चं. | मं. | ४ सू | शु.६ | ३ | बु | ५ | के.

आश्विन कृष्ण पक्ष के शेष- एहि सदाचारक प्रकाशन मे अनेको प्राचीन पद्धति आ निवन्ध क आधार पर विद्वज्जनक सहयोग सँ मैथिली मे निर्देशसहित एहि मैथिलक सदाचार-पद्धति कें अपने सभक समक्ष प्रस्तुत करैत हम आइ आत्म-सन्तुष्टिक अनुभव कए रहल छी। एहि ग्रन्थक परिशिष्टक रूप मे विविध आवश्यक व्यवहारोपयोगी मन्त्र आ ज्ञातव्य विविध विषयोक समावेश कएल गेल अछि। संगहि कर्त्तव्य सन्ध्यावन्दनादि कृत्यक विविध सम्बन्ध मे ज्ञातव्य आधारक सम्बन्ध मे अनेको उदहारण देल गेल अछि।

मिथिला मे सदाचार के रूप मे सन्ध्यावन्दन, तर्पण, देवपूजा आदिक संगे देवता सभक स्तुतिक प्राचीन परम्परा रहल अछि। स्तुतियो सभ मे "सूर्यादि-द्वादशस्तवी" जे "गोसाई नाउ" सँ प्रसिद्ध अछि, कार्त्तिक, माघ आ वैशाख स्नान के समय प्रातः काल मैथिल महिला लोकनिक मध्य सुनबाक अविरल परम्परा रहल अछि। देखू संगहि संग आनो कतेक स्तुति एहि ठाम जन-जन केर कण्ठ मे आइयो विराजमान अछि। ... आगु पौषकृष्णपक्ष मे

कार्त्तिकशुक्लपक्षः

शक १९४३, संवत्२०७८, सन् १४२९, दक्षिणायन, दक्षिणगोलः, हेमन्त ऋतुः, उत्तर/पूर्व कालः, शुद्धः।
दिनांक ५ नवम्बरतः १९ नवम्बर यावत् सन् २०२१ इ। पूर्वोदितः गुरु, पश्चिमोदितः शुक्रः।

३० ३०

तिथयः दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१ शु.	४७।३२	रा.१।३२	स्वाती	०१।२५	प्रा.७।०६	आयुष्मान	८।३८	किंस्तुघ्न२०।१७	तुला ४३।११	रा.११।४६	६।१८।५२।३६	२७।२०	६।३२	५।२८	१४
२ श.	४१।४१	रा.११।१३	अनुराधा	५३।२८	रा.३।१६	सौभाग्य	१।००	बालव १४।३७	वृश्चिक	अहोरात्र	६।१९।५२।५६	२७।१७	६।३३	५।२७	१५
३ र.	३५।३६	रा.८।४८	ज्येष्ठा	४६।१४	रा.२।१४	अतिगण्ड	४२।१७	तैतिल ८।४०	वृश्चिक ४६।१४	रा.२।१४	६।२०।५३।२०	२७।१४	६।३३	५।२७	१६
४ चं.	२६।४५	रा.६।२८	मूल	४५।०७	रा.१२।३६	सुकर्मा	३६।२६	वणिज् २।४२	धनु	अहोरात्र	६।२१।५३।२०	२७।११	६।३४	५।२६	१७
५ मं.	२४।०७	सा.४।५२	पूर्वाषाढ़ा	४१।२२	रा.११।०६	धृति	२६।५३	बालव २४।७	धनु ५५।३३	रा.४।४७	६।२२।५४।२४	२७।८	६।३४	५।२६	१८
६ बु.	१६।५७	दि.२।३३	उत्तराषाढ़ा	३८।०६	रा.९।४६	शूल	२२।४२	तैतिल १६।५७	मकर	अहोरात्र	६।२३।५४।५६	२७।५	६।३५	५।२५	१९
७ गु.	१४।२५	दि.१२।२२	श्रवण	३५।२५	रा.८।५०	गण्ड	१६।०३	वणिज् १४।२५	मकर ५०।०६	रा.२।४०	६।२४।५५।२८	२७।०१	६।३६	५।२४	२०
८ शु.	१०।४२	दि.१०।५२	धनिष्ठा	३३।५४	रा.८।०६	वृद्धि	१०।०४	बव १०।४२	कुम्भ	अहोरात्र	६।२५।५६।०१	२६।५८	६।३६	५।२४	२१
९ श.	०८।००	दि.९।४६	शतभिषा	३३।१४	रा.७।५४	ध्रुव	०४।५२	कौलव ८।१०	कुम्भ	अहोरात्र	६।२६।५६।३४	२६।५५	६।३७	५।२३	२२
१० र.	०६।२६	दि.९।१२	पूर्वाभाद्रपद	३३।४६	रा.८।०८	व्याघात	१।१२	गर ६।२६	कुम्भ १८।१४	दि.१।५६	६।२७।५७।०७	२६।५२	६।३८	५।२२	२३
११ चं.	०६।०५	दि.९।०४	उत्तराभाद्रपद	३५।३१	रा.८।५०	वज्र	५४।५४	भद्रा ६।०५	मीन	अहोरात्र	६।२८।५७।५१	२६।४९	६।३८	५।२२	२४
१२ मं.	०७।०३	दि.९।२८	रेवती	३८।३४	रा.१०।०४	सिद्धि	५३।३६	बालव ७।०३	मीन ३८।३४	रा.१०।०४	६।२९।५८।३५	२६।४६	६।३९	५।२१	२५
१३ बु.	०९।२२	दि.१०।२४	अश्विनी	४२।४२	रा.११।४४	व्यतीपात	५३।०८	तैतिल ९।२२	मेष	अहोरात्र	७।००।५९।१६	२६।४२	६।४०	५।२०	२६
१४ गु.	१२।४६	दि.११।४६	भरणी	४७।५६	रा.१।५०	वरीयान्	५३।३४	वणिज् १२।४६	मेष	अहोरात्र	७।०२।००।०४	२६।३९	६।४०	५।२०	२७
१५ शु.	१७।१०	दि.१।३३	कृत्तिका	५३।५७	रा.४।१५	परिघ	५४।२६	बव १७।१०	मेष ४।२६	दि.८।२७	७।०३।००।४९	२६।३६	६।४१	५।१९	२८

दिनांकाः ने.	अं.	
१६	५	विशाखा५६।१० रा.शे.५।१, अन्नकूटः, बलिपूजा, अग्न्यादिदेवोत्थापनं,गोवर्धनपूजा, गोपूज प्रा.७।६ या., गोक्रीडा,वृषभेऔपविदानं, महाकविकालिदासजयन्त्युत्सवः उच्चैटग्रामे तज्जन्मस्थले उज्जयिन्यां तत्कर्मस्थले च।←
२०	६	शोभन ५२।१५, विशाखायां रविः ५०।३४ (रा.२।४७), भ्रातृद्वितीया(भईयादूज), चित्रगुप्तपूजा, यमुनास्नानं, भगिनीगृहे भोजनम्। चन्द्रदर्शनं, मु.३० समासमताकरम्। सौम्यशृंगं सुभिक्षकरम्। विपणि, शिववासः,
२१	७	कटुमहुली३। प्रतिहारषष्ठीव्रतीनां निरामिषभोजनं, इष्टिकारम्भः। सिद्धियोगः-उत्तरयात्रा रा.८।४८ यावत्। ← वृषादिरोपणं, अग्निवासः, सिद्धियोगः रा.१।३२ यावत्, दक्षिणयात्रा प्रा.७।८ यावत्।
२२	८	श्रीगणेश४ व्रतं, प्रतिहारषष्ठीव्रतीनां संयमः(नहाय-खाय)। अग्निवासः, शिववासः-उत्तरयात्रा रा.६।२८ उपरि, भद्रा २।४२ उ.३६।४५ या.। पुनः मार्ग गत्याः कुम्भे गुरु १३।४०।
२३	९	प्रतिहारषष्ठीव्रतस्यैकभुक्तादिकं(खरना)। ज्ञानपंचमी। पूर्वयात्रा दि.४।५२ यावत्। शिववासः। ♍ पञ्चक(भदवा)समाप्तिः रा.१०।०४ उ., शिववासः, अग्निवासः-अमृतयोगः दि.६।२८ यावत् ततः सिद्धियोगः।
२४	१०	प्रतिहारषष्ठीव्रतं सायंकालिकार्घदान, डाला-छठ। स्कन्दषष्ठी ६ व्रतं। गृहप्रवेशः सप्तम्यां, विपणि, अग्निवासः, अमृतयोगः शिववासः दि.२।३३ यावत्, उत्तरां विना यात्रा रा.६।४५ उपरि।
२५	११	प्रातःकालिकार्घदानं पारणञ्च, सामापूजारम्भः, जगद्धातृपूजारम्भः,गृहप्रवेशः सप्तम्यां, पञ्चकारम्भः(भदवा) रा.८।५० उपरि। अमृतयोगःदि.१२।२२ उ.,दक्षिणां विना यात्रा रा.८।५० या.ततः पूर्वयात्रा रा.२।४० या.
२६	१२	गोपाष्टमी, गवादीनां पूजनम्। गोशालामेलारम्भः सन्हौली-खगड़िया। अग्निवासः, अमृतयोगः-शिववासः दि.१०।५२ उपरि। पश्चिम-उत्तरयात्रा। पुनः मार्गगत्याः श्रवणे शनि १०।५२।
२७	१३	अक्षयनवमी,सत्ययुगादि, गंगास्नानादि, धातृमूलेभोजनं दीक्षाग्रहणं। शिववासः दि.९।४६ उपरि। गृहप्रवेशः दशम्यां शतभिषायां च दि.६।४६ तः रा.७।५४ यावत्।
२८	१४	जगद्धातृविसर्जनं, हर्षण ५६।०१, अमृतयोग-अग्निवासः दि.९।१२ यावत्। भद्रा३६।१६ उपरि। 🕉 श्रीकाशीविश्वनाथप्रतिष्ठादिनं, बाबासाहेबरामदासपरमहंसस्य स्मृतिदिवसः। शिववासःदि.१०।२४ या. ततः अग्निवासः,
२९	१५	देवोत्थानएकादशी ११ व्रतं सर्वेषां, व्रतोद्यापनं, भीष्मपञ्चकारम्भः। गृहारम्भः, गृहप्रवेशः, सिद्धियोगः दि.६।४ या. ततः शिववासः-अग्निवासः, भद्रा ६।०५ या.।
३०	१६	बिल्वदलेनतुलसीदलेन वा पारणं, प्रदोष१३ व्रतं, दामोदर१२, चातुर्मास्यव्रतपारणं, तुलसीविवाहः, तामसमन्वादिः, वृश्चिके रविः ४४।४५, रा.१२।३४, मु ३० समासमताकरं, मासान्तः, ♏
१	१७	विष्णुपदीसंक्रान्ति पुण्यकालः दि.घं.१२ यावत् पुण्याह, कार्त्तिकस्नानसमाप्तिः, सिमरियाधाम्नि कल्पवाससमाप्तिः। ने. अग्रहायणमासारम्भः, विद्यापतिस्मृतिदिवसः। प्रदोष१४ व्रतं, श्रीवैकुण्ठचतुर्दशी१४ व्रतं, 🕉
२	१८	व्रताय पूर्णिमा, सामाविसर्जनं, कार्त्तिकेयावतारः, कार्त्तिकेयपूजनं, काश्यां देवदीपावली। मासादिः, अग्निवासः दि.११।४६ या. ततः सिद्धियोगः, भद्रा १२।४६ उ. ४५।०० यावत्।
३	१९	कार्तिकपूर्णिमा१५ स्नानदानादि, औतममन्वादिः,सर्वदेव-देव्युत्थापनं, भीष्मपञ्चक समाप्तिः। सोनपुरमेला,हरिहरक्षेत्रस्नानं पूजनादिः, पुष्करक्षेत्रस्नानं,गोशालायट्टे कमलायां, जीवच्छ्यट्टे जीववत्सायां स्नानदानार्चनादिकम्। ❖

मिश्रमानकालिकदैनकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ शु.	६।०८।५६।३८	६।०४।५६।०६	९।२९।४९।३६	८।०७।२९।५३	९।०९।५७।४२	७।१०।३५।०४	४३।४०
२ श.	६।०९।३६।२८	६।०६।०७।२२	९।२९।५२।३८	८।०८।२१।४०	९।१०।००।२८	७।१०।३१।५४	४३।३६
३ र.	६।१०।१६।१८	६।०७।१८।३५	९।२९।५५।४०	८।०९।१३।३३	९।१०।०३।१४	७।१०।२८।४४	४३।३८
४ चं.	६।१०।५६।३५	६।०९।१२।५७	१०।००।००।१०	८।१०।०२।३४	९।१०।०६।३५	७।१०।२५।३३	४३।३६
५ मं.	६।११।३६।५२	६।११।०७।१९	१०।००।०४।४०	८।१०।५१।३५	९।१०।०९।५६	७।१०।२२।२२	४३।३४
६ बु.	६।१२।१७।०९	६।१३।०१।४१	१०।००।०९।१०	८।११।४०।३६	९।१०।१३।१६	७।१०।१९।११	४३।३२
७ गु.	६।१२।५७।२६	६।१४।५६।०३	१०।००।१३।४०	८।१२।२९।३६	९।१०।१६।३६	७।१०।१६।००	४३।३०
८ शु.	६।१३।३७।४३	६।१६।५०।२५	१०।००।१८।१०	८।१३।१८।३६	९।१०।१९।५६	७।१०।१२।४९	४३।२८
९ श.	६।१४।१८।००	६।१८।४४।४७	१०।००।२२।३९	८।१४।०७।३६	९।१०।२३।१६	७।१०।०९।३९	४३।२७
१० र.	६।१४।५८।१६	६।२०।३९।०९	१०।००।२७।०८	८।१४।५६।३६	९।१०।२६।३६	७।१०।०६।२९	४३।२६
११ चं.	६।१५।३८।४०	६।२२।२१।२२	१०।००।३२।४१	८।१५।३७।४७	९।१०।३१।००	७।१०।०३।१८	४३।२४
१२ मं.	६।१६।१९।०४	६।२४।०३।३५	१०।००।३८।१४	८।१६।१८।५८	९।१०।३५।२३	७।१०।००।०७	४३।२२
१३ बु.	६।१६।५९।२८	६।२५।४५।४७	१०।००।४३।४६	८।१७।००।०९	९।१०।३९।४६	७।०९।५६।५६	४३।२०
१४ गु.	६।१७।३९।५२	६।२७।२७।५९	१०।००।४९।२०	८।१७।४१।२०	९।१०।४४।०९	७।०९।५३।४५	४३।१८
१५ शु.	६।१८।२०।१६	६।२९।१०।११	१०।००।५४।५३	८।१८।२२।३०	९।१०।४८।३२	७।०९।५०।३४	४३।१६

३० ३० दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ शु.	१८।०९	२०।०५	२२।१८	०।३६	२।५२	५।०७	७।२४	९।४१	११।४६	१३।३२	१५।०३	१६।३२
२ श.	१८।०५	२०।०२	२२।१४	०।३२	२।४८	५।०३	७।२०	९।३७	११।४२	१३।२८	१४।५९	१६।२८
३ र.	१८।०१	१९।५८	२२।१०	०।२८	२।४४	४।५९	७।१६	९।३३	११।३८	१३।२४	१४।५५	१६।२४
४ चं.	१७।५७	१९।५४	२२।०६	०।२४	२।४०	४।५५	७।१२	९।२९	११।३४	१३।२०	१४।५१	१६।२०
५ मं.	१७।५३	१९।४९	२२।०२	०।२०	२।३६	४।५१	७।०८	९।२५	११।३०	१३।१६	१४।४७	१६।१६
६ बु.	१७।४९	१९।४५	२१।५८	०।१६	२।३२	४।४७	७।०४	९।२१	११।२६	१३।१२	१४।४३	१६।१२
७ गु.	१७।४६	१९।४२	२१।५५	०।१३	२।२९	४।४४	७।०१	९।१८	११।२३	१३।०९	१४।४०	१६।०९
८ शु.	१७।४२	१९।३८	२१।५१	०।०९	२।२५	४।४०	६।५७	९।१४	११।१९	१३।०५	१४।३६	१६।०५
९ श.	१७।३८	१९।३४	२१।४७	०।०५	२।२१	४।३६	६।५३	९।१०	११।१५	१३।०१	१४।३२	१६।०१
१० र.	१७।३४	१९।३०	२१।४३	०।०१	२।१७	४।३२	६।४९	९।०६	११।११	१२।५७	१४।२८	१५।५७
११ चं.	१७।३०	१९।२६	२१।३९	२३।५७	२।१३	४।२८	६।४५	९।०२	११।०७	१२।५३	१४।२४	१५।५३
१२ मं.	१७।२६	१९।२२	२१।३५	२३।५३	२।०९	४।२४	६।४१	८।५८	११।०३	१२।४९	१४।२०	१५।४९
१३ बु.	१७।२१	१९।१७	२१।३०	२३।४८	२।०४	४।१९	६।३६	८।५३	१०।५८	१२।४४	१४।१५	१५।४४
१४ गु.	१७।१७	१९।१३	२१।२६	२३।४४	२।००	४।१५	६।३२	८।४९	१०।५४	१२।४०	१४।११	१५।४०
१५ शु.	१७।१३	१९।०९	२१।२२	२३।४०	१।५६	४।११	६।२८	८।४५	१०।५०	१२।३६	१४।०७	१५।३६

३ रवौ वल्ली
८।३९।४४।२१
अयनांशाः
२२।५०।१९

११ रा. | ९ | १२ | १० | गु. ८ | ल.१ | ७ | ४ सू. | श | मं. | बु. | शु. ६ | २ | ३ | ५ चं.के.

१० रवौ वल्ली
८।३९।४४।२८
अयनांशाः
२२।५०।२०

११ रा. | ९ चं. | १२ | १० | गु. ८ | ल.१ | ७ | ४ सू. | श | मं. | बु. | शु. ६ | २ | ३ | ५ | के.

विविधविषयाः-कार्त्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या। तत्र गोमयेन गोवर्द्धनमूर्तिं निर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत् गाश्च पूजयेत्। गोवर्द्धनपूजनमन्त्रः-गोवर्द्धनधराधार गोकुलत्राणकारक। कृष्णबाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव।।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ शु.	दि.९:१६-१२:०२।	रा.९:४६-१०:२४।
२ श.	दि.६:३७-७:५४ दि.१:२३-२:४५ दि.४:०७-५:२६	प्रा.५:२६-७:०७ रा.१:३६-३:१७ रा.४:५४-६:३१।
३ र.	दि.१०:३८-१:२२।	रा.१०:२२-१२:०० रा.१:३८-३:१६।
४ चं.	दि.७:५४-९:१६ दि.२:४४-४:०६	रा.१०:२२-१२:०० रा.३:१६-४:५४।
५ मं.	दि.७:५५-९:१७ दि.१:२३-२:४५।	रा.७:०६-८:४५।
६ बु.	दि.९:१८-१०:४० दि.१२:०२-१:२३।	रा.१२:१-१:४०। रा.४:५७-६:३६।
७ गु.	दि.२:४४-५:२६।	रा.१२:२-१:४० रा.४:५६-६:३४।
८ शु.	दि.९:१८-१२:००।	रा.८:४४-१०:२३।
९ श.	दि.६:३८-७:५६ दि.१२:०१-२:४२ दि.४:०३-५:२३	सा.५:२३-७:०५ रा.१:४१-३:२० रा.४:५९-६:३४
१० र.	दि.१०:३९-१:२१।	रा.१०:२१-१२:०० रा.१:३९-३:१८।
११ चं.	दि.७:५८-९:१६ दि.२:४३-४:०३।	रा.१०:२२-१२:०१ रा.३:१९-६:२८।
१२ मं.	दि.७:५६-९:२०। दि.१:२२-२:४२।	रा.७:०२-८:४८।
१३ बु.	दि.९:२०-१०:४१ दि.१२:०२-१:२२	रा.१२:२-१:४१। रा.३:२०-४:५९।
१४ गु.	दि.२:४१-५:२१।	रा.१२:१-१:४१ रा.४:५९-६:४०।
१५ शु.	दि.९:२०-१२:००।	रा.८:४०-१०:२०।

❖ द्विरागमनं रोहिण्यां रा.४।१५ उ.। शिववासः-अग्निवासः दि.१।३२ उ.।

❁ ततः पश्चिमयात्रा। भद्रा १४।२५ उ. ४२।३४ यावत्।

प्रतिहारषष्ठी(छठ)पूजा- नित्यक्रियादि समाप्य नदी-तडागतटे सायंकाले सूर्याभिमुखी भूत्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय- नमो अद्य कार्तिके मासे शुक्लेपक्षे षष्ठ्यां तिथौ अमुकगोत्राया (अपनगोत्र) ममाऽमुकीदेव्या इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुःखदारिद्र्य-सकलपातकक्षय- अपस्मारकुष्ठादि महाव्याधि सकलरोगक्षय-चिरञ्जीविपुत्र-पौत्रादिलाभ-गोधन धान्यादि-समृद्धि-सुखसौभाग्य-अवैधव्य-सकलकामना सिद्धयर्थं अद्य-श्वश्च सूर्याय अर्घ्यम् अहं दास्ये। इति संकल्प।। अक्षत ले आवाहन करें- नमो भगवन् सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ। नानाफल-दूर्वा रक्तचन्दन-अक्षत- घृत- पायितान्युत- ताम्रपात्रस्य अर्घ्यमादाय- मन्त्र- नमोऽस्तु सूर्याय सहस्रभानवे नमोऽस्तु वैश्वानरजातवेदसे। त्वमेव चार्घ्यं प्रतिगृहण, गृहण देवाधिदेवाय नमो नमस्ते।। नमो भगवते तुभ्यं नमस्ते जातवेदसे दत्तमर्घ्यं मया भानो त्वं गृहाण नमोऽस्तु ते। ज्योतिर्मयविभोसूर्य तेजोराशे जगत्पते।। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।। एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ।। एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितप्रभो। एतन्मन्त्रान् समुच्चय उत्तिष्ठन्ती अर्घ्यं दद्यात्। ततः(आग्नेय)रक्तचन्दन-रक्ताक्षत- रक्तपुष्प-दूर्वा-बिल्वपत्र-वस्त्र- यज्ञोपवीत-ताम्बूल नानाविधनैवेद्यैस्सम्पूज्य- प्रदक्षिणं कृत्वा प्रणमेदेभिः- जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम्। प्रणाम कर डाला के श्रीसूर्यभगवान् के समर्प कथा सुनना चाहिए। कथा उपरान्त सूर्यभगवान का प्रणाम कर ब्राह्मण को दक्षिणा दें-कुश-तिल-यव-द्रव्य लय-नमोऽद्य कृतैतत्प्रतिहारषष्ठीव्रतकरणतत्कथा- श्रवणकर्मप्रतिष्ठार्थमतावद्द्रव्य- मूल्यक-हिरण्यमग्निदैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहं ददे। इति

गोपूजनमन्त्रः-लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु।। अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।। भ्रातृद्वितीयायां भगिनीपठनीयमन्त्रः-भ्रातस्तवानुजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभं। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः।। ज्येष्ठभ्रातरि सति-भ्रातस्तवाग्रजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः।। एकादश्या विष्णूत्थापनमन्त्रः- ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः। प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।। मेघागता निर्मलपूर्णचन्द्रशारद्यपुष्पाणि मनोहराणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वया चोत्थीयमानेन प्रोत्थितं भुवनत्रयम्।।

मूलविचारः-ज्येष्ठा/मूल ति.२ शनि रा.३।५६ तः ति.४ चन्द्र रा.१२।३६ यावत्।
रेवती/अश्विनी ति.११ चन्द्र रा.८।५० तः ति.१३ बुध रा.११।४४ यावत्।

अग्रहायणकृष्णपक्षः

शक १६४३, संवत्२०७८, सन् १४२६, दक्षिणायनं, दक्षिणगोलः, हेमन्त ऋतुः, पूर्वे कालः, शुद्धः।
दिनांक २० नवम्बर तः ४ दिसम्बर यावत् सन् २०२१ इ। पूर्वोदितः गुरु, पश्चिमोदितः शुक्रः।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१	श.	२२।१४	दि.३।३४	रोहिणी	६०।००	अहोरात्रं	शिव	५५।४८	कौलव २२।१४	वृष	अहोरात्रं	७।०४।१।३४।	२६।३३	६।४१	५।१६	२९
२	र.	२७।३८	सा.५।४५	रोहिणी	००।२५	प्रा.६।५२	सिद्ध	५७।११	गर २७।३८	वृष ३३।३६	रा.६।१०	७।०५।०२।१८	२६।३०	६।४२	५।१८	३०
३	च.	३२।५२	रा.७।५१	मृगशिरा	०७।५३	दि.६।५२	साध्य	५७।४७	वणिज् ००।१५	मिथुन	अहोरात्रं	७।०६।०३।१४	२६।२७	६।४३	५।१७	१
४	मं.	३७।३२	रा.६।४३	आर्द्रा	१२।५६	दि.११।५४	शुभ	५८।५२	वव ५।१२	मिथुन	अहोरात्रं	७।०७।०४।११	२६।२४	६।४३	५।१७	२
५	बु.	४१।२०	रा.११।१६	पुनर्वसु	१८।२१	दि.२।०४	शुक्ल	५८।४१	कौलव ६।२६	मिथुन १।५६	दि.७।३२	७।०८।०४।०८	२६।२२	६।४४	५।१६	३
६	गु.	४३।५७	रा.१२।१८	पुष्य	२२।४०	दि.३।४८	ब्रह्म	६०।००	गर १२।२६	कर्क	अहोरात्रं	७।०९।०६।०५	२६।२०	६।४४	५।१६	४
७	शु.	४५।२३	रा.१२।२३	आश्लेषा	२५।५३	सं.५।०५	ब्रह्म	१।३६	भद्रा १४।४०	कर्क २५।५३	सं.५।०५	७।१०।०७।०२	२६।१८	६।४४	५।१६	५
८	श.	४५।२६	रा.१२।१६	मघा	२७।४६	सं.५।५२	वैधृति	५२।३४	बालव १५।२६	सिंह	अहोरात्रं	७।११।०७।५६	२६।१७	६।४५	५।१५	६
९	र.	४४।२०	रा.१२।२६	पूर्वाफाल्गुनी	२८।२६	सं.६।०८	विष्कुम्भ	४८।३१	तैतिल १४।५५	सिंह ४३।१३	रा.१२।०२	७।१२।०८।५६	२६।१६	६।४५	५।१५	७
१०	च.	४१।५८	रा.११।३२	उत्तराफाल्गुनी	२७।५८	सं.५।५६	प्रीति	४३।३५	वणिज् १३।०६	कन्या	अहोरात्रं	७।१३।१०।००	२६।१५	६।४५	५।१५	८
११	मं.	३८।३५	रा.१०।११	हस्त	२६।१३	दि.५।१४	आयुष्मान	३७।४७	वव १०।१६	कन्या ५५।०३	रा.४।४६	७।१४।११।०५	२६।१४	६।४५	५।१५	९
१२	बु.	३४।२१	रा.८।३०	चित्रा	२४।००	दि.४।२२	सौभाग्य	३१।२०	कौलव ६।२८	तुला	अहोरात्रं	७।१५।१२।१०	२६।१२	६।४६	५।१४	१०
१३	गु.	२६।२२	रा.६।३०	स्वाती	१६।५२	दि.१।३०	शोभन	२४।१५	गर १।५२	तुला	अहोरात्रं	७।१६।१३।१५	२६।१०	६।४६	५।१४	११
१४	शु.	२३।५३	सं.४।१६	विशाखा	१७।०७	दि.१।३६	अतिगण्ड	१६।४४	शकुनी २३।५३	तुला २।०१	दि.७।३४	७।१७।१४।२०	२६।०८	६।४६	५।१४	१२
३०	श.	१८।०६	दि.२।०१	अनुराधा	१३।०३	दि.१२।००	सुकर्मा	०८।५८	नाग १८।०६	वृश्चिक	अहोरात्रं	७।१८।१५।२५	२६।०७	६।४७	५।१३	१३

दिनांकाः ने.	अं.	
४	२०	विपणि, गृहारम्भः द्वितीयायां दि.३।३४ उपरि सूर्यास्तंयावत। अनुराधायां रविः २।१४(दि.७।३५), सर्वार्थसिद्धियोगः, दक्षिणयात्रा, शिववासः-अग्निवासः दि.३।३४ यावत्। वृश्चिके बुधः १२।३२।
५	२१	विपणि, विवाहः दिवारात्रौ, द्विरागमनं अहोरात्रं, इष्टिकारम्भः। अग्निवासः, पश्चिमां विना यात्रा प्रा.६।५२ उपरि, सिद्धियोगः सं.५।४५ उपरि,
६	२२	मुण्डनं-गृहारम्भ-विवाहः-द्विरागमनं-विपणि-कर्णवेधश्च मृगशिरायां दि.६।५२ यावत्। यानादिचालनं, वृक्षादिरोपणं। पूर्वां विना यात्रा- सर्वार्थसिद्धियोगः दि.६।५२ यावत्। भद्रा ००।१५ उ. ३२।५२ यावत्।
७	२३	गजानन ४ व्रतं, शिववासः, अग्निवासः,
८	२४	वीड़पंचमी, विषहरा पूजन, मनसादेवीशयनं, मुण्डनं, गृहारम्भः, द्विरागमनं पञ्चम्यां, क्रयविक्रय। शिववासः, दक्षिण-पश्चिमयात्रा दि.७।३२ या. ततः पश्चिम यात्रा दि.२।०४ यावत् ततः उत्तरां विना यात्रा।
९	२५	विपणि, स्वामीसेवारम्भः, यानादिचालनं, वृक्षादिरोपणं, गुरुपुष्ययोगः दि.३।४८ या., सर्वार्थसिद्धियोगः दि.३।४८ यावत्, अग्निवासः, दक्षिणां विना यात्रा दि.३।४८ या., भद्रा ४३।५७ उपरि।
१०	२६	ऐन्द्र५३।५७, भद्रा १४।४० यावत्।
११	२७	कालभैरवाष्टमी ८, शिववासः, अग्निवासः,
१२	२८	अष्टकाश्राद्धं, दग्धतिथि रा.१२।२६ उ.
१३	२९	विवाहः एकादश्यां रा.११।३२ उपरि। दग्धतिथि रा.११।३२ या., अमृतयोगः, अग्निवासः, भद्रा १३।०६ उ. ४१।५८ यावत्।
१४	३०	उत्पन्नाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्, शिववासः,
१५	१	दिसम्बर१२, गोमूत्रेण पारणं, विवाहः दिवारात्रौ, शिववासः, अग्निवासः, दक्षिण-पश्चिमयात्रा-सिद्धियोगश्च रा.८।३० यावत्।
१६	२	प्रदोष १३-१४ व्रतं, विवाहः स्वात्यां दि.१।३० यावत्। अमृतयोगः रा.६।३० या. ततः अग्निवासः, पश्चिमयात्रा दि.१।३० यावत्, भद्रा २६।२२ उ. ५६।३८ यावत्
१७	३	ज्येष्ठायां रविः ६।५०(दि.१०।४१), अग्निवासः, अमृतयोगः सं.४।१६ या. ततः शिववासः।
१८	४	मार्गीअमावस्या,पश्चिम-उत्तरयात्रा दि.२।०१ यावत्, शिववासः दि.२।०१ यावत् ततः अमृतयोगः।

मूलविचारः-आश्लेषा/मघा ति.६ गुरु दि.३।४८ तः ति.८ शनि सं.५।५२ यावत्
ज्येष्ठा/मूल ति.३० शनि दि.१२।०० तः......

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ श.	६।१६।००।३६	७।००।५२।२३	१०।०१।००।२५	८।१६।०३।४०	९।१०।५२।५५	७।०६।४७।२४	४३।१६	१७।०८	१८।०४	२१।१७	२३।३५	१।५१	४।०६	६।२३	८।४०	१०।४५	१२।३१	१४।०२	१५।३१
२ र.	६।१६।४१।०२	७।०२।३४।३५	१०।०१।०५।४७	८।१६।४४।५०	९।१०।५७।१८	७।०६।४४।१४	४३।१५	१७।०४	१८।००	२१।१३	२३।३१	१।४७	४।०२	६।१९	८।३६	१०।४१	१२।२७	१३।५८	१५।२७
३ च.	६।२०।२१।३५	७।०४।१६।०२	१०।०१।१२।५५	८।२०।०६।२५	९।११।०२।०६	७।०६।४१।०३	४३।१४	१७।००	१८।५६	२१।०९	२३।२७	१।४३	३।५८	६।१५	८।३२	१०।३७	१२।२३	१३।५४	१५।२३
४ मं.	६।२१।०२।०७	७।०६।०३।२९	१०।०१।१९।५३	८।२०।३४।२०	९।११।०६।५३	७।०६।३७।५२	४३।१३	१६।५५	१८।५१	२१।०४	२३।२२	१।३८	३।५३	६।१०	८।२७	१०।३२	१२।१८	१३।४९	१५।१८
५ बु.	६।२१।४२।३६	७।०७।४७।५६	१०।०१।२६।५१	८।२०।५६।०५	९।११।११।४०	७।०६।३४।४१	४३।१२	१६।५१	१८।४७	२१।००	२३।१८	१।३४	३।४६	६।०६	८।२३	१०।२८	१२।१४	१३।४५	१५।१४
६ गु.	६।२२।२३।११	७।०९।३२।२२	१०।०१।३३।४९	८।२१।२३।५०	९।११।१६।२७	७।०६।३१।३०	४३।११	१६।४७	१८।४३	२०।५६	२३।१४	१।३०	३।४५	६।०२	८।१९	१०।२४	१२।१०	१३।४१	१५।१०
७ शु.	६।२३।०३।४३	७।११।१६।४८	१०।०१।४०।४७	८।२१।४८।३५	९।११।२१।१४	७।०६।२८।१९	४३।१०	१६।४२	१८।३८	२०।५१	२३।०६	१।२५	३।४०	५।५७	८।१४	१०।१९	१२।०५	१३।३६	१५।०५
८ श.	६।२३।४४।१५	७।१३।०१।१४	१०।०१।४७।४५	८।२२।१३।२०	९।११।२६।०१	७।०६।२५।०९	४३।०९	१६।३८	१८।३४	२०।४७	२३।०५	१।२१	३।३६	५।५३	८।१०	१०।१५	१२।०१	१३।३२	१५।०१
९ र.	६।२४।२४।४७	७।१४।४५।४०	१०।०१।५४।४३	८।२२।३८।०४	९।११।३०।४८	७।०६।२१।५९	४३।०९	१६।३४	१८।३०	२०।४३	२३।०१	१।१७	३।३२	५।४९	८।०६	१०।११	११।५७	१३।२८	१४।५७
१० च.	६।२५।०५।३७	७।१६।२९।१२	१०।०२।०२।४३	८।२३।०६।१५	९।११।३५।२६	७।०६।१८।४८	४३।०८	१६।२९	१८।२६	२०।३६	२२।५७	१।१३	३।२८	५।४५	८।०२	१०।०७	११।५३	१३।२४	१४।५३
११ मं.	६।२५।४६।२७	७।१८।१२।४३	१०।०२।१०।४२	८।२३।३४।२६	९।११।४०।१०	७।०६।१५।३७	४३।०७	१६।२५	१८।२१	२०।३४	२२।५२	१।०८	३।२३	५।४०	७।५७	१०।०२	११।४८	१३।१९	१४।४८
१२ बु.	६।२६।२७।१७	७।१९।५६।१४	१०।०२।१८।४१	८।२४।०२।३७	९।११।४४।५१	७।०६।१२।२६	४३।०६	१६।२१	१८।१७	२०।३०	२२।४८	१।०४	३।१६	५।३६	७।५३	९।५८	११।४४	१३।१५	१४।४४
१३ गु.	६।२७।०८।०७	७।२१।३९।४५	१०।०२।२६।४०	८।२४।३०।४८	९।११।४९।३२	७।०६।०९।१५	४३।०५	१६।१७	१८।१३	२०।२६	२२।४४	१।००	३।१५	५।३२	७।४९	९।५४	११।४०	१३।११	१४।४०
१४ शु.	६।२७।४८।५७	७।२३।२३।१६	१०।०२।३४।३९	८।२४।५८।५९	९।११।५४।१३	७।०६।०६।०४	४३।०४	१६।१२	१८।०८	२०।२१	२२।३६	०।५५	३।१०	५।२७	७।४४	९।४६	११।३५	१३।०६	१४।३५
३० श.	६।२८।२९।४७	७।२५।०६।४७	१०।०२।४२।३८	८।२५।२७।१०	९।११।५८।५४	७।०६।०२।५४	४३।०३	१६।०८	१८।०४	२०।१७	२२।३५	०।५१	३।०६	५।२३	७।४०	९।४५	११।३१	१३।०२	१४।३१

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ श.	दि.६:४०-८:००। दि.१:२०-२:४० दि४:०-५:२०	सा.५:२०-७:४० रा१:४०-३:२० रा५:०:६:४०
२ र.	दि.१०:४१-१:२१।	रा.१०:२१-१२:०१ रा.:४१-३:२१।
३ चं.	दि.८:१-६:२१ दि.२:४१-४:००।	रा.१०:२१-१२:०१ रा.३:२१-५:१।
४ मं.	दि.८:२-६:२२ दि.१:२१-२:४०।	रा.६:५६-८:४०।
५ बु.	दि६:२२-१०:४८ दि.१२:०-१:२१।	रा.१२:२-१:४२। रा.३:२२-५:०२।
६ गु.	दि.२:३६-५:१७।	रा.१२:०१-१:४२। रा.५:०३-६:४४।
७ शु.	दि.६:२३-१२:१।	रा.८:३६-१०:२०।
८ श.	दि.६:४४-८:३ दि.१:१६-२:३८ दि३:५७-५:१६	सा५:१६-६:५७ रा१:४१-३:२२। रा५:३-६:४४।
९ र.	दि.१०:४१-१:१६।	रा.१०:१६-१२:०० रा.१:४१-३:२२।
१० चं.	दि.८:३-६:२२ दि.२:३८-३:५७।	रा.१०:१६-१२:००। रा.३:२२-५:०३।
११ मं.	दि.८:४-६:२३ दि.१:२०-२:३६।	रा.६-५७-८:३६।
१२ बु.	दि.६:२३-१०:४२ दि.१२:१-१:२०।	रा.१२:०१-१:४२ रा.३:२३:-५:०४।
१३ गु.	दि.२:३६-५:१५।	रा.१२:०१-१:४२ रा.५:०४-६:४५।
१४ शु.	दि.२:२४-१२:०२।	रा.८:३८-१०:२०।
३० श.	दि६:४६-८:५ दि१:२०-२:३८ दि३:५६-५:१४	रा५:१४-६:५६ रा१:४३-३:२४ रा५:५-६:४६

शनिस्तोत्र-पिप्पलाद उवाच -

नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाक्षाय ते नमः। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तुते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चराय नमोऽस्तुते। प्रसादं कुरुदेवेश दीनस्य प्रणतस्य मे।।

२ रवौ वल्ली
८।३६।४४।३५,
अयनांशाः २२।५०।२१

१० रा.चं., ८, ११, ९, गु.७, १२, ६, श, ल.१, मं, ३, शु.५, २, सू.बु.४ के.

९ रवौ वल्ली
८।३६।४४।४२
अयनांशाः २२।५०।२२

१० रा., ८, ११, ९, गु.७, १२, ६, श, ल.१चं, मं, ३, शु.५, २, सू.बु.४ के.

विविधः-रविव्रत- आदौ वृश्चिकमेषान्ते रविवारो यदा भवेत्। तदा रविव्रतारम्भविसर्गौ शास्त्रसम्मतौ। शुक्लपक्षे व्रतं कुर्यात् सम्यग्देवस्य भास्वतः।।
मार्गशीर्ष काल भैरवाष्टमी- सा च रात्रिव्यापिनी ग्राह्या । मार्गशीर्षसिताष्टम्यां कालभैरवसन्निधौ। उपोष्य जागरणं कुर्वन् सर्व पापैः प्रमुच्यते।। इतिकाशी-खण्डाद्रात्रिव्रतत्वावगतेः। 'रुद्रव्रतेषु सर्वेषु कर्त्तव्या सम्मुखीतिथिः'। इतिब्रह्मवैवर्तेउच्यते।

ब्राह्मणक उत्पत्ति

सृष्टिक प्रारम्भमे ब्रह्माक मुखसँ ब्राह्मणक प्रादुर्भाव भेल। ओहि समयक ब्राह्मणक एक रूप छल। तदन्तर देश-भेदसँ दू प्रकारक भेलाह। प्रथम पंच गौड़, द्वितीय पंच द्रविड। • पंच गौड़म- सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौर, उत्कल आ मैथिल, ई लोकनि विन्ध्य पर्वतसँ उत्तर रहैत छलाह एतदर्थ पंच गौड़ कहबैत छथि। द्वितीय पंचमः- कर्णाट, तैलंग, महाराष्ट्र, द्रविड़, गुर्जर ई लोकनि विन्ध्य पर्वतसँ दक्षिण रहने पंच द्राविड़ कहौलन्हि, ई दसो ब्राह्मण षट् कर्मक अधिकारी भेलाह। आओर ८४ चौरासी प्रकारक ब्राह्मण सम्पूर्ण भारत खण्डमे छथि। ओहो लोकनि षट्कर्मक अधिकारी छथि। हिनका लोकनिमे मूल ओ ग्राम नहि छन्हि, केवल गोत्र मात्र छन्हि। ब्रह्माजी सृष्टि करबाक समय पहिने मरीचिकेँ उत्पन्न कएलन तदन्तर अत्रि, अंगिरा, पुलस्त, पुलहस्त, क्रतु, प्रचेता, बसिष्ठ, भृगु, नारद, दक्षिणनेत्र सँ अत्रिक, वामनेत्र सँ क्रतु, नासिका सँ वरूण, मुह सँ अंगिरा आ स्त्रचिके, दक्षिणपार्श्वसँ दस, बाम पार्श्वसँ भृगु, स्कन्धसँ मरीचि, जिह्वासँ बसिष्ठ आ ओष्ठसँ प्रचेताकेँ उत्पन्न कए हिनका लोकनिकेँ सृष्टि-कारक हेतु आदेश देलगेल। ब्राह्मण्यां ब्राह्मणो ह्येवमुत्पन्नो ब्राह्मणः स्मृतः। अर्थात्-ब्राह्मणी द्वारा ब्राह्मणसँ उत्पन्न ब्राह्मण होइत छथि-सवर्णेभ्यः सवर्णासु जायन्ते हि सजातयः। सवर्णसँ सवर्ण स्त्रीमे सजातीय उत्पन्न होइत छथि-तपःश्रुतञ्च योनिश्चेत्येतद् ब्राह्मणकारकम्। तपःश्रुताभ्यां यो हीनो याति ब्राह्मण एव सः।। विप्रो वृक्षस्तस्य मूलञ्च सन्ध्या। वेदाः शाखा धर्म्मकर्माणि पत्रम्।। तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयम्। छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्।। न विप्रपादोदककर्दमानि न वेदशास्त्रप्रतिघोषितानि। स्वाहा, स्वधा स्वस्ति विवर्जितानि श्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि।।

वाजसनेयि के भेलाह- याज्ञवल्क्यक पिता "ब्रह्मरात" महाकुलपति छलाह। ई असंख्य विद्यार्थी लोकनिक भरण-पोषण करैत रहथि। तेँ हिनका- "वाजसानि" सेहो कहल जाइत रहनि। वाजसानि शब्दक अर्थ होइत अछि जकरा दानक अन्नसँ यज्ञ होइक "वाजसानि यस्य सः" हुनक पुत्र होएबाक कारण याज्ञवल्क्यकेँ वाजसनेय सेहो कहल जाइत छलन्हि। याज्ञवल्क्यक अर्थ होइत अछि यज्ञक प्रवक्ता। ओ व्यासशिष्य वैशम्पायनसँ यजुर्वेदक अध्ययन कयलन्हि। एक दिन दुनु गुरुशिष्यमे शास्त्रार्थ भऽ गेलन्हि। गुरु रुष्ट भऽ शाप देलथिन्ह जे हमरासँ पढ़ल विद्या लुप्त भऽ जाय। हुनकासँ पढ़ल विद्या वमन कऽ देल। तखन वैशम्पायन यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा कहौलक। तदुत्तर महर्षि याज्ञवल्क्य मुर्खवत् भय गेलाह। तखन सूर्य भगवान् सँ प्रार्थना कैलनि। सूर्य भगवान मध्य दिनमे घोड़ा रूपमे आबि मन्त्र ग्रहण कराओल। ओहि मन्त्रक जप कैलासँ पुनः पूर्णताकेँ प्राप्त कैलनि।

तिथयः		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि	द. प.	राशिः	द. प.	घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१	र.	१२।०६	दि.११।३८	ज्येष्ठा	०८।५०	दि.१०।१६	धृति	१।०१	वव	१२।०६	वृश्चिक	८।५०	दि.१०।१६	७।१६।१६।३०	२६।०६	६।४७	५।१३	१४
२	चं.	०६।२०	दि.६।१६	मूल	०४।४०	दि.८।३६	गण्ड	४५।२८	कौलव	६।२०	धनु		अहोरात्रं	७।२०।१७।४३	२६।०५	६।४७	५।१३	१५
३	मं.	००।४७	प्रा.७।०५	पूर्वाषाढ़ा	००।४८	दि.७।०६	वृद्धि	३८।०५	गर	००।४७	धनु	१४।२१	दि.१२।३१	७।२१।१८।५६	२६।०४	६।४७	५।१३	१६
५	बु.	५१।१७	रा.३।१८	श्रवण	५४।४०	रा.४।४०	ध्रुव	३१।१४	वव	२३।३०	मकर		अहोरात्रं	७।२२।२०।०६	२६।०२	६।४८	५।१२	१७
६	गु.	४७।४४	रा.१।५३	धनिष्ठा	५२।५७	रा.३।५८	व्याघात्	२५।०२	कौलव	१६।३१	मकर	२३।४८	रा.४।१६	७।२३।२१।२२	२६।०१	६।४८	५।१२	१८
७	शु.	४५।१०	रा.१२।५२	शतभिषा	५१।५२	रा.३।३२	हर्षण	१६।३२	गर	१६।२७	कुम्भ		अहोरात्रं	७।२४।२२।३५	२६।००	६।४८	५।१२	१९
८	श.	४३।४६	रा.१२।१८	पूर्वाभाद्रपद	५२।०५	रा.३।३८	वज्र	१४।५२	भद्रा	१४।२८	कुम्भ	३७।०१	रा.६।३६	७।२५।२३।४८	२५।५९	६।४८	५।१२	२०
९	र.	४४।२१	रा.१२।३२	उत्तराभाद्रपद	५३।३३	रा.४।१३	सिद्धि	११।१०	वालव	१४।०४	मीन		अहोरात्रं	७।२६।२५।०१	२५।५८	६।४८	५।१२	२१
१०	चं.	४४।४६	रा.१२।४३	रेवती	५६।१७	रा.शे५।१६	व्यतीपात्	०८।२६	तैतिल	१४।३४	मीन	५६।१७	रा.शे५।१६	७।२७।२६।१६	२५।५७	६।४९	५।११	२२
११	मं.	४७।१३	रा.१।४२	अश्विनी	६०।००	अहोरात्रं	वरीयान्	०६।५०	वणिज्	१६।००	मेष		अहोरात्रं	७।२८।२७।३७	२५।५६	६।४९	५।११	२३
१२	बु.	५०।४८	रा.३।०८	अश्विनी	००।११	प्रा.६।५३	परिघ	०६।००	वव	१९।०१	मेष		अहोरात्रं	७।२९।२८।५५	२५।५४	६।४९	५।११	२४
१३	गु.	५५।२०	रा.४।५८	भरणी	०५।१३	दि.८।५५	शिव	०६।०८	कौलव	२३।०४	मेष	२१।४१	दि.३।३०	८।०।३०।१३	२५।५२	६।५०	५।१०	२५
१४	शु.	६०।००	अहोरात्रं	कृत्तिका	११।०५	दि.११।१६	सिद्ध	०६।५२	गर	२७।५६	वृष		अहोरात्रं	८।०१।३१।३१	२५।५०	६।५०	५।१०	२६
१४	श.	००।३१	प्रा.७।०२	रोहिणी	१७।२६	दि.१।५०	साध्य	०८।०४	वणिज्	००।३१	वृष	५०।४६	रा.३।०८	८।०२।३२।५०	२५।४९	६।५०	५।१०	२७
१५	र.	०५।५७	दि.६।१२	मृगशिरा	२४।०३	दि.४।४७	शुभ	०६।२५	वव	५।५७	मिथुन		अहोरात्रं	८।०३।३४।१२	२५।४८	६।५०	५।१०	२८

अग्रहायणशुक्लपक्षः

शक १९४३, संवत्२०७८, सन् १४२९, दक्षिणायनं, दक्षिणगोलः, हेमन्त ऋतुः, पूर्वे कालः। शुद्धः ता.१६ तः खरमास, अशुद्धः।
दिनांक ५ दिसम्बरतः १९ दिसम्बर यावत् सन् २०२१ इ। पूर्वोदितः गुरु, पश्चिमोदितः शुक्रः।

दिनांका ने.	अं.	
१९	५	हरिशोव्रतं, रुद्रव्रतम्। षाण्मासिक रविव्रतारम्भः, विवाहः-द्विरागमनं मूले दि.१०।१६ उपरि। दीक्षाग्रहण द्वितीयायां, इष्टिकारम्भः, शूल ५२।१०, अग्निवासः,सर्वार्थसिद्धियोगः दि.८।५० उपरि। 🕉
२०	६	विवाहः मूले दि.८।३६ यावत् दिवालग्न। नवान्नपार्वण मूले, ट्यूववेल बोरिंग टंकी प्रभृति स्थापनं, शिववासः दि.६।१६ यावत् ततः उत्तर यात्रा। वृश्चिके मंगल ५५।१५, मूले धनुषि च बुधः ३६।४७।
२१	७	चतुर्थीतिथिमानं ५४।५५ रा.४।४५, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रमानं ५६।३६ रा.शे.५।२५, श्रीगणेश४ व्रतं। अग्निवासः, सिद्धियोगः प्रा.७।०५ यावत्। भद्रा २७।५२ उ. ५५।४२ यावत्।
२२	८	विवाहपञ्चमी, श्रीसीतारामविवाहोत्सवः जनकपुरे-सीतामढ्यां च श्रीसीतारामदर्शनं, कर्णवेधः,नवान्नपार्वणं, मुण्डनं, विवाहः दिवारात्रौ, द्विरागमनं अहोरात्रं, दीक्षाग्रहणम्। शिववासः←
२३	९	स्कन्दषष्ठी६, चम्पकषष्ठी व्रतं। विवाहः धनिष्ठायां रा.३।५८ या., द्विरागमनं अहोरात्रं, वधूप्रवेशः, गृहप्रवेशः सप्तम्यां, शिववासः, अग्निवासः, पूर्वयात्रा रा.३।५८ यावत्।
२४	१०	द्विरागमनं शतभिषायां रा.३।३२ या., वधूप्रवेशः, भद्रा ४५।१० उपरि, मुण्डनं-गृहप्रवेशः सप्तम्यां। 🕉 पूर्व-उत्तरयात्रा-शिववासः दि.११।३८ उपरि।
२५	११	अग्निवासः, पश्चिमयात्रा, भद्रा १४।२८ यावत्। ←उत्तरां विना यात्रा रा.४।४० यावत्। पञ्चकारम्भः(भदवा) रा.४।४० उपरि।
२६	१२	महानन्दानवमी ९ व्रतं, देवीपूजनेन विष्णुलोकप्राप्तिः। दग्धतिथिमानं रा.१२।३२ उपरि, शिववासः, अग्निवासः,
२७	१३	दग्धतिथि रा.१२।४३ यावत्, गृहप्रवेशः-विवाहः-द्विरागमनं एकादश्यां रा.१२।४३ उपरि। पञ्चक(भदवा)समाप्ति रा.शे.५।१६ उ., अमृतयोगः रा.१२।४३ या. ततः सिद्धियोगः।
२८	१४	मोक्षदाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। गीताजयन्ती। यानादिचालनं, क्रय-विक्रयः। सर्वार्थसिद्धियोगः, अग्निवासः, भद्रा १६।०० उ. ४७।१३ यावत्।
२९	१५	मासान्तः। केशव१२, गोमूत्रेणपारणं, मत्स्यद्वादशीव्रतं, धरणीव्रतं, शिववासः, सिद्धियोगः रा.३।०८ यावत्।
१	१६	प्रदोष १३ व्रतं, मूलेधनुषि रविः १३।२० (दि.१२।१०) षडशीतिसंक्रान्ति पुण्यकालः दि.१२।०० या. पुण्याहः, खरमासारम्भः, ने.पौषमासारम्भः मु.३० समासमतारकम्,सौम्यशृंगं सुभिक्षकरम्। 🕉
२	१७	मासादिः, अमृतयोगः, प्रदोष १४ व्रतं। 🕉 अमृतयोगः रा.४।५८ यावत्, शिववासः, अग्निवासः,
३	१८	व्रतायपूर्णिमा१५, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१।५० यावत्, भद्रा ००।३१ उ. ३३।१४ यावत्।
४	१९	मार्गी१५ स्नानदानादिः पूर्णिमा। हरिहरक्षेत्रस्नानं, हरिहरनाथपूजनदर्शनादिकं। दत्तात्रेयावतारः। अग्निवासः, अमृतयोगः-पश्चिमं विना यात्रा दि.६।१२ यावत् ततः शिववासः।

मूलविचारः-ज्येष्ठा/मूल ति.२ चन्द्र दि.८।३६ यावत्।
रेवती/अश्विनी ति.९ रवि रा.४।१३ तः ति.१२ बुध प्रा.६।५३ यावत्

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि
१ र.	६।२६।१०।३७	७।२६।५०।१८	१०।०२।५०।३७	८।२५।५५।२०	६।१२।०३।३४	७।०८।५६।४४
२ चं.	६।२६।५१।३६	७।२८।३०।२२	१०।०२।५८।४१	८।२६।००।२५	६।१२।०६।५७	७।०८।५६।३३
३ मं.	७।००।३२।४१	८।००।१०।२६	१०।०३।०८।४५	८।२६।०५।३०	६।१२।१६।२०	७।०८।५३।२२
५ बु.	७।०१।१३।४३	८।०१।५०।३०	१०।०३।३७।४६	८।२६।१०।३४	६।१२।२२।४३	७।०८।५०।११
६ गु.	७।०१।५४।४५	८।०३।३०।३३	१०।०३।२६।५२	८।२६।१५।३८	६।१२।२६।०६	७।०८।४७।००
७ शु.	७।०२।३५।४८	८।०५।१०।३६	१०।०३।३५।५५	८।२६।२०।४२	६।१२।३५।२६	७।०८।४३।४६
८ श.	७।०३।१६।४८	८।०६।५०।३६	१०।०३।४४।५८	८।२६।२५।४६	६।१२।४१।५२	७।०८।४०।३६
९ र.	७।०३।५७।४८	८।०८।३०।४२	१०।०३।५४।०१	८।२६।३०।५०	६।१२।४८।१४	७।०८।३७।२६
१० चं.	७।०४।३६।०८	८।१०।०३।४१	१०।०४।०३।५४	८।२६।[illegible]	६।१२।५४।२०	७।०८।३४।१८
११ मं.	७।०५।२०।२८	८।११।३६।४०	१०।०४।१३।४७	८।२६।०६।५०	६।१३।००।२६	७।०८।३१।०७
१२ बु.	७।०६।०१।४८	८।१३।०६।३६	१०।०४।२३।४०	८।२५।५४।५१	६।१३।०६।३२	७।०८।२१।५६
१३ गु.	७।०६।४३।०८	८।१४।४२।३८	१०।०४।३३।३२	८।२५।४२।५२	६।१३।१२।३८	७।०८।२४।४५
१४ शु.	७।०७।२४।२८	८।१६।१५।३६	१०।०४।४३।२४	८।२५।३०।५३	६।१३।१८।४३	७।०८।२१।३४
१४ श.	७।०८।०५।४७	८।१७।४८।३४	१०।०४।५३।१६	८।२५।१८।५४	६।१३।२४।४८	७।०८।१८।२४
१५ र.	७।०८।४७।०६	८।१९।२१।३२	१०।०५।०३।०८	८।२५।०६।५५	६।१३।३०।५३	७।०८।१५।१४

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.	तिथि, दिन
४३।०२	१६।०४	१८।०१	२०।१३	२२।३१	०।४७	३।०२	५।१६	७।३६	६।४१	११।२७	१२।५८	१४।२७	१ र.
४३।०१	१६।००	१७।५६	२०।०९	२२।२७	०।४३	२।५८	५।१५	७।३२	६।३७	११।२३	१२।५४	१४।२३	२ चं.
४३।००	१५।५६	१७।५१	२०।०४	२२।२३	०।३८	२।५३	५।१०	७।२७	६।३२	११।१८	१२।४९	१४।१८	३ मं.
४२।५९	१५।५१	१७।४७	२०।००	२२।१८	०।३४	२।४९	५।०६	७।२३	६।२८	११।१४	१२।४५	१४।१४	५ बु.
४२।५९	१५।४७	१७।४३	१९।५९	२२।१४	०।३०	२।४५	५।०२	७।१९	६।२४	११।१०	१२।४१	१४।१०	६ गु.
४२।५९	१५।४३	१७।३९	१९।५२	२२।१०	०।२६	२।४१	४।५८	७।१५	६।२०	११।०६	१२।३७	१४।०६	७ शु.
४२।५९	१५।३९	१७।३५	१९।४८	२२।०६	०।२२	२।३७	४।५४	७।११	६।१६	११।०२	१२।३३	१४।०२	८ श.
४२।५९	१५।३५	१७।३०	१९।४३	२२।०१	०।१७	२।३२	४।४९	७।०६	६।११	१०।५७	१२।२८	१३।५७	९ र.
४२।५८	१५।३१	१७।२६	१९।३९	२१।५७	०।१३	२।२८	४।४५	७।०२	६।०७	१०।५३	१२।२४	१३।५३	१० चं.
४२।५७	१५।२६	१७।२२	१९।३५	२१।५३	०।०९	२।२४	४।४१	६।५८	६।०३	१०।४९	१२।२०	१३।४९	११ मं.
४२।५६	१५।२२	१७।१८	१९।३१	२१।४९	०।०५	२।२०	४।३७	६।५४	८।५६	१०।४५	१२।१६	१३।४५	१२ बु.
४२।५५	१५।१७	१७।१३	१९।२६	२१।४४	०।००	२।१५	४।३२	६।४९	८।५४	१०।४०	१२।११	१३।४०	१३ गु.
४२।५४	१५।१३	१७।०९	१९।२२	२१।४०	२३।५६	२।११	४।२८	६।४५	८।५०	१०।३६	१२।०७	१३।३६	१४ शु.
४२।५४	१५।०८	१७।०४	१९।१७	२१।३५	२३।५१	२।०६	४।२३	६।४०	८।४५	१०।३१	१२।०२	१३।३१	१४ श.
४२।५४	१५।०४	१७।००	१९।१३	२१।३१	२३।४७	२।०२	४।१९	६।३६	८।४१	१०।२७	११।५८	१३।२७	१५ र.

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ र.	दि.१०:२३-१:२०।	रा.१०:२१-१२:२१ रा.१:४३-३:२५।
२ चं.	दि.८:५-९:२४। दि.२:३८-३:५६।	रा.१०:२०-१२:२। दि.३:२४-५:०५।
३ मं.	दि.८:०६-९:२५। दि.१:१९-२:३७।	रा.६:५५-८:३७।
५ बु.	दि.९:२५-१०:४३ दि.१२:१-१:१६।	रा.१२:१-१:४३ रा.३:२५-५:०६।
६ गु.	दि.२:३७-५:१३।	रा.१२:१-१:४३, रा.५:६-६:४७।
७ शु.	दि.९:२[illegible]-१२:०१।	रा.८:३७-१०:१९।
८ श.	दि.६:४७-८:६ दि.१:१९-२:३७ दि३:५५-५:१३	सा५:१३-६:५५ रा१:४३-३:२५ रा५:५-६:४७
९ र.	दि.१०:४२-१:१८।	रा.१०:१८-१२:००। रा.१:४२-३:२४।
१० चं.	दि.८:६-९:२४ दि.२:३९-३:५४।	रा.१०:१८-१२:०० रा.३:२४-५:०६।
११ मं.	दि.८:६-९:२४ दि.१:१८-२:३६।	रा.६:५४-८:३६।
१२ बु.	दि.९:२५-१०:४३ दि.१२:१-१:१६।	रा.१२:१-१:४३ रा.३:२५-५:०७।
१३ गु.	दि.२:३७-५:११।	रा.१२:१-१:४३ रा.५:७-६:४९।
१४ शु.	दि.९:२५-१२:१।	रा.८:३७-१०:१९।
१४ श.	दि६:४८-८:७ दि.१:१९-२:३७ दि३:५४-५:११	सा५:११-६:५४ रा१:४३-३:२५ रा ५:७-६:५०
१५ र.	दि.१०:४४-१:१९।	रा.१०:१९-१२:२। रा.१:४४-३:२६।

याज्ञवल्क्य उवाच-कृपां कुरु जगन्मातर्मामेवं हततेजसम्। गुरुशापात् स्मृतिभ्रष्टं विद्याहीनं च दुःखितम्।।
ज्ञानं देहि स्मृतिं देहि विद्यां शक्तिप्रबोधिनीम्। ग्रन्थकर्तृत्वशक्तिं च सुशिष्यं सुप्रतिष्ठितम्।।

छन्दोगी के भेलाह :- छन्दांसि गायन्तीति छन्दोगाः।

मैथिल ब्राह्मणमे दुई वेद प्रचलित अछि। सामवेद आ यजुर्वेद।(छन्दोगिया) शाण्डिल्य मुनि सामवेद पढ़ि ओहि मन्त्र द्वारा देवयज्ञ तथा पितृयज्ञ करैत छलाह तथा हुनक शिष्य प्रशिष्य पृथक अनुसरण कएलनि। सामवेदमे छन्दक गान होइत अछि। एहि हेतु सामवेदी छन्दोगिया कहबैत छथि।

[illegible] शाण्डिल्यौ कौशिकश्च [illegible]।

षडेते सामगा विप्राः शेषाः वाजसनेयिनः।। उपर्युक्त गोत्रवालाके सामवेदी होमक चाही किन्तु सामवेद श्याम वर्णक छलाह। यजुर्वेद शुक्ल वर्ण एतदर्थ स्वकीय वर्णक धारण कएलन्हि।

सामः श्यामं यजुः शुक्लं शुक्लवर्णाः द्विजोत्तमाः।
स्ववर्णग्राहकत्वेनाभूवन् वाजसनेयिनः।।

गोभिल गृह्य सूत्रमे प्रथम शिखा तथा वाम पाद प्रच्छालन विहित अछि।

१ रवी वल्ली ८।३६।४४।४६ अयनांशाः २२।५०।२३

१० रा., ८, गु.७, ११, ९, ६, १२, श, ३, शु.५, ल.१, मं, २, सु.बु.के., चं.

८ रवी वल्ली ८।३६।४४।५६ अयनांशाः २२।५०।२४

१० रा., ८ चं., गु.७, ११, ९, ६, १२, श, ३, शु.५, ल.१, २, सु, ४ के.मं

१५ रवी वल्ली ८।३६।४५।०३ अयनांशाः २२।५०।२५

६ रा., ८, ७, चं.१०, गु.६, ९, ५, ११, ३, श., शु.४ बु, १२, ल.१, २ के.मं, सु

विविधविषयाः–रवौ त्याज्यवस्तूनि-क्षारं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशिभोजनम्। रतिः स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्।। मार्गादिमासे रविव्रतभक्ष्याणि - पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमथ घृतं मार्गशीर्षादिमस्यं मुष्टीनां त्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथा दुग्धकं गोमयं च। त्रित्वं तोयांजलीनां त्रिमरीचकमथो त्रिःपलाः शक्तवः स्युर्गोमूत्रं शर्करा सद्धविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण।। रात्रौ लग्नज्ञानम्- ध्रुवं परितो रक्तवर्णा शूलिनी श्वेतवर्णा चैकान्या तारा मेषान्मीनं यावद्भ्रमति। तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेषवृषौ, वायुकोणे मिथुनं, उत्तरस्यां कर्कसिंहौ, ईशाने कन्या, पूर्वस्यां तलवृश्चिकौ, अग्निकोणे धनुः, दक्षिणस्यां मकरकुम्भौ नैर्ऋत्यां च मीनराशेर्वर्तते। यदा यत्र रक्तवर्णा शूलिनी तारका तदैव लग्नं तदानीमिति। चन्द्रोदयास्तसाधनम्- तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपक्षे। बाणशशाङ्कविभाजितलब्धं भवति विधूदयमस्तमयं च।।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१	च.	११।१२	दि.११।१६	आर्द्रा	३०।१६	रा.६।५८	शुक्ल	१०।३५	कौलव ११।१२	मिथुन	अहोरात्रं	८।०४।३५।३५	२५।४७	६।५१	५।०६	२६
२	म.	१५।४६	दि.१।१०	पुनर्वसु	३५।५५	रा.६।१३	ब्रह्म	११।२०	गर १५।४६	मिथुन १६।३१	दि.२।३६	८।०५।३६।५८	२५।४६	६।५१	५।०६	३०
३	बु.	१६।३५	दि.२।४१	पुष्य	४०।३३	रा.११।०४	ऐन्द्र	११।२५	भद्रा १६।३५	कर्क	अहोरात्रं	८।०६।३८।२१	२५।४६	६।५१	५।०६	१
४	गु.	२२।१०	दि.३।४३	आश्लेषा	४४।०५	रा.१२।२६	वैधृति	१०।३५	वालव २२।१०	कर्क ४४।०५	रा.१२।२६	८।०७।३९।४४	२५।४७	६।५१	५।०६	२
५	शु.	२३।३२	दि.४।१४	मघा	४६।२२	रा.०१।२२	विष्कुम्भ	०८।५४	तैतिल २३।३२	सिंह	अहोरात्रं	८।०८।४१।०७	२५।४८	६।५०	५।१०	३
६	श.	२३।३४	दि.४।१५	पूर्वाफाल्गुनी	४७।२०	रा.१।४६	प्रीति	०६।१२	वणिज् २३।३४	सिंह	अहोरात्रं	८।०९।४२।३१	२५।४९	६।५०	५।१०	४
७	र.	२२।२०	दि.३।४६	उत्तराफाल्गुनी	४७।०८	रा.१।४१	आयुष्मान	२।२९	वव २२।२०	सिंह २।१५	दि.७।४४	८।१०।४३।५५	२५।५०	६।५०	५।१०	५
८	चं.	१९।५५	दि.२।४८	हस्त	४५।४६	रा.१।०६	शोभन	५२।१७	कौलव १९।५५	कन्या	अहोरात्रं	८।११।४५।२०	२५।५१	६।५०	५।१०	६
९	म.	१६।२९	दि.१।२५	चित्रा	४३।४२	रा.१२।१८	अतिगण्ड	४६।०३	गर १६।२९	कन्या १४।४५	दि.१२।४४	८।१२।४६।४५	२५।५२	६।५०	५।१०	७
१०	बु.	१२।१२	दि.११।४१	स्वाती	४०।४२	रा.११।०५	सुकर्मा	३६।११	भद्रा १२।१२	तुला	अहोरात्रं	८।१३।४८।१०	२५।५४	६।४९	५।११	८
११	गु.	०७।१४	दि.९।४२	विशाखा	३७।०७	रा.९।३९	धृति	३१।४७	वालव ७।१४	तुला २३।००	दि.४।०१	८।१४।४९।३६	२५।५६	६।४९	५।११	९
१२	शु.	०१।४५	दि.७।३१	अनुराधा	३३।०८	रा.८।०४	शूल	२४।०५	तैतिल १।४५	वृश्चिक	अहोरात्रं	८।१५।५१।०२	२५।५८	६।४९	५।११	१०
१४	श.	५०।०३	रा.२।४६	ज्येष्ठा	२८।५८	सं.६।२३	गण्ड	१६।१४	भद्रा २३।००	वृश्चिक २८।५८	सं.६।२३	८।१६।५२।२८	२५।५९	६।४८	५।१२	११
३०	र.	४४।१४	रा.१२।२६	मूल	२४।५०	सं.४।४४	वृद्धि	०८।१७	चतुरघ्न १७।०६	धनु	अहोरात्रं	८।१७।५८३।५४	२६।००	६।४८	५।१२	१२

पौषकृष्णपक्षः

शक १९४३, संवत्२०७८, सन् १४२९, दक्षिणायनं, दक्षिणगोलः, हेमन्त ऋतुः, पूर्व कालः, अशुद्धः।
दिनांक २० दिसम्बरतः २ जनवरी यावत् सन् २०२२ इ। पूर्वोदितः गुरु, पश्चिमास्तः शुक्रः

दिनाङ्काः ने.	अं.	
५	२०	पौषे कौशिकीस्नानं महापुण्यप्रदम्। दग्धतिथि दि.११।१६ उ.,अग्निवासः, शिववासः-सिद्धियोगः दि.११।१६ यावत्।
६	२१	दग्धतिथि दि.१।१० या.,दक्षिण-पश्चिम यात्रा दि.१।१० उपरि दि.२।३६ यावत् ततः पश्चिमयात्रा रा.६।१३ यावत् ततः उत्तरां विना यात्रा। भद्रा ४७।४२ उपरि।
७	२२	लम्बोदर ४ व्रत, अग्निवासः, शिववासः दि.२।४१ उपरि, भद्रा १६।३५ यावत्।
८	२३	शिववासः,
९	२४	अग्निवासः, शिववासः दि.४।१४ यावत् ततः सिद्धियोगः।
१०	२५	अमृतयोगः दि.४।१५ यावत्, भद्रा २३।३४ उ. ५२।५७ यावत्।
११	२६	सौभाग्य ५५।१६, अग्निवासः दि.३।४६ यावत् ततः शिववास, सिद्धियोगः। सप्तम्यां मेघदर्शने सत्यार्द्रायां श्रावण्याञ्च सुवृष्टिः।
१२	२७	अपूपाष्टमी, अन्वष्टकानवमी, दक्षिणयात्रा शिववासः दि.२।४८ यावत् ततः अग्निवासः, मकरे बुधः ५।५३। क्षीणशुक्रः ५२।११ उपरि।
१३	२८	अग्निवासः दि.१।२५ यावत् ततः दक्षिण-पश्चिमयात्रा, भद्रा ४४।२१ उपरि। शतभिषायां गुरुः ४०।४१।
१४	२९	पूर्वाषाढ़ायां रविः १५।२४(दि.१।००), अग्निवासः-शिववासः-अमृतयोगः दि.११।४१ उपरि, दक्षिण-पश्चिमयात्रा रा.११।०५ यावत्। भद्रा १२।१२ यावत्।
१५	३०	सफलाएकादशी ११ सर्वेषाम्। शिववासः अहोरात्र, अग्निवासः दि.६।४२ यावत्। पश्चिमास्तः शुक्रः ५२।११।
१६	३१	त्रयोदशीतिथिमानं ५४।१२ रा.४।२६, गोमयेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.८।०४ यावत्, शिववासः दि.७।३१ यावत् ततः अग्निवासः, दक्षिण-पश्चिमयात्रा रा.११।०५ यावत्। भद्रा ५५।५७ उपरि।
१७	१	जनवरी२०२२ खृष्टीयनववर्षारम्भः, प्रदोष १४ व्रतं, दशतारकारम्भः सं.६।२३ उपरि तत्र वाताभ्रगर्जनतडिदुदकशीतादिभिरग्रिमवर्षस्य वृष्टिविचारो विधेयः। सिद्धियोगः, भद्रा २३।०० यावत्।
१८	२	पौषमासरीय अमावस्या स्नानदानादि,। शिववासः, अग्निवांसः, सर्वार्थसिद्धियोगः सं.४।४४ यावत्।

मूलविचारः-
आश्लेषा/मघा ति.३ बुध रा.११।०४ तः ति.५ शुक्र १।२२ यावत्।
ज्येष्ठा/मूल ति.१२ शुक्र रा.८।०४ ति.३० रवि सं.४।४४ यावत्।

शकुनं- पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्यान्तिथौ तोयधरो हि दृश्यः।
तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टिः प्रवाच्या नियमेन विज्ञैः।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	वक्री शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ च.	७।०९।२८।४०	८।२०।४२।१२	१०।०५।१३।५१	८।२४।३८।४१	६।१३।३७।१४	७।०८।१२।०२	४२।५५	१४।५६	१६।५५	१८।०८	२१।२६	२३।४२	१।५७	४।१४	६।३१	८।३६	१०।२२	११।५३	१३।२२
२ म.	७।१०।१०।१४	८।२२।०३।२२	१०।०५।२४।३४	८।२४।१०।२७	६।१३।४३।३५	७।०८।०८।५२	४२।५५	१४।५५	१६।५१	१८।०४	२१।२२	२३।३८	१।५३	४।१०	६।२७	८।३२	१०।१८	११।४९	१३।१८
३ बु.	७।१०।५१।४८	८।२३।२४।३२	१०।०५।३५।१७	८।२३।४२।१३	६।१३।४९।५६	७।०८।०५।४१	४२।५५	१४।५०	१६।४६	१८।००	२१।१७	२३।३३	१।४८	४।०५	६।२२	८।२७	१०।१३	११।४४	१३।१३
४ गु.	७।११।३३।२२	८।२४।४५।४२	१०।०५।४६।००	८।२३।१३।५९	६।१३।५६।१६	७।०८।०२।३०	४२।५५	१४।४६	१६।४२	१८।५५	२१।१३	२३।२९	१।४४	४।०१	६।१८	८।२३	१०।०९	११।४०	१३।०९
५ शु.	७।१२।१४।५६	८।२६।०६।५२	१०।०५।५६।४३	८।२२।४५।४६	६।१४।०२।३८	७।०७।५९।१९	४२।५५	१४।४२	१६।३८	१८।५१	२१।०९	२३।२५	१।४०	३।५७	६।१४	८।१९	१०।०५	११।३६	१३।०५
६ श.	७।१२।५६।३०	८।२७।२७।०२	१०।०६।०७।२६	८।२२।१७।३२	६।१४।०८।५९	७।०७।५६।०९	४२।५५	१४।३७	१६।३३	१८।४६	२१।०४	२३।२०	१।३५	३।५२	६।०९	८।१४	१०।००	११।३१	१३।००
७ र.	७।१३।३८।०३	८।२८।४८।१२	१०।०६।१८।०९	८।२१।४९।१८	६।१४।१५।२०	७।०७।५२।५८	४२।५५	१४।३३	१६।२९	१८।४२	२१।००	२३।१६	१।३१	३।४८	६।०५	८।१०	९।५६	११।२७	१२।५६
८ चं.	७।१४।१९।३७	९।००।०९।२२	१०।०६।२८।५२	८।२१।२१।०५	६।१४।२१।४१	७।०७।४९।४७	४२।५६	१४।२८	१६।२४	१८।३७	२०।५५	२३।११	१।२६	३।४३	६।००	८।०५	९।५१	११।२२	१२।५१
९ म.	७।१५।०१।११	९।०१।३०।३२	१०।०६।३९।३५	८।२०।५२।५१	६।१४।२८।०२	७।०७।४६।३७	४२।५७	१४।२४	१६।२०	१८।३३	२०।५१	२३।०७	१।२२	३।३९	५।५६	८।०१	९।४७	११।१८	१२।४७
१० बु.	७।१५।४२।४५	९।०२।५१।४२	१०।०६।५०।१८	८।२०।२४।३७	६।१४।३४।२२	७।०७।४३।२६	४२।५८	१४।१९	१६।१५	१८।२८	२०।४७	२३।०३	१।१८	३।३५	५।५२	७।५७	९।४३	११।१४	१२।४३
११ गु.	७।१६।२४।१९	९।०४।१२।५२	१०।०७।०१।०१	८।१९।५६।२४	६।१४।४१।४३	७।०७।४०।१५	४२।५८	१४।१५	१६।११	१८।२४	२०।४३	२२।५९	१।१४	३।३०	५।४७	७।५२	९।३८	११।०९	१२।३८
१२ शु.	७।१७।०५।५३	९।०५।३४।०२	१०।०७।११।४४	८।१९।२८।१०	६।१४।४८।०४	७।०७।३७।०४	४२।५६	१४।११	१६।०७	१८।२०	२०।३८	२२।५४	१।१०	३।२६	५।४३	७।४८	९।३४	११।०५	१२।३४
१४ श.	७।१७।४६।००	९।०४।५४।५३	१०।०७।०५।०५	८।१८।२१।४३	६।१४।५४।४६	७।०७।३३।५४	४२।५६	१४।०६	१६।०२	१८।१५	२०।३८	२२।४६	१।०४	३।२१	५।३८	७।४३	९।२६	११।००	१२।२६
३० र.	७।१८।३०।४६	९।०५।५५।५६	१०।०६।१२।५४	८।१६।३७।०६	६।१५।०१।२३	७।०७।३०।४४	४२।५६	१४।०२	१५।५८	१८।११	२०।३३	२२।४५	१।००	३।१७	५।२६	७।३६	९।२५	१०।५६	१२।२५

७ रवौ वल्ली ८।३९। ४५।१०
अयनांशाः २२।५०।२७

९ रा. ८ ७ गु.६ १० ११ ३ श ५ बु १२ शु.४ सू चं.ल.१ २ के.म

३० रवौ वल्ली ८।३९। ४५।१७
अयनांशाः २२।५०।२८

९ रा. ८ ७ गु.६ १० ११ ३ बु श ५ १२ शु.४ सू चं. ल.१ २ के.म

शकुनम्-पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्यांतिथौ तोयधरो हि दृश्यः। तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टिःप्रवाच्या नियमेन विज्ञैः। दशतारकविचारः-पौषेमूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति।। एवं चैत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षे प्रयत्नतः। आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वा गर्भं वदेत्फलम्।
गर्भपुष्टिविचारः-वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपातः करकावपातः। अकालसन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः। तत्र पुष्टेगर्भे सुवृष्टिः समे मध्यमा वृष्टिहीने चाल्पा वृष्टिरिति। गोचरशन्यादिविचारः- द्विजन्मनि पंचम- सप्तमगाश्चतुराष्टक द्वादशधर्मयुताः। धनधान्यहिरण्य- विनाशकरा रविराहुशनैश्चर भूमिसुताः।
कौशिकिस्नानमन्त्रः- गाधिराजसुते देवि विश्वामित्र मुने श्वसः। ऋचिकभार्ये सत्यार्ये पापं मे हर कौशिकि।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ च.	दि.८:०८-९:२६। दि.२:३६-३:५३।	रा.१०:१९-१२:२ रा.३:२६-५:८।
२ म.	दि.८:८-९:२६ दि.१:१९-२:३६।	सा६:५३-८:३६।
३ बु.	दि.९:२६-१०:४४ दि.१२:२-१:१९।	रा.१२:०२-१:४४। रा.३:२६-५:८।
४ गु.	दि.२:३६-५:१०।	रा.१२:०२-१:४४। रा.५:८-६:५०।
५ शु.	दि.९:२७-१२:१।	रा.८:३२-१०:१८।
६ श.	दि६:५१-८:६ दि१:१८-२:३५ दि.३:५२-५:६।	सा५:६-६:५२ रा१:४४-३:२७ रा५:६-६:५१
७ र.	दि.१०:४४-१:१८।	रा.१०:१८-१२:१ रा.१:४४-३:२७।
८ चं.	दि.८:९-९:२७ दि.२:३५-३:५२।	रा.१०:१८-१२:१। रा.३:२७-५:०६।
९ म.	दि.८:०८-९:२६ दि.१:१९-२:३६।	रा.६:५३-८:३६।
१० बु.	दि.९:२६-१०:४४ दि.१२:२-१:१९।	रा.१२:२-१:४४ रा.३:२६-५:८।
११ गु.	दि.२:३६-५:१०।	रा.१२:२-१:४४ रा.५:८-६:५०।
१२ शु.	दि.९:२६-१२:०२।	रा.८:३६-१०:१९।
१४ श.	दि६:४९-८:०७ दि.१:१९-२:३७ दि.३:५४-५:११	सा५:११-६:५४ रा१:४३-३:५ रा५:७-६:४८
३० र.	दि.८:०६-९:२४। दि.२:३६-३:५४।	रा.१०:१९-१२:१ रा.१:४३-३:२५।

संध्या-वन्दन नै कयलासँ दोष

संध्या येन न विज्ञाता संध्या येनानुपासिता। जीवमानो भवेच्छूद्रो मृतः श्वान् चाभिजायते।।१।। (दे.भा.११।१६।०७)

संध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु। यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाग्भवेत्।।२।।(दक्षस्मृति २।२७)

जे ब्राह्मण संध्याक ज्ञान नै कयला, जे संध्या उपसना नै कयला उ ब्राह्मण जीवित रहितो शूद्र कहबैत छथि आ मृत्यु पश्चात् कुत्तादि क योनि प्राप्त करैत छथि।।१।। संध्या विहिन ब्राह्मण अपवित्र होइत छैथ हुनका कोनो पुण्यकर्म कयलाक फल नहि प्राप्त होइत छैनि।

संध्या-स्तुति

विप्रो वृक्षो मूलकान्यत्र संध्या वेदाः शाखा धर्मकर्माणि पत्रम्।
तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव वृक्षो न शाखा।।(देवीभा.११।१६।६)

ब्रह्मणरूपी वृक्षक मूल संध्या अछि, चारो वेद शाखा, धर्म-कर्म पता अछि। तेँ मूलक रक्षा यत्नसँ करवाक चाही।

स्वकाले सेविता संध्या नित्यं कामदुघा भवेत्। अकाले सेविता सा च संध्या वन्ध्या वधूरिव।।(मित्रकल्प)

समयपर कयल गेल संध्या इच्छानुसार फल दैत छैथि आ विना समय कयल गेल संध्या वन्ध्या(बाझ) स्त्रीक समान होइत छैथि।

प्रातः संध्यां सनक्षत्रां मध्याह्ने मध्यभास्कराम्। ससूर्यां पश्चिमां संध्यां तिस्रः संध्या उपासते।।(देवीभा.११।१६।२-३)

प्रातःकालमें ताराके रहैत, मध्याह्नमे सूर्य आकाशके मध्यमे जखन रहत, सायंकालमें सूर्यास्तके पहिने ही एहिना तीनो संध्या करवाक चाही। गृहस्थो ब्रह्मचारी च प्रणवाद्यामिमां जपेत्। अन्ते यः प्रणवं कुर्यान्नासौ सिद्धिमवाप्नुयात्।। गृहस्थ तथा ब्रह्मचारी गायत्रीकें आदिमें ॐ क उच्चारण कय जप करी आ अन्तमें ॐ क उच्चारण नै करी, किया त अन्त मे उच्चारण कयलासँ सिद्धि नै मिलैत अछि। गृहेषु तत्समा संध्या गोष्ठे शतगुणा स्मृता। नद्यां शतगुणा प्रोक्ता अनन्ता शिवसंनिधौ।।(लघुशातातपस्मृ०११४) । घरमें संध्या-वन्दन कयलासँ एक, गोस्थानमे सौ, नदी-किनारे लाख आ शिव के समीप कयला सँ अनन्त गुना फल मिलैत अछि।पादशेषं पीतशेषं संध्याशेषं तथैव च। शुनो मूत्रसमं तोयं पीत्वा चान्द्रायणं चरेत्।। अर्थात् पैर धोयल,पीयल आ संध्या कयलासँ बचल जल श्वानके मूत्र समान होइत अछि, ओही जल क पुनः उपयोग नै करी। सूर्योदय सँ चारि घड़ी अर्थात् ९६ मिनट पूर्व जे ब्रह्ममुहूर्त कहबै छैक, ओहि मे उठ कऽ चाहि। ओछाओन सँ उठि निम्नलिखित मन्त्र सँ करदर्शन करी- ॐ कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती। करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्।। तकर बाद निम्नलिखित......... आगुक पक्ष मे देल अछि

तिथयः दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१ चं.	३८।४४	रा.१०।१७	पूर्वाषाढ़ा	२०।५४	दि.३।०६	ध्रुव	००।३०	किंगस्तुघ्न११।२६	धनु ३५।०१	रा.८।४८	८।१८।५५।२०	२६।०१	६।४८	५।१२	१३
२ मं.	३३।४४	रा.८।१७	उत्तराषाढ़ा	१७।२३	दि.१।४५	हर्षण	४५।५७	बालव ६।१४	मकर	अहोरात्रं	८।१९।५६।४५	२६।०२	६।४८	५।१२	१४
३ बु.	२६।२५	सं.६।३३	श्रवण	१४।२६	दि.१२।३४	वज्र	३६।३०	तैतिल १।३५	मकर४३।२६	रा.१२।११	८।२०।५८।१०	२६।०४	६।४७	५।१३	१५
४ गु.	२५।५७	सं.५।०६	धनिष्ठा	१२।३०	दि.११।४७	सिद्धि	३३।४४	भद्रा २५।५७	कुम्भ	अहोरात्रं	८।२१।५९।३५	२६।०६	६।४७	५।१३	१६
५ शु.	२३।२८	दि.४।०६	शतभिषा	११।२०	दि.११।१८	व्यतीपात्	२८।४७	बालव २३।२८	कुम्भ ५६।१९	रा.शे५।१७	८।२३।०१।००	२६।०८	६।४६	५।१४	१७
६ श.	२२।१२	दि.३।३८	पूर्वाभाद्रपद	११।१९	दि.११।१७	वरीयान्	२४।४४	तैतिल २२।१२	मीन	अहोरात्रं	८।२४।०२।२५	२६।०९	६।४६	५।१४	१८
७ र.	२२।११	दि.३।३८	उत्तराभाद्रपद	१२।२६	दि.११।४५	परिघ	२१।४१	वणिज् २२।११	मीन	अहोरात्रं	८।२५।०३।५०	२६।१०	६।४६	५।१४	१९
८ चं.	२३।२८	दि.४।०६	रेवती	१४।५७	दि.१२।४४	शिव	१९।३८	बव २३।२८	मीन १४।५७	दि.१२।४४	८।२६।०५।१३	२६।११	६।४६	५।१४	२०
९ मं.	२६।०३	सं.५।११	अश्विनी	१८।३६	दि.०२।१३	सिद्ध	१८।३५	कौलव२६।०३	मेष	अहोरात्रं	९।२७।०६।३५	२६।१२	६।४६	५।१४	२१
१० बु.	२९।३१	सं.६।३३	भरणी	२३।२७	सं.०४।०७	साध्य	१९।२४	गर २९।३१	मेष ३९।५२	रा.१०।४२	८।२७।०७।५७	२६।१४	६।४५	५।१५	२२
११ गु.	३४।२१	रा.८।२६	कृत्तिका	२९।०९	स.६।२४	शुभ	१८।५७	वणिज् १।५६	वृष	अहोरात्रं	८।२९।०९।१९	२६।१६	६।४५	५।१५	२३
१२ शु.	३९।३७	रा.१०।३४	रोहिणी	३५।३१	रा.८।५६	शुक्ल	२०।०५	बव ६।५९	वृष	अहोरात्रं	९।००।१०।४१	२६।१८	६।४४	५।१६	२४
१३ श.	४५।०५	रा.१२।४६	मृगशिरा	४२।०६	रा.११।३४	ब्रह्म	२१।२५	कौलव १२।२१	वृष ८।४७	दि.१०।१५	९।०१।१२।०३	२६।१९	६।४४	५।१६	२५
१४ र.	५०।१९	रा.२।५१	आर्द्रा	४८।२९	रा.०२।०७	ऐन्द्र	२२।४२	गर १७।४२	मिथुन	अहोरात्रं	९।०२।१३।२६	२६।२०	६।४४	५।१६	२६
१५ चं.	५४।५५	रा.४।४२	पुनर्वसु	५४।१६	रा.०४।२६	वैधृति	२३।३८	भद्रा २२।३७	मिथुन ३७।४९	रा.६।५२	९।०३।१४।४३	२६।२१	६।४४	५।१६	२७

पौषशुक्लपक्षः

शक १९४३, संवत्२०७८, सन् १४२६, उत्तरायणं, दक्षिणगोलः, शिशिर ऋतुः, पूर्वे कालः, अशुद्धः ता.१४ तः शुद्धः।
दिनांक ३ जनवरीतः १७ जनवरी यावत् सन् २०२२ इ। पूर्वोदितः गुरु, पूर्वोदितः शुक्रः

दिनांका ने.	अं.	
		व्याघात् ५२।३१, अग्निवासः, सिद्धियोगः रा.१०।१७ यावत्, उत्तरयात्रा दि.३।०६ यावत्।
१९	३	चन्द्रदर्शनम्। सौम्यशृंगं सुभिक्षकरम्। मु.४५ समर्घताकरम्। दग्धतिथि रा.१०।१७ उ.,
२०	४	दग्धतिथि रा.८।१७ या., शिववासः, अमृतयोगः रा.८।१७ यावत् ततः सिद्धियोगः- उत्तरां विना यात्रा।
२१	५	श्रीगणेश ४ व्रतं,शिववासः, अग्निवासः सं.६।३३ यावत्,पञ्चकारम्भः(भदवा) दि.१२।३४ उपरि। पूर्वोदितशुक्र ३६।२६
२२	६	अग्निवासः सं.५।६ उपरि, भद्रा २५।५७ यावत्।
२३	७	अग्निवासः दि.४।०६ यावत् ततः सिद्धियोगः।
२४	८	शिववासः-अमृतयोगः दि.३।३८ यावत् ततः अग्निवासः, पश्चिम-उत्तर यात्रा दि.११।१७ यावत्। पुष्टशुक्रः ३६।२६।
२५	९	गुरुगोविन्दसिंहजयन्ती। भद्रा २२।११ उपरि, उत्तर यात्रा दि.११।४५ यावत्, सिद्धियोगः दि.३।३८ उपरि,
२६	१०	उत्तराषाढ़ायां रविः १७।०६(दि.१।३६), अग्निवासः, शिववासः दि.४।०६ उ., पश्चिम उत्तरयात्रा दि.१२।४४ या. ततः पूर्वां विना यात्रा, पञ्चक(भदवा) समाप्तिः दि.१२।४४ उ.।
२७	११	दशतारकान्तो दि.२।१३ उपरि, शिववासः सं.५।११ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.२।१३ यावत्।
२८	१२	कर्मा१०, विश्वकर्मार्चा, अग्निवासः। ← खरमाससमाप्तिः,शुद्धारम्भः ने.माघमासारम्भः। शिववासः, अग्निवासः,
२९	१३	मासान्तः। पुत्रदाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। धर्मसावर्णिमन्वादिः। भद्रा १।५६ उ.३२।४० यावत्।
१	१४	नारायण १२, गोमयेनपारणं। मकरे रविः ३३।५३ (रा.७।१७), मु.३० समासमताकरं, सौम्यायन संक्रान्तिः पुण्यकालः दि.१२।०० उपरि पुण्याहः, तिलसंक्रान्तिः, माघस्नानारम्भः, प्रयागेकल्पवासारम्भः,←
२	१५	मासादिः, प्रदोष१३ व्रतं, शिववासः।)(अमृतयोगः रा.४।४२ यावत्। भद्रा २२।३७ यावत्। क्रय-विक्रय, देवादिप्रतिष्ठा, वधूप्रवेशः।
३	१६	प्रदोष १४ व्रतं, अग्निवासः,
४	१७	पौषीपूर्णिमा१५, स्नानदान-व्रतादौ, कौशिकीस्नानं तन्मन्त्रश्च-गाधिराजसुते देवि विश्वामित्रमुनेः श्वसः। ऋचीकभार्ये सत्यार्ये पापं मे हर कौशिकि।। शाकम्भरीजयन्ती। दक्षिण-पश्चिमयात्रा रा.४।२६ या. ततः पूर्वाविनायात्रा,)(

शकुनम्- पौषस्य यदि पञ्चम्यां शुक्लायां हिमवर्षणम्। तदा स्यान्महती वृष्टिः प्रावृट् काले न संशयः।
शकुनम्- पौषशुक्ले तु सप्तम्यामष्टम्यां नवमीतिथौ। यदि गर्जति पर्जन्यः शुभो गर्भस्तदा ध्रुवः।
शकुनम्- पौषे मेघः शुक्लषष्ठ्यां श्रावणे तर्हि वर्षणम्। यदि वृष्टिः पौषषष्ठ्यां भाद्रकृष्णे घनोदयः।।
शकुनम्- पौषशुक्लचतुर्दश्यां विद्युद्दर्शनमुत्तमम्। तेनाषाढे कृष्णपक्षे भवेन्मेघमहोदयः।।

मूलविचारः- रेवती/अश्विनी ति.७ रवि दि.११।४५ तः ति.९ मंगल दि.२।१३ यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	वक्री शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि
१ चं.	७।१९।१२।५०	९।०६।२४।१२	१०।०७।२८।५३	८।१६।०१।१८	९।१५।०७।५१	७।०७।२७।३३
२ मं.	७।१९।५४।५१	९।०६।५५।२७	१०।०७।४४।५२	८।१५।२६।४६	९।१५।१४।१७	७।०७।२४।२२
३ बु.	७।२०।३६।५२	९।०७।२५।१२	१०।०८।००।५१	८।१४।५१।४०	९।१५।२०।४४	७।०७।२१।११
४ गु.	७।२१।१८।५२	९।०७।५४।५७	१०।०८।१६।५०	८।१४।१६।३१	९।१५।२७।११	७।०७।१८।००
५ शु.	७।२२।००।५२	९।०८।२४।४२	१०।०८।३२।४८	८।१३।४१।२२	९।१५।३३।३८	७।०७।१४।४९
६ श.	७।२२।४२।५२	९।०८।५४।२७	१०।०८।४८।४६	८।१३।०६।१४	९।१५।४०।०५	७।०७।११।३९
७ र.	७।२३।२४।५२	९।०९।२४।१२	१०।०९।०४।४४	८।१२।३१।०६	९।१५।४६।३२	७।०७।०८।२९
८ चं.	७।२४।०७।१५	९।०९।११।३९	१०।०९।१७।१२	८।१२।०६।१८	९।१५।५३।५७	७।०७।०५।१८
९ मं.	७।२४।४९।३७	९।०८।५९।०६	१०।०९।२९।४०	८।११।४२।५०	९।१६।०१।२२	७।०७।०२।०६
१० बु.	७।२५।३१।५९	९।०८।४६।३३	१०।०९।४२।०८	८।११।१८।४२	९।१६।०८।४७	७।०६।५८।५६
११ गु.	७।२६।१४।२१	९।०८।३४।०१	१०।०९।५४।३६	८।१०।५४।३५	९।१६।१६।१२	७।०६।५५।४५
१२ शु.	७।२६।५६।४३	९।०८।२१।२९	१०।१०।०७।०४	८।१०।३०।२८	९।१६।२३।३६	७।०६।५२।३४
१३ श.	७।२७।३९।०५	९।०८।०८।५७	१०।१०।१९।३१	८।१०।०६।२१	९।१६।३१।००	७।०६।४९।२४
१४ र.	७।२८।२१।२७	९।०७।५६।२५	१०।१०।३१।५८	८।०९।४२।१४	९।१६।३८।२४	७।०६।४६।१४
१५ चं.	७।२९।०५।०७	९।०७।१०।३०	१०।१०।४५।२०	८।०९।३२।१८	९।१६।४५।४८	७।०६।४३।०३

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४३।००	१३।५७	१५।५३	१८।०६	२०।२६	२२।४०	०।५५	३।१२	५।२५	७।३४	९।२०	१०।५१	१२।२०
४३।०१	१३।५३	१५।४६	१८।०२	२०।२४	२२।३६	०।५१	३।०३	५।२०	७।३०	९।१६	१०।४७	१२।१६
४३।०२	१३।४८	१५।४४	१७।५७	२०।२०	२२।३१	०।४६	२।५९	५।१६	७।२५	९।११	१०।४२	१२।११
४३।०३	१३।४४	१५।४०	१७।५३	२०।१५	२२।१७	०।४२	२।५४	५।११	७।२१	९।०७	१०।३८	१२।०७
४३।०४	१३।३९	१५।३५	१७।४८	२०।११	२२।२२	०।३७	२।५०	५।०७	७।१६	९।०२	१०।३३	१२।०२
४३।०४	१३।३५	१५।३१	१७।४४	२०।०६	२२।१८	०।३३	२।४६	५।०३	७।१२	८।५८	१०।२९	११।५८
४३।०४	१३।३१	१५।२७	१७।४०	२०।०२	२२।१४	०।२९	२।४१	४।५८	७।०८	८।५४	१०।२५	११।५४
४३।०५	१३।२६	१५।२२	१७।३५	१९।५८	२२।०९	०।२४	२।३७	४।५४	७।०३	८।४९	१०।२०	११।४९
४३।०६	१३।२२	१५।१८	१७।३१	१९।५३	२२।०५	०।२०	२।३३	४।५०	६।५९	८।४५	१०।१६	११।४५
४३।०७	१३।१८	१५।१४	१७।२७	१९।४९	२२।०१	०।१६	०।२९	४।४६	६।५५	८।४१	१०।१२	११।४१
४३।०८	१३।१३	१५।०९	१७।२२	१९।४०	२१।५६	०।११	२।२८	४।४५	६।५०	८।३६	१०।०७	११।३६
४३।०९	१३।०९	१५।०५	१७।१८	१९।३६	२१।५२	०।०७	२।२४	४।४१	६।४६	८।३२	१०।०३	११।३२
४३।०९	१३।०५	१४।०१	१७।१४	१९।३२	२१।४८	०।०३	२।२०	४।३७	६।४२	८।२८	९।५९	११।२८
४३।०९	१३।००	१४।५६	१७।०९	१९।२७	२१।४३	२३।५८	२।१५	४।३२	६।३७	८।२३	९।५४	११।२३
४३।१०	१२।५६	१४।५२	१७।०५	१९।२३	२१।३९	२३।५४	२।११	४।२८	६।३३	८।१९	९।५०	११।१९

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ चं.	दि.८:०६-६:२४, दि.२:३६-३:५४।	रा.१०:१८-१२:०० रा.३:२४-५:०६।
२ मं.	दि.८:६-६:२४।दि.१:१८-२:३६।	रा.६:५४-८:३६।
३ बु.	दि.६:२४-१०:४३ दि.१२:०२-१:२०।	रा.१२:२-१:४३ रा.३:२४-५:०५।
४ गु.	दि.२:३६-५:१५।	रा.१२:१-१:४२ रा.५:४-६:४५।
५ शु.	दि.६:२४-१२:०२।	रा.८:३८-१०:२०।
६ श.	दि.६:४५-८:४ दि.१:२०-२:३६ दि.३:५७-५:१५	रा.५:१५-६:५७ रा.१:४२-३:२३ रा.४:४-६:४५
७ र.	दि.०:४२-१२:०१।	रा.१०:२०-१२:०१ रा.१:४२-३:२३।
८ चं.	दि.८:४-६:२३ दि.२:३८-३:५८।	रा.१०१८-१२:०० रा.३:२३-५:४।
९ मं.	दि.८:३-६:२२ दि.१:१६-२:३८।	रा.६:५७-८:३८।
१० बु.	दि.६:२२-१०:४१ दि.१२:००-१:१८।	रा.१२:००-१:४१ रा.३:३२-५:०३।
११ गु.	रा.२:३८-५:१३ दि.१२:००-१:४१।	रा.१२:००-१:४१।
१२ शु.	दि.६:२३-१२:०१।	रा.८:३८-१०:२०।
१३ श.	रा.६:४३-८:०३ रा.१:२०-२:३८ रा.३:५८-५:१७।	रा.५:१७-६:५८ रा.१:४८-३:२३ रा.४:३-६:४३।
१४ र.	दि.१०:४०-१२:०।	रा.१०:२०-१२:०१ रा.१:४३-५:६।
१५ चं.	दि.८:०३-६:२३ दि.२:३८-३:५८।	रा.१०:२०-१२:०१ रा.३:२३-५:०३।

७ रवौ वल्ली ८।३६।४५।२४ अयनांशाः२२।५०।२६

९ रा. ८ ७ चं. १० गु.६ बु ५ ११ ३ श १२ शु.४ सू. ल.१ २ के.मं.

१४ रवौ वल्ली ८।३६।४५।३१ अयनांशाः२२।५०।३०

८ रा. ७ ६ चं.९ गु.५ १० बु ४ श ११ ल.१ शु.३ सू. १२ २ के.मं.

विविधः-वैष्णवानामेकादशी व्रत निर्णयः- दशमी पञ्चपञ्चाशत् घटीकाचेत् प्रदृश्यते। तर्हि चैकादशी त्याज्या द्वादशीं समुपोषयेत्। दशमीपलमात्रेण त्याज्या चैकादशी तिथिः। मदिराविन्दुपातेन त्याज्यं गंगा घटो यथा। नारदपुराणानुसारेण-क्षये वाप्यथवृद्धौ संप्राप्ते वा दिनत्रये। उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यां तु पारणम्। कुर्मपुराणानुसारेण-तिथिक्षये तु संप्राप्ते उपोष्या द्वादशी भवेत्। दशमीशेषसंयुक्तां न कुर्वीत कदाचन। भविष्ये- दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्याद् अरुणोदयः। बुधाष्टमी पर्व- सूर्यग्रहण सन्निभा। पौषे मासि यदा देविशुक्लाष्टम्यां बुधो भवेत्। तदा तु सा महापुण्या महाभद्रेति कीर्तिता।। तस्यां स्नानं जपो होमस्तर्पणं विप्रभोजनम्। मत्प्रीतयेकृतं देविशत- साहस्रकं भवेत्।।

प्रातः कृत्यः- मन्त्र सँ पृथ्वी के प्रणाम करी-ॐ समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।। तकर बाद अपन सुविधा अनुसार प्रातः स्मरण करी।

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।१।।
सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः, सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च। सप्त स्वराः सप्त रसातलानि, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।२।।
सप्तार्णवाः सप्त कुलाचलाश्च, सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त। भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।३।।
पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः, स्पर्शी च वायुर्ज्वलितं च तेजः। नभः सशब्दं महता सहैव, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

अर्थ- ब्रह्मा,विष्णु,शिव सूर्य चन्द्रमा, मंगल,बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि राहु आ केतु- ई सब देवता हमर प्रातः कालक मंगल करथि।।१।। सनत्कुमार, सनक, सनन्दन, सनातन, आसुरि आ पिंगल ई सब ऋषिगण, षड्ज, ऋषभ,गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत तथा निषाद ई सप्त स्वर, अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल आ पाताल ई सातों कुलपर्वत, सप्तर्षिगण, सातों वन आ सातों द्वीप, भूर्लोक, भुवर्लोक आदि सातों लोक हमर प्रातःकालक मंगलमय करथि।।२।। गन्धयुक्त पृथ्वी, रसयुक्त जल, स्पर्शयुक्त वायु, प्रज्वलित तेज, शब्दसहित आकाश आ महत्तत्त्व- ई सभ हमर प्रातःकालक मंगल करथि।।३।।

• **शौचाचार-** शौचे यत्नः सदा कार्यः शौचमूलो द्विजः स्मृतः। शौचाचार विहीनस्य समस्ता निष्फलाः क्रियाः।। शौचाचारमे सदा प्रयत्नशील रहक चाहि, किया त ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यक मूल शौचाचारे अछि। शौचाचारक पालन नै कयलापर सभ क्रिया निष्फल भ जाइत अछि। शौच-विधिः- शौच बाहर जयबा क होय त गाँमसँ नैर्ऋत्यामिषुविक्षेपमतीत्याभ्यधिकं भुवः। अर्थात् नैर्ऋत्यकोण (दक्षिण आ पश्चिमके बीच) कनिक दूर जाय। घर में शौचालय होयत अपन सुविधानुसार मूत्र-पुरीषक उत्सर्ग करी। जनऊ क दहिना कानपर चढ़ा लेथि। शौच दिवा सुध्यासु कर्णस्थब्रह्मसूत्र उदङ्मुखः। कुर्यान्मूत्रपुरीषे तु रात्रौ च दक्षिणामुखः। दिन में उत्तर दिश मुह क आ राति मे दक्षिण दिश मुह क बैसि शौच त्याग करी। शौचकाल नै बजवाक चाही, नै जोर सँ सांस लेवाक चाही आ नै थूकवाक चाही। शौचोपरान्त मिटटी, अथवा यथोपलब्ध वस्तु सँ हाथ पैर ठीक सँ साफ कय आचमन करी।

माघकृष्णपक्षः।।

शक १९४३, संवत्२०७८, सन् १४२९, उत्तरायणं, दक्षिणगोलः, शिशिर ऋतुः, पूर्व कालः। दिनांक १८ जनवरीतः १ फरवरी यावत् सन् २०२२ इ। पूर्वोदितः गुरुः, पूर्वोदितः शुक्रः। शुद्ध

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्र	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करण	द. प.	राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	राश्यादिस्पष्टसूर्यः	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	ने.	अं.	
१	मं.	५८।३४	रा.शे६।०६	पुष्य	५६।११	रा.शे६।२४	विष्कुम्भ	१६।५६	वालव	२६।४५	कर्क	अहोरात्रं	६।०४।१६।००	२६।२२	६।४४	५।१६	२८	५	१८	माघे कमलास्नानं महापुण्यप्रदं, लक्ष्मणसंवत्९१० प्रारम्भः। मकरे मूलकं त्यजेत्। यानादिचालनं, शिववासः, अग्निवासः। मूले धनुषि च मंगल ४८।३५।
२	बु.	६०।००	अहोरात्र	आश्लेषा	६०।००	अहोरात्र	प्रीति	२३।३०	तैतिल	२६।५०	कर्क	अहोरात्रं	६।०५।१७।१७	२६।२५	६।४४	५।१६	२९	६	१९	ट्यूबेल, वोरिंग, टंकी प्रभृति स्थापनं, मीलचालनं, विद्यारम्भः, सिद्धियोगः,
२	गु.	०१।०६	प्रा.७।०६	आश्लेषा	०३।००	प्रा.७।५५	आयुष्मान	२२।१४	गर	१।०६	कर्क ३।००	दि.७।५२	६।०६।१८।३४	२६।२८	६।४३	५।१७	३०	७	२०	शनिवेधात् विवाहः नैव, ट्यूबवेल वोरिंग टंकीप्रभृतिः स्थापनं, विद्यारम्भः आश्लेषायां, अग्निवासः, अमृतयोगः प्रा.७।६ उपरि।
३	शु.	०२।२१	प्रा.७।३८	मघा	०५।३४	दि.८।५५	सौभाग्य	१६।५१	भद्र	२।२१	सिंह	अहोरात्रं	६।०७।१९।५१	२६।३१	६।४२	५।१८	१	८	२१	भालचन्द्र ४ व्रतं, श्रीगणेशावतारः, गणेशपूजनं, भद्रा २।२१ यावत्। अमृतयोगः-शिववासः प्रा.७।३८ उपरि।
४	श.	०२।१७	प्रा.७।३६	पूर्वाफाल्गुनी	०६।५१	दि.६।२६	शोभन	१६।३०	वालव	२।१७	सिंह २१।५३	दि.३।२७	६।०८।२१।०८	२६।३४	६।४२	५।१८	२	९	२२	ईष्टिकारम्भः-यानादिचालनं-विपणि उत्तराफाल्गुन्यां दि.६।२६ उपरि। शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः प्रा.७।३६ यावत्।
५	र.	००।५७	प्रा.७।०३	उत्तराफाल्गुनी	०६।५७	दि.६।२७	अतिगण्ड	१२।११	तैतिल	००।५७	कन्या	अहोरात्रं	६।०९।२२।२५	२६।३६	६।४१	५।१९	३	१०	२३	षष्ठीतिथिमानं ५७।३० रा.शे५।४१, विवाहः दिवारात्रौ, विपणि, शिववासः प्रा.७।०३ यावत् ततः अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.६।२७ उपरि।
७	चं.	५४।५७	रा.४।३६	हस्त	०५।५२	दि.६।०१	सुकर्मा	६।५६	भद्रा	२६।४२	कन्या ३४।५४	रा.१२।१६	६।१०।२३।३६	२६।३८	६।४१	५।१९	४	११	२४	श्रीरामानन्दाचार्यजयन्ती, अपूपाष्टका, विवाहः दिवारात्रौ, वधूप्रवेशः, विपणि, यानादिचालनम्। शूल ५३।२१, श्रवणे रविः २०।०६ (दि.२।४५), भद्रा २६।४२ यावत्।
८	मं.	५०।३६	रा.२।५४	चित्रा	०३।५६	दि.८।१४	धृति	१।००	वालव	२२।४७	तुला	अहोरात्रं	६।११।२४।४६	२६।४०	६।४०	५।२०	५	१२	२५	शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः-दक्षिण-पश्चिम यात्रा रा.२।५४ यावत्।
९	बु.	४५।३४	रा.१२।५३	स्वाती	०१।०६	प्रा.७।०७	गण्ड	४७।६	तैतिल	१८।०५	तुला ४४।००	रा.१२।१६	६।१२।२५।५६	२६।४३	६।४०	५।२०	६	१३	२६	विशाखा नक्षत्रमानं ५७।३१ रा.शे५।४०, भारतीय गणतन्त्रदिवसः, ध्वजारोहणं, राष्ट्रगानम्।
१०	गु.	४०।०३	रा.१०।४०	अनुराधा	५३।४७	रा.४।०६	वृद्धि	३६।३५	वणिज्	१२।४६	वृश्चिक	अहोरात्रं	६।१३।२७।०६	२६।४३	६।३६	५।२१	७	१४	२७	विवाहः अनुराधायां रा.४।०६ यावत्, विपणि, वधूप्रवेशः। अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.४।०६ यावत्, पश्चिम-उत्तरयात्रा अहोरात्र, भद्रा १२।४६ उ.,
११	शु.	३४।१४	रा.८।२०	ज्येष्ठा	४६।४०	रा.२।३१	ध्रुव	३१।४७	वालव	७।०६	वृश्चिक४६।४०	रा.२।३१	६।१४।२८।१६	२६।४६	६।३६	५।२१	८	१५	२८	षट्तिलाएकादशी ११ व्रतं सवेषाम्। दग्धतिथि रा.८।२० उ., शिववासः, सिद्धियोगः-उत्तरयात्रा रा.८।२० यावत्। वक्रगत्याः मूले धनुषि च बुधः ४०।१०।
१२	श.	२८।२१	सं.५।५८	मूल	४५।३०	रा.१२।५०	व्याघात्	२३।५०	कौलव	१।१८	धनु	अहोरात्रं	६।१५।२९।०६	२६।५२	६।३८	५।२२	९	१६	२९	गोदुग्धेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, दग्धतिथि सं.५।५८ या., शिववासः, अग्निवासः, भद्रा २२।३४ उपरि।
१३	र.	२२।३४	दि.३।३६	पूर्वाषाढ़ा	४१।२८	रा.११।१३	हर्षण	१६।०३	वणिज्	२२।३४	धनु ५५।३४	रा.शे४।५२	६।१६।३०।३६	२६।५३	६।३८	५।२२	१०	१७	३०	प्रदोष १४ व्रतं, नरकनिवारण १४ व्रतं, प्रदोषे शिवार्चनं सहस्राश्वमेधसमफलदं, कुशेश्वर-कपिलेश्वरप्रतिष्ठादिनम्। सिद्धियोगः दि.३।३६ यावत् ततः अग्निवासः,
१४	चं.	१७।०७	दि.१।२७	उत्तराषाढ़ा	३७।५३	रा.९।४६	वज्र	८।३०	शकुनी	१७।०७	मकर	अहोरात्रं	६।१७।३१।३०	२६।५६	६।३७	५।२३	११	१८	३१	सोमवतीअमावस्या, सोमवारीव्रत, अग्निवासः दि.१।२७ यावत् ततः शिववासः। ←पञ्चकारम्भः(भदवा) रा.८।३२ उपरि।
३०	मं.	१२।१०	दि.११।२८	श्रवण	३४।५०	रा.८।३२	सिद्धि	००।१७	नाग	१२।१०	मकर	अहोरात्रं	६।१८।३२।२४	२७।०२	६।३६	५।२४	१२	१९	१	फरवरी२, गाघी अमावस्या, मौनीअमावस्या, स्नानदानश्राद्धादौ पुण्यतमा, कलियुगादिः, कलिगताब्दाः५१२२,कलिभोग्याब्दाः४२६८८०। व्यतीपात्५४।२१, शिववासः दि.११।२८ यावत्,←

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्र

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध वक्री राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः वक्री राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ मं.	७।२६।४८।४७	६।०६।२४।३५	१०।१०।५८।४२	८।०६।२२।२२	६।१६।५३।१२	७।०६।३६।५२	४३।११	१२।२२	१४।४८	१७।०१	१६।१६	२१।३५	२३।५०	२।०७	४।२४	६।२६	८।१५	६।४६	११।१५
२ बु.	८।००३२।२७	६।०५।३८।४०	१०।११।११।०४	८।०६।१२।२६	६।१७।००।३६	७।०६।३६।४१	४३।१२	१२।१८	१४।४४	१६।५७	१६।१५	२१।३१	२३।४६	२।०३	४।२०	६।२५	८।११	६।४२	११।११
२ गु.	८।०१।१६।०७	६।०४।५२।४५	१०।११।२५।२६	८।०६।०२।३१	६।१७।०८।००	७।०६।३३।३०	४३।१३	१२।१४	१४।४०	१६।५३	१६।११	२१।२७	२३।४२	१।५६	४।१६	६।२१	८।०७	६।३८	११।०७
३ शु.	८।०१।५६।४७	६।०४।०६।५०	१०।११।३८।४८	८।०५।५२।३६	६।१७।१५।२३	७।०६।३०।१८	४३।१४	१२।१०	१४।३६	१६।४६	१६।०७	२१।२३	२३।३८	१।५५	४।१२	६।१७	८।०३	६।३४	११।०३
४ श.	८।०२।४३।२६	६।०३।२०।५५	१०।११।५२।१०	८।०५।४२।४१	६।१७।२२।४६	७।०६।२७।०६	४३।१५	१२।०६	१४।३२	१६।४५	१६।०२	२१।१८	२३।३३	१।५०	४।०७	६।१२	७।५८	६।२६	१०।५८
५ र.	८।०३।२७।०५	६।०२।३५।००	१०।१२।०५।३१	८।०५।३२।४६	६।१७।३०।०६	७।०६।२३।५४	४३।१६	१२।०२	१४।२८	१६।४०	१५।५८	२१।१४	२३।२६	१।४६	४।०३	६।०८	७।५४	६।२५	१०।५४
७ चं.	८।०४।०८।५०	६।०१।५८।१८	१०।१२।१६।०६	[illegible]	६।१७।३७।२६	७।०६।२०।४८	४३।१८	१२।२६	१४।५२	१६।६६	१८।५४	२१।१०	२३।२५	१।४२	३।५६	६।०४	७।५०	६।२१	१०।५०
८ मं.	८।०४।५०।३५	६।०१।२१।३६	१०।१२।३२।०२	८।०५।०७।५४	६।१७।४४।४५	७।०६।१७।३७	४३।२०	१२।२३	१४।४६	१६।६२	१८।५०	२१।०६	२३।२१	१।३८	३।५५	६।००	७।४६	६।१७	१०।४६
९ बु.	८।०५।३२।२०	६।००।४४।५५	१०।१२।४६।२४	८।०४।५५।५८	६।१७।५२।०३	७।०६।१४।२६	४३।२२	१२।१६	१४।४२	१६।५८	१८।४६	२१।०२	२३।१७	१।३४	३।५१	५।५६	७।४२	६।१३	१०।४२
१० गु.	८।०६।१४।०५	६।००।०८।१३	१०।१२।५६।४८	८।०४।०३।०२	६।१७।५६।२१	७।०६।११।१५	४३।२४	१२।१४	१४।११	१६।२४	१८।४२	२०।५८	२३।१३	१।३०	३।४७	५।५२	७।३८	६।०६	१०।३८
११ शु.	८।०६।५५।५०	५।२६।३१।३१	१०।१३।१३।२२	८।०४।१७।०५	६।१८।०६।३६	७।०६।०८।०४	४३।२५	१२।११	१४।०७	१६।२०	१८।३८	२०।५४	२३।०६	१।२६	३।४३	५।४८	७।३४	६।०५	१०।३४
१२ श.	८।०७।३७।३५	५।२६।५४।४६	१०।१३।२६।४६	८।०४।०८।०७	६।१८।१३।५७	७।०६।०४।५४	४३।२६	१२।०७	१४।०३	१६।१६	१८।३४	२०।५०	२३।०५	१।२२	३।३६	५।४४	७।३०	६।०१	१०।३०
१३ र.	८।०८।१६।१६	५।२८।१८।०८	१०।१३।४०।१०	८।०३।५६।०८	६।१८।२१।१४	७।०६।०१।४४	४३।२७	१२।०२	१३।५६	१६।११	१८।२६	२०।४५	२३।००	१।१७	३।३४	५।३६	७।२५	८।५६	१०।२५
१४ चं.	८।०८।५६।५६	५।२८।४१।२६	१०।१३।५४।२३	८।०३।५०।०८	६।१८।२८।३०	७।०५।५८।३३	४३।२८	११।५८	१३।५४	१६।०७	१८।२५	२०।४१	२२।५६	१।१३	३।३०	५।३५	७।२१	८।५२	१०।२१
३० मं.	८।०६।४०।३३	५।२८।२४।५०	१०।१४।०८।०६	८।०३।४२।०६	६।१८।३५।४६	७।०५।५५।२२	४३।३१	११।५४	१३।५०	१६।०३	१८।२१	२०।३७	२२।५२	१।०६	३।२६	५।३१	७।१७	८।४८	१०।१७

५ रवौ बल्ली ८।३६।४५।३८ अयनांशाः२२।५०।३१

८ रा. । ७ । ६ । गु.५ । बु. सू.४ चं. । श शु.३ मं. । २ के. । १२ । ११ । १० ल.१ । ९

१४ रवौ बल्ली ८।३६।४५।४५ अयनांशाः२२।५०।३३

८ रा. । ७ । ६ । गु.५ । बु. सू.४ चं. । श शु.३ मं. । २ के. । १२ । ११ । १० ल.१ । ९

विविधविषयाः-माघे प्रातःस्नानफलं-यो माघमास्युपसि सूर्यकरान्विताभ्रे स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे। उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ।। मकरार्के प्रातःस्नानमन्त्रः- मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव। प्रातः स्नानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातःस्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्।। माघे कुत्रापि स्नानफलम्-स्वर्गलोके चिरं वासो येषां मनसि वर्त्तते। यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे।। चतुर्थ्यां गणेशोत्पत्तिः- सर्वदेवमयः साक्षात्सर्वमंगलकारकः। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः।। तत्र गणेशं यथोपचारैः संपूज्य रात्रौ व्रतपूर्वकं जागरणं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणान् भोजयेत्, मोदकादिकं च दद्यात्। चतुर्दश्यां नरकनिवारण चतुर्दशीव्रतं- चतुर्दशीसमं नास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च । प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा।।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन		दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	मं.	दि.८:०३-६:२२ दि.१:१६-२:३८।	रा.६:५७-८:३८।
२	बु.	दि.६:२२-१०:४१ दि.१२:००-१:१६।	रा.१२:०० १:४१ रा.३:२२ ५:०३।
२	गु.	दि.२:३६-५:१७।	रा.१२:०१-१:४२ रा.५:०३-६:४३।
३	शु.	दि.६:२३-१२:०१।	रा.८:३६-१०:२०।
४	श.	प्र.६:४५-८:०२ दि.१२:१२-२:४० दि.३:५६-५:१८।	सं.५:१८-६:५६ रा.१:४५-३:२२ रा.५:०२-६:४२।
५	र.	दि.१०:४२-१२:२१।	रा.१०:२१-१२:०२ रा.१:४२-३:२२।
७	चं.	दि.८:०२-६:२२ दि.२:४०-३:५६।	रा.१०:२१-१२:०२ रा.३:२२-५:०२।
८	मं.	दि.८:०१-६:२१ दि.१:२१-२:४१।	रा.७:००-८:४१।
९	बु.	दि.६:२०-१०:४० दि.१२:००-१:२०।	रा.१२:०० १:४० रा.३:२० ५:००।
१०	गु.	दि.२:४०-४:००।	रा.१२:००-१:४० रा.५:००-६:३६।
११	शु.	दि.६:२१-१२:०१।	रा.८:४१-१०:२१।
१२	श.	प्र.६:३६-८:०० दि.१२:२१-२:४१ दि.४:०१-५:२१।	सं.५:२१-७:०१ रा.१:४१-३:२१ रा.५:००-६:३८।
१३	र.	दि.१०:४१-१:२२।	रा.१०:२२-१२:०२ रा.१:४१-३:२०।
१४	चं.	दि.७:५८-६:१६ दि.२:४३-४:०३।	रा.१०:२२-१२:०१ रा.३:१६-४:५८।
३०	म.	दि.७:५७-६:१८ दि.१:२१-२:४२।	रा.७:०३-८:४२।

मूलविचारः- आश्लेषा/मघा ति.१ मंगल रा.शे.६।२४ ततः ति.३ शुक्र दि.८।५५ यावत्।
ज्येष्ठा/मूल ति.१० गुरु रा.४।०६ ततः ति.१२ शनि रा.१२।५० यावत्।

दन्तधावन(दातमनि) विधि- (आह्निकसूत्रावली)

मुखे पर्युषिते नित्यं भवत्यप्रयतो नरः। दन्तधावनमुद्दिष्टं जिह्वोल्लेखनिका तथा।। अतो मुखविशुद्ध्यर्थं गृह्णीयाद् दन्तधावनम्। आचान्तोऽप्यशुचिर्नित्यमकृत्वा दन्तधावनम्।।

अर्थात् मुखशुद्धिकें विना पूजा-पाठ, मन्त्र-जप आदि निष्फल होइत अछि, अतःप्रतिदिन मुख-शुद्ध्यर्थ दन्तधावन अथवा मंजनादि अवश्य करबा क चाहि। शौचादिक बाद पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैसि ओहिना मन्त्र पढ़ि दातमनि क अभिमन्त्रित करी। मन्त्र- ॐ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च। ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते।। मुखदुर्गन्धनाशाय दन्तानां च विशुद्धये। ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम्।। मन्त्र पढ़ि मोन भऽ दन्त दातमनि करी। ग्राह्य दातुनः- चिड़चिड़ी, गूलर, आम, नीम, बेल, करैया, करंज, खैर आदि क दातुन उत्तम मानल जाइत अछि। दूध आ कण्टक वाला वृक्षक दातुन से हो शास्त्र विहित अछि। सर्वे कण्टकिनः पुण्याः क्षीरिणश्च विशेषतः।। (हारीतस्मृति)

क्षौर कर्म :-एकादशी, अमावस्या, चतुर्दशी, पूर्णिमा, संक्रान्ति, व्यतीपात, यात्रा समय एवं पुण्य-कार्यमे तथा प्रातः संध्या कऽ लेलाक बाद क्षौर कर्म नहि करी।

भानुर्मासं क्षपयति तथा सप्त मार्तण्डसूनुः। भौमश्चाष्टौ वितरति बुधाः पञ्चमासम्।। सप्तेन्दुर्दशसुरगुरुः शुक्र एकादशैति। प्राह्मुर्गर्गप्रभृति मुनयः क्षौरकार्येषु नूनम् ।। अर्थ- रविदिन क्षौर कैलासँ १ मास, मंगलकेँ ८मास एवं शनि दिन ७ मास आयु क्षीण होइत अछि। बुध दिन ५मास, सोम दिन७ मास, गुरुवारकें १० मास शुक्रवार कें ११ मास आयु बढ़ैत अछि। किन्तु एक पुत्रवाला सोम क्षौर दिन नहि करथि। तैलः- षष्ठी, एकादशी, द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, व्यतीपात, व्रत एवं श्राद्ध दिन तेल नहि लगावी।

इन्दुक्षयेऽपि संक्रान्तौ रवौ पाते दिनक्षये। अत्राभ्यङ्गो न दोषाय प्रातः पापप्रनुत्तये।। अर्थ-कार्तिक कृष्ण पक्षक १४ दिन तैल अवश्य लगयबाक चाही। ओहि दिन यदि अमावस्या, संक्रान्ति, रविवार तथा रात्रि भऽ गेल हो तइयो दोष नहि। प्रातः काल लगौलासँ सब पाप दूर भऽ जाइत अछि। तैलाभ्यंगे रवौ तापं सोमे शोभा कुजे मृतिः। बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम्।। रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका। गोमये शुक्रवारे च तैलाभ्यङ्गो न दोषभाक्।। अर्थ- तैल रविदिन लगौलासँ ताप, मंगलदिन मृत्यु, गुरुवारकें हानि एवं शुक्रवारके दुःख होइत अछि। यदि निषेध दिनमे लगयबाक हो त रविदिन तेलमे पुष्प, गुरुवारमे दूर्वा, मंगलदिन मृत्तिका, शुक्रदिन गोबर, दऽ क

तिथयः दिनानि		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१	बु.	०७।५४	दि.९।४४	धनिष्ठा	३२।३९	रा.७।३८	वरीयान्	४८।४२	वव	७।५४	मकर ३।४४	दि.८।०५	९।१९।३३।१८	२७।०६	६।३५	५।२५	१३
२	गु.	०४।३०	दि.८।२२	शतभिषा	३१।१५	रा.७।०४	परिघ	४३।३१	कौलव	४।३०	कुम्भ	अहोरात्रं	९।२०।३४।१२	२७।०९	६।३४	५।२६	१४
३	शु.	०२।०६	दि.७।२४	पूर्वाभाद्रपद	३०।५७	रा.६।५६	शिव	३९।१२	गर	२।०६	कुम्भ १६।०२	दि.१२।५९	९।२१।३५।०६	२७।१२	६।३४	५।२६	१५
४	श.	००।५४	प्रा.६।५४	उत्तराभाद्रपद	३१।५२	रा.७।१७	सिद्ध	३५।५३	भद्रा	००।५४	मीन	अहोरात्रं	९।२२।३६।००	२७।१५	६।३३	५।२७	१६
५	र.	००।५७	प्रा.६।५४	रेवती	३४।०१	रा.८।०८	साध्य	३३।३१	वालव	००।५७	मीन३४।०१	रा.८।०८	९।२३।३६।५४	२७।१८	६।३२	५।२८	१७
६	चं.	०२।२३	दि.७।२६	अश्विनी	३७।२९	रा.९।३१	शुभ	३२।१५	तैतिल	२।२३	मेष	अहोरात्रं	९।२४।३७।५०	२७।२१	६।३२	५।२८	१८
७	मं.	०४।५८	दि.८।३०	भरणी	४२।०४	रा.११।२०	शुक्ल	३१।४७	वणिज्	४।५८	मेष ५८।२७	राशे५।५३	९।२५।३८।४६	२७।२४	६।३१	५।२९	१९
८	बु.	०८।४५	दि.१०।००	कृत्तिका	४७।३८	रा.१।३३	ब्रह्म	३४।२३	वव	८।४५	वृष	अहोरात्रं	९।२६।३९।४२	२७।२८	६।३०	५।३०	२०
९	गु.	१३।२२	दि.११।५०	रोहिणी	५३।५२	रा.४।०२	ऐन्द्र	३३।११	कौलव	१३।२२	वृष	अहोरात्रं	९।२७।४०।३८	२७।३१	६।३०	५।३०	२१
१०	शु.	१८।४०	दि.१।५७	मृगशिरा	६०।००	अहोरात्रं	वैधृति	३४।२९	गर	१८।४०	वृष २७।०९	सा.५।२१	९।२८।४१।३१	२७।३४	६।२९	५।३१	२२
११	श.	२४।०७	दि.४।०७	मृगशिरा	००।२७	प्रा.६।३९	विष्कुम्भ	३५।५३	भद्रा	२४।०७	मिथुन	अहोरात्रं	९।२९।४२।३१	२७।३७	६।२९	५।३१	२३
१२	र.	२९।१७	सं.६।१०	आर्द्रा	०६।५७	दि.९।१४	प्रीति	३७।००	वावलव	२९।१७	मिथुन ५६।२४	रा.शे५।२	१०।००।४३।२८	२७।४०	६।२८	५।३२	२४
१३	चं.	३३।४९	रा.७।५८	पुनर्वसु	१२।५३	दि.११।३६	आयुष्यमान	३७।३९	कौलव	१।३३	कर्क	अहोरात्रं	१०।०१।४४।०६	२७।४३	६।२७	५।३३	२५
१४	मं.	३७।२१	रा.९।२३	पुष्य	१८।०३	दि.१।४०	सौभाग्य	३४।३४	गर	५६।३५	कर्क	अहोरात्रं	१०।०२।४४।४४	२७।४६	६।२७	५।३३	२६
१५	बु.	३९।४८	रा.१०।२१	आश्लेषा	२२।०६	दि.३।१६	शोभन	३६।३४	भद्रा	८।३५	कर्क २२।०६	दि.३।१६	१०।०३।४५।२२	२७।५०	६।२६	५।३४	२७

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ बु.	८।१०।२१।१०	८।२८।२७।११	१०।१४।२२।०८	८।११।०९।०२	९।१८।४३।०२	७।०५।५२।११	४३।३३	११।५०	१३।४६	१५।५९	१८।१७	२०।३३	२२।४८	१।०५	३।२२	५।२७	७।१३	८।४४	१०।१३
२ गु.	८।११।०१।४७	८।२८।३०।१२	१०।१४।३९।००	८।११।४३।२८	९।१८।५०।१७	७।०५।४९।००	४३।३५	११।४६	१३।४२	१५।५५	१८।१३	२०।२९	२२।४४	१।०१	३।१८	५।२३	७।०९	८।४०	१०।०९
३ शु.	८।११।४२।२४	८।२८।३३।१३	१०।१४।४९।५२	८।१२।१७।५४	९।१८।५७।३२	७।०५।४५।४९	४३।३७	११।४१	१३।३७	१५।५०	१८।०८	२०।२४	२२।३९	०।५६	३।१३	५।१८	७।०४	८।३५	१०।०४
४ श.	८।१२।२३।०१	८।२८।३६।१४	१०।१५।०३।४४	८।१२।५२।२०	९।१९।०४।४७	७।०५।४२।३९	४३।३८	११।३७	१३।३३	१५।४६	१८।०४	२०।२०	२२।३५	०।५२	३।०९	५।१४	७।००	८।३१	१०।००
५ र.	८।१३।०३।३८	८।२८।३९।१५	१०।१५।१७।३६	८।१३।२६।४६	९।१९।१२।०२	७।०५।३९।२९	४३।३९	११।३३	१३।२९	१५।४२	१८।००	२०।१६	२२।३१	०।४८	३।०५	५।१०	६।५६	८।२७	९।५६
६ चं.	८।१३।४९।३७	८।२९।२१।५६	१०।१५।३१।४८	८।१४।०२।०३	९।१९।१९।२४	७।०५।३६।१८	४३।४१	११।२९	१३।२५	१५।३८	१७।५६	२०।१२	२२।२७	०।४४	३।०१	५।०६	६।५२	८।२३	९।५२
७ मं.	८।१४।३५।३६	९।००।०४।३७	१०।१५।४६।००	८।१४।३८।१४	९।१९।२६।४६	७।०५।३३।०७	४३।४३	११।२५	१३।२१	१५।३४	१७।५२	२०।०८	२२।२३	०।४०	२।५७	५।०२	६।४८	८।१९	९।४८
८ बु.	८।१५।२१।३५	९।००।४७।१८	१०।१६।००।१२	८।१५।१३।५८	९।१९।३४।०८	७।०५।२९।५६	४३।४५	११।२०	१३।१६	१५।२९	१७।४७	२०।०३	२२।१८	०।३५	२।५२	४।५७	६।४३	८।१४	९।४३
९ गु.	८।१६।०७।३३	९।०१।२९।५९	१०।१६।१४।२४	८।१५।४९।४१	९।१९।४१।२९	७।०५।२६।४५	४३।४७	११।१६	१३।१२	१५।२५	१७।४३	१९।५९	२२।१४	०।३१	२।४८	४।५३	६।३९	८।१०	९।३९
१० शु.	८।१६।५३।३१	९।०२।१२।४०	१०।१६।२८।३६	८।१६।२५।२४	९।१९।४८।५०	७।०५।२३।३४	४३।४८	११।१२	१३।०८	१५।२१	१७।३९	१९।५५	२२।१०	०।२७	२।४४	४।४९	६।३५	८।०६	९।३५
११ श.	८।१७।३९।२९	९।०२।५५।२०	१०।१६।४२।४८	८।१७।०१।०७	९।१९।५६।११	७।०५।२०।२४	४३।४९	११।०८	१३।०४	१५।१७	१७।३५	१९।५१	२२।०६	०।२३	२।४०	४।४५	६।३१	८।०२	९।३१
१२ र.	८।१८।२५।३७	९।०३।३८।००	१०।१६।५६।५९	८।१७।३६।५०	९।२०।०३।३२	७।०५।१७।१४	४३।५०	११।०४	१३।००	१५।१३	१७।३१	१९।४७	२२।०२	०।१९	२।३६	४।४१	६।२७	७।५८	९।२७
१३ चं.	८।१९।०९।०८	९।०४।४८।४६	१०।१७।११।१३	८।१८।२०।४३	९।२०।१०।५४	७।०५।१४।०३	४३।५२	११।००	१२।५६	१५।०९	१७।२७	१९।४३	२१।५८	०।१५	२।३२	४।३७	६।२३	७।५४	९।२३
१४ मं.	८।१९।५२।४९	९।०५।५९।३२	१०।१७।२५।२७	८।१९।०४।३६	९।२०।१८।१६	७।०५।१०।५२	४३।५४	१०।५७	१२।५३	१५।०६	१७।२४	१९।४०	२१।५५	०।१२	२।२९	४।३४	६।२०	७।५१	९।२०
१५ बु.	८।२०।३६।३०	९।०७।१०।१८	१०।१७।३९।४१	८।१९।४८।२९	९।२०।२५।३८	७।०५।०७।४१	४३।५६	१०।५३	१२।४९	१५।०२	१७।२०	१९।३६	२१।५१	०।०८	२।२५	४।३०	६।१६	७।४७	९।१६

माघी पूर्णिमा-परयुताग्राह्या। यथोक्तं ब्रह्मवैवर्ते "भूतविद्धा न कर्तव्य दर्शपूर्ण कदाचन।। माघस्थयोश्च जीवेन्द्वोर्महामाघीति कथ्यते। ज्योतिषे मेषपृष्ठे यदासौरिः सिंहे च गुरु चन्द्रमाः। भास्करः श्रवणर्क्षे च महामाघीति सा स्मृता।। अचलासप्तम्या- सप्तार्कवदरीपत्राणि शिरसि निधाय मौनी सन् स्नायात्तत्र।। स्नानमन्त्रः:-यद्यज्जन्मकृतं पापं मयासप्तसु जन्मसु। तन्मे रोगञ्चशोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी।। एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाता ज्ञातञ्च यत्पुनः।। इति सप्त विधं पापं स्नानं मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवी हर माकरि सप्तमी।।

माघशुक्लपक्षः।।

शक १९४३, संवत्२०७८, सन् १४२९, उत्तरायण, दक्षिणगोलः, शिशिर ऋतुः, पूर्वे/दक्षिणे कालः, ।
दिनांक २ फरवरीतः १६ यावत् सन् २०२२ ई।

दिनांकाः ने.	अं.	
२०	२	शिशिरनवरात्रारम्भः,कलशस्थापनं,श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, विवाहः दिवारात्रौ, मुण्डनं-देवादिप्रतिष्ठा-विद्यारम्भश्च द्वितीयायां दि.९।४४ उपरि। नामकरणं, कर्णवेधः। चन्द्रदर्शनं,मु३० फलंसमम्।
२१	३	रेमन्त पूजा,मुण्डनं, उपनयनं, देवादिप्रतिष्ठा, कर्णवेधः, विद्यारम्भः, वधूप्रवेशः शतभिषायां रा.७।०४ यावत्। अग्निवासः-शिववासः दि.८।२२ यावत् ततः अमृतयोगः,
२२	४	वदरी३, कुन्दकुसुमैः पार्वतीपूजनं, श्रीगणेश४ व्रतं, कुन्दकुसुमे पार्वतिपूजनं, अमृतयोगः-अग्निवासः दि.७।२४ उपरि। भद्रा ३१।३० उपरि।
२३	५	वसन्तपञ्चमी, सरस्वतीपूजनं, तक्षकपूजा, पश्चिम-उत्तराभिमुखा हलप्रवाहः। अग्निवास प्रा.६।५४ यावत् ततः शिववासः, भद्रा ००।५४ यावत्।
२४	६	धनिष्ठायां रविः २६।५७ (दि.५।२०), विवाहः दिवारात्रौ, देवादिप्रतिष्ठा, पञ्चक(मदवा) समाप्तिः रा.८।०८ उपरि, शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः प्रा.६।५४ यावत्।
२५	७	शीतलाषष्ठी। गजपूजा, विल्वाभिमन्त्रणं, मुण्डनं-देवादिप्रतिष्ठा-कर्णवेधः-दीक्षाग्रहणं सप्तम्यां दि.७।२६ उपरि। विवाहः-वधूप्रवेशः अश्विन्यां रा.९।३१ यावत्। विपणि, वृक्षादिरोपणं, ♓
२६	८	पत्रिकाप्रवेशः, महारात्रिनिशापूजा, रात्रिजागरण, ब्रह्मसावर्णिमन्वादि, अचलासप्तमी ७ व्रतं, अरुणोदये स्नानं सूर्यग्रहणसमं गंगायां शतसूर्यग्रहणसमं प्रयागे च कोटिसूर्यग्रहणसमं फलं। भीष्माष्टमी, ◆
२७	९	महाष्टमीव्रतं। दीक्षाग्रहणं, शिववासः दि.१०।०० उपरि, भद्रा ३६।५२ यावत्। ← शिववासः-अग्निवासः-सिद्धियोगश्च दि.९।४४ उपरि, पूर्वयात्रा दि.८।०५ यावत् ततः पश्चिम यात्रा रा.७।३८ यावत्।
२८	१०	महानन्दानवमी ९। महानवमीव्रतं,त्रिशूलिनीपूजा, श्रीहरसूब्रह्मदेवजयन्ती९। मुण्डनं-विवाहः-देवादिप्रतिष्ठा-नामकरणं-विपणि-दीक्षाग्रहणं दशम्यां दि.११।५० उपरि। वृक्षादिरोपणं-स्वामीसेवारम्भः-🕉
२९	११	विजयादशमी, गुप्तनवरात्रस्य पारणा। देवीविसर्जनं, देवादिप्रतिष्ठा, मुण्डनं, उपनयनं, विवाहः दिवारात्रौ, वधूप्रवेशः, विपणि नामकरणं, विद्यारम्भः, कर्णवेधः, ♍
३०	१२	मासान्तः। भैमीएकादशी११ व्रतं सर्वेषां, व्रतोद्यापनम्। श्रीमाधव१२, सन्तान१२। अग्निवासः, अमृतयोगः दि.४।०७ यावत् ततः शिववासः, भद्रा २४।०७ यावत् ।
१	१३	गोदुग्धेनपारण। शिववासः, अग्निवासः-सिद्धियोगः सं.६।१० उपरि। कुम्भे रविः १०३(प्रा.६।५३), मु.१५ जघन्यमहर्घताकरम्। विष्णुपदीसंक्रान्तिः पुण्यकालः दि.१२।०० या.। माघस्नान समाप्तिः, ✽
२	१४	मासादिः, प्रदोष१३ व्रतं। शिववासः-अग्निवासः रा.७।५८ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.११।३६ उपरि। ✽प्रयागेकल्पवाससमाप्तिः, ने.फाल्गुनमासारम्भः। दक्षिणेकालः। कुम्भकोने कुम्भयोगः।
३	१५	प्रदोष १४ व्रतम्। भद्रा ३७।२१ उपरि।
४	१६	माघीपूर्णिमा१५ स्नानदानादिः, गोशालाघट्टे कमलायां जीवछघट्टे जीवत्सायां स्नानदानशिवार्चनादिकं। श्रीरविदासजयन्ती। ट्यूबवेल बोरिंग टंकी प्रभृति स्थापनम्। अग्निवासः, भद्रा ८।३५ यावत्।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ बु.	दि.९।१८-१०।३६ दि.१२।००-१।२१।	रा.१२।००-१।३६ रा.३।१८-४।५७।
२ गु.	दि.२।४३-५।२५।	रा.१२।०१-१।४० रा.४।५७-६।३४।
३ शु.	दि.९।१८-१२।०२	रा.८।४४-१०।२३।
४ श.	प्रा.६।३४-७।५६ दि.१।२३-२।४४ सं.४।०५-५।२६।	सं.५।२६-७।०५ रा.१।४०-३।१८ रा.४।५६-६।३३।
५ र.	दि.१०।३६-१।२३।	रा.१०।२३-१२।०१ रा.१।३६-३।१७।
६ चं.	दि.७।५४-९।१६ दि.२।४४-४।०६।	रा.१०।२२-१२।०० रा.३।१६-४।५४।
७ मं.	दि.७।५४-९।१६ दि.१।२२-२।४४।	रा.७।०६-८।४४।
८ बु.	दि.९।१७-१०।३६ दि.१२।०१-१।३३।	रा.१२।०१-१।३६ रा.३।१७-४।५४।
९ गु.	दि.२।४६-५।३०।	रा.१२।०२-१।३६ रा.४।५३-६।२६।
१० शु.	दि.९।१६-१२।०२।	रा.८।४६-१०।२४।
११ श.	प्रा.६।२८-७।५२ दि.१।२४-२।४७ सं.४।०६-५।३१।	सं.५।३१-७।०८ रा.१।३८-३।१५ रा.४।५२-६।२८।
१२ र.	दि.१०।३८-१।२४।	रा.१०।२४-१२।०१ रा.१।३८-३।१५।
१३ चं.	दि.७।५१-९।१४ दि.२।४६-४।०९।	रा.१०।२३-१२।०० रा.३।१४-४।५१।
१४ मं.	दि.७।५१-९।१५ दि.१।२४-२।४७।	रा.७।१०-८।४७।
१५ बु.	दि.९।१४-१०।३८ दि.१२।०२-१।२५।	रा.१२।०२-१।३८ रा.३।१४-४।५०।

♓यानादिचालनं शिववासः-सिद्धियोगः दि.७।२६ यावत्, पूर्वां विना यात्रा दि.७।२६ यावत्।

◆भद्रा ४।५८ उपरि, अमृतयोगः दि.८।३० यावत् ततः सिद्धियोगः, अग्निवासः। पुनः मार्गगत्याः मकरे बुधः२५।२७

🕉इष्टिकारम्भः-यानादिचालनं दशम्यां। अग्निवासः, शिववासः दि.११।५० यावत् ततः सिद्धियोगः, पूर्वयात्रा दि.११।५० उपरि रा.४।०२ यावत् ततः दक्षिणां विना यात्रा।

♍ट्यूबवेल बोरिंग टंकी प्रभृतिस्थापनं, स्वामीसेवारम्भः, यानादिचालनं, वृक्षादिरोपणं,मीलचालनं, क्रयविक्रय, भद्रा ५१।२४ उपरि, सिद्धियोगः दि.१।५७ उपरि, पश्चिमां विना यात्रा, क्रय-विक्रय।

मूलविचारः-रेवती/अश्विनी ति.४ शनि रा.७।१७ तः ति.६ चन्द्र रा.९।३१ यावत्।
आश्लेषा/मघा ति.१४ मंगल दि.१।४० तः ....।

१३ रवौ वल्ली ८।३६।४५।५६
अयनांशाः२२।५०।३५

८ रा. ७ ६ गु.५ सू. ९ चं. बु श ४ १० ल.१ शु.३ मं. ११ १२ २ के.

५ रवौ वल्ली ८।३६।४५।५२
अयनांशाः२२।५०।३४

८ रा. ७ ६ गु.५ ९ चं. बु सू श ४ १० ल.१ शु.३ मं. ११ १२ २ के.

सूर्य का अर्घ्य दें-सप्तसप्तेरहः प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर।। अर्घ्योपरान्त प्रणाम करें-जननी सर्वलोकानां सप्तमीसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्य मूर्त्तये।। अष्टम्यां भीष्मतर्पण मन्त्रः- वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृति प्रवरायच । अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्म वर्मणे।। वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे।। भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। अनेन सन्ततिलाभः संवत्सरकृतपापक्षयश्च। इदं जीवत्पित्राति कर्त्तव्यम्।

फाल्गुनकृष्णपक्षः

शक १९४३, संवत् २०७८, सन् १४२९, उत्तरायणं, दक्षिणगोलः, शिशिर ऋतुः, दक्षिण कालः, दिनांक १७ फरवरीतः २ मार्च यावत् सन् २०२२ इ। पश्चिमास्तः गुरुः, पूर्वोदितः शुक्रः। अशुद्धः।

तिथयः दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांका ने.	अं.	
१ गु.	४०।५२	रा.१०।४५	मघा	२४।५६	दि.४।२३	अतिगण्ड	३४।३५	बालव १०।२०	सिंह	अहोरात्रं	१०।०४।४६।००	२७।५४	६।२५	५।३५	२८	५	१७	फाल्गुने वाङ्मतिस्नानं महापुण्यप्रदं, शिववासः, पूर्व-उत्तर यात्रा दि.४।४३ उपरि। शिववासः, पूर्व-उत्तर यात्रा दि.४।४३ उपरि। क्षीणगुरु अशुद्धारम्भश्च ५८।५८ उपरि।
२ शु.	४०।३७	रा.१०।३८	पूर्वाफाल्गुनी	२६।३६	सं.५।०२	सुकर्मा	३१।३७	तैतिल १०।४५	सिंह ४१।४१	रा.११।०४	१०।०५।४६।३८	२७।५८	६।२४	५।३६	२९	६	१८	अग्निवासः, वधूप्रवेशः, विपणि उत्तराफाल्गुन्यां सं.५।०२ उपरि। प्र.द्विरागमनं उत्तराफाल्गुन्यां द्वितीयायां च।
३ श.	३९।०९	रा.१०।०३	उत्तराफाल्गुनी	२६।५९	सं.५।११	धृति	२७।३८	वणिज् ९।५३	कन्या	अहोरात्रं	१०।०६।४७।१७	२८।०२	६।२४	५।३६	३०	७	१९	शतभिषायां रविः ३६।४७ उ. (रा.९।०८), दक्षिणयात्रा सं.५।११ उपरि रा.१०।०३ यावत्, भद्रा ९।५३ उपरि ३९।०९ यावत्, दग्धतिथि रा.१०।०३ उपरि। विपणि,
४ र.	३६।३२	रा.८।५९	हस्त	२६।१२	सं.४।५१	शूल	२२।४५	बव ७।५१	कन्या ५५।०२	रा.४।२४	१०।०७।४७।५६	२८।०६	६।२३	५।३७	१	८	२०	श्रीहेरम्ब४ व्रतं, दग्धतिथिमानं रा.८।५९ यावत्, द्विरागमनं पञ्चम्यां, सर्वार्थसिद्धियोगः सं.४।५१ यावत्, शिववासः। पश्चिमास्त गुरु ५८।५८
५ चं.	३२।५५	रा.७।३२	चित्रा	२४।२५	दि.४।०८	गण्ड	१७।०३	कौलव ४।४४	तुला	अहोरात्रं	१०।०८।४८।२४	२८।०९	६।२२	५।३८	२	९	२१	प्र.द्विरागमनं पञ्चम्यां, मुण्डनं, शिववासः-अग्निवासः रा.७।३२ यावत् ततः सिद्धियोगः-दक्षिण-पश्चिम यात्राश्च।
६ मं.	२८।२८	सं.५।४५	स्वाती	२१।४७	दि.३।०४	वृद्धि	१०।३९	गर ००।४२	तुला	अहोरात्रं	१०।०९।४८।५२	२८।१२	६।२२	५।३८	३	१०	२२	अमृतयोगः सं.५।४५ उपरि, भद्रा २८।२८ उपरि ५५।५५ यावत्।
७ बु.	२३।२२	दि.३।४१	विशाखा	१८।२९	दि.१।४४	ध्रुव	३।४२	बव २३।२२	तुला ४।१८	दि.८।०४	१०।१०।४९।२०	२८।१६	६।२१	५।३९	४	११	२३	श्रीहनुमत्पूजनोत्सवः नौलागढ़, व्याघात् ५२।३४, अग्निवासः, सिद्धियोगः दि.३।४१ यावत् ततः शिववासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१।४४ उपरि।
८ गु.	१७।४७	दि.१।२६	अनुराधा	१४।३९	दि.१२।११	हर्षण	४८।३५	कौलव ७।४७	वृश्चिक	अहोरात्रं	१०।११।४९।४८	२८।२०	६।२०	५।४०	५	१२	२४	शाकाष्टका। शिववास-अमृतयोगः-पश्चिम-उत्तर यात्राश्च दि.१।२६ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१२।११ यावत्।
९ शु.	११।५९	दि.११।०५	ज्येष्ठा	१०।३५	दि.१०।३३	वज्र	४०।४४	गर ११।५९	वृश्चिक १०।३५	दि.१०।३३	१०।१२।५०।१९	२८।२४	६।१९	५।४१	६	१३	२५	अन्वष्टका, वधूप्रवेशः, अग्निवासः, अमृतयोगः दि.११।०५ यावत् ततः पूर्व-उत्तरयात्रा दि.११।०५ उपरि, भद्रा ३८।५८ उपरि।
१० श.	०६।००	दि.८।४२	मूल	०६।२४	दि.८।५१	सिद्धि	३२।५८	भद्रा ६।००	धनु	अहोरात्रं	१०।१३।५०।४५	२८।२८	६।१८	५।४२	७	१४	२६	स्वामीदयानन्दसरस्वती जयन्ती। भद्रा ६।०० यावत्, शिववासः दि.८।४२ उपरि। पूर्वाभाद्रपदायां गुरु३०।३०। ← भद्रा १७।४० यावत्। मकरे शुक्रः १८।३५।
११ र.	००।११	प्रा.६।२२	पूर्वाषाढ़ा	०२।२२	दि.७।१४	व्यतीपात्	२५।२३	बालव ००।११	धनु १७।०७	दि.१।०६	१०।१४।५१।१४	२८।३२	६।१८	५।४२	८	१५	२७	द्वादशीतिथि ५४।३२ रा.४।०६, उत्तराषाढ़ा ५६।१७ रा. ४।४८, विजयाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। शिववासः, अग्निवासः प्रा.६।२२ यावत्।
१३ चं.	४६।४६	रा.२।११	श्रवण	५५।२८	रा.४।२८	वरीयान्	१८।०६	गर २२।१५	मकर	अहोरात्रं	१०।१५।५१।३१	२८।३६	६।१७	५।४३	९	१६	२८	गोदध्नापारणं, प्रदोष १३ व्रतं। वधूप्रवेशः। भद्रा ४६।४६ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः, अग्निवासः, पूर्वाविनायात्रा रा.४।२८ यावत्। पञ्चकारम्भः(भदवा) रा.४।२८ उपरि। मकरे मंगल ३६।००।
१४ मं.	४५।३३	रा.१२।२६	धनिष्ठा	५३।०७	रा.३।३०	परिघ	१०।२०	भद्रा १७।४०	मकर २४।१६	दि.३।५४	१०।१६।५१।४८	२८।४०	६।१६	५।४४	१०	१७	१	मार्च ३, प्रदोष१४ व्रतं,नक्तव्रतं, महाशिवरात्रिव्रतं प्रदोषे यावद्रात्रौ तत्र शिवार्चनं सहस्रश्वमेधसमफलदं, श्रीगौरीशंकरविवाहोत्सवः, श्रीशिवदर्शनं, श्रीरावणेश्वरवैद्यनाथ-सिंहेश्वरनाथयोः प्रतिष्ठादिनं,सिंहेश्वरमेलापकः।←
३० बु.	४२।१४	रा.११।०८	शतभिषा	५१।३२	रा.२।५१	शिव	५।१३	चतुरष्न१३।५५	कुम्भ	अहोरात्रं	१०।१७।५२।०५	२८।४४	६।१५	५।४५	११	१८	२	फाल्गुनीअमावस्या स्नानदानादिः, गोसहस्रिका३०, मन्वादिः, शिवरात्रिव्रतस्यपारणा। शिववासः, अग्निवासः,सिद्धयोगमानं ५५।३७, प्र.द्विरागमनं प्रतिपदायां शतभिषायां च,

मूलविचारः- आश्लेषा/मघा ति.१ गुरु दि.४।२३ यावत्।
ज्येष्ठा/मूल ति.८ गुरु दि.१२।११ तः ति.१० शनि दि.८।५१ यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ गु.	८।२१।२०।११	९।०८।२१।०३	१०।१७।५३।५५	८।२०।३२।२२	९।२०।३३।००	७।०५।०४।३०	४३।५८
२ शु.	८।२२।०३।५२	९।०९।३१।४८	१०।१८।०८।१६	८।२१।१६।५५	९।२०।४०।२२	७।०५।०४।१९	४४।००
३ श.	८।२२।४७।३२	९।१०।४२।३३	१०।१८।२२।३८	८।२२।००।०७	९।२०।४७।४४	७।०४।५८।१८	४४।०१
४ र.	८।२३।३१।१२	९।११।५३।२६	१०।१८।३६।५९	८।२२।४३।५६	९।२०।५५।०५	७।०४।५४।५६	४४।०२
५ चं.	८।२४।१५।०३	९।१३।०४।२९	१०।१८।५१।२१	८।२३।२७।१५	९।२१।०२।२२	७।०४।५१।१८	४४।०४
६ मं.	८।२४।५८।२४	९।१४।१५।०२	१०।१९।०५।२०	८।२४।१०।४६	९।२१।०९।३६	७।०४।४८।३७	४४।०६
७ बु.	८।२५।४२।४५	९।१५।२८।३६	१०।१९।१९।५९	८।२४।५४।१४	९।२१।१६।५४	७।०४।४५।२६	४४।०८
८ गु.	८।२६।२६।३५	९।१६।४०।०६	१०।१९।३४।२४	८।२५।३४।२६	९।२१।२४।१३	७।०४।४२।१५	४४।१०
९ शु.	८।२७।१०।२५	९।१७।५१।३३	१०।१९।४८।४५	८।२६।१४।२४	९।२१।३१।२९	७।०४।३९।०४	४४।१२
१० श.	८।२७।५४।१५	९।२०।०३।२५	१०।२०।०३।०७	८।२७।०४।४८	९।२१।३८।४५	७।०४।३५।५४	४४।१४
११ र.	८।२८।३८।०५	९।२२।२६।०५	१०।२०।१७।२८	८।२८।३३।३४	९।२१।४६।०१	७।०४।३२।४४	४४।१६
१३ चं.	८।२९।२२।०६	९।२३।५१।४६	१०।२०।३२।०३	८।२९।२८।४७	९।२१।५२।३०	७।०४।२९।३३	४४।१८
१४ मं.	९।००।०६।०७	९।२५।३१।०७	१०।२०।४६।२२	९।००।२३।२१	९।२१।५८।५९	७।०४।२६।२२	४४।२०
३० बु.	९।००।५०।०८	९।२७।१०।२८	१०।२१।००।४१	९।०१।१७।४५	९।२२।०५।२८	७।०४।२३।११	४४।२२

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

तिथि दिन	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ गु.	१०।४६	१२।४५	१४।४८	१७।१६	१९।३२	२१।४९	०।०४	२।२१	४।२६	६।१२	७।४३	९।१२
२ शु.	१०।४२	१२।४१	१४।४४	१७।१२	१९।२८	२१।४३	०।००	२।१७	४।२२	६।०८	७।३९	९।०८
३ श.	१०।३८	१२।३७	१४।४०	१७।०८	१९।२४	२१।३९	२३।५६	२।१३	४।१८	६।०४	७।३५	९।०४
४ र.	१०।३५	१२।३४	१४।३७	१७।०५	१९।२१	२१।३६	२३।५३	२।१०	४।१५	६।०१	७।३२	९।०१
५ चं.	१०।३१	१२।३०	१४।३३	१७।०१	१९।१७	२१।३२	२३।४९	२।०६	४।११	५।५७	७।२८	८।५७
६ मं.	१०।२७	१२।२६	१४।२९	१६।५७	१९।१३	२१।२८	२३।४५	२।०२	४।०७	५।५३	७।२४	८।५३
७ बु.	१०।२३	१२।२२	१४।२५	१६।५३	१९।०९	२१।२४	२३।४१	१।५८	४।०३	५।४९	७।२०	८।४९
८ गु.	१०।२०	१२।१९	१४।२१	१६।४९	१९।०५	२१।२०	२३।३७	१।५४	३।५९	५।४५	७।१६	८।४५
९ शु.	१०।१६	१२।१५	१४।१८	१६।४६	१९।०२	२१।१७	२३।३४	१।५१	३।५६	५।४२	७।१३	८।४२
१० श.	१०।१२	१२।११	१४।१४	१६।४२	१८।५८	२१।१३	२३।३०	१।४७	३।५२	५।३८	७।०९	८।३८
११ र.	१०।०९	१२।०८	१४।१०	१६।३८	१८।५४	२१।०९	२३।२६	१।४३	३।४८	५।३४	७।०५	८।३४
१३ चं.	१०।०७	१२।०३	१४।१६	१६।३४	१८।५०	२१।०५	२३।२२	१।३९	३।४४	५।३०	७।०१	८।३०
१४ मं.	१०।०४	१२।००	१४।१३	१६।३१	१८।४७	२१।०२	२३।१९	१।३६	३।४१	५।२७	६।५८	८।२७
३० बु.	१०।००	११।५६	१४।०९	१६।२७	१८।४३	२०।५८	२३।१५	१।३२	३।३७	५।२३	६।५४	८।२३

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ गु.	दि.२:४८-५:३४।	रा.१२:०२-१:३८ रा.४:५०-६:२६।
२ शु.	दि.९:१३-१:२५।	रा.८:४९-१०:२५।
३ श.	प्र.६:२४-७:४८ दि.१:२४-२:४८ सं.४:१२-५:३६।	सं.५:३६-७:१२ रा.१:३६-३:१२ रा.४:४८-६:२४।
४ र.	दि.१०:३६-१:२४।	रा.१०:२४-१२:०० रा.१:३६-३:१२।
५ चं.	दि.७:४८-९:१३ दि.२:४९-४:१३।	रा.१०:२५-१२:०१ रा.३:१३-४:४८।
६ मं.	दि.७:४७-९:१२ दि.१:२६-२:५०।	रा.७:१४-८:५०।
७ बु.	दि.९:१२-१०:३७ दि.१२:०२-१:२६।	रा.१२:०२-१:३७ रा.३:१२-४:४८।
८ गु.	दि.२:५१-५:३६।	रा.१२:०१-१:३६ रा.४:४६-६:२१।
९ शु.	दि.९:१०-१२:००।	रा.८:५०-१०:२५।
१० श.	प्र.६:१८-७:४५ दि.१:२६-२:५१ सं.४:०६-५:४१।	सं.५:४१-७:१६ रा.१:३६-३:११ रा.४:४५-६:१८।
११ र.	दि.१०:३६-१:२७।	रा.१०:२७-१२:०२ रा.१:३६-३:१०।
१३ चं.	दि.७:४४-९:१० दि.२:५२-४:१७।	रा.१०:२७-१२:०२ रा.३:१०-४:४४।
१४ मं.	दि.७:४३-९:०६ दि.१:२७-२:५३।	रा.७:१८-८:५३।
३० बु.	दि.९:०८-१०:३४ दि.१२:००-१:२६।	रा.१२:००-१:३४ रा.३:०८-४:४२।

तैल लगौलासँ दोष नहि लगैत अछि। किन्तु एक पुत्र वालाके सोमदिन नहि लगावक चाही।

आचमन विधि :-सभ कार्यमे आचमनक विधान अछि। एवं स ब्राह्मणो नित्यमुपस्पर्शनमाचरेत्। ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं जगत् स परितर्पयेत्।। अर्थात् आचमनसँ अपनाशुद्धि के संग ब्रह्मा सँ लक तृण पर्यन्त तृप्त कऽ दैत अछि। यः क्रियां कुरुते मोहादनाचम्यैव नास्तिकः। भवन्ति हि वृथा तस्य क्रियाः सर्वा न संशयः।। अर्थात् आचमन नै कयलासँ अपन सभ कृत्य व्यर्थ भऽ जाइत छैक तेँ शौचक उपरान्त आचमनक विधान अछि।

आचमन वास्ते जलक मात्रा- आचमन वास्ते हाथ मे जल एतबा ली जाहिसँ(हृत्कण्ठतालुगाभिस्तु यथासंख्यं द्विजातयः। शुध्येरन् स्त्री च शूद्रश्च सकृत्स्पृष्टाभिरन्ततः।। याज्ञवल्क्यस्मृति क वचन) ब्राह्मणकेँ हृदय धरि, क्षत्रियकेँ कण्ठ धरि, वैश्यकेँ तालु धरि आ शूद्र तथा महिला केँ जीभ धरि पहुँच जाय। हथेलीक मोडि गायक कानसदृश बना कनिष्ठा आ अंगूठा आंगुर अलग कऽ ब्राह्मतीर्थसँ निम्नलिखित एक- एक मन्त्रक उच्चारण कऽ आचमन करी। आचमनकऽ करैत काल (शुर) अवाज नै हैबाक चाही। ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। आचमन पश्चात् अंगूठाक मूलभागसँ ओठ दू बेरि पोछि ॐ हृषीकेशाय नमः बाजि हाथ धो ली। पुनः अंगुठासँ नाक, आँख आ कान स्पर्श करी। छींक अयलापर, थूकलापर, शयनसँ उठलापर, वस्त्र पहिरलापर, अश्रु अयलापर आचमन करी अथवा दहिना कानकेँ स्पर्श कयलासँ आचमन क विधि पूरा भ जाइत अछि। आचमन बैसिक करबा क चाहि। संकल्प- (मार्कण्डेयपुराण)-संकल्प्य च तथा कुर्यात् स्नानदानव्रतादिकम्। अन्यथा पुण्यकर्माणि निष्फलानि भवन्ति हि।। स्नान, सन्ध्या, दान,देवपूजन आ कोनो सत्कर्मक प्रारम्भमे संकल्प आवश्यक अछि। अन्यथा सभ कयल कर्म निष्फल भ जाइत अछि। हाथमे पवित्री धारण क हाथ मे जल लय संकल्प करी- ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्य....(महिना)मासे,...(कृष्ण/शुक्ल पक्ष) पक्षे ....(ओहिदिनक तिथि) तिथौ, ...(दिन) वासरे, ...(अपन) गोत्रः,....(अपन नाम)शर्मा/वर्मा/ गुप्तोऽहम् प्रातः सर्वकर्मसु शुद्ध्यर्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं श्रीभगवत्प्रीत्यर्थं च अमुक कर्म करिष्ये।

विविधविषयाः-माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां शिवरात्रिव्रतं तन्माहात्म्यञ्च ब्रह्माद्रिखण्डे- माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी। दत्ते शिवः फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरैः। शिवरात्रिरिति ख्याता मत्कलेव पृथक् स्थिता।। तथा च - उपवासं करिष्यन्ति जागरणेन समन्वितम्। यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशयः।। वर्षे वर्षे महादेवि नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत्। अर्णवो यदि वा सूर्यश्छाद्यते हिमवानपि।। चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं च शिवव्रतम्।
गंगासागरसंगमस्नानमन्त्रः - त्वं देव सरितां नाथ त्वं देवि सरितां वरे। उभयोः संगमे स्नात्वा मुञ्चामि दुरितानि वै।। समुद्रस्नानमन्त्रः - त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधाः कामदीपन। प्रधानः सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्ययः।। अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपांपते। वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते।। गंगास्नानमन्त्रः - ब्रह्मस्वरूपे हे गंगे स्नानमाचर्यते मया। त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भव।। गंगामाहात्म्यं विष्णुपुराणे - गंगा गंगेति यन्नाम योजनानां शतैरपि। स्थितैरुच्चरितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्।। पुनश्च - इदं हि गाङ्गं त्यजतामिहाङ्गं पुनर्न चाङ्गं यदि वापि चाङ्गम्। याने विहङ्गं शयने भुजङ्गं करे रथाङ्गं चरणेऽपि गाङ्गम्।।

४ रवौ वल्ली
८।३९।४६।०९
अयनांशाः
२२।५०।३६

(कुण्डली) रा. ७ | ८ | ५ | गु. ४ सू | ६ | ९ | १२ | बु श | ३ | १० | ११ चं. | ल.१ के. | शु. २ मं.

११ रवौ वल्ली
८।३९।४६।१३
अयनांशाः
२२।५०।३७

(कुण्डली) रा. ७ | ८ | ५ | गु. ४ सू | ६ | ९ | १२ | बु श | ३ | चं. | १० | ११ | ल.१ के. | शु. २ मं.

फाल्गुनशुक्लपक्षः।।

शक १९४३, संवत्२०७८, सन् १४२६, उत्तरायणं, दक्षिणगोलः, शिशिर/वसन्त ऋतुः, दक्षिणे कालः।
दिनांक ३ मार्चतः १८ मार्च यावत् सन् २०२२ ई। पूर्वोदितः शुक्रः, पश्चिमास्तः गुरुः। अशुद्ध

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	दिनांकाः रा.	ने.	अं.
१	गु.	३६।५०	रा.१०।१०	पूर्वाभाद्रपद	५१।००	रा.२।३८	साध्य	५५।१६	किंस्तुघ्न११।२	कुम्भ ३६।०८	रा.८।४१	१०।१८।५२।२२	२८।४८	६।१४	५।४६	१२	१९	३
२	शु.	३८।४१	रा.६।४२	उत्तराभाद्रपद	५१।४०	रा.२।५४	शुभ	५१।४२	बालव ६।४६	मीन	अहोरात्र	१०।१९।५२।३६	२८।५२	६।१४	५।४६	१३	२०	४
३	श.	३८।४६	रा.६।४३	रेवती	५४।३५	रा.४।०३	शुक्ल	४६।०७	तैतिल ८।४४	मीन ५४।३५	रा.४।०४	१०।२०।५२।५७	२८।५६	६।१३	५।४७	१४	२१	५
४	र.	४०।१२	रा.१०।१६	अश्विनी	५६।४८	रा.४।५५	ब्रह्म	४८।०५	वणिज् ६।२६	मेष	अहोरात्र	१०।२१।५३।११	२९।००	६।१२	५।४८	१५	२२	६
५	चं.	४२।४८	रा.११।१८	भरणी	६०।००	अहोरात्र	ऐन्द्र	४६।५३	बव ११।३०	मेष	अहोरात्र	१०।२२।५३।१३	२९।०४	६।११	५।४९	१६	२३	७
६	मं.	४६।३५	रा.१२।४८	भरणी	०१।०७	प्रा.६।३६	वैधृति	४७।०७	कौलव १४।४२	मेष १७।२७	दि.१।०६	१०।२३।५३।१५	२९।०८	६।१०	५।५०	१७	२४	८
७	बु.	५१।१३	रा.२।३६	कृत्तिका	०६।३०	दि.८।४६	विष्कुम्भ	४८।००	गर १८।५६	वृष	अहोरात्र	१०।२४।५३।१७	२९।१२	६।१०	५।५०	१८	२५	९
८	गु.	५६।२४	रा.४।४२	रोहिणी	१२।३७	दि.११।११	प्रीति	४६।१८	भद्रा २३।४६	वृष ५४।५४	रा.४।०७	१०।२५।५३।१६	२९।१६	६।०६	५।५१	१९	२६	१०
९	शु.	६०।००	अहोरात्र	मृगशिरा	१६।१२	दि.१।४८	आयुष्मान	५०।४८	बालव २६।०५	मिथुन	अहोरात्र	१०।२६।५३।२१	२९।२०	६।०८	५।५२	२०	२७	११
९	श.	०१।४६	प्रा.६।४६	आर्द्रा	२५।४३	दि.४।२४	सौभाग्य	५२।०८	कौलव १।४६	मिथुन	अहोरात्र	१०।२७।५३।२३	२९।२४	६।०७	५।५३	२१	२८	१२
१०	र.	०६।४६	दि.८।५०	पुनर्वसु	३१।४८	सं.६।५०	शोभन	५३।०२	गर ६।४६	मिथुन १५।१६	दि.१२।१३	१०।२८।५३।२४	२९।२८	६।०७	५।५३	२२	२९	१३
११	चं.	११।१२	दि.१०।३४	पुष्य	३७।१०	रा.८।१८	अतिगण्ड	५३।१५	भद्रा ११।१२	कर्क	अहोरात्र	१०।२९।५३।११	२९।३२	६।०६	५।५४	२३	३०	१४
१२	मं.	१४।३६	दि.११।५५	आश्लेषा	४१।२८	रा.१०।४०	सुकर्मा	५२।३३	बालव १४।३६	कर्क ४१।२८	रा.१०।४०	११।००।५२।५८	२९।३६	६।०५	५।५५	२४	१	१५
१३	बु.	१६।५३	दि.१२।४६	मघा	४४।३८	रा.११।५५	धृति	५०।५६	तैतिल १६।५३	सिंह	अहोरात्र	११।०१।५२।४५	२९।४०	६।०४	५।५६	२५	२	१६
१४	गु.	१७।५२	दि.१।११	पूर्वाफाल्गुनी	४६।३२	रा.१२।३६	शूल	४८।२३	वणिज् १७।५२	सिंह	अहोरात्र	११।०२।५२।३२	२९।४४	६।०३	५।५७	२६	३	१७
१५	शु.	१७।३१	दि.१।०२	उत्तराफाल्गुनी	४७।१०	रा.१२।५४	गण्ड	४४।४६	बव १७।३१	सिंह १।४०	प्रा.६।४२	११।०३।५२।१६	२९।४८	६।०२	५।५८	२७	४	१८

कल्याणेश्वरराज्जनकपुर परिक्रमारम्भः। श्रीरामकृष्णपरमहंसजयन्ती। प्र.द्विरागमनं उत्तराफाल्गुन्यां रा.२।३८ उपरि। अग्निवासः, पश्चिम यात्रा।
प्र.द्विरागमनं तृतीयायां रा.६।४२ उपरि। विपणि, वधूप्रवेशः, मुण्डनं, यानादिचालनं, क्रय-विक्रय। शिववासः, पूर्वाभाद्रपदायां रविः ५१।४४ (रा.२।५५), कुम्भे बुधः २६।४८।
विपणि, यानादिचालनं। दग्धतिथिमानं रा.६।४३ उ., अग्निवासः, पश्चिम-उत्तर यात्रा रा.६।४३ यावत्, पञ्चक(मदवा)समाप्तिः रा.४।०३ उपरि। ← भद्रा ६।२६ उ. ४०।१२ यावत्।
श्रीगणेश ४-व्रतं, प्र.द्विरागमनं अश्विन्यां पञ्चम्यां च रा.१०।१६ तः रा.४।५५ यावत्। दग्धतिथि रा.१०।१६ या. ततः पश्चिमां विना यात्रा रा.४।५५ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.४।५५ यावत्,←
शिववासः, अग्निवासः।
गोरुपिणीषष्ठी। शिववासः। ♨ सर्वार्थसिद्धियोगः दि.८।४६ उपरि, अग्निवासः, पूर्व-दक्षिण यात्रा दि.८।४६ उपरि रा.२।३६ यावत्।
कामदासप्तमी ७ व्रतं। प्र.द्विरागमनं सप्तम्यां रोहिण्यां च। विपणि रोहिण्यां दि.८।४६ उपरि। मुण्डनं रोहिण्यां, टयूववेल वोरिंग टंकीप्रभृतिस्थापनं कृतिकायाम्। भद्रा ५१।१३ उपरि, सिद्धियोगः रा.२।३६ यावत्, ♨
होलाष्टकारम्भः। प्र.द्विरागमनं अष्टम्यां रा.४।४२ यावत्। यानादिचालनं, वृक्षादिरोपणम्। भद्रा २३।४६ यावत्, अमृतयोगः रा.४।४२ यावत्, पूर्वयात्रा दि.११।११ यावत् ततः दक्षिणां विना यात्रा रा.४।४२ यावत्।
अमृतयोगः, शिववासः, अग्निवासः। ❖ विस्फोटकादिभयव्याधिनाशाय घटे स्नुहीमूले वा घण्टाकर्णपूजा:, तन्मन्त्रश्चः- घण्टाकर्ण! महावीर! सर्वव्याधि विनाशन। विस्फोटकभये प्राप्ते रक्ष रक्ष महाबल।। ♣
शिववासः प्रा.६।५६ यावत्। ♣ शिववासः, अग्निवासः दि.११।५५ यावत्, अमृतयोगः दि.११।५५ यावत् ततः सिद्धियोगः।
प्र. द्विरागमनं दशम्यां दि.८।५० यावत्। भद्रा ३६।०१ उपरि, अमृतयोगः-अग्निवासः दि.८।५० यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः सं.६।५० उपरि, दक्षिण यात्रा दि.८।५० यावत्।
आमलकीएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। जनकपुर-अन्तर्गृहीयपरिक्रमारम्भः। रंगभरीएकादशी, श्रीकाशीविश्वनाथश्रृंगारादिनम्। मासान्तः, मीने रविः ५१।३५(रा.२।४४) भद्रा ११।१२ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.८।५६ यावत्, ♍
गोविन्द१२, श्रीनृसिंह१२, गोदध्नापारणं, समुद्रस्नानं,श्रीजगन्नाथदर्शनं, प्रदोष १३ व्रतं, षडशीतिसंक्रान्तिः पुण्यकालः दि.१२।०० यावत् पुण्याह। खरमासारम्भः। वसन्तऋतु, ने.चैत्रमासारम्भः।❖
♍ शिववासः-अग्निवासः दि.१०।३४ उपरि। धनिष्ठायां गुरुः २०।१५।
मासादिः, प्रदोष१४ व्रतं, शिववासः दि.१२।५६ यावत् ततः अग्निवासः।
व्रताय पूर्णिमा। होलिकादाहः रा.१।११ उपरि, अग्निवासः दि.१।११ यावत् ततः पूर्व-उत्तर यात्रा भद्रा १७।५३ उ. ४७।४२ यावत्। ◆ सिद्धियोगः दि.१।०२ उपरि, शिववासः-अग्निवासः दि.१।०२ उपरि।
फाल्गुनीपूर्णिमा१५, स्नानदानादिः, सावर्णिमन्वादिः। कुलदेवताभ्यः सिन्दूरार्पणः पातरिदानं। जनकपुरपरिक्रमासमाप्तिः,श्रीचैतन्यमहाप्रभुजयन्ती। उत्तराभाद्रपदायां रवि१२।२६(दि.११।०१),◆

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान	मे.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ गु	९।०१।३४।०६	९।२८।४६।४६	१०।२१।१५।००	९।०२।१२।०६	९।२२।११।५७	७।०४।२०।००	४४।२४	९।५६	११।५२	१४।०५	१६।२३	१८।३६	२०।५४	२३।११	१।२८	३।३३	५।१९	६।५०	८।१९
२ शु	९।०२।१८।१०	१०।००।२६।१०	१०।२१।२६।३६	९।०३।०६।३३	९।२२।१८।२५	७।०४।१६।४६	४४।२६	९।५२	११।४८	१४।०१	१६।१९	१८।३५	२०।५०	२३।०७	१।२४	३।२९	५।१५	६।४६	८।१५
३ श	९।०३।०२।११	१०।०२।०८।३१	१०।२१।४३।२७	९।०४।००।५७	९।२२।२४।५३	७।०४।१३।३६	४४।२८	९।४९	११।४५	१३।५८	१६।१६	१८।३२	२०।४७	२३।०४	१।२१	३।२६	५।१२	६।४३	८।१२
४ र.	९।०३।४६।११	१०।०३।४७।५२	१०।२१।५७।५५	९।०४।५५।२१	९।२२।३१।२१	७।०४।१०।२६	४४।३०	९।४५	११।४१	१३।५४	१६।१२	१८।२८	२०।४३	२३।००	१।१७	३।२२	५।०८	६।३९	८।०८
५ चं	९।०४।३०।३०	१०।०५।३४।१८	१०।२२।१२।१८	९।०५।५३।३६	९।२२।३८।००	७।०४।०७।१८	४४।३२	९।४१	११।३७	१३।५०	१६।०८	१८।२४	२०।३९	२२।५६	१।१३	३।१८	५।०४	६।३५	८।०४
६ मं	९।०५।१४।४६	१०।०७।२०।४४	१०।२२।२६।४१	९।०६।५१।५७	९।२२।४४।३६	७।०४।०४।०७	४४।३४	९।३७	११।३३	१३।४६	१६।०४	१८।२०	२०।३५	२२।५२	१।०९	३।१४	५।००	६।३१	८।००
७ बु	९।०५।५६।०८	१०।०९।०७।१०	१०।२२।४१।०३	९।०७।५०।१५	९।२२।५१।१८	७।०४।००।५६	४४।३६	९।३३	११।२९	१३।४२	१६।००	१८।१६	२०।३१	२२।४८	१।०५	३।१०	४।५६	६।२७	७।५६
८ गु	९।०६।४३।२७	१०।१०।५३।३६	१०।२२।५५।२५	९।०८।४८।३३	९।२२।५७।५७	७।०३।५७।४५	४४।३८	९।३०	११।२६	१३।३९	१५।५७	१८।१३	२०।२८	२२।४५	१।०२	३।०७	४।५३	६।२४	७।५३
९ शु	९।०७।२७।४६	१०।१२।४०।०२	१०।२३।०९।४७	९।०९।४६।५१	९।२३।०४।३५	७।०३।५४।३४	४४।४०	९।२६	११।२२	१३।३५	१५।५३	१८।०९	२०।२४	२२।४१	०।५८	३।०३	४।४९	६।२०	७।४९
९ श	९।०८।१२।०५	१०।१४।२६।२७	१०।२३।२४।०९	९।१०।४५।०९	९।२३।११।१३	७।०३।५१।२४	४४।४२	९।२२	११।१८	१३।३१	१५।४९	१८।०५	२०।२०	२२।३७	०।५४	२।५९	४।४५	६।१६	७।४५
१० र.	९।०८।५६।२४	१०।१६।१२।५२	१०।२३।३८।३१	९।११।४३।२७	९।२३।१७।५१	७।०३।४८।१४	४४।४४	९।१८	११।१४	१३।२७	१५।४५	१८।०१	२०।१६	२२।३३	०।५०	२।५५	४।४१	६।१२	७।४१
११ चं	९।०९।४०।५७	१०।१८।०२।१८	१०।२३।५२।५४	९।१२।४४।१७	९।२३।२४।२८	७।०३।४५।०३	४४।४६	९।१४	११।१०	१३।२३	१५।४१	१७।५७	२०।१२	२२।२९	०।४६	२।५१	४।३७	६।०८	७।३७
१२ मं	९।१०।२५।३०	१०।१९।५३।०४	१०।२४।०७।१७	९।१३।४५।०७	९।२३।३१।०५	७।०३।४१।५२	४४।४८	९।११	११।०७	१३।२०	१५।३८	१७।५४	२०।०९	२२।२६	०।४३	२।४८	४।३४	६।०५	७।३४
१३ बु	९।११।१०।०३	१०।२१।४३।०९	१०।२४।२१।४०	९।१४।४५।५७	९।२३।३७।४२	७।०३।३८।४१	४४।५०	९।०७	११।०३	१३।१६	१५।३४	१७।५०	२०।०५	२२।२२	०।३९	२।४४	४।३०	६।०१	७।३०
१४ गु.	९।११।५४।३६	१०।२३।३३।१४	१०।२४।३६।०३	९।१५।४६।४७	९।२३।४४।१९	७।०३।३५।३०	४४।५२	९।०३	१०।५९	१३।१२	१५।३०	१७।४६	२०।०१	२२।१८	०।३५	२।४०	४।२६	५।५७	७।२६
१५ शु.	९।१२।३९।०९	१०।२५।२३।०९	१०।२४।५०।२६	९।१६।४७।३७	९।२३।५०।५६	७।०३।३२।१९	४४।५४	९।००	१०।५६	१३।०९	१५।२७	१७।४३	१९।५८	२२।१५	०।३२	२।३७	४।२३	५।५४	७।२३

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ गु.	दि.२:५३-५:४५।	रा.१२:०१-१:३५ रा.४:४२-६:१४।
२ शु.	दि.९:०८-१२:०२।	रा.८:५४-१०:२८।
३ श.	प्र.६:१४-७:४१ दि.१:२८-२:५४ दि.४:२०-५:४६।	सं.५:४६-७:२० रा.१:३५-३:०८ रा.४:४१-६:१३।
४ र.	दि.१०:३४-१:२८।	रा.१०:२८-१२:०१ रा.१:३४-३:०७।
५ चं.	दि.७:३९-९:०६ दि.२:५४-४:२१।	रा.१०:२७-१२:०० रा.३:०६-४:४६।
६ मं.	दि.७:३९-९:०७ दि.१:२८-२:५५।	रा.७:२२-८:५५।
७ बु.	दि.९:०६-१०:३४ दि.१२:०२-१:३९।	रा.१२:०२-१:३४ रा.३:०६-४:३८।
८ गु.	दि.२:५६-५:५०।	रा.१२:०२-१:३४ रा.४:३८-६:१०।
९ शु.	दि.९:०५-१२:०१।	रा.८:५७-१०:२९।
९ श.	प्र६:०८-७:३६ दि.१:२८-२:५६ सं४:२४-७:५२।	सं.५:२२-७:२४ रा.१:३२-३:०४ रा.४:३५-६:०७।
१० र.	दि.१०:३३-१:२६।	रा.१०:२९-१२:०१ रा.१:३३-३:०५।
११ चं.	दि.७:३५-९:०४ दि.२:५८-४:२६।	रा.१०:३०-१२:०२ रा.३:०४-४:३५।
१२ मं.	दि.७:३५-९:०४ दि.१:३०-२:५८।	रा.७:२६-८:५८।
१३ बु.	दि.९:०३-१०:३२ दि.१२:०१-१:३०।	रा.१२:०१-१:३२ रा.३:०३-४:३४।
१४ गु.	दि.२:५८-५:५६।	रा.१२:००-१:३१ रा.४:३३-६:०३।
१५ शु.	दि.९:०३-१२:०१।	रा.८:५९-१०:३०।

मूलविचारः-रेवती/आश्विनी ति.२ शुक्र रा.२।५४ तः ति.४ रवि ४।५५ यावत्।
आश्लेषा/मघा ति.११ चन्द्र रा.८।५८ तः ति.१३ बुध रा.११।५५ यावत्।

४ रवौ वल्ली ८।३६। ४६।२०
अयनांशाः२२।५०।३८

रा.७ | चं. | ५ | गु. सू. ४बु | ८ | ६ | मं श शु. ३ | ९ | १२ | २ | १० | ११ | ल.१ के.

१० रवौ वल्ली ८।३६। ४६।२७
अयनांशाः२२।५०।४०

रा.७ | ५ | गु. सू. ४बु | ८ | ६ | मं श शु. ३ | चं. ९ | १२ | २ | १० | ११ | ल.१ के.

होलिकादाहविशेष- तत्राग्नौ विधिवद्धुत्वा काममन्त्रं विवर्जयेत। धृतै किलकिलाशब्दैस्तालशब्दै- र्मनोरमैः। तमग्निं त्रिः परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जलपन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यातमागतः। अस्य काष्ठादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां दाहयेत्। ध्यानमन्त्रः-असूमयावसन्तप्तेः कृत्व त्वं होलि वालिश। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूतेभूतिप्रदा भव। ततो 'होलिकायै नमः' इति मन्त्रेण यथोपचारैः संपूज्य प्रदीपयेत्।
होलिका प्रदीपमन्त्रः-दीपयाम्यत्र ते घोरां चिति राक्षसि ते नमः। हिता सर्वजगतः प्रीतये पार्वतीपतेः। ततः परदिने होलीकाभस्मधारणमन्त्रः वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः। अतस्त्वं पाहि नो भीतेर्भूषित भूतिदा भव।। होलिका दाहे वायु विचार- होलिकादाहे पूर्ववायौ राजाप्रजासुख अग्निकोणेऽग्निभयं, दक्षिणनैर्ऋत्ययोर्दुर्भिक्षं, पश्चिमे वृष्टिः वायव्ये वायुवृद्धि उत्तरैशान्योः सुभिक्षं, निर्वातसमयो राज्ञो हानिकरः।

चैत्रकृष्णपक्षः

शक १९४३, संवत्२०७८, सन् १४२६, उत्तरायणं, दक्षिणगोलः, वसन्त ऋतुः, दक्षिणे कालः, अशुद्धः। दिनांक १६ मार्चतः १ अप्रैल यावत् सन् २०२२ ई। पूर्वोदितः शुक्रः, पूर्वोदितः गुरुः।

तिथयः दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि द. प.	समा.कालः घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.
१ श.	१५।५३	दि.१२।२३	हस्त	४६।३६	रा.१२।४०	वृद्धि	४०।१२	कौलव १५।५३	कन्या	अहोरात्रं	११।०४।५२।०६	२६।५२	६।०२	५।५८	२८	५	१६
२ र.	१३।०६	दि.११।१६	चित्रा	४५।०१	रा.१२।०१	ध्रुव	३४।४७	गर १३।०६	कन्या १५।४८	दि.१२।२०	११।०५।५१।५०	२६।५६	६।०१	५।५६	२६	६	२०
३ चं.	०६।२४	दि.६।४५	स्वाती	४२।३६	रा.११।०२	व्याघात्	२८।४१	भद्रा ६।२४	तुला	अहोरात्रं	११।०६।५१।२२	३०।००	६।००	६।००	३०	७	२१
४ मं.	०४।५०	प्रा.७।५५	विशाखा	३६।२५	रा.८।४५	हर्षण	२१।५४	बालव ४।५०	तुला २५।१२	दि.४।०४	११।०७।५०।५४	३०।०४	५।५६	६।०१	१	८	२२
६ बु.	५३।५७	रा.०३।३२	अनुराधा	३५।४४	रा.८।१५	वज्र	१४।३८	गर २६।४८	वृश्चिक	अहोरात्रं	११।०८।५०।२६	३०।०८	५।५८	६।०२	२	९	२३
७ गु.	४७।५६	रा.०१।०६	ज्येष्ठा	३१।४३	सं.६।३६	सिद्धि	०७।०४	भद्रा २०।५८	वृश्चिक३१।४३	सं.६।३६	११।०९।४९।५७	३०।१२	५।५८	६।०२	३	१०	२४
८ शु.	४२।०१	रा.१०।४५	मूल	२७।३३	दि.४।५८	वरीयान्	५१।३४	बालव १५।००	धनु	अहोरात्रं	११।१०।४९।२८	३०।१६	५।५७	६।०३	४	११	२५
९ श.	३६।०८	रा.०८।२३	पूर्वाषाढ़ा	२३।२७	दि.३।१८	परिघ	४३।५८	तैतिल ६।०५	धनु ३७।३०	रा.८।५६	११।११।४८।५६	३०।२०	५।५६	६।०४	५	१२	२६
१० र.	३०।३६	सं.६।०६	उत्तराषाढ़ा	१६।४२	दि.१।४७	शिव	३६।३८	वणिज् ३।३२	मकर	अहोरात्रं	११।१२।४९।३०	३०।२४	५।५५	६।०५	६	१३	२७
११ चं.	२५।३५	दि.४।०८	श्रवण	१६।२६	दि.१२।२८	सिद्ध	२९।४७	बालव २५।३५	मकर ४५।०८	रा.११।५७	११।१३।४७।४६	३०।२८	५।५४	६।०६	७	१४	२८
१२ मं.	२१।२१	दि.२।२६	धनिष्ठा	१३।५०	दि.११।२६	साध्य	२३।३२	तैतिल २१।२१	कुम्भ	अहोरात्रं	११।१४।४७।०२	३०।३२	५।५४	६।०६	८	१५	२९
१३ बु.	१७।५७	दि.१।०४	शतभिषा	१२।०५	दि.१०।४३	शुभ	१७।५६	वणिज् १७।५७	कुम्भ ५६।२६	रा.४।२६	११।१५।४५।१७	३०।३६	५।५३	६।०७	९	१६	३०
१४ गु.	१५।३५	दि.१२।०६	पूर्वाभाद्रपद	११।२०	दि.१०।२४	शुक्ल	१३।१६	शकुनी १५।३५	मीन	अहोरात्रं	११।१६।४३।३२	३०।४०	५।५२	६।०८	१०	१७	३१
३० शु.	१४।२४	दि.११।३६	उत्तराभाद्रपद	११।४५	दि.१०।३३	ब्रह्म	०६।२८	नाग १४।२४	मीन	अहोरात्रं	११।१७।४१।४७	३०।४४	५।५१	६।०६	११	१८	१

होलिकाभस्मधारणं,सचैलस्नानं. होली, सप्तडोरकवन्धनं। चैत्रे लक्ष्मणास्नानं महापुण्यप्रदं, दग्धतिथि दि.१२।२३ उ., ←

दग्धतिथि दि.११।१६ या., अग्निवासः, भद्रा४१।१७ उ., पूर्व-दक्षिणयात्रा दि.११।१६ उ. १२।२० यावत् ततः दक्षिण यात्रा।

श्रीविकटचतुर्थी४ व्रतं, पूर्वोदितः गुरुः२१।२५। दक्षिण-पश्चिम यात्रा दि.६।४५यावत्, भद्रा ६।२४, शिववासः दि.६।४५उपरि। मीने बुधः१५।३३

रंगपञ्चमी ५ व्रतं, पंचमीतिथि ५४।४६ रा.३।५४, शिववासः, अग्निवासः,

सर्वार्थसिद्धियोगः रा.८।१५ यावत्, अमृतयोगः रा.३।३२ यावत्, पश्चिमयात्रा अहोरात्रं, भद्रा ५३।५७ उपरि,

भानुसप्तमी, व्यतीपात् ५२।१६, पुष्पगुरुः शुद्धारम्भश्च २१।२५ उपरि। अग्निवासः, पश्चिम-उत्तरयात्रा सं.६।३६ यावत् ✱

शीतलाष्टमी ८ व्रतं, शिववासः, पूर्व-उत्तरयात्रा। ✱ततः पूर्व-उत्तरयात्रा, भद्रा२०।५८ यावत्।

श्रीऋषभनाथ जी जयन्ती। अग्निवासः। ←अमृतयोगः-शिववासः-अग्निवासः दि.१२।२३ यावत्, दक्षिणयात्रा दि.१२।२३ यावत्।

भद्रा३।२२ उ.३०।३६ यावत्, अमृतयोगः सं.६।०६ यावत् ततः शिववासः, अग्निवासः, पश्चिमां विना यात्रा दि.१।४७ उ. सं.६।०६ यावत्।

पापमोचनीएकादशी ११ व्रतं सर्वेषां, शिववासः, सर्वार्थसिद्धियोगः-पूर्वां विना यात्रा दि.१२।२८ यावत्। पञ्चकारम्भः(भदवा) दि.१२।२८ उपरि।

गोघृतेनपारणं, प्रदोष१३व्रतं, शिववासः दि.२।२६ यावत्, अग्निवासः, अमृतयोगः-पश्चिम यात्रा दि.११।२६ यावत्।

वारुणीयोगः दि१।०४ यावत्तत्र गंगास्नानं शतसूर्यग्रहणसमफलदं। प्रदोष१४ व्रतं,सिद्धियोगः। भद्रा १७।५७ उपरि ४६।४६ यावत्।

श्राद्धादौ३०, अमावस्यायां पार्वणं। शिववासः दि.१२।०६ उपरि, अग्निवासः, सिद्धियोगः दि.१२।०६ यावत्, रेवत्यां रविः४१।३६(रा.१०।३३)। कुम्भे शुक्रः १६।४०।

अप्रैल ४। चैत्रीअमावस्या३०, स्नानदानादौ पुण्यतमा। विक्रमसंवत्२०७९ प्रारम्भोऽमान्तात्। शिववासः दि.११।३६ यावत्। अग्निवासः-उत्तर यात्रा दि.११।३६ उपरि। सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१०।३३ उपरि

मूलविचारः- ज्येष्ठा/मूल ति.६ बुध रा.०१।१५ तः ति.८ शुक्र दि.४।५८ यावत्। रेवती/अश्विनी ति.३० शुक्र दि.१०।३३ तः

वारुणीपर्वयोग- वारुणी पर्व योग मधुकृष्ण (चैत्रकृष्ण)में त्रयोदशीतिथि शतभिषा नक्षत्र से युक्त होने पर सम्पन्न होता है। इस योग में गंगास्नान करने पर कोटि(करोड़) सूर्यग्रहण के समकक्ष फल मिलता है। उपयुक्त योग यदि शनिवार को हो तो महावारुणी होता है। यदि त्रयोदशी शतभिषा शनिवार के साथ शुभ योग हो तो महा महा वारुणी नाम से विख्यात है तथा यह योग तीन करोड़ कुल का उद्धार करता है। आज के दिन गंगा स्नान से उपयुक्त फल प्राप्त होता है। चैत्रकृष्ण चतुर्दशी को जो मनुष्य शिव सानिध्य में गंगा स्नान करता है। उसे कभी भी प्रेत योनी प्राप्त नहीं होती है।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ श.	९।१३।२३।४१	१०।२७।१३।२४	१०।२५।०४।४८	९।१७।४८।२६	९।२३।५७।३३	७।०३।२६।०६	४४।५६
२ र.	९।१४।०८।१३	१०।२९।०३।२९	१०।२५।१९।१०	९।१८।४९।१५	९।२४।०४।०९	७।०३।२५।५६	४४।५८
३ चं.	९।१४।५२।४८	११।००।५४।२६	१०।२५।३३।४१	९।१९।५२।२१	९।२४।१०।०२	७।०३।२२।४८	४५।००
४ मं.	९।१५।३७।२२	११।०२।४५।२३	१०।२५।४८।१२	९।२०।५५।२७	९।२४।१५।५५	७।०३।१९।३७	४५।०२
६ बु.	९।१६।२१।५६	११।०४।३६।२०	१०।२६।०२।४१	९।२१।५८।३३	९।२४।२१।४७	७।०३।१६।२६	४५।०४
७ गु.	९।१७।०६।३०	११।०६।२७।१७	१०।२६।१७।१४	९।२३।०१।३९	९।२४।२७।३९	७।०३।१३।१५	४५।०६
८ शु.	९।१७।५१।०४	११।०८।१८।१३	१०।२६।३१।४३	९।२४।०४।४५	९।२४।३३।३१	७।०३।१०।०४	४५।०८
९ श.	९।१८।३५।३८	११।१०।०९।०९	१०।२६।४६।१६	९।२५।०७।५१	९।२४।३९।२३	७।०३।०६।५४	४५।१०
१० र.	९।१९।२०।१२	११।१२।००।०५	१०।२७।००।४७	९।२६।१०।५७	९।२४।४५।१५	७।०३।०३।४४	४५।१२
११ चं.	९।२०।०५।००	११।१३।४९।३१	१०।२७।१४।५७	९।२७।१५।५९	९।२४।५१।३२	७।०३।००।३३	४५।१४
१२ मं.	९।२०।४९।४८	११।१५।३८।५६	१०।२७।२४।०७	९।२८।२१।०१	९।२४।५७।४९	७।०२।५७।२२	४५।१६
१३ बु.	९।२१।३४।३६	११।१७।२८।२१	१०।२७।४३।१७	९।२९।२६।०३	९।२५।०४।०६	७।०२।५४।११	४५।१८
१४ गु.	९।२२।१९।२४	११।१९।१७।४६	१०।२७।५७।२७	१०।००।३१।०५	९।२५।१०।२३	७।०२।५१।००	४५।२०
१५ शु.	९।२३।०४।१२	११।२१।०७।११	१०।२८।११।३७	१०।०१।३६।०७	९।२५।१६।३९	७।०२।४७।४९	४५।२२

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४४।५६	८।५६	१०।५२	१३।०५	१५।२३	१७।३९	१९।५४	२२।११	०।२८	२।३३	४।१९	५।५०	७।१९
४४।५८	८।५२	१०।४८	१३।०१	१५।१९	१७।३५	१९।५०	२२।०७	०।२४	२।२९	४।१५	५।४६	७।१५
४५।००	८।४९	१०।४५	१२।५८	१५।१६	१७।३२	१९।४७	२२।०४	०।२१	२।२६	४।१२	५।४३	७।१२
४५।०२	८।४५	१०।४१	१२।५४	१५।१२	१७।२८	१९।४३	२२।००	०।१७	२।२२	४।०८	५।३९	७।०८
४५।०४	८।४१	१०।३७	१२।५०	१५।०८	१७।२४	१९।३९	२१।५६	०।१३	२।१८	४।०४	५।३५	७।०४
४५।०६	८।३७	१०।३३	१२।४६	१५।०४	१७।२०	१९।३५	२१।५२	०।०९	२।१४	४।००	५।३१	७।००
४५।०८	८।३४	१०।३०	१२।४३	१५।०१	१७।१७	१९।३२	२१।४९	०।०६	२।११	३।५७	५।२८	६।५७
४५।१०	८।३०	१०।२६	१२।३९	१४।५७	१७।१३	१९।२८	२१।४५	०।०२	२।०७	३।५३	५।२४	६।५३
४५।१२	८।२६	१०।२२	१२।३५	१४।५३	१७।०९	१९।२४	२१।४१	२३।५८	२।०३	३।४९	५।२०	६।४९
४५।१४	८।२३	१०।१९	१२।३१	१४।४९	१७।०५	१९।२०	२१।३७	२३।५४	१।५९	३।४५	५।१६	६।४५
४५।१६	८।१९	१०।१५	१२।२८	१४।४६	१७।०२	१९।१७	२१।३४	२३।५१	१।५६	३।४२	५।१३	६।४२
४५।१८	८।१५	१०।११	१२।२४	१४।४२	१६।५८	१९।१३	२१।३०	२३।४७	१।५२	३।३८	५।०९	६।३८
४५।२०	८।१२	१०।०८	१२।२१	१४।३९	१६।५५	१९।१०	२१।२७	२३।४४	१।४९	३।३५	५।०६	६।३५
४५।२२	८।०८	१०।०४	१२।१७	१४।३५	१६।५१	१९।०६	२१।२३	२३।४०	१।४५	३।३१	५।०२	६।३१

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ श.	प्र.६:०२-७:३२ दि.१:३१-३:०० सं.४:२९-५:५८।	सं.५:५८-७:२९ रा.१:३१-३:०२ रा.४:३२-६:०२।
२ र.	दि.१०:३२-१:३१।	रा.१०:३१-१२:०२ रा.१:३२-३:०२।
३ चं.	दि.७:३१-९:०१ दि.३:०१-४:३०।	रा.१०:३१-१२:०१ रा.३:०१-४:३१।
४ मं.	दि.७:३०-९:०० दि.१:३०-३:००।	रा.७:३०-९:००।
६ बु.	दि.९:०१-१०:३१ दि.१२:०१-१:३१।	रा.१२:०१-१:३१ रा.३:०१-४:३०।
७ गु.	दि.३:०२-६:०२।	रा.१२:०२-१:३१ रा.४:२९-५:५८।
८ शु.	दि.९:००-१२:०२।	रा.९:०२-१०:३२।
९ श.	प्र.५:५७-७:२८ दि.१:३२-३:०३ सं.४:३३-६:०३।	सं.६:०३-७:३३ रा.१:३०-२:५९ रा.४:२८-५:५६।
१० र.	दि.१०:२९-१:३१।	रा.१०:३१-१२:०० रा.१:२९-२:५८।
११ चं.	दि.७:२७-८:५६ दि.३:०३-४:३४।	रा.१०:३२-१२:०१ रा.२:५९-४:२७।
१२ मं.	दि.७:२६-८:५६ दि.१:३३-३:०४।	रा.७:३५-९:०४।
१३ बु.	दि.८:५८-१०:३० दि.१२:०२-१:३३।	रा.१२:०२-१:३० रा.२:५९-४:२६।
१४ गु.	दि.३:०५-६:०७।	रा.१२:०१-१:२९ रा.४:२५-५:५३।
१५ शु.	दि.८:५६-१२:००।	रा.९:०४-१०:३२।

• **स्नानः-** प्रातःकाल स्नानक पश्चात् मनुष्य शुद्ध भऽ जप, पूजा-पाठ आदि समस्त कार्यक योग्य बनैत छथि तें प्रातः स्नानक प्रशंसा कयल जाइत अछि। प्रातः स्नानं प्रशंसन्ति दृष्टादृष्टकरं हि तत्। सर्वमर्हति शुद्धात्मा प्रातः स्नायी जपादिकम्। मनुष्यक शरीरमे नव छिद्र होइत अछि ओ रातिमे शयन कैलासँ अपवित्र भऽ जाइत अछि। एहि हेतु सूर्योदयसँ पूर्व उठि मल-मूत्र त्याग कैल वस्त्र बदलि गंगादि तीर्थमे स्नान करी। अत्यन्तमलिनः कायो नवच्छिद्रसमन्वितः। स्रवत्येष दिवारात्रौ प्रातः स्नानं विशोधनम्।।

प्रातःकाल स्नान करवला मनुष्यक लग दुष्ट(भूत-प्रेत आदि) नै अबैत अछि। दुष्फल- शरीरक स्वच्छता आ अदृष्टफल-पापक नाश तथा पुण्य प्राप्ति। ई दू प्रकारक फल मिलैत अछि। तें प्रातः स्नान करवाक चाहि। प्रातः स्नानं चरित्वाथ शुद्धे तीर्थे विशेषतः। प्रातः स्नानाद्यतः शुद्ध्येत् कायोऽयं मलिनः सदा।। नोपसर्पन्ति वै दुष्टाः प्रातः स्नायिजनं क्वचित्। दृष्टादृष्टफलं तस्मात् प्रातःस्नानं समाचरेत्।। ५, तेज, बल, पवित्रता, आयु, आरोग्य, निर्लोभता, दुःस्वप्नक नाश, तप आ मेधा ई दस गुण नित्य स्नान करवला व्यक्तिक प्राप्त होइत अछि। गुणा दश स्नानपरस्य साधो ! रूपं च तेजश्च बलं च शौचम्। आयुष्यमारोग्यमलोलुपत्वं दुःस्वप्ननाशश्च तपश्च मेधा।। वेद-स्मृतिमे कहल गेल सभकार्य स्नानमूल अछि, अतेव लक्ष्मी, पुष्टि आ आरोग्यक वृद्धि चाहवला मनुष्य नित्य स्नान करथि। स्नानमूलाः क्रियाः सर्वाः श्रुतिस्मृत्युदिता नृणाम्। तस्मात् स्नानं निषेवेत श्रीपुष्ट्यारोग्यवर्धनम्।।

• **स्नानक भेदः-** मन्त्रस्नान, भौमस्नान, अग्निस्नान, वायव्यस्नान, दिव्यस्नान,वारुणस्नान आ मानसिक स्नान-ई सात प्रकारके स्नान अछि। आपो हिष्ठा....इत्यादि मन्त्रसँ मार्जन करनाई मन्त्र स्नान कहवैत अछि। २.समस्त शरीरमे मिट्टी लगायव ई भौमस्नान, ३. भस्म लगायव अग्निस्नान, ४.गायके खुरक धूलि लगायव वायव्यस्नान, ५.सूर्यकिरणमे वर्षाके जलसँ स्नान करव दिव्यस्नान कहवैत अछि। ६.जलमे डुबकी लगाक स्नान करव वारुणस्नान, ७.आत्मचिन्तन करव मानसिक स्नान कहवैत अछि। मान्त्रं भौमं तथाग्नेयं वायव्यं दिव्यमेव च। वारुणं मानसं चैव सप्त स्नानान्यनुक्रमात्।। आपो हिष्ठादिभिर्मान्त्रं मृदालम्भस्तु पार्थिवम्। आग्नेयं भस्मना स्नानं वायव्यं गोरजः स्मृतम्।। यत्तु सातपवर्षेण स्नानं तद् दिव्यमुच्यते। अवगाहो वारुणं स्यात् मानसं ह्यात्मचिन्तनम्।।

• **अशक्त व्यक्तिक लेल स्नान–** रोगादे कारण सँ स्नान मे असमर्थ व्यक्ति सिरकें नीचासँ स्नान करवा क चाहि या भिजल वस्त्रसँ शरीरकें पोंछ लेव सेहो एक प्रकारक स्नान कहल गेल अछि। अशिरस्कं भवेत् स्नानं स्नानाशक्तौ तु कर्मिणाम्। आर्द्रेण वाससा वापि मार्जनं दैहिकं विदुः।।

•**स्नान विधि :-** उषःकालस्तु लोहितादिगुणलक्षितकालात् प्राक्कालः। अर्थात् उषाकाल सँ पहिने स्नान करव से उत्तम मानल गेल अछि। एहिसँ प्रजापत्यक फल प्राप्त होइत अछि। तेल लगाक आ देह मल-मलक नदी मे नहायव मना अछि। अतः नदी सँ वाहर तटपर देह हाथ मलिक नहा लेथि, तखन नदीमे गोता लगावि मलं प्रक्षालयेत्तीरे ततः स्नानं समाचरेत्। शास्त्र मे एही प्रकारक स्नान क मलापकर्षण स्नान कहल गेल अछि। ई स्नान अमन्त्रक होइत अछि।

२ रवौ वल्ली
८।३९।४६।३५
अयनांशाः२२।५०।४१

रा.७
५ सू
८
९
गु.४बु
मं
श
शु. ३
९
१२
१०
चं.
२
११
ल.१ के.

१० रवौ वल्ली
८।३९।४६।४२
अयनांशाः२२।५०।४२

रा. ६
४ सू
७
५
गु. ३
बु
मं
८
श
शु.
२
११
९
चं.
ल.१
१०
के.
१२

विविधः-प्रयागे केशवपनफलम्:- किं गयापिंडदानेन काश्यां वा मरणेन किम् । किं कुरुक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि। केशानां यावतीसंख्या छिन्नानांजाह्नवीजले। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते। दिक्क्रमेण प्रहरार्द्धवशेन च गोक्षुतस्य दोषाधिक्यमुक्तं नारदेन-सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्टं गोक्षुतं मरणप्रदम्। अफलं तत्क्षुतं वाच्यमन्द्ध पीनसकेतवः। केतवः कपटः, पिनसो, मुहुर्नासाश्रावी । रत्नावलीरत्नकलापयोः- प्रागन्यपुंसः पुरतोऽपरस्तात् पुनः पुनर्वा तत एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जातं क्षुतं केऽपि वदन्त्यसत्यम्। यात्रायां क्षुतम् अवश्यमेव वर्जनीयम्। रत्न कलापे- अग्रे क्षुतं चेत् शकुनैः किमन्यैः पश्चात् क्षुतं चेत् शकुनैः किमन्यैः। जातानजाताञ्छकुनानि हन्ति क्षुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञाः। शुभक्षुतम् सर्वशाकुने- औषधे च नवारोहे विवादे शयनेऽशने। विद्यारम्भे बीजवापे क्षुतं सप्तसु शोभनम्।

चैत्रशुक्लपक्षः।।

शक १९४४, संवत्२०७९, सन् १४२९, उत्तरायणं, उत्तरगोलः, वसन्त ऋतुः, दक्षिणे कालः, अशुद्धः।
दिनांक २ अप्रैल तः १६ यावत् सन् २०२२ ई.। पूर्वोदितः शुक्रः, पूर्वोदितः गुरुः।

तिथयः दिनानि	तिथिमानानि द. प. घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.कालः द. प. घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः संचारकालः राशिः द. प. घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.	
१ श.	१४।३० दि.११।३८	रेवती	१३।२५ दि.११।१२	ऐन्द्र	०६।०१	बव १४।३०	मीन १३।२५ दि.११।१२	११।१८।४०।०२	३०।४८	५।५०	६।१०	१२	१९	२	वसन्तनवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, नवरात्रव्रतारम्भः, चन्द्रदर्शनं। मु.१५ याम्यश्रृंगं फलं महार्घं। शक१९४४ प्रारम्भः। दग्धतिथि दि.११।३८ उपरि, अमृतयोगः-पश्चिम-उत्तर यात्रा दि.११।३८
२ र.	१५।५३ दि.१२।११	अश्विनी	१६।२० दि.१२।२२	वैधृति	४।५४	कौलव १५।५३	मेष अहोरात्र	११।१९।४३।१७	३०।५२	५।५०	६।१०	१३	२०	३	श्रीरेमन्तपूजा, झूलेलालजयन्ती। दग्धतिथि दि.१२।११ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१२।२२ यावत्, शिववासः-अग्निवासः दि.१२।११ यावत्।
३ चं.	१८।२७ दि.१।११	भरणी	२०।२२ दि.१।१८	विष्कुम्भ	०४।०५	गर १८।२७	मेष ३६।४० रा.८।२६	११।२०।४२।१७	३०।५६	५।४९	६।११	१४	२१	४	श्रीगौरी३ व्रतं, स्वायंभुवमन्वादिः, श्रीगणेश४ व्रतं, अग्निवासः दि.१।११ उपरि, भद्रा ५०।१६ यावत्। यावत् ततः शिववासः। पञ्चक(मदवा)समाप्तिः दि.११।१२ उपरि।
४ मं.	२२।११ दि.०२।४०	कृत्तिका	२५।३४ दि.४।०१	प्रीति	०४।०६	भद्रा २२।११	वृष अहोरात्र	११।२१।४१।१७	३१।००	५।४८	६।१२	१५	२२	५	श्रीसूर्यषष्ठीव्रतस्य नहाय-खाय। अग्निवासः दि.२।४० या. ततः शिववासः, पूर्व-दक्षिणयात्रा दि.४।०१ उपरि, भद्रा २२।११ यावत्।
५ बु.	२६।४५ दि.०४।२६	रोहिणी	३१।३५ सं.६।२५	आयुष्मान	४।५६	बालव २६।४५	वृष अहोरात्र	११।२२।४०।१७	३१।०४	५।४७	६।१३	१६	२३	६	श्रीसूर्यषष्ठीव्रतस्यैकभुक्तं(खरना)। मीनावतारः, श्रीरामराज्याभिषेकमहोत्सवः। श्रीपञ्चमी, लक्ष्मीपूजनं, उपनयनं, सर्वार्थसिद्धियोगः अहोरात्रं, शिववासः, अग्निवासः दि.४।२६ उपरि,
६ गु.	३१।५१ सं.६।३०	मृगशिरा	३८।०३ रा.८।५६	सौभाग्य	६।१७	तैतिल ३१।५१	वृष ४।४६ दि.७।४२	११।२३।३९।१७	३१।०८	५।४६	६।१४	१७	२४	७	श्रीसूर्यषष्ठीव्रतं, सायंकालिकार्घदानं, बिल्वाभिमन्त्रणं, गजपूजा। शिववासः-अग्निवासः सं. ६।३० यावत्, दक्षिणां विना यात्रा रा.८।५६ यावत्।
७ शु.	३७।०७ रा.८।३६	आर्द्रा	४४।२८ रा.११।३७	शोभन	७।५१	गर ५।२६	मिथुन अहोरात्र	११।२४।३८।१७	३१।१२	५।४६	६।१४	१८	२५	८	प्रातःकालिकार्घ्यदानं पारणञ्च। नवपत्रिकाप्रवेशः। निशापूजा, रात्रिजागरणं। भद्रा ३७।०७ उपरि। पूर्व-दक्षिण यात्रा सं.६।२५ यावत् ततः उत्तरां विना यात्रा। अश्विन्यों मेषे च बुध ४५।३६।
८ श.	४२।०२ रा.१०।३३	पुनर्वसु	५०।५० रा.२।०५	अतिगण्ड	६।१६	भद्रा ६।३५	मिथुन ३४।१७ रा.७।२८	११।२५।३७।१७	३१।१६	५।४५	६।१५	१९	२६	९	महाष्टमी ८ व्रतं, सन्धिपूजा, दीक्षाग्रहणम्। अशोकाष्टमी, अशोककलिकापानं, ब्रह्मपुत्रस्नानं। भद्रा ६।३५या., अग्निवासः, दक्षिण-पश्चिम यात्रा रा.७।२८ या. ततः पश्चिम-उत्तरयात्रा रा.१०।३३या., मीने गुरु २४।११
९ र.	४६।२० रा.१२।१६	पुष्य	५६।२५ रा.४।१८	सुकर्मा	१०।२५	बालव १४।११	कर्क अहोरात्र	११।२६।३६।१६	३१।२०	५।४४	६।१६	२०	२७	१०	रामावतार, श्रीरामनवमी ९ व्रतं सर्वेषाम्। महानवमी व्रत, नवम्यां हवनं, हनुमद्ध्वजदानं, श्रीसीतारामपूजनदर्शनादिकम्, अयोध्यायां सांगश्रीसीतारामदर्शनं। रविपुष्य योगः-सर्वार्थसिद्धियोगः रा.४।१८ यावत्,
१० चं.	४९।३६ रा.१२।३३	आश्लेषा	६०।०० अहोरात्र	धृति	१०।५२	तैतिल १७।५८	कर्क अहोरात्र	११।२७।३५।००	३१।२३	५।४३	६।१७	२१	२८	११	उपनयनं, महानवमीव्रतस्य पारण। विजयादशमी१०। नवरात्रव्रतपारणं, देवीविसर्जनं, जयन्तीधारण, अपराजितापूजा, नीलकण्ठखञ्जनादिदर्शनम्। दीक्षाग्रहणम्। अमृतयोगः रा.१२।३३ यावत् ततः सिद्धियोगः।
११ मं.	५१।४७ रा.२।२५	आश्लेषा	००।५७ प्रा.६।०६	शूल	१०।२८	वणिज् २०।४७	कर्क ००।५७ प्रा.६।०५	११।२८।३३।४४	३१।२६	५।४३	६।१७	२२	२९	१२	कामदाएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। श्रीविष्णुदोलोत्सवः, भद्रा २०।४७ उ., ५१।४७ यावत्, अग्निवासः। ◆ शिववासः, अग्निवासः, पश्चिमां विना यात्रा रा.१२।१६ उपरि रा.४।१८ यावत्। कुम्भे मंगल २६।३१
१२ बु.	५२।३८ रा.२।४५	मघा	०४।२४ दि.७।२७	गण्ड	६।१३	बव २२।१३	सिंह अहोरात्र	११।२९।३२।२८	३१।३०	५।४२	६।१८	२३	३०	१३	मासान्तः, श्रीविष्णु१२, गोघृतेनपारणं, शिववासः, सिद्धियोगः रा.२।४५ यावत्।
१३ गु.	५२।१० रा.२।३३	पूर्वाफाल्गुनी	०६।३३ दि.८।१८	वृद्धि	६।५६	कौलव २२।२४	सिंह २१।४७ दि.२।२४	००।००।३१।१२	३१।३४	५।४१	६।१९	२४	१	१४	प्रदोष१३ व्रतं, चैत्रावली, मदन१३ गोष्ठे सत्संगारम्भः, श्रीमदनपूजनं। श्रीमहावीरजयन्ती २६२०। अश्विन्यांमेषे च रविः १३।५३ (दि.११।१५), सतुआइन, यवविषुवसंक्रान्तिः पुण्यकालः दि.१२।०० या.। ←
१४ शु.	५०।३० रा.१।५२	उत्तराफाल्गुनी	०७।२६ दि.८।३६	ध्रुव	३।३६	गर २१।१०	कन्या अहोरात्र	००।०१।२९।५६	३१।३८	५।४०	६।२०	२५	२	१५	व्याघात ५६।०३, भद्रा ५०।३० उपरि, प्रदोष१४ व्रतं, मदनभञ्जिका१४। मासादिः, जूडिशीतल, पर्युषितान्न पानादिभक्षणम्, तुलस्यश्वत्थाद्विवृक्षसेचनम्।
१५ श.	४७।३६ रा.१२।४३	हस्त	०७।१२ दि.८।३२	हर्षण	५४।२१	भद्रा १६।०५	कन्या ३६।३२ रा.८।१७	००।०२।२८।४०	३१।४२	५।४०	६।२०	२६	३	१६	चैत्रीपूर्णिमा१५ स्नानदानादिः, स्वारोचिषमन्वादिः। हनुगद्ध्वजदानं, विपणि। भद्रा १६।०५ यावत्, अग्निवासः, गृहारम्भः-गृहप्रवेशः पूर्णिमायां

← सोपकरणवारिपूर्णघटदानं, प्रपागलन्तिकादानं, वैशाखस्नानारम्भः, हरिद्वारेकल्पवासारम्भः हनुमद्ध्वजदानं, आर्यभटजयन्ती, उत्तरगोलारम्भः, खरमाससमाप्तिः, नेपाली-हिन्दु नवर्षारम्भः२०७९। सृष्ट्यादिः, सृष्टिगताब्दाः१९७२९४९१२३, भोगाब्दाः२३४७०५०८७७। शिववासः, अग्निवासः

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि
१ श.	९।२३।४८।५९	११।२२।५६।३६	१०।२८।२५।४६	१०।०२।४१।०६	९।२५।२२।५५	७।०२।४४।३९
२ र.	९।२४।३३।४६	११।२४।४६।०१	१०।२८।३९।५५	१०।०३।४६।११	९।२५।२९।११	७।०२।४१।२९
३ च.	९।२५।१५।४४	११।२६।३०।४०	१०।२८।५४।०७	१०।०४।५२।२३	९।२५।३३।५५	७।०२।३८।१८
४ मं.	९।२५।५७।४२	११।२८।१५।१९	१०।२९।०८।१९	१०।०५।५८।३५	९।२५।३८।३९	७।०२।३५।०७
५ बु.	९।२६।३९।४०	११।२९।५९।५७	१०।२९।२२।३१	१०।०७।०४।४७	९।२५।४३।२३	७।०२।३१।५६
६ गु.	९।२७।२१।३८	००।०१।४४।३५	१०।२९।३६।४२	१०।०८।१०।५९	९।२५।४८।०७	७।०२।२८।४५
७ शु.	९।२८।०३।३६	००।०३।२९।१३	१०।२९।५०।५३	१०।०९।१७।११	९।२५।५२।५१	७।०२।२५।३४
८ श.	९।२८।४५।३४	००।०५।१३।५१	११।००।०५।०४	१०।१०।२३।२३	९।२५।५७।३५	७।०२।२२।२४
९ र.	९।२९।२७।३२	००।०६।५८।२९	११।००।१९।१५	१०।११।२९।३५	९।२६।०२।१९	७।०२।१९।१४
१० च.	१०।००।१५।१६	००।०८।३४।४७	११।००।३३।१३	१०।१२।३६।५१	९।२६।०७।०७	७।०२।१६।०३
११ मं.	१०।०१।०३।००	००।१०।११।०५	११।००।४७।११	१०।१३।४४।०७	९।२६।११।५५	७।०२।१२।५२
१२ बु.	१०।०१।५०।४४	००।११।४७।२३	११।०१।०१।०९	१०।१४।५१।२३	९।२६।१६।४३	७।०२।०९।४१
१३ गु.	१०।०२।३८।२८	००।१३।२३।४१	११।०१।१५।०७	१०।१५।५८।३९	९।२६।२१।३१	७।०२।०६।३०
१४ शु.	१०।०३।२६।१२	००।१४।५९।५९	११।०१।२९।०५	१०।१७।०५।५४	९।२६।२६।१८	७।०२।०३।१८
१५ श.	१०।०४।१३।५५	००।१६।३६।०७	११।०१।४३।०३	१०।१८।१३।०९	९।२६।३१।०५	७।०२।००।०६

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४५।२४	८।०४	१०।००	१२।१३	१४।३१	१६।४७	१९।०२	२१।१९	२३।३६	१।४१	३।२७	४।५८	६।२७
४५।२५	८।०१	९।५७	१२।१०	१४।२८	१६।४४	१८।५९	२१।१६	२३।३३	१।३८	३।२४	४।५५	६।२४
४५।२७	७।५७	९।५३	१२।०६	१४।२४	१६।४०	१८।५५	२१।१२	२३।२९	१।३४	३।२०	४।५१	६।२०
४५।२९	७।५३	९।४९	१२।०२	१४।२०	१६।३६	१८।५१	२१।०८	२३।२५	१।३०	३।१६	४।४७	६।१६
४५।३१	७।४९	९।४५	११।५८	१४।१६	१६।३२	१८।४७	२१।०४	२३।२१	१।२६	३।१२	४।४३	६।१२
४५।३३	७।४५	९।४१	११।५४	१४।१२	१६।२८	१८।४३	२१।००	२३।१७	१।२२	३।०८	४।३९	६।०८
४५।३५	७।४१	९।३७	११।५०	१४।०८	१६।२४	१८।३९	२०।५६	२३।१३	१।१८	३।०४	४।३५	६।०४
४५।३७	७।३७	९।३३	११।४६	१४।०४	१६।२१	१८।३५	२०।५२	२३।०९	१।१४	३।००	४।३१	६।००
४५।३९	७।३४	९।३०	११।४३	१४।०१	१६।१७	१८।३२	२०।४९	२३।०६	१।११	२।५७	४।२८	५।५७
४५।४१	७।३०	९।२६	११।३९	१३।५७	१६।१३	१८।२८	२०।४५	२३।०२	१।०७	२।५३	४।२४	५।५३
४५।४३	७।२६	९।२२	११।३५	१३।५३	१६।०९	१८।२४	२०।४१	२२।५८	१।०३	२।४९	४।२०	५।४९
४५।४५	७।२२	९।१८	११।३१	१३।४९	१६।०५	१८।२०	२०।३७	२२।५४	०।५९	२।४५	४।१६	५।४५
४५।४७	७।१९	९।१५	११।२८	१३।४६	१६।०२	१८।१७	२०।३४	२२।५१	०।५६	२।४२	४।१३	५।४२
४५।४९	७।१५	९।११	११।२४	१३।४२	१५।५८	१८।१३	२०।३०	२२।४७	०।५२	२।३८	४।०९	५।३८
४५।५१	७।११	९।०७	११।२०	१३।३८	१५।५४	१८।०९	२०।२६	२२।४३	०।४८	२।३४	४।०५	५।३४

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ श.	प्र.५:५१-७:२४ दि.१:३३-३:०५ दि.४:३७-६:०९।	सं.६:०९-७:३७ रा.१:२९-२:५७ रा.४:२४-५:२१।
२ र.	दि.१०:२९-१:३३।	रा.१०:३३-१२:०१ रा.१:२९-२:५७।
३ चं.	दि.७:२३-८:५६ दि.३:०६-४:३८।	रा.१०:३४-१२:०२ रा.२:५६-४:२३।
४ मं.	दि.७:२२-८:५५ दि.१:३४-३:०७।	रा.७:३६-९:०७।
५ बु.	दि.८:५४-१०:२७ दि.१२:००-१:३३।	रा.१२:००-१:२७ रा.२:५४-४:२१।
६ गु.	दि.३:०६-६:१२।	रा.१२:००-१:२७ रा.४:२१-५:४७।
७ शु.	दि.८:५५-१२:०१।	रा.९:०७-१०:३४।
८ श.	प्र.५:४६-७:२० दि.१:३५-३:०८ दि.४:४१-६:१४।	सं.६:१४-७:४१ रा.१:२८-२:५४ रा.४:२०-५:४५।
९ र.	दि.१०:२७-१:३५।	रा.१०:३५-१२:०१ रा.१:२७-२:५३।
१० चं.	दि.७:१८-८:५२ दि.३:०८-४:४२।	रा.१०:३४-१२:०० रा.२:५२-४:१८।
११ मं.	दि.७:१८-८:५२ दि.१:३४-३:०८	रा.७:४२-९:०८।
१२ बु.	दि.८:५३-१०:२७ दि.१२:०१-१:३५।	रा.१२:०१-१:२७ रा.२:५३-४:१८।
१३ गु.	दि.३:१०-६:१८।	रा.१२:०२-१:२७ रा.४:१७-५:४१।
१४ शु.	दि.८:५१-१२:०१।	रा.९:११-१०:३६।
१५ श.	प्र.५:४०-७:१५ दि.१:३५-३:१० दि.४:४५-६:२०।	सं.६:२०-७:४५ रा.१:२५-२:५० रा.४:१५-५:४०।

२ रवौ वल्ली ८।३६।४६।४६
अयनांशाः २२।५०।४३

(लग्नकुण्डली: रा.६, चं.७, ८ गु.सू.बु.५, शु.३, ८, ५, श मं.२, ९, ११, ल.१, १०, के.१२)

९ रवौ वल्ली ८।३६।४६।५६
अयनांशाः २२।५०।४४

(लग्नकुण्डली: रा.६, बु, ४ गु.सू, ७, ८ चं., ५, शु.३, श मं.२, ९, ११, ल.१, १०, के.१२)

मूलविचारः-रेवती/अश्विनी ति.२ रवि दि.१२।२२ यावत्।
आश्लेषा/मघा ति.६ रवि रा.४।१८ तः ति.१२ बुध दि.७।२७ यावत्।

स्नान सँ स्वास्थ्य आ शुद्धता दुनु के लेल उत्तम मानल गेल अछि। प्रथम जलक बाहर ठाढ़ भऽ संकल्प करथि। तत्पश्चात् मृत्तिका लगाय अन्यान्य तीर्थक आवाहन नाभि पर्यन्त जलमे करथि। जलक ऊपर इन्द्राजकशाप देल ब्रह्महत्या रहैत छथि। एहि हेतु दुनू हाथे जल हिलाकऽ स्नान करी। किन्तु भागीरथी गंगामे अन्य तीर्थक आवाहन नहि करी केवल गंगाजीक प्रार्थना करी। यदि घरमे स्नान करी त पात्रमे जल लऽ पूर्वाभिमुख भऽ जलक प्रार्थना कऽ अन्य तीर्थक आवाहन कऽ संकल्प कऽ ओहि जलसँ स्नान करी। अश्वक्रान्ते ! रथक्रान्ते ! विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे। मृत्तिके ! हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्।। अर्थ-स्नान करबाक समय गंगादि तीर्थ मे मृत्तिका उपरोक्त मन्त्रसँ मस्तकमे लगाय नाभि पर्यन्त जलमे स्नान करी। स्नान सँ पूर्व गंगाजी द्वारा उक्त श्लोक क स्मरण- नन्दिनी नलिनी सीता मालती च महापगा। विष्णुपादाब्जसम्भूता गङ्गात्रिपथगामिनी।। भागीरथी भोगवती जाह्नवी त्रिदशेश्वरी। द्वादशैतानि नामानि यत्र यत्र जलाशये।। स्नानोद्यतः स्मरेन्नित्यं यत्र तत्र वसाम्यहम्।। • जलक श्रेष्ठता :- (अग्निपुराण)-निपानदुद्धृतं पुण्यं ततः प्रस्रवणोदकम्। ततोऽपि सारसं पुण्यं ततो नादेयमुच्यते।। तीर्थतोयं ततः पुण्यं गङ्गातोयं ततोऽधिकम्।। अर्थ-कुआँसँ निकालल जलक अपेक्षा झरनाक जल, झरनाक जलक अपेक्षा सरोवरक जल, सरोवरक जलक अपेक्षा नदीक जल, नदीक जलक अपेक्षा तीर्थक जल आ तीर्थक जलक अपेक्षा गंगाजीक जल अधिक श्रेष्ठ मानल गेल अछि।

विविधविषयाः-चैत्रशुक्लप्रतिपतो नवमीं यावत् दुर्गापूजनोत्सवस्तत्र घटे यन्त्रे चित्रे प्रतिमायां वा देवीं पूजयेत्, सप्तशतीपाठादिकं च कुर्यात्। चैत्रशुक्लाष्टम्यामशोककलिकापानमन्त्रः - त्वामशोककराभीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिबामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु।। एतत्पानफलं लिंगपुराणे - अशोककलिका ह्यष्टौ ये पिबन्ति पुनर्वसौ। चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः।। ब्रह्मपुत्रस्नानमन्त्रः ब्रह्मपुत्रमहाभाग शन्तनोः कुलसम्भवः। अमोघागर्भसम्भूत पापं लौहित्य मे हर।। चैत्रशुक्लनवम्यां रामनवमीव्रतन्तत्रांगदेवतापूजनपूर्वकं श्रीरामं सम्पूज्यार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्रः - दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।। परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ।। ततः परदिने इदं विष्णुरिति मन्त्रेण जुहुयाद् ब्राह्मणांश्च भोजयेत्। मिथिलामाहात्म्ये बृहद्विष्णुपुराणे - मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः।। मिथिलावासमात्रेण जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देवानां राघवं प्राप्य तद्भक्तिः सह मोदते।। चक्षूरक्षार्थं पठनीयमन्त्रः - शर्यातिञ्च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमश्विनौ। भोजनान्ते स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्न हीयते।। होलिकादाहविशेष-तत्राग्नौ विधिवद्धुत्वा काममन्त्रं विवर्जयेत। धूतैः किलकिलाशब्दैस्तालशब्दै- र्मनोरमैः। तमग्निं त्रिः परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जल्पन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यातमागतः। अस्यां काष्ठादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां दाहयेत्। ध्यानमन्त्रः-असृक्पाभयसन्त्रस्तैः कृता त्वं होलि बालिशैः। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव। ततो 'होलिकायै नमः' इति मन्त्रेण यथोपचारैः संपूज्य प्रदीपयेत्।

तिथयः दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्र	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करण द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	राश्यादिस्पष्टसूर्यः	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१ र.	४३।४६	रा.११।१०	चित्रा	०५।५५	दि.८।०१	वज्र	४८।२८	बालव १५।४४	तुला	अहोरात्रं	००।०३।२७।२३	३१।४६	५।३६	६।२१	२७
२ चं.	३६।०६	रा.०८।१७	स्वाती	०३।३४	दि.७।०३	सिद्धि	४१।५६	तैतिल ११।२६	तुला ४६।१४	रा.४।०८	००।०४।२५।५२	३१।५०	५।३८	६।२२	२८
३ मं.	३३।५२	सं.७।०६	विशाखा	००।३२	दि.५।५०	व्यतीपात्	३४।५१	वणिज् ६।३१	वृश्चिक	अहोरात्रं	००।०५।२४।२१	३१।५४	५।३७	६।२३	२९
४ बु.	२८।०६	दि.४।५०	ज्येष्ठा	५२।५६	रा.२।४६	वरीयान्	२७।२६	बव ००।५६	वृश्चिक५२।५६	रा.२।४६	००।०६।२२।५०	३१।५८	५।३६	६।२४	३०
५ गु.	२२।०४	दि.२।२५	मूल	४८।४७	रा.०१।०६	परिघ	१६।४७	तैतिल २२।०४	धनु	अहोरात्रं	००।०७।२१।१६	३२।०१	५।३६	६।२४	१
६ शु.	१६।००	दि.११।५६	पूर्वाषाढ़ा	४५।४२	रा.११।५२	शिव	१२।०३	वणिज् १६।००	धनु ५६।२६	रा.शे५।२३	००।०८।१६।४७	३२।०४	५।३५	६।२५	२
७ श.	१०।०४	दि.९।३६	उत्तराषाढ़ा	४०।५१	रा.९।५५	सिद्ध	०४।२८	बव १०।०४	मकर	अहोरात्रं	००।०९।१८।१५	३२।०७	५।३५	६।२५	३
८ र.	०४।२६	दि.७।२१	श्रवण	३७।२५	रा.८।३२	शुभ	५०।१३	कौलव ४।२६	मकर	अहोरात्रं	००।१०।१६।४३	३२।१०	५।३४	६।२६	४
१० चं.	५४।०६	रा.०३।११	धनिष्ठा	३४।४०	रा.७।२५	शुक्ल	४३।५२	वणिज् २६।४६	मकर ६।०१	दि.७।५७	००।११।१४।५७	३२।१३	५।३३	६।२७	५
११ मं.	५१।४०	रा.२।१३	शतभिषा	३२।४८	सं.६।४०	ब्रह्म	३८।११	बव २२।५३	कुम्भ	अहोरात्रं	००।१२।१३।११	३२।१६	५।३२	६।२७	६
१२ बु.	४९।५५	रा.१।१४	पूर्वाभाद्रपद	३१।४७	सं.६।१४	ऐन्द्र	३३।२१	कौलव २०।२८	कुम्भ १८।००	दि.१२।४४	००।१३।११।२५	३२।२०	५।३२	६।२८	७
१३ गु.	४७।५६	रा.१२।४२	उत्तराभाद्रपद	३१।५७	सं.६।१७	वैधृति	२६।२३	गर १८।३७	मीन	अहोरात्रं	००।१४।०६।३६	३२।२३	५।३१	६।२८	८
१४ शु.	४७।५७	रा.१२।४१	रेवती	३३।१६	सं.६।५०	विष्कुम्भ	२६।२५	शकुनी १७।५८	मीन ३३।१६	सं.६।५०	००।१५।०७।५२	३२।२६	५।३१	६।२९	९
३० श.	४९।१६	रा.०१।१२	अश्विनी	३६।००	रा.७।५४	प्रीति	२४।२६	नाग १८।४४	मेष	अहोरात्रं	००।१६।०६।०५	३२।२९	५।३०	६।३०	१०

वैशाखकृष्णपक्षः ।।

शक १९४४, सवत्२०७९, सन् १४२९, उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु, ... शुद्ध।
दिनांक १७ अप्रैल तः ३० अप्रैल यावत् सन् २०२२ ई। पूर्वोदित गुरु, पूर्वोदित शुक्र।

दिनांकाः ने.	अं.	
४	१७	वैशाखे तैलं त्यजेत्। विवाहः दिवारात्रौ, द्विरागमनं द्वितीयायां दि.८।०१ उपरि। विपणि चित्रायां, स्वामीसेवारम्भः। शिववासः, दक्षिणयात्रा रा.११।१० उपरि,
५	१८	गृहारम्भः-मुण्डनं-अक्षरारम्भः-विद्यारम्भः स्वात्यां दि.७।०१ यावत्। अग्निवासः,
६	१९	अनुराधानक्षत्रमानं ५६।२४ रा.४।१०, वक्रतुण्ड ४ व्रतं, शल्यचिकित्सा। सिद्धियोगः सं.७।०६ यावत्, भद्रा ६।३१ उ.,३३।५२ यावत्।
७	२०	विवाहः-द्विरागमनं मूले रा.२।४६ उपरि। मुण्डनं पञ्चम्यां दि.४।५० उपरि। शिववासः, अग्निवासः दि.४।५० यावत् ततः पश्चिम यात्रा।
८	२१	विवाहः-द्विरागमनं पञ्चम्यां दि.२।२५ यावत्। दग्धतिथि दि.२।२५ उ., पूर्व-उत्तर यात्रा-सिद्धियोगः-शिववासः दि.२।२५ यावत् ततः अग्निवासः
९	२२	कोकिलाषष्ठी६, विवाहः उत्तराषाढ़ायां रा.११।५२ उपरि। दग्धतिथि दि.११।५६ या., सिद्धियोगः-अग्निवासः दि.११।५६ यावत्, भद्रा १६।०० उपरि ४३।०४ यावत्। उत्तराभाद्रपदायां गुरु २४।११।
१०	२३	विपणि सप्तम्यां दि.९।३६ यावत्। साध्य५२।४०, शिववासः दि.९।३६ उपरि,
११	२४	श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्, नवमीतिथि५४।५६ रा.३।३२ यावत्, शिववासः-सिद्धियोगः-पश्चिमां विना यात्रा दि.७।२१ यावत्, पञ्चकारम्भः(मदवा) रा.८।३२ उपरि।
१२	२५	विवाहः धनिष्ठायां रा.७।२५ यावत्। वधूप्रवेशः। अग्निवासः, अमृतयोगः रा.३।११ यावत्, भद्रा २६।४६ उ.५४।०६ यावत्।
१३	२६	वरूथिनीएकादशी ११ व्रतं स्मार्त्तानां, वल्लभाचार्यजयन्ती। शिववासः, बुधे बुधः ५८।०१।
१४	२७	वैष्णवानां एकादशी व्रतं, कुशोदकेन पारणं, विवाहः उत्तराभाद्रपदायां सं.६।१४ उपरि। शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः रा.१।१४ यावत्, भरण्यां रविः२४।०३(दि.३।१०), मीने शुक्रः ६।०२।
१५	२८	प्रदोष १३ व्रतं, विवाहः त्रयोदश्यां रा.१२।४२ यावत्। सर्वार्थ-सिद्धियोगः सं.६।१७ उपरि, दक्षिणां विना यात्रा सं.६।१७ तः रा.१२।४२ यावत्। अमृतयोगः रा.१२।४२ यावत्, भद्रा ४७।५६ उपरि।
१६	२९	प्रदोष १४ व्रत, सर्वार्थसिद्धियोगः, अग्निवासः, भद्रा १७।५८ यावत्। पञ्चक(मदवा) समाप्तिः सं.६।५० उपरि।
१७	३०	वैशाखीअमावस्या३०, स्नानदानश्राद्धादी। शिववासः।

मूलविचारः- ज्येष्ठा/मूल ति.३ मंगल दि.५।५० तः ति.५ गुरु रा.१।०६ यावत्।
रेवती/अश्विनी ति.१३ गुरु सं.६।१७ तः ति.३० शनि रा.७।५४ यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ र.	१०।०५।०१।३८	०।१८।१२।३४	११।०१।५७।०१	१०।१६।२०।२४	६।२६।३५।५२	७।०१।५६।५६	४५।५२
२ चं.	१०।०५।४६।४१	०।१६।३५।१०	११।०२।१०।३५	१०।२०।२८।४५	६।२६।४०।०३	७।०१।५३।४८	४५।५४
३ मं.	१०।०६।३१।४४	०।२०।५७।४६	११।०२।२४।०६	१०।२१।३७।०६	६।२६।४४।१४	७।०१।५०।३७	४५।५६
४ बु.	१०।०७।१६।४७	०।२२।२०।२२	११।०२।३७।४३	१०।२२।४५।२६	६।२६।४८।२५	७।०१।४७।२६	४५।५८
५ गु.	१०।०८।०१।५०	०।२३।४२।५७	११।०२।५१।१६	१०।२३।५३।४८	६।२६।५२।३५	७।०१।४४।१५	४६।००
६ शु.	१०।०८।४६।५३	०।२५।०५।३२	११।०३।०४।४९	१०।२५।०२।०९	६।२६।५६।४५	७।०१।४१।०४	४६।०२
७ श.	१०।०९।३१।५५	०।२६।२८।०७	११।०३।१८।२२	१०।२६।१०।२९	६।२६।००।५५	७।०१।३७।५४	४६।०४
८ र.	१०।१०।१६।५७	०।२७।५०।४२	११।०३।३१।५५	१०।२७।१८।४९	६।२७।०५।०५	७।०१।३४।४४	४६।०५
१० चं.	१०।११।०१।५२	०।२८।४९।०५	११।०३।४५।०८	१०।२८।२७।५८	६।२७।०८।४१	७।०१।३१।३३	४६।०७
११ मं.	१०।११।४६।४७	०।२९।४७।२८	११।०३।५८।२१	१०।२९।३७।०७	६।२७।१२।१६	७।०१।२८।२२	४६।०९
१२ बु.	१०।१२।३१।४२	१।००।४५।५१	११।०४।११।३३	११।००।४६।१५	६।२७।१५।५१	७।०१।२५।११	४६।११
१३ गु.	१०।१३।१६।३६	१।०१।४४।१४	११।०४।२४।४५	११।०१।५५।२३	६।२७।१९।२६	७।०१।२२।००	४६।१३
१४ शु.	१०।१४।०१।३२	१।०२।४२।३६	११।०४।३७।५७	११।०३।०४।३१	६।२७।२३।०१	७।०१।१८।४९	४६।१४
३० श.	१०।१४।४६।२७	१।०३।४१।००	११।०४।५१।०९	११।०४।१३।३९	६।२७।२६।३६	७।०१।१५।३९	४६।१५

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अ. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं घं.मि.	मी.अं. घं.मि.	तिथि, दिन
४५।५२	७।०७	९।०३	११।१६	१३।३४	१५।५०	१८।०५	२०।२२	२२।३६	०।४४	२।३०	४।०१	५।३०	१ र.
४५।५४	७।०३	८।५९	११।१२	१३।३०	१५।४६	१८।०१	२०।१८	२२।३५	०।४०	२।२६	३।५७	५।२६	२ च.
४५।५६	६।५९	८।५५	११।०८	१३।२६	१५।४२	१७।५७	२०।१४	२२।३१	०।३६	२।२२	३।५३	५।२२	३ मं.
४५।५८	६।५६	८।५२	११।०५	१३।२३	१५।३९	१७।५४	२०।११	२२।२८	०।३३	२।१९	३।५०	५।१९	४ बु.
४६।००	६।५२	८।४८	११।०१	१३।१९	१५।३५	१७।५०	२०।०७	२२।२४	०।२९	२।१५	३।४६	५।१५	५ गु.
४६।०२	६।४८	८।४४	१०।५७	१३।१५	१५।३१	१७।४६	२०।०३	२२।२०	०।२५	२।११	३।४२	५।११	६ शु.
४६।०४	६।४४	८।४०	१०।५३	१३।११	१५।२७	१७।४२	१९।५९	२२।१६	०।२१	२।०७	३।३८	५।०७	७ श.
४६।०५	६।४०	८।३६	१०।४९	१३।०७	१५।२३	१७।३८	१९।५५	२२।१२	०।१७	२।०३	३।३४	५।०३	८ र.
४६।०७	६।३७	८।३३	१०।४६	१३।०४	१५।२०	१७।३५	१९।५२	२२।०९	०।१४	२।००	३।३१	५।००	१० चं.
४६।०९	६।३३	८।२९	१०।४२	१३।००	१५।१६	१७।३१	१९।४८	२२।०५	०।१०	१।५६	३।२७	४।५६	११ मं.
४६।११	६।२९	८।२५	१०।३८	१२।५६	१५।१२	१७।२७	१९।४४	२२।०१	०।०६	१।५२	३।२३	४।५२	१२ बु.
४६।१३	६।२५	८।२१	१०।३४	१२।५२	१५।०८	१७।२३	१९।४०	२१।५७	०।०२	१।४८	३।१९	४।४८	१३ गु.
४६।१४	६।२१	८।१७	१०।३०	१२।४८	१५।०४	१७।१६	१९।२६	२१।५३	२३।५८	१।४४	३।१५	४।४४	१४ शु.
४६।१५	६।१८	८।१४	१०।२७	१२।४५	१५।०१	१७।१६	१९।२३	२१।५०	२३।५४	१।४१	३।१२	४।४१	३० श.

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ र.	दि.१०:२५-१:३५।	रा.१०:३५-१२:०० रा.१:३५-२:५०।
२ च.	दि.७:१५-८:५१ दि.१:३६-३:११।	रा.१०:३६-१२:०१ रा.२:५१-४:१५।
३ मं.	दि.७:१४-८:५० दि.१:३७-३:१२।	रा.७:४७-९:१२।
४ बु.	दि.८:४९-१०:२५ दि.१२:०१-१:३७।	रा.१२:०१-१:२५ रा.२:४९-४:१३।
५ गु.	दि.३:१२-६:२४।	रा.१२:००-१:२४ रा.४:१२-५:३५।
६ शु.	दि.८:४८-१२:००।	रा.९:१२-१०:३६।
७ श.	प्र.५:३५-७:१२ दि.१:३७-३:१३ सं.४:३९-६:२५।	सं.६:२५-७:४९ रा.१:२५-२:४८ रा.४:१२-५:३४।
८ र.	दि.१०:२५-१:३७।	रा.१०:३७-१२:०१ रा.१:२५-२:४९।
१० च.	दि.७:११-८:४८ दि.३:१४-४:५०।	रा.१०:३८-१२:०२ रा.२:४८-४:११।
११ मं.	दि.७:१०-८:४७ दि.१:३८-३:१५।	रा.७:५१-९:१५।
१२ बु.	दि.८:४७-१०:२४ दि.१२:०१-१:३८।	रा.१२:०१-१:२४ रा.२:४७-४:१०
१३ गु.	दि.३:१४-६:२८।	रा.१२:००-१:२४ रा.४:१२-५:३५।
१४ शु.	दि.८:५७-१२:०१।	रा.९:१५-१०:३८।
३० श.	प्रा.५:३१-७:०८ दि.१:३८-३:१५सं.४:५२-६:२८।	सं.६:२८-७:५२ रा.१:२४-२:४७ रा.४:०८-५:३०।

१ रवौ वल्ली ८।३६। ४७।०३
अयनांशाः २२।५०।४५

रा. ६, बु, ४, शु. ३ मं, गु., ५ सू, ७, ८, श, २, ११, ल. १, ९, चं., के. १२, १०

८ रवौ वल्ली ८।३६। ४७।१०
अयनांशाः २२।५०।४६

रा. ६, बु, ४, गु. ५ सू, शु. ३ मं, चं., ७, ८, श, २, ११, ल. १, ९, १०, के. १२

विविधविषयाः-वैशाखे प्रातःस्नानमन्त्रः-वैशाखे सकलं मासं मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन।। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।। माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे देव फलदो भव पापहन्।। प्रातःस्नानसमयः - उत्तमं तु सनक्षत्रं मध्यमं लुप्ततारकम्। सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम्।। वैशाखे त्याज्यवस्तूनि-कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुनम्।। वैशाखे दानवस्तूनि - प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद्व्यजनं छत्रं सूल्मवासांसि चन्दनम्।। जलपात्राणि देयानि तथापुष्पगृहाणि च।। तिथितत्त्वे - ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनम्बुघटान्वितान्। पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते ।। मासविशेषे स्नानम्-कौशिकी माधवे स्नायान्माघे वै कमलान्तथा। दुग्धां विल्ववतीं मार्गे कार्तिके यामुनीं तथा।। भूयसी गैरिका चैवमाश्विने फलदा मता। भाद्रे जलाधिका पुण्या ज्येष्ठे व्याघ्रवती तथा।। विरजा श्रावणे पुण्या मण्डना फाल्गुने मता। इच्छावती तथा पौषे चैत्रे वै लक्ष्मणा शुभा।। वाड्मती फाल्गुने शस्ता गण्डकी चापि कार्तिके। मलमासे विशेषेण गैरिका फलदायिनी।। चन्द्रसूर्योपरागेषु सर्वा नद्यः शुभावहाः।। गंगा तु सर्वदेति।

वासाँसि धावतो यत्र पतन्ति जलबिन्दवः।
तदपुण्यं जलस्थानं रजकस्य शिलांकितम्।।

अर्थ-रजक(धोबीक) वस्त्र धोएबाक पाथर तथा जतेक दूर जलमे वस्त्रक छीटा पड़ैत छैक ओ अपवित्र होइत अछि।

पश्चात् नाभिपर्यन्तं जलमे जाक, निरुध्य कर्णौ नासां च त्रिः कृत्वोन्मज्जनं ततः। अर्थात् कान आ नाक मुनि जलक प्रवाह दिश या सूर्य दिश मुह कक स्नान करी। तीन, पाँच, सात या बारह डुबकि लगावि, डुबकी लगाब सँ पहिने शिख खोल ली, गंगाक जल में वस्त्र निचोड़वाक नहि चाही आ नहि त मल मूत्र त्याग करवाक चाहि।

• वस्त्रः-

द्विजाति एक वस्त्र धारण कऽ भोजन देव पूजन-तर्पणादि नहि करथि। दोसर वस्त्र गमछा राखि लेथि।

वृथादिपर्यार्चनं प्रोक्तं वृथा श्राद्धं न संशयः।
यज्जले शुष्कवस्त्रेण शुष्के चैवार्द्र वाससा।।

अर्थ- सुखैल वस्त्र धारण कऽ जलमे तथा भीजल वस्त्र धारण कऽ स्थलमे सूर्य पूजन तथा श्राद्धादि नहि करथि यदि करताह तऽ निष्फल हैतन्हि।

वस्त्र धारण मन्त्रः-
परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि।
शतं च जीवामि शरदः पुरुची रायस्पोषम भिसंव्ययिष्ये।।

• आसन

कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च।
दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत्।।

कुश, कम्बल, मृगचर्म, व्याघ्रचर्म आ रेशम क आसन पर जपादि उत्तम मानल गेल अछि।

वंशासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधिरेव च।
धरण्यां तु भवेद् दुःखं दौर्भाग्यं छिद्रदारुजे।।
तृणे धनयशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः।
गोशकृन्मृन्मयं भिन्नं तथा पालाशपिप्पलम्।।
लोहबद्धं सदैवार्कं वर्जयेदासनं बुधः।

बाँस, मिट्टि, पत्थर, तृण, घास, पात, गोबर, पलास, पीपल आ जाहि आसन में लोहक प्रयोग कयल गेल होय एतादृश आसनपर नै बैसी।

मृगचर्म प्रयत्नेन वर्जयेत् पुत्रवान् गृही
पुत्रवान् गृहस्थ मृगचर्मपर नै बैसी।

वैशाखशुक्लपक्षः ।।

शक १९४४, संवत्२०७९, सन् १४२८, उत्तरायणं, उत्तरगोलः, वसन्त/ग्रीष्म ऋतुः, दक्षिण/पश्चिमे कालः, शुद्धः।
दिनांक १ मई तः १६ मई यावत् सन् २०२२ इ। पूर्वोदितः शुक्रः, पूर्वोदितः गुरुः।

तिथयः दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.	विवरण
१ र.	५१।४५	रा.२।१२	भरणी	३९।५२	रा.६।२६	आयुष्मान	२३।३२	किंगरतुघ्न१६।३३	मेष ५६।०६	रा.३।५६	००।१७।०४।१८	३२।३२	५।३०	६।३०	११	१८	१	मई ५, श्रीशिवाजी जयन्ती, अग्निवासः, ♑ सर्वार्थसिद्धियोगश्च दि.११।४२ यावत्,सिद्धियोगः दि.१।०५ उपरि, भद्रा १९।१२ उ. ५०।४८ यावत्।
२ चं.	५५।२३	रा.३।३८	कृत्तिका	४४।५१	रा.११।२५	सौभाग्य	२३।२८	बालव २३।३४	वृष	अहोरात्रं	००।१८।०२।१७	३२।३५	५।२९	६।३१	१२	१९	२	चन्द्रदर्शनं गु.१५ याम्यश्रृंगफलं गहार्घं। विवाहः रोहिण्यां रा.११।२५ उपरि। द्विरागमनं तृतीयायां रा.३।३८ उपरि। ♍ यानादिचालनं, पूर्वयात्रा दि.४।५२ यावत्, शिववासः दि.४।०४ उपरि, भद्रा २६।४४ यावत्।
३ मं.	५९।५५	रा.शे.५।२६	रोहिणी	५०।४०	रा.१।४४	शोभन	२४।१२	तैतिल २७।३९	वृष	अहोरात्रं	००।१९।००।१९	३२।३८	५।२८	६।३२	१३	२०	३	अक्षयतृतीया, गंगास्नानादिः, त्रेतायुगादिः, परशुरामावतारः, श्रीपरशुरामजयन्ती। शल्यचिकित्सा, यानादिचालनं। सिद्धियोगः, अग्निवासः, पूर्व-दक्षिण यात्रा
४ बु.	६०।००	अहोरात्रं	मृगशिरा	५७।०६	रा.४।१८	अतिगण्ड	२५।२७	वणिज् ३२।०१	वृष २३।५२	दि.३।०१	००।१९।५८।१५	३२।४२	५।२८	६।३२	१४	२१	४	श्रीगणेश ४ व्रतं, भद्रा ३२।०१ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः रा.४।१८ यावत्। ❖अमृतयोगः दि.३।३० उपरि, पूर्वयात्रा दि.४।०१ यावत्, भद्रा ५६।०१ उपरि, कृत्तिकायां रविः ४२।५५(रा.१०।३३)।
४ गु.	०४।०६	प्रा.७।०५	आर्द्रा	६०।००	अहोरात्रं	सुकर्मा	२७।०२	भद्रा ४।०६	मिथुन	अहोरात्रं	००।२०।५६।१४	३२।४५	५।२७	६।३३	१५	२२	५	उपनयनं पञ्चम्यां प्रा.७।०५ उपरि। शिववासः-अग्निवास-सिद्धियोगः प्रा.७।०५ उपरि, भद्रा ४।०६ या.। ←सिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः प्रा.६।५५ उपरि,
५ शु.	१०।०७	दि.९।२८	आर्द्रा	०३।४३	प्रा.६।५५	धृति	२८।३६	बालव १०।०७	मिथुन ५३।२८	रा.२।४९	००।२१।५४।१२	३२।४८	५।२६	६।३४	१६	२३	६	जगद् गुरुशंकराचार्य जयन्ती, रामानुजाचार्य जयन्ती, गृहप्रवेशः-मुण्डनं-द्विरागमनं पञ्चम्यां पुनर्वसौ च। दग्धतिथि दि.९।२८ उ., शिववासः, अग्निवासः दि.९।२८ यावत् ततः ←
६ श.	१४।५९	दि.११।२५	पुनर्वसु	१०।०३	दि.९।२७	शूल	३०।५२	तैतिल १४।५९	कर्क	अहोरात्रं	००।२२।५२।१०	३२।५१	५।२६	६।३४	१७	२४	७	गृहप्रवेशः सप्तम्यां दि.११।२५ उपरि। दग्धतिथि दि.११।२५ या., अमृतयोगः-शिववासः दि.११।२५ यावत् ततः अग्निवासः-पूर्वा विना यात्रा दि.११।२५ उपरि।
७ र.	१९।१२	दि.०१।०५	पुष्य	१५।४३	दि.११।४२	गण्ड	३०।३२	वणिज् १९।१२	कर्क	अहोरात्रं	००।२३।५०।०८	३२।५४	५।२५	६।३५	१८	२५	८	जह्नु७, जह्नुमुनेः, कर्णरन्ध्राद् गंगायाः प्राकट्यं, गंगास्नानदानादिः। षाण्मासिक रविव्रतविसर्जन, द्विरागमनं-देवादिप्रतिष्ठा-विद्यारम्भ पुष्ये। विपणि सप्तम्याम्। पश्चिमां विना यात्रा-रविपुष्य योगः-♑
८ चं.	२२।२३	दि.०२।२२	आश्लेषा	२०।२९	दि.१।३६	वृद्धि	३०।२४	बव २२।२३	कर्क २०।२९	दि.१।३६	००।२४।४७।५५	३२।५७	५।२५	६।३५	१९	२६	९	शिववासः दि.२।२२ उपरि, अग्निवासः। ◆अग्निवासः दि.११।५९ यावत् ततः अमृतयोगः, भद्रा १६।११ उपरि ४३।४६ यावत्। ♎ अक्षरारम्भः, कर्णवेधः, शिववासः, अग्निवासः,
९ मं.	२४।३०	दि.३।१२	मघा	२४।१०	दि.३।०४	ध्रुव	२६।२७	कौलव २४।३०	सिंह	अहोरात्रं	००।२५।४५।४२	३३।००	५।२४	६।३६	२०	२७	१०	जानकीनवमीव्रतं,(मध्याह्न व्यापिनी ग्राह्य) भूगर्भाज्जगज्जनन्याः जानक्याः प्रादुर्भावः, सीतामढ्यां पुण्यारण्ये श्रीसीतारामपूजनदर्शनादिकं, मैथिलीदिवसः, हनुमद्ध्वजदानं, दीक्षाग्रहणं, शिववासः दि.३।१२ यावत् ततः पूर्व यात्रा।
१० बु.	२५।१७	दि.३।३०	पूर्वाफाल्गुनी	२६।३५	दि.४।०१	व्याघात्	२७।२८	गर २५।१७	सिंह ४२।०६	रा.१०।१३	००।२६।४३।२९	३३।०४	५।२३	६।३७	२१	२८	११	जानकीनवमीव्रतस्यपारण, उपनयनं, विद्यारम्भः, विपणि, गृहारम्भः-मुण्डनं-गृहप्रवेशः-विवाहः-द्विरागमनं उत्तराफाल्गुन्यां दि.४।०१ उपरि। ट्यूबवेल बोरिंग टंकी प्रभृतिस्थापनं पूर्वाफाल्गुन्याम्। अग्निवासः, ❖
११ गु.	२६।४४	दि.४।०४	उत्तराफाल्गुनी	२८।४३	दि.४।५२	हर्षण	२४।२७	भद्रा २६।४४	कन्या	अहोरात्रं	००।२७।४१।१६	३३।०७	५।२३	६।३७	२२	२९	१२	मोहिनी एकादशी ११ व्रतं सर्वेषां। व्रतोद्यापनं, मुण्डनं, गृहारम्भः, गृहप्रवेशः, नामकरणं, देवादिप्रतिष्ठा, उपनयनं, विवाहः दिवारात्री, द्विरागमनं अहोरात्र, वधूप्रवेश, विपणि, वृक्षादिरोपणं, क्रयविक्रय, ♍
१२ शु.	२३।००	दि.२।३४	हस्त	२७।३९	दि.४।२५	वज्र	२०।२७	बालव २३।००	कन्या ५७।०३	रा.४।११	००।२८।३९।०३	३३।१०	५।२२	६।३८	२३	३०	१३	मधुसूदन १२, कुशोदकेनपारणं,प्रदोष १३ व्रतं, मुण्डनं, गृहारम्भः, गृहप्रवेशः, देवादिप्रतिष्ठा, विवाहः दिवारात्रौ, द्विरागमनं त्रयोदश्यां, वधूप्रवेशः, स्वामीसेवारम्भः, यानादिचालनं, वृक्षादिरोपणं, विपणि,♎
१३ श.	२०।०४	दि.१।२२	चित्रा	२६।२८	दि.३।५९	सिद्धि	१५।३६	तैतिल २०।०४	तुला	अहोरात्रं	००।२९।३६।२०	३३।१३	५।२१	६।३९	२४	३१	१४	मासान्तः,प्रदोष १४ व्रतं, नरसिंहावतारः, नरसिंह १४ व्रत, प्रदोषात् यावद्रात्रौ, श्रीनरसिंहपूजनदर्शनादिकम्। शिववासः दि.१।२२ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.३।५९ उपरि,
१४ र.	१६।११	दि.११।४९	स्वाती	२४।२७	दि.३।०७	व्यतीपात्	०९।५९	वणिज् १६।११	तुला	अहोरात्रं	१।००।३४।३७	३३।१६	५।२१	६।३९	२५	१	१५	व्रतादौ पूर्णिमा, वृषे रविः १०।५९(दि.९।४५), विष्णुपदीसंक्रान्तिः पुण्यकालो दिवा १२।०० यावत् पुण्याहः, वैशाखस्नान समाप्तिः, हरिद्वारेकल्पवाससमाप्तिः, ने.ज्येष्ठमासारम्भ, पश्चिमेकालः, ग्रीष्म-ऋतुः।◆
१५ चं.	११।२७	दि.९।५४	विशाखा	२१।३३	दि.१।५७	वरीयान्	०३।३५	बव ११।२७	तुला ७।१५	दि.८।१४	१।०१।३२।२५	३३।१९	५।२०	६।४०	२६	२	१६	वैशाखीपूर्णिमा१५, स्नानदानादि, कच्छपावतारः, वृद्धावतारः, श्रीवुद्धजयन्ती। मासादिः, परिघ५३।०४, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१।५७ यावत्, अमृतयोगः दि.९।५४ यावत् ततः शिववासः-अग्निवास।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरु राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि
१ र.	१०।१६।१२।२१	१।०४।३६।२३	११।०५।०४।२१	११।०६।२२।४७	६।२७।३०।११	७।०१।१२।२६
२ चं.	१०।१६।१६।१२	१।०५।०२।०७	११।०५।१७।४५	११।०६।३२।४१	६।२७।३२।१६	७।०१।०९।१८
३ मं.	१०।१७।०८।०३	१।०५।२४।१५	११।०५।२६।०८	११।०७।४२।३५	६।२७।३५।४५	७।०१।०६।०७
४ बु.	१०।१७।४५।२३	१।०५।४७।३३	११।०५।४५।२२	११।०८।५२।२८	६।२७।३८।१२	७।०१।०२।५६
४ गु.	१०।१८।२०।४३	१।०६।०७।१६	११।०६।००।२५	११।१०।०२।२३	६।२७।४१।१६	७।००।५९।४५
५ शु.	१०।१९।१५।३३	१।०६।१३।०३	११।०६।११।१७	११।११।१२।१७	६।२७।४४।०६	७।००।५६।३४
६ श.	१०।२०।००।२३	१।०६।१८।४७	११।०६।२४।४०	११।१२।२२।११	६।२७।४६।१२	७।००।५३।२४
७ र.	१०।२०।४५।१३	१।०७।१८।३६	११।०६।३८।०३	११।१३।३२।०५	६।२७।४९।१३	७।००।५०।१४
८ चं.	१०।२१।३०।०७	१।०६।५६।१३	११।०६।५१।२६	११।१४।४१।५३	६।२७।५१।४५	७।००।४७।०३
९ मं.	१०।२२।१५।०१	१।०६।३४।२६	११।०७।०४।४०	११।१५।५१।२१	६।२७।५३।४४	७।००।४३।५२
१० बु.	१०।२२।४६।५५	१।०६।१२।३६	११।०७।१७।५६	११।१७।०१।१५	६।२७।५५।४६	७।००।४०।४१
११ गु.	१०।२३।४४।४६	१।०५।५०।०२	११।०७।३१।११	११।१८।११।०६	६।२७।५७।४८	७।००।३७।३०
१२ शु.	१०।२४।२९।४३	१।०५।२९।४५	११।०७।४४।२४	११।१९।२०।५६	६।२७।५९।५०	७।००।३४।१९
१३ श.	१०।२५।१४।३७	१।०५।०६।०८	११।०७।५७।३७	११।२०।३०।४६	६।२८।०१।५२	७।००।३१।०९
१४ र.	१०।२५।५६।३०	१।०४।४४।५१	११।०७।५८।४६	११।२१।३६।३०	६।२८।०३।५४	७।००।२७।५६
१५ चं.	१०।२६।४४।११	१।०३।५६।२६	११।०८।१०।१८	११।२२।५०।१४	६।२८।०५।१३	७।००।२४।४८

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४६।१६	६।१४	८।१०	१०।२३	१२।४१	१४।५७	१७।१८	१९।२६	२१।४६	२३।५१	१।३७	३।०८	४।३७
४६।१८	६।१०	८।०६	१०।१९	१२।३७	१४।५३	१७।१४	१९।२२	२१।४२	२३।४७	१।३३	३।०४	४।३३
४६।२०	६।०६	८।०२	१०।१५	१२।३३	१४।४९	१७।१०	१९।१९	२१।३९	२३।४४	१।३०	३।०१	४।२९
४६।२२	६।०२	७।५८	१०।११	१२।२९	१४।४६	१७।०७	१९।१५	२१।३५	२३।४०	१।२६	२।५७	४।२५
४६।२४	५।५८	७।५५	१०।०७	१२।२६	१४।४२	१७।०३	१९।११	२१।३१	२३।३६	१।२२	२।५३	४।२२
४६।२५	५।५५	७।५१	१०।०४	१२।२२	१४।३८	१६।५९	१९।०७	२१।२७	२३।३२	१।१८	२।४९	४।१८
४६।२६	५।५१	७।४७	१०।००	१२।१८	१४।३४	१६।५५	१९।०३	२१।२३	२३।२८	१।१४	२।४५	४।१४
४६।२७	५।४७	७।४३	९।५६	१२।१४	१४।३०	१६।५१	१८।५९	२१।१९	२३।२४	१।१०	२।४१	४।१०
४६।२९	५।४३	७।३९	९।५२	१२।१०	१४।२६	१६।४७	१८।५५	२१।१५	२३।२०	१।०६	२।३७	४।०६
४६।३१	५।४०	७।३६	९।४८	१२।०६	१४।२२	१६।४३	१८।५१	२१।११	२३।१६	१।०२	२।३३	४।०३
४६।३३	५।३६	७।३२	९।४५	१२।०३	१४।१९	१६।४०	१८।४७	२१।०७	२३।१३	०।५९	२।३०	३।५९
४६।३४	५।३२	७।२८	९।४१	११।५९	१४।१५	१६।३६	१८।४४	२१।०४	२३।०९	०।५५	२।२६	३।५५
४६।३५	५।२८	७।२४	९।३७	११।५५	१४।११	१६।३२	१८।४०	२१।००	२३।०५	०।५१	२।२२	३।५१
४६।३७	५।२४	७।२०	९।३३	११।५१	१४।०७	१६।२२	१८।३६	२०।५२	२३।०१	०।४७	२।१८	३।४७
४६।३८	५।२०	७।१६	९।२९	११।४७	१४।०३	१६।१८	१८।३५	२०।४८	२२।५७	०।४३	२।१४	३।४३
४६।४०	५।१६	७।१२	९।२५	११।४३	१३।५९	१६।१४	१८।३१	२०।४४	२२।५३	०।३९	२।१०	३।३९

विविधः-परशुरामार्घ्यदानमन्त्रः-जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर। जानकीनवमीव्रतम्:- वैशाखस्य सिते पक्षे नवम्यां सोमवासरे । प्रादुर्वभूव लोकानां हिताय जनकात्मजा। वैशाखे त्याज्य वस्तुनिःकांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने। वैशाखेदान वस्तूनिः-प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद् व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम्। जलपात्राणि देयानि तथा पुष्पग्रहाणि च । तिथितत्त्वेः-ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनंवुघटान्वितान् पितृउदिस्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते मूलवासः-स्वर्गे शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे भूमौ नभः कार्त्तिकचैत्रपौषे। मूलं ह्यधस्तात्तु तपस्यमार्ग वैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र। अभूक्तमूलविचारः- अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः। रेवतीसर्पशक्रान्ते मासरुद्ररसाः क्रमात्। तस्मादेपूत्पन्नानां शान्तिः कार्या। मूलोत्पन्नानां विशेषेण, यतो हि-मूलाद्यपादजो हन्ति पितरञ्च द्वितीयजम्। मातरञ्च तृतीयेऽर्थं शुभदस्तु तुरीयकः । सा शान्तिः जन्मानन्तरमग्रिममूलादिनक्षत्रेषु कार्या। मूलवृक्षविचारः-मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा। मुनयोऽष्टौ दिशा रुद्राः सूर्याः पञ्चाब्धयोऽग्नयः। मूले मूलविनाशः स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम्। त्वचि मातुर्भवेत्क्लेशः शाखायां मातुलस्य च। पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मन्त्रिपदं स्मृतम्। फले च विपूला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवितम्। त्रीतरशान्तिरपि विधेया। तत्र सजातीयापत्यत्रयानन्तरं विजातीयापत्यप्रसवस्त्रीतरः।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ र.	दि.६:५६-८:३८ दि.१:४३-३:२४।	रा.१०:३९-१२:०२ रा.१:२४-२:४६।
२ चं.	दि.८:३८-१०:२० दि.१२:०२-१:४३।	रा.१०:३९-१२:०२ रा.२:४६-४:०८।
३ मं.	दि.३:२४-६:४६।	रा.७:४४-९:०७।
४ बु.	दि.८:३८-१२:०२।	रा.१२:००-१:२२ रा.२:४४-४:०६।
४ गु.	प्र.५:१४-६:४६ दि.१:४३-३:२४ सं.५:०५-६:४६।	रा.१२:००-१:२२ रा.४:०६-५:२७।
५ शु.	दि.१०:१९-१:४३।	रा.९:१७-१०:३९।
६ श.	दि.६:५५-८:३७ दि.३:२५-५:०६।	सं.६:३४-७:५६ रा.१:२३-२:४४ रा.४:०५-५:२५।
७ र.	दि.६:५५-८:३७ दि.१:४३-३:२५।	रा.१०:४०-१२:०२ रा.१:२३-२:४४।
८ चं.	दि.८:३६-१०:५८ दि.१२:००-१:४२।	रा.१०:४०-१२:०१ रा.२:४३-४:०४।
९ मं.	दि.३:२४-६:४८।	रा.७:५७-९:१८।
१० बु.	दि.८:३६-१२:००।	रा.१२:००-१:२१ रा.२:४२-४:०३।
११ गु.	दि.३:१९-६:३७।	रा.१२:०१-१:२२ रा.४:०३-५:२२।
१२ शु.	दि.८:४३-१२:०१।	रा.९:१९-१०:४०।
१३ श.	प्र.५:२२-७:०२ दि.१:४१-३:१० सं.४:५९-६:३८।	सं.६:३८-७:५९ रा.१:२२-२:४२ रा.४:०२-५:२१।
१४ र.	दि.१०:२१-१:४१।	रा.१०:४१-१२:०१ रा.१:२१-२:४१।
१५ चं.	दि.७:०१-८:४१ दि.३:२१-५:००।	रा.१०:४१-१२:०१ रा.२:४१-४:०१।

१ रवौ वल्ली ८।३६। ४७।१७
अयनांशाः २२।५०।४८

रा.५	चं.गु.बु.४ सू	३
६		शु.२ मं
७		श ल.१
८	१०	१२
९		के.११

७ रवौ वल्ली ८।३६। ४७।२४
अयनांशाः २२।५०।५०

रा.५	गु.बु.४ सू	३
६		शु.२ मं
चं. ७		श ल.१
८	१०	१२
९		के.११

१४ रवौ वल्ली ८।३६। ४७।३१
अयनांशाः २२।५०।५१

रा.५ सू	बु.गु.४	३
६		शु.२ मं
७		श ल.१
८	१०	१२
९		के.११ चं.

मूलविचारः- आश्लेषा/मघा ति.७ रवि दि.११।४२ तः ति.९ मंगल दि.३।०४ यावत्।

• शिखा बन्धन- स्नाने दाने जपे होमे संध्यायां देवतार्चने।
शिखाग्रन्थिं विना कर्म न कुर्याद् वै कदाचन।। स्नान, दान, जप, होम, संध्या आ देवार्चन कर्ममे विना शिखा बान्हि कखनो कर्म नै करवा क चाहि।

• शिखा बाँधक मन्त्र :- चिद्रूपिणि ! महामाये ! दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि ! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।। उपर्युक्त मन्त्रसँ अथवा गायत्री मन्त्रसँ शिखा बाँध लेवाक चाहि। शिखा नै रहला पर शिखाक स्थान पर कुश राखि लेवाक विधान अछि।

• तिलक :- स्नानं संध्या पञ्चयज्ञान् पञ्चहोमादि कर्म यत्।
विना तिलकदर्भाभ्यां कुर्यात्तन्निष्फलं भवेत्।।
अर्थ- स्नान, संध्या, पंचयज्ञ, पितृकर्म एवं होमादि विना तिलक एवं कुशरहित कयलासँ निष्फल होइत अछि। अभावमे जलसँ कराथि।

ललाटे केशवः विद्यात्कण्ठे श्रीपुरुषोत्तमः। नाभौ नारायणः देवः वैकुण्ठः हृदये तथा।।१।।
दामोदरः वामपार्श्वे दक्षिणे च त्रिविक्रमः। मूर्ध्नि चैव हृषीकेशः पद्मनाभः च पृष्ठतः।।२।।
कर्णयोर्यमुना गंगा वाह्वोः कृष्णो हरिस्तथा। यथास्थानेषु तृप्यन्त देवता द्वादशा स्मृताः।।३।।
अर्थ- ललाटमे केशव, कण्ठमे पुरुषोत्तम, नाभिमे नारायण, हृदयमे वैकुण्ठ भगवान्, वामा कटिमे दामोदर, दहिना कटिमे वामन, मस्तकमे हृषीकेश, पीठमे पद्मनाभ, बामा कानमे यमुना, दाहिना कानमे गंगा, दुनू भूजामे कृष्ण आ हरि एहि बारहो स्थानमे तिलक लगौलासँ देवता प्रसन्न रहैत छथि।

• भस्म लगयबाक मन्त्र :-प्रातः काल जलसँ आ सायंकाल सुखैल भस्म(जल रहित लगाबी ॐ त्र्यायुषम् जमदग्नेः (ललाटमे)। कश्यपस्य त्र्यायुषम् (गलोम)। यद्देवेषुत्र्यायुषम् (दुनू बाहिमे)। तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम् (हृदयमे)।

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

शक १९४४, संवत्२०७९, सन् १४२८, उत्तरायण, उत्तरगोलः, ग्रीष्म ऋतुः, पश्चिम कालः, शुद्धः।
दिनांक १७ मई तः ३० मई यावत् सन् २०२२ इ। पूर्वोदितः गुरुः, पूर्वोदितः शुक्रः।

तिथयः		तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशयः समाप्तिकालः राशिः द. प.	घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.	
१	मं.	०६।०६	दि.७।४६	अनुराधा	१८।०३	दि.१२।३३	शिव	४६।२२	कौलव	६।०६	वृश्चिक	अहोरात्र	१।०२।३०।१३	३३।२२	५।२०	६।४०	२७	३	१७	ज्येष्ठेवृन्ताकं त्यजेत्। शल्यचिकित्सा, शिववासः-अग्निवासः दि.७।४६ यावत् ततः पश्चिमयात्रा-अमृतयोगः।
२	बु.	००।१४	प्रा.५।२४	ज्येष्ठा	१४।०६	दि.१०।५८	सिद्ध	४१।५१	गर	००।१४	वृश्चिक१४।०६	दि.१०।१८	१।०३।२८।००	३३।२५	५।१९	६।४१	२८	४	१८	तृतीयथितिमानं ५३।५५। विवाहः मूले दि.१०।५८ उपरि। यानादिचालनं, मुण्डनं ज्येष्ठायां, पश्चिमयात्रा प्रा.५।२४ यावत् ततः अग्निवासः, भद्रा २७।०५ उ. ५४।०९ यावत्।
४	गु.	४८।००	रा.१२।३०	मूल	१०।०२	दि.६।१८	साध्य	३४।११	वव	२१।०५	धनु	अहोरात्रं	१।०४।२५।३४	३३।२८	५।१८	६।४२	२९	५	१९	श्रीआखुरथ ४ व्रतं, शिववासः;
५	शु.	४२।००	रा.१०।०६	पूर्वाषाढ़ा	०५।५३	दि.७।३९	शुभ	२६।३६	कौलव	१५।००	धनु १९।५४	दि.१।१६	१।०५।२३।०८	३३।३१	५।१८	६।४२	३०	६	२०	मुण्डनं-विपणि-विवाहः उत्तरापाढ़ायां दि.७।३९ उपरि। शिववासः, पूर्व-उत्तर यात्रा दि.७।३९ यावत्। वृक्षादिरोपणम्।
६	श.	३६।२०	रा.७।४९	उत्तराषाढ़ा	०१।५७	प्रा.६।०३	शुक्ल	१६।१६	गर	६।१०	मकर	अहोरात्रं	१।०६।२०।४२	३३।३४	५।१७	६।४३	३१	७	२१	श्रवण ५६।३० रा.३।५३। सर्वार्थसिद्धियोगः-पूर्वाविनायात्रा प्रा.६।०३ उपरि, अमृतयोगः रा.७।५९ यावत्, भद्रा ३६।२० उपरि। पञ्चकारम्भः(भदवा) रा.३।५३ उपरि। मीने मंगल ६।४३।
७	र.	३१।१०	सं.५।४५	धनिष्ठा	५५।३१	रा.३।२९	ब्रह्म	१२।१८	भद्रा	३।४५	मकर २५।३०	दि.३।३०	१।०७।१७।३७	३३।३६	५।१७	६।४३	१	८	२२	विवाहः धनिष्ठायां, अग्निवासः सं.५।४५ यावत् ततः शिववासः-सिद्धियोगः, पूर्वयात्रा दि.३।३० यावत्, भद्रा ३।४५ यावत्। अश्विन्यां मेषे च शुक्र ५३।२५।
८	चं.	२६।४६	दि.०३।५८	शतभिषा	५३।२९	रा.२।३९	ऐन्द्र	०५।५२	कौलव	२६।४६	कुम्भ	अहोरात्रं	१।०८।१४।५९	३३।३८	५।१६	६।४४	२	९	२३	वृक्षादिरोपणं अष्टम्यां, शिववासः दि.३।५८ यावत् ततः अग्निवासः;
९	मं.	२३।१३	दि.०२।३३	पूर्वाभाद्रपद	५२।१५	रा.२।१०	वैधृति	००।१२	गर	२३।१३	कुम्भ ३७।३२	रा.८।१७	१।०९।१२।२२	३३।४०	५।१६	६।४४	३	१०	२४	विष्कुम्भ ५४।५८, दग्धतिथि दि.२।३३ उ., अग्निवासः दि.२।३३ यावत्, भद्रा ५१।५७ उपरि,
१०	बु.	२०।४०	दि.०१।३२	उत्तराभाद्रपद	५२।०६	रा.२।०७	प्रीति	५१।०५	भद्रा	२०।४०	मीन	अहोरात्रं	१।१०।०९।४४	३३।४२	५।१६	६।४४	४	११	२५	विवाहः एकादश्यां, दग्धतिथि दि.१।३२ या., शिववासः-अग्निवासः-अमृतयोगश्च दि.१।३२ उपरि। भद्रा २०।४० यावत्। रोहिण्यां रवि ३६।३६ (रा.७।५६);
११	गु.	१९।१८	दि.१२।५८	रेवती	५३।१४	रा.२।३२	आयुष्यमान	४७।५९	बालव	१९।१८	मीन ५३।१४	रा.२।३२	१।११।०७।०६	३३।४३	५।१५	६।४५	५	१२	२६	अपराएकादशी ११ व्रतं सर्वेषां। विवाहः दिवारात्रौ, वधूप्रवेशः, वृक्षादिरोपणं, सर्वार्थसिद्धियोगः, शिववासः, अग्निवासः दि.१२।५८ यावत्, पश्चिम-उत्तर यात्रा रा.२।३२ यावत् ततः दक्षिणां विना यात्रा। ←
१२	शु.	१९।१६	दि.१२।५७	अश्विनी	५५।३८	रा.३।३०	सौभाग्य	४५।५३	तैतिल	१९।१६	मेष	अहोरात्रं	१।१२।०४।२८	३३।४४	५।१५	६।४५	६	१३	२७	तिलेनपारणं, प्रदोष१३ व्रतं, विवाहः अश्विन्यां, वधूप्रवेशः, वृक्षादिरोपणं, शिववासः-अग्निवासः दि.१२।५७ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.३।३० यावत्, पश्चिमां विना यात्रा दि.१२।५७ तः रा.३।३० यावत्।
१३	श.	२०।२८	दि.०१।२६	भरणी	५९।१६	रा.४।५७	शोभन	४४।५१	वणिज्	२०।२८	मेष	अहोरात्रं	१।१३।०१।५०	३३।४५	५।१५	६।४५	७	१४	२८	प्रदोष१४ व्रतं, अग्निवासः दि.१।२६ यावत्। भद्रा २०।२८ उ ५१।३६ यावत्। ←पञ्चक(भदवा) समाप्तिः रा.२।३२ उपरि।
१४	र.	२२।५०	दि.०२।२३	कृत्तिका	६०।००	अहोरात्रं	अतिगण्ड	४४।३७	शकुनी	२५।५०	मेष १५।२७	दि.११।२६	१।१३।५९।१३	३३।४६	५।१५	६।४५	८	१५	२९	अग्निवासः, शिववासः दि.२।२३ उपरि,
३०	चं.	२६।२२	दि.०३।४७	कृत्तिका	०४।०२	प्रा.६।५१	सुकर्मा	४५।१८	नाग	२६।२२	वृष	अहोरात्रं	१।१४।५६।२६	३३।४७	५।१५	६।४५	९	१६	३०	ज्येष्ठी३०,स्नानदानश्राद्धादि,सोमवत्तीअमावस्या, सोमवारीव्रतं, वटसावित्री(वरसाईत)व्रतम्, विवाहः प्रतिपदायां। शिववासः दि.३।४७ यावत् ततःअग्निवासः,सर्वार्थसिद्धियोगः प्रा.६।५१ उ.,दक्षिणयात्रा दि.३।४७ उपरि।

मूलविचारः- ज्येष्ठा/मूल ति.१ मंगल दि.१२।३३ तः ति.४ गुरु दि.६।१८ यावत्।
रेवती/अश्विनी ति.१० बुध रा.२।०७ तः ति.१२ शुक्र रा.३।३० यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	वक्री बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	शनि राश्यादि	केतु राश्यादि
१ मं.	१०।२७।२८।५२	१।०३।१४।०१	११।०८।२१।४९	११।२२।००।५८	६।२८।०६।३२	७।००।२१।३७
२ बु.	१०।२८।१३।३३	१।०२।२८।३६	११।०८।३३।२०	११।२३।११।४२	६।२८।०७।५१	७।००।१८।२६
४ गु.	१०।२८।५८।१४	१।०१।४३।११	११।०८।४४।५१	११।२४।२२।२६	६।२८।०९।०९	७।००।१५।१५
५ शु.	१०।२९।४२।५५	१।००।५७।४६	११।०८।५६।२२	११।२५।३३।१०	६।२८।१०।२७	७।००।१२।०४
६ श.	११।००।२७।३६	१।००।१२।२१	११।०९।०७।५३	११।२६।४३।५३	६।२८।११।४५	७।००।०८।५४
७ र.	११।०१।१२।१७	०।२९।२६।५६	११।०९।१९।२४	११।२७।५४।३६	६।२८।१३।०३	७।००।०५।४४
८ चं.	११।०१।५६।२९	०।२८।४१।११	११।०९।३०।०६	११।२९।०५।४०	६।२८।१३।५४	७।००।०२।३३
९ मं.	११।०२।४०।४१	०।२७।५५।२७	११।०९।४०।५४	००।००।१६।०४	६।२८।१४।४५	६।२९।५९।२२
१० बु.	११।०३।२४।५३	०।२७।०९।४३	११।०९।५१।३६	००।०१।२६।४७	६।२८।१५।३६	६।२९।५६।११
११ गु.	११।०४।०९।०५	०।२७।५९।२६	११।१०।०२।२४	००।०२।३७।३०	६।२८।१६।२७	६।२९।५३।००
१२ शु.	११।०४।५३।१६	०।२७।३८।१५	११।१०।१३।०६	००।०३।४८।१३	६।२८।१७।१८	६।२९।४९।४९
१३ श.	११।०५।३७।२७	०।२७।१९।३६	११।१०।२३।५४	००।०४।५८।५६	६।२८।१८।०९	६।२९।४६।३६
१४ र.	११।०६।२१।३८	०।२६।५४।४७	११।१०।३४।३८	००।०८।०९।३६	६।२८।१९।००	६।२९।४३।२६
३० चं.	११।०७।०५।२८	०।२७।१२।२८	११।१०।४४।३०	००।०९।२०।५२	६।२८।१९।३२	६।२९।४०।१९

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४६।४२	५।१२	७।०८	९।२१	११।३९	१३।५५	१६।१०	१८।२७	२०।४४	२२।४९	०।३५	२।०६	३।३५
४६।४४	५।०८	७।०४	९।१७	११।३५	१३।५१	१६।०६	१८।२३	२०।४०	२२।४५	०।३१	२।०२	३।३१
४६।४५	५।०४	७।००	९।१३	११।३१	१३।४७	१६।०२	१८।१९	२०।३६	२२।४१	०।२७	१।५८	३।२७
४६।४६	५।००	६।५६	९।०९	११।२७	१३।४३	१५।५८	१८।१५	२०।३२	२२।३७	०।२३	१।५४	३।२३
४६।४७	४।५६	६।५२	९।०५	११।२३	१३।३९	१५।५४	१८।११	२०।२८	२२।३३	०।१९	१।५०	३।१९
४६।४८	४।५२	६।४८	९।०१	११।१९	१३।३५	१५।५०	१८।०७	२०।२४	२२।२९	०।१५	१।४६	३।१५
४६।४९	४।४८	६।४४	८।५७	११।१५	१३।३१	१५।४६	१८।०३	२०।२०	२२।२५	०।११	१।४२	३।११
४६।५०	४।४४	६।४०	८।५३	११।११	१३।२७	१५।४२	१७।५९	२०।१६	२२।२१	०।०७	१।३८	३।०७
४६।५१	४।४०	६।३६	८।४९	११।०७	१३।२३	१५।३८	१७।५५	२०।१२	२२।१७	०।०३	१।३४	३।०३
४६।५२	४।३६	६।३२	८।४५	११।०३	१३।१९	१५।३४	१७।५१	२०।०८	२२।१३	२३।५९	१।३०	२।५९
४६।५३	४।३२	६।२८	८।४१	१०।५९	१३।१५	१५।३०	१७।४७	२०।०४	२२।०९	२३।५५	१।२६	२।५५
४६।५३	४।२८	६।२४	८।३७	१०।५५	१३।११	१५।२६	१७।४३	२०।००	२२।०५	२३।५१	१।२२	२।५१
४६।५३	४।२४	६।२०	८।३३	१०।५१	१३।०७	१५।२२	१७।३९	१९।५६	२२।०१	२३।४७	१।१८	२।४७
४६।५४	४।२०	६।१६	८।२९	१०।४७	१३।०३	१५।१८	१७।३५	१९।५२	२१।५७	२३।४३	१।१४	२।४३

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि,	दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	मं.	दि.७:००-८:४० दि.१:४०-३:२०।	रा.८:००-९:२०।
२	बु.	दि.८:४०-१०:२० दि.१२:००-१:४०।	रा.१२:००-१:२० रा.२:४०-४:००।
४	गु.	दि.३:२१-६:४१।	रा.१२:०१-१:२१ रा.४:००-५:१८।
५	शु.	दि.८:४०-१२:०२।	रा.९:२२-१०:४२।
६	श.	प्र.५:१८-६:५८ दि.१४२-३:२२ सं.५:०२-६:४२।	सं.६:४२-८:०२ रा.१२१-२:४० रा.३:५८-५:१७।
७	र.	दि.१०:२०-१:४२।	रा.१०:४२-१२:०१ रा.१:२०-२:३९।
८	चं.	दि.६:५८-८:३९ दि.३:२३-५:०३।	रा.१०:४२-१२:०१ रा.२:३९-३:५८।
९	मं.	दि.६:५७-८:३८ दि.१:४१-३:२२।	रा.८:०३-९:२२।
१०	बु.	दि.८:३८-१०:१९ दि.१२:००-१:४१।	रा.१२:००-१:१९ रा.२:३८-३:५७।
११	गु.	दि.३:२२-६:४४।	रा.१२:००-१:१९ रा.३:५७-५:१५।
१२	शु.	दि.८:३९-१२:०१।	रा.९:२३-१०:४२।
१३	श.	प्र.५:१५-६:५७ दि.१४२-३:२३ सं.५:०४-६:४५।	सं.६:४५-८:०४ रा.१२०-२:३९ रा.३:५७-५:१४।
१४	र.	दि.१०:२०-१:४२।	रा.१०:४२-१२:०१ रा.१:२०-२:३९।
३०	चं.	दि.६:५७-८:३९ दि.३:२३-५:०४।	रा.१०:४२-१२:०१ रा.२:३९-३:५७।

• चानन लगयबाक मन्त्रः-ॐ चन्दनस्य महत् पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्। आपदां हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा।।

• पवित्री- धारण :-स्नाने होमे जपे दाने स्वाध्याये पितृकर्मणि। करौ सदर्भौ कुर्वीत तथा संध्याभिवन्दने।।
स्नान,संध्योपासन,पूजन,जप, होम,वेदाध्ययन आ पितृकर्ममे पवित्री(अंगुठी) धारण करब आवश्यक अछि।
अन्यान्यपि पवित्राणि कुशदूर्वात्मकानि च। हेमात्मकपवित्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।। पवित्री कुशक बनाओल जाइत अछि अथवा सोना या चाँदी क अंगुठी सेहो पवित्री के काम अबैत अछि। कुशक पवित्री के अपेक्षा सोना आ चाँदी क पवित्री अधिक उत्तम मानल गेल अछि।
कर्मान्ते पुनरादाय पवित्रद्वितयं द्विजः। शुचौ देशे विनिक्षिप्य दद्यादेतत् पुनः पुनः
पवित्री प्रतिदिन बदलव आवश्यक नै, संध्योपसानादिकें पश्चात् पवित्र स्थानमें राखि पुनः पुनः ओकर आनो आन कर्मो में उपयोग कएल जा सकैत अछि। जूठ आ श्राद्ध कयल पवित्री क त्याग क देबाक चाहि।

• पवित्री धारण मन्त्र :-
ॐ पवित्रेस्त्यो वैष्णव्यौसवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

७ रवौ वल्ली ८।३६। ४७।३८
अयनांशाः २२।५०।५२

रा.५ सू बु	४	गु.३ मं. शु. २ चं.
६	७	श ल.१
८ ९	१०	के. ११ १२

१४ रवौ वल्ली ८।३६। ४७।४५
अयनांशाः २२।५०।५३

रा.४ सू बु	३	गु.२ मं. शु. चं. ल.१
५	६	श १२
७ ८	९	के.१० ११

विविधविषयाः - अमायां वटसावित्रीव्रतम् - अमायाञ्च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती। त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपूजयेत्।। सावित्रीप्रतिमां कुर्यात् सौवर्णीं वापि मृण्मयीम्। सप्तधान्येन संयुक्तां सावित्रीप्रतिमां शुभाम्।। सार्द्धं सत्यवता साध्वीं फलनैवेद्यदीपकैः। सावित्र्याख्यानकञ्चापि वाचयित्वा द्विजोत्तमैः।। एवं विधिपूर्वकं सम्पूज्य ब्राह्मणाय दद्यात्तन्मन्त्रः-सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्रह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मण! प्रतिगृह्यताम्।। कतिचिन्नियमाः-समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत्। शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन् पतत्यधः।।

सन्तानप्रदसन्तानगोपालमन्त्रः - देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।। इति मन्त्रस्य सपादलक्षसंख्यकजपः, तिलपायसघृतैस्तद्दशांशहोमः, तद्दशांशतर्पणं, तद्दशांशमार्जनं, तद्दशांशब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्। काशीमाहत्म्यं स्कान्दे काशीखण्डे-कैलाशादधिका काशी काशी सर्वप्रकाशिका। कैलाशे शंकरोऽप्येकः काश्यां सर्वेऽपि शंकराः।। अन्यानि मुक्तिक्षेत्राणि काशीप्राप्तकराणि च। काशीं प्राप्य विमुच्येत नान्यथा तीर्थकोटिभिः।। पितृतर्पणादिमहत्त्वमाह मनुः - राजतैर्भाजनैरेषामथो वा राजतान्वितैः। वार्यपि श्रद्धया दत्तमक्षयायोपकल्पते।। देवकार्याद् द्विजातीनां पितृकार्यं विशिष्यते। दैवं हि पितृकार्यस्य पूर्वमाप्यायनं श्रुतम्।।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्रमानानि समा.कालः नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगः समा.कालः योगाः	द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.
१	मं.	३०।४५	सं.५।३२	रोहिणी	०६।४२	दि.६।०६	धृति	४६।३१	वव ३०।४५	वृष ४२।५०	सं.५।३२	१।१५।५३।३६	३३।४८	५।१४	६।४६	१०
२	बु.	३५।४०	रा.७।३०	मृगशिरा	१६।००	दि.११।३८	शूल	४६।४२	वालव ३।१३	मिथुन	अहोरात्र	१।१६।५०।५२	३३।५०	५।१४	६।४६	११
३	गु.	४०।४७	रा.६।३२	आर्द्रा	२२।३४	दि.२।१५	गण्ड	४९।४७	तैतिल ८।१४	मिथुन	अहोरात्र	१।१७।४८।०५	३३।५१	५।१४	६।४६	१२
४	शु.	४५।३५	रा.११।२८	पुनर्वसु	२९।०१	दि.४।५०	वृद्धि	५१।०६	वणिज् १३।११	मिथुन १२।२२	दि.१०।११	१।१८।४५।१८	३३।५२	५।१४	६।४६	१३
५	श.	४९।४३	रा.१।०६	पुष्य	३४।५२	सं.७।०६	ध्रुव	५२।०३	वव १७।३६	कर्क	अहोरात्र	१।१९।४२।३०	३३।५३	५।१३	६।४७	१४
६	र.	५२।५३	रा.०२।२२	आश्लेषा	३९।५१	रा.६।०६	व्याघात्	५२।१०	कौलव २१।१८	कर्क ३६।५१	रा.६।०६	१।२०।३९।४२	३३।५४	५।१३	६।४७	१५
७	चं.	५४।५७	रा.०३।११	मघा	४३।४४	रा.१०।४२	हर्षण	५१।२४	गर २३।५५	सिंह	अहोरात्र	१।२१।३६।४६	३३।५५	५।१३	६।४७	१६
८	मं.	५५।४३	रा.०३।३०	पूर्वाफाल्गुनी	४६।२७	रा.११।४७	वज्र	४९।३८	भद्रा २४।५०	सिंह	अहोरात्र	१।२२।३३।५०	३३।५६	५।१३	६।४७	१७
९	बु.	५५।०९	रा.०३।१५	उत्तराफाल्गुनी	४७।५२	रा.१२।२०	सिद्धि	४६।५२	वालव २५।२५	सिंह १।४८	प्रा.५।३५	१।२३।३०।५५	३३।५८	५।१२	६।४८	१८
१०	गु.	५३।२३	रा.०२।३३	हस्त	४८।०३	रा.१२।२५	व्यतीपात्	४३।०५	तैतिल २४।१६	कन्या	अहोरात्र	१।२४।२८।००	३४।००	५।१२	६।४८	१९
११	शु.	५०।३०	रा.०१।२४	चित्रा	४७।०५	रा.१२।०२	वरीयान्	३८।२३	वणिज् २१।५७	कन्या १७।०३	दि.१२।०१	१।२५।२५।०५	३४।०२	५।१२	६।४८	२०
१२	श.	४६।३७	रा.११।४९	स्वाती	४५।१३	रा.११।१९	परिघ	३२।५३	वव १८।३४	तुल	अहोरात्र	१।२६।२२।१०	३४।०३	५।१२	६।४९	२१
१३	र.	४१।४४	रा.६।५२	विशाखा	४२।२८	रा.१०।१०	शिव	२६।४१	कौलव १४।११	तुला २८।०६	दि.४।२७	१।२७।१९।१५	३४।०४	५।११	६।४९	२२
१४	चं.	३६।३१	रा.०७।४७	अनुराधा	३९।०४	रा.०८।४८	सिद्ध	१९।५३	गर ६।०८	वृश्चिक	अहोरात्र	१।२८।१६।१३	३४।०५	५।११	६।४९	२३
१५	मं.	३०।३८	सं.०५।२६	ज्येष्ठा	३५।१३	सं.७।१६	साध्य	१२।५६	भद्रा ३।३५	वृश्चिक ३५।१३	सं.७।१६	१।२९।१३।११	३४।०६	५।११	६।४९	२४

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

शक १९४४, संवत्२०७९, सन् १४२८, उत्तरायणं, उत्तरगोलः, ग्रीष्म ऋतुः, पश्चिमे कालः, शुद्धः।
दिनांक ३१ मई तः १४ जून यावत् सन् २०२२ इ। पूर्वोदितः गुरुः, पूर्वोदितः शुक्रः।

दिनांकाः ने.	अं.	
१७	३१	चन्द्रदर्शनम मु.४५ सौम्यशृंगफलंसमघम्। यानादिचालन, शिववासः-अमृतयोगः-उत्तरां विना यात्रा सं.५।३२ उपरि। ❖उत्तरां विना यात्रा-सर्वार्थसिद्धियोगश्च दि.११।३८ यावत् क्रयविक्रय।
१८	१	जून६, मुण्डनं-विवाहः-नामकरणं-कर्णवेधः-देवादिप्रतिष्ठा-विद्यारम्भः विपणि-स्वामीसेवारम्भश्च मृगशिरायां दि.११।३८ यावत्। अग्निवासः, शिववासः-सिद्धियोगश्च रा.७।३० यावत्, ❖
१९	२	रम्भातृतीया, पञ्चाग्निव्रतं, महाराणाप्रताप जयन्ती, उपनयनं, मुण्डनं पुनर्वसौ दि.२।१५ उपरि। अमृतयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.२।१५ उपरि। दग्धतिथि रा.६।३२ उपरि।
२०	३	गणेश ४ व्रतं, अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.४।५० यावत्, पश्चिमां विना यात्रा रा.११।२८ उपरि, भद्रा १३।११ तः ४५।३५ यावत्। दग्धतिथि रा.११।२८ यावत्।
२१	४	विपणि पुष्ये, इंष्टिकारम्भः, यानादिचालनं। शिववासः,
२२	५	विवाहः मघायां रा.६।०६ उपरि। विद्यारम्भः, शिववासः, अग्निवासः,
२३	६	विवाहः मघायां रा.१०।४२ यावत्। ट्यूववेल वोरिंग टंकी प्रभृतिस्थापनं, क्रयविक्रय। भद्रा ५४।५७ उपरि
२४	७	अग्निवासः, सिद्धियोगः रा.३।३० यावत्, पूर्वयात्रा रा.११।४७ यावत्, भद्रा २४।५० यावत्।
२५	८	शिववासः। 🪔 अग्निवासः, सिद्धियोगः रा.२।३३ या. ततः पूर्वयात्रा। मृगशिरायां रविः ४५।२१(रा.११।२०)।
२६	९	गंगादशहरा, गंगास्नानदानादिः, पृथिव्यां गंगावतरणं, श्रीरामेश्वरप्रतिष्ठादिनं तद्दर्शनञ्च। उपनयनं, मुण्डनं, विवाहः दिवारात्रौ, वधूप्रवेशः, नामकरणं, अक्षरारम्भः, विद्यारम्भः, कर्णवेधः, देवादिप्रतिष्ठा, विपणि। 🪔
२७	१०	निर्जलाएकादशी११ व्रतं सर्वेषां। एकादशी व्रतोद्यापनं, उपनयनं, मुण्डनं, विवाहः दिवारात्रौ, वधूप्रवेशः, नामकरणं, अक्षरारम्भः, विद्यारम्भः, कर्णवेधः, देवादिप्रतिष्ठा, विपणि, वृक्षादिरोपणं। क्रय-विक्रय, स्वामीसेवारंभः।
२८	११	तिलेनपारणं,
२९	१२	प्रदोष१३ व्रतं,
३०	१३	प्रदोष १४ व्रतं, विवाहः पूर्णिमायां अनुराधायां च रा.७।४७ तः रा.८।४८ यावत्। मूलविचारः- आश्लेषा/मघा ति.५ शनि सं.७।०६ तः ति.७ चन्द्र रा.१०।४२ यावत्।
३१	१४	ज्येष्ठीपूर्णिमा १५ स्नानदानादिः,साम्प्रतिकवैवस्वतमन्वादिः, श्रीकबीरजयन्ती। मासान्तः। ज्येष्ठा/मूल ति.१४ चन्द्र रा.८।४८ तः .....

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि
१ मं.	११।०७।४६।१८	०।२७।३०।०६	११।१०।५४।२२	००।१०।३२।०५	६।२८।१८।०५	६।२६।३७।०७
२ बु.	११।०८।३३।०८	०।२७।४७।२०	११।११।०४।१४	००।११।४३।१८	६।१८।१७।३८	६।२६।३३।५६
३ गु.	११।०९।१९।५८	०।२८।०५।३१	११।११।१४।०६	००।१२।५४।३१	६।१८।१७।११	६।२६।३०।४५
४ शु.	११।१०।००।४८	०।२८।२३।१२	११।११।२३।५८	००।१४।०५।४३	६।२८।१६।४४	६।२६।२७।३४
५ श.	११।१०।४४।३८	०।२८।४०।५३	११।११।३३।५०	००।१५।१६।५५	६।२८।१६।१७	६।२६।२४।२४
६ र.	११।११।२८।२८	०।२८।५८।३४	११।११।४३।४१	००।१६।२८।०७	६।२८।१५।५०	६।२६।२१।१४
७ चं.	११।१२।१२।००	०।२९।५५।५०	११।११।५२।४४	००।१७।३९।३३	६।२८।१५।०३	६।२६।१८।०३
८ मं.	११।१२।५५।३२	१।००।५३।०५	११।१२।०१।४७	११।१८।५०।५९	६।२८।१४।१६	६।२६।१४।५२
९ बु.	११।१३।३९।०४	१।०१।५०।२०	११।१२।१०।४९	००।२०।०२।२५	६।२८।१३।२९	६।२६।११।४१
१० गु.	११।१४।२२।३६	१।०२।४७।३५	११।१२।१९।५१	००।२१।१३।५१	६।२८।१२।४३	६।२६।०८।३०
११ शु.	११।१५।०६।०८	१।०३।४४।५०	११।१२।२८।५३	००।२२।२५।१७	६।२८।११।५७	६।२६।०५।१९
१२ श.	११।१५।४६।४०	१।०४।४२।०५	११।१२।३७।५५	००।२३।३६।४३	६।२८।११।११	६।२६।२।०६
१३ र.	११।१६।३३।११	१।०५।३९।२०	११।१२।४६।५७	००।२४।४८।०९	६।२८।१०।२५	६।२८।५८।२६
१४ चं.	११।१७।१६।४३	१।०७।०१।१४	११।१२।५५।०१	००।२५।५९।५४	६।२८।०८।४२	६।२८।५५।४८
१५ मं.	११।१७।५९।१४	१।०८।२३।०८	११।१३।०३।०५	००।२७।११।३९	६।२८।०६।५९	६।२८।५२।३७

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि दिन	मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ मं.	४६।५५	४।१६	६।१२	८।२५	१०।४३	१२।५९	१५।१४	१७।३१	१९।४८	२१।५३	२३।३९	१।१०	२।३९
२ बु.	४६।५६	४।१२	६।०८	८।२१	१०।३९	१२।५५	१५।१०	१७।२७	१९।४४	२१।४९	२३।३५	१।०६	२।३५
३ गु.	४६।५७	४।०७	६।०३	८।१७	१०।३४	१२।५०	१५।०५	१७।२२	१९।३९	२१।४४	२३।३०	१।०१	२।३०
४ शु.	४६।५७	४।०३	५।५९	८।१२	१०।३०	१२।४६	१५।०१	१७।१८	१९।३५	२१।४०	२३।२६	०।५७	२।२६
५ श.	४६।५७	३।५९	५।५५	८।०८	१०।२६	१२।४२	१४।५७	१७।१४	१९।३१	२१।३६	२३।२२	०।५३	२।२२
६ र.	४६।५७	३।५५	५।५१	८।०४	१०।२२	१२।३८	१४।५३	१७।१०	१९।२७	२१।३२	२३।१८	०।४९	२।१८
७ चं.	४६।५८	३।५१	५।४७	८।००	१०।१८	१२।३४	१४।४९	१७।०६	१९।२३	२१।२८	२३।१४	०।४५	२।१४
८ मं.	४६।५९	३।४७	५।४३	७।५६	१०।१४	१२।३०	१४।४५	१७।०२	१९।१९	२१।२४	२३।१०	०।४१	२।१०
९ बु.	४७।००	३।४३	५।३९	७।५२	१०।१०	१२।२६	१४।४१	१६।५८	१९।१५	२१।२०	२३।०६	०।३७	२।०६
१० गु.	४७।०१	३।३९	५।३५	७।४८	१०।०६	१२।२२	१४।३७	१६।५४	१९।११	२१।१६	२३।०२	०।३३	२।०२
११ शु.	४७।०२	३।३५	५।३१	७।४४	१०।०२	१२।१८	१४।३३	१६।५०	१९।०७	२१।१२	२२।५८	०।२९	१।५८
१२ श.	४७।०२	३।३१	५।२७	७।४०	९।५८	१२।१४	१४।२९	१६।४६	१९।०३	२१।०८	२२।५४	०।२५	१।५४
१३ र.	४७।०२	३।२७	५।२३	७।३६	९।५४	१२।१०	१४।२५	१६।४२	१८।५९	२१।०४	२२।५०	०।२१	१।५०
१४ चं.	४७।०३	३।२३	५।१९	७।३२	९।५०	१२।०६	१४।२१	१६।३८	१८।५५	२१।००	२२।४६	०।१७	१।४६
१५ मं.	४७।०४	३।१९	५।१५	७।२८	९।४६	१२।०२	१४।१७	१६।३४	१८।५१	२०।५६	२२।४२	०।१३	१।४२

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन		दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१	मं.	दि.६:५६-८:३८ दि.१:४३-३:२४।	रा.८:०५-६:२४।
२	बु.	दि.८:३८-१०:२० दि.१२:०२-१:४३।	रा.१२:०२-१:२० रा.२:३८-३:५६।
३	गु.	दि.३:२४-६:४६।	रा.१२:०२-१:२० रा.३:५६-५:१४।
४	शु.	दि.८:३८-१२:०२।	रा.६:२४-१०:४३।
५	श.	प्र.५:१४-६:४६ दि.१:४३-३:२४ सं.५:०५-६:४६।	सं.६:४६-८:०५ रा.१:२०-२:३८ रा.३:५६-५:१३।
६	र.	दि.१०:१९-१:४३।	रा.१०:४३-१२:०१ रा.१:१९-२:३७।
७	चं.	दि.६:५५-८:३७ दि.३:२५-५:०६।	रा.१०:४३-१२:०१ रा.२:३७-३:५५।
८	मं.	दि.६:५५-८:३७ दि.१:४३-३:२५।	रा.८:०६-६:२५।
९	बु.	दि.८:३६-१०:५८ दि.१२:००-१:४२।	रा.१२:००-१:१८ रा.२:३६-३:५४।
१०	गु.	दि.३:२४-६:४८।	रा.१२:००-१:१८ रा.३:५४-५:१२।
११	शु.	दि.८:३६-१२:००।	रा.६:२४-१०:४२।
१२	श.	प्र.५:१२-६:५४ दि.१:४२-३:२४ सं.५:०६-६:४८।	सं.६:४८-८:०६ रा.१:१८-२:३६ रा.३:५४-५:११।
१३	र.	दि.१०:१९-१:४३।	रा.१०:४३-१२:०१ रा.१:१९-२:३७।
१४	चं.	दि.६:५४-८:३७ दि.३:२५-५:०७।	रा.१०:४३-१२:०१ रा.२:३७-३:५४।
१५	मं.	दि.६:५४-८:३७ दि.१:४३-३:२५।	रा.८:०७-६:२५।

६ रवौ वल्ली ८।३६।४७।५२
अयनांशाः २२।५०।५४

४ सू.बु. | गु.२ मं. | ल.१ | ५ | रा. ३ शु. | ६ | श १२ | चं. ७ | ८ | ९ के. | ११ | १०

१३ रवौ वल्ली ८।३६।४७।५६
अयनांशाः २२।५०।५५

४ सू.बु. | गु.२ मं. | ल.१ | ५ | रा. ३ शु. | ६ | श १२ | ७ | ८ | ९ के. | ११ | चं. १०

दशपापानि-पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वतः। असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्। अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं तथा। परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्ट चिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्। एतानि दशपापानि हर त्वं मम जाह्नवि। दशपापहरा यस्मात् तस्मात् दशहरा स्मृता। विविधः-ज्येष्ठमासे दानवस्तुनि वामनपुराणे- उदकुम्भं जलं धेनुस्तालवृन्तं सचन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रदद्यात् ज्येष्ठमासि च । गंगादशहरा वाराहपुराणे- दशमीशुक्लपक्षेतु ज्येष्ठेमासे कुजेऽहनि। अवतीर्णा ह्यतः स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च सरिद्वारा हरते दशपापानि तस्मात् दशहरा स्मृता। दशहरायां दशयोगाः,स्कन्दे-ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयोः। व्यतिपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ। दशयोगे नरःस्नात्वा सर्व पापैः प्रमुच्यते। कुजबुधयोरत्र कल्पभेदेन व्यवस्था ज्ञेया। योगाधिक्ये फलाधिक्याद्यत्रैव योगबाहुल्यं तत्रैवेयं ग्राह्या।

• पूजा निर्णय-

देवकार्याणि पूर्वाह्ने मनुष्याणां च मध्याह्ने।
पितृणामपराह्ने च कार्याण्येतानि यत्नतः।।

अथ- देवताक पूजा प्रातः कालमे, ऋषिपितोकानिक मध्याह्न कालमे, एवं पितर लोकनिक मध्याह्न पश्चात् करी।

देवपूजा विधि :-

कोनो पूजा सँ पूर्व सूर्यादिपञ्चदेवता आ विष्णुक पूजा करब आवश्यक अछि। जेना कि कहल गेल अछि-

गणेशं च दिनेशं च वह्निं विष्णुं शिवं शिवाम्।
सम्पूज्य संयतोऽग्रे च ततोऽभीष्टं प्रपूजयेत्।।
(ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, प्रकृतिखण्ड, अध्याय-४, श्लोकसंख्या-३६)

शिवो वह्निर्गणेशश्च दुर्गा सूर्यस्तथैव च।
पञ्च देवा इमे ख्याताः पूज्याः सर्वेषु कर्मसु।।(ब्रह्मपुराण)

सूर्यादिपञ्चदेवता के अन्तर्गत- (१) गणेश (२) सूर्य (३) अग्नि (४) शिव (५) शिवा (दुर्गा) ई पाँच देवता अबैत छैथ । राति मे सूर्यादि-पंचदेवताक स्थान पर गणपत्यादिपञ्चदेवताक पूजा होइछ।

यद्यपि- आदित्यं गणनाथं च देवीं रुद्रं च केशवम्।
पञ्चदैवत्यमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत्।।

मत्स्यपुराणक एहि वचनमे सूर्यादिपञ्चदेवता मे अग्नि के स्थान पर विष्णुक नाम उल्लेखित अछि। मुदा सूर्यादिपञ्चदेवता के पूजाक बाद विष्णुपूजाक प्रचलित परम्परा के देखैत ब्रह्मवैवर्त्त पुराण आ ब्रह्मपुराण क वचनानुसार गणेश, सूर्य, अग्नि, शिव आ दुर्गा के सूर्यादिपञ्चदेवता मानल जाइत छैक।

नित्यकृत्य सम्पन्न भेलाक बाद पवित्र स्थान मे आसन पर पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैसि देवतानुसार नैवेद्य मे चाननसहित-फूल दए यदि पार्थिव शिवलिंगक पूजा कर्तव्य हो तऽ ओकर अलग पात्र मे नैवेद्य लगा ओहि पर चाननसहित-फूल दए दी। तत्पश्चात् यथोपलब्ध पूजा-सामग्री सँ पितरिया सराइ मे अथवा केराक पात पर सूर्यादि-पंचदेवता आ आन देवताक पूजा आ ताम्रपात्र मे विष्णु पूजा करी। पूजाकाल मे जलपात्र आ धूप के वामभाग मे आ अर्घा-पंचपात्र, अक्षत, तिल, चानन, तुलसीपात के अपन आगू राखी। नैवेद्य, फूल आ दीप के दहिन भाग मे राखी। आन पूजोपकरण के अपन सुविधानुसार वाम, दक्षिण वा अग्रभाग मे राखी। शंख के भूमि पर नहि राखी आ ओकरा जल मे नहि डुबावी, अर्घा सँ शंख मे जल दी। जलपूर्ण शंख मे तुलसीपात दए ओकरा तेपाई पर राखी। पहिने सूर्यादिपञ्चदेवताक पूजा करी।

तिथय: दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.काल: द. प.	घं. मि.	योगा:	योग: समा.काल: द. प.	करणानि	द. प.	चन्द्रराशय: राशि:	द. प.	समाप्तिकाल: घं. मि.	स्पष्टसूर्य: राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदय: घं. मि.	सूर्यास्त: घं. मि.	रा.
१ बु.	२४।३१	दि.२।५८	मूल	३१।०७	दि.५।३६	शुभ	५।०८	कौलव	२४।३१	धनु		अहोरात्रं	२।००।१०।१०।	३४।०८	५।१०	६।५०	२५
२ गु.	१८।१६	दि.१२।२६	पूर्वाषाढ़ा	२६।५५	दि.३।५६	ब्रह्म	४६।५८	गर	१८।१६	धनु	४०।५५	रा.६।३२	२।०१।०७।०६	३४।०६	५।१०	६।५०	२६
३ शु.	१२।१३	दि.१०।०३	उत्तराषाढ़ा	२२।५५	दि.२।२०	ऐन्द्र	४२।३३	भद्रा	१२।१३	मकर		अहोरात्रं	२।०२।०४।०८	३४।१०	५।१०	६।५०	२७
४ श.	०६।२७	दि.७।४४	श्रवण	१६।१७	दि.१२।५२	वैधृति	३५।३१	वालव	६।२७	मकर	४७।४३	रा.१२।१५	२।०३।०१।०७	३४।११	५।१०	६।५०	२८
५ र.	०१।१३	प्रा.५।३६	घनिष्ठा	१६।१०	दि.११।३८	विष्कुम्भ	२६।०१	तैतिल	१।१३	कुम्भ		अहोरात्रं	२।०३।५८।०६	३४।१२	५।१०	६।५०	२९
७ चं.	५३।०१	रा.०२।२१	शतभिषा	१३।५४	दि.१०।४२	प्रीति	२३।०६	भद्रा	२४।५२	कुम्भ	५७।४५	रा.४।१५	२।०४।५५।००	३४।१३	५।०६	६।५१	३०
८ मं.	५०।२१	रा.१।१७	पूर्वाभाद्रपद	१२।२५	दि.१०।०७	आयुष्मान	१८।०४	वालव	२१।४१	मीन		अहोरात्रं	२।०५।५१।५४	३४।१४	५।०६	६।५१	३१
९ बु.	४८।५३	रा.१२।४२	उत्तराभाद्रपद	१२।०१	दि.६।५७	सौभाग्य	१३।४६	तैतिल	१६।३७	मीन		अहोरात्रं	२।०६।४८।४८	३४।१४	५।०६	६।५१	१
१० गु.	४८।३६	रा.१२।३६	रेवती	१२।५०	दि.१०।१७	शोभन	१०।३२	वणिज्	१८।४६	मीन	१२।५०	दि.१०।१७	२।०७।४५।४२	३४।१३	५।०६	६।५१	२
११ शु.	४६।४५	रा.०१।०४	अश्विनी	१५।१२	दि.११।१५	अतिगण्ड	०८।१६	बव	१६।१२	मेष		अहोरात्रं	२।०८।४२।३५	३४।१२	५।१०	६।५०	३
१२ श.	५२।०३	रा.०१।५६	भरणी	१८।१४	दि.१२।२७	सुकर्मा	०७।०५	कौलव	२०।५४	मेष	३४।१३	सं.६।५१	२।०९।३९।२८	३४।११	५।१०	६।५०	४
१३ र.	५५।२७	रा.३।२०	कृत्तिका	२२।४२	दि.२।१४	धृति	०६।४३	गर	२३।४५	वृष		अहोरात्रं	२।१०।३६।२१	३४।१०	५।१०	६।५०	५
१४ चं.	५६।४२	रा.शे५।०२	रोहिणी	२८।१०	दि.४।२६	शूल	०७।१५	भद्रा	२७।३५	वृष		अहोरात्रं	२।११।३३।१४	३४।०९	५।१०	६।५०	६
३० मं.	६०।००	अहोरात्रं	मृगशिरा	३४।१६	सं.६।५३	गण्ड	०८।२३	चतुरङ्ग	३२।०८	वृष	१।१४	प्रा.५।४०	२।१२।३०।०७	३४।०८	५।१०	६।५०	७
३० बु.	०४।३४	प्रा.०७।००	आर्द्रा	४०।५३	रा.६।३२	वृद्धि	०६।५६	नाग	४।३४	मिथुन		अहोरात्रं	२।१३।२६।५७	३४।०६	५।११	६।४६	८

आषाढकृष्णपक्षः

शक १९४४, संवत्२०७९, सन् १४२८, उत्तरायणं, उत्तरगोलः, ग्रीष्म ऋतुः, पश्चिमे कालः, शुद्धः।
दिनांक १५ जूनतः २९ जून यावत् सन् २०२२ इ। पूर्वोदितः गुरुः, पूर्वोदितः शुक्रः।

ने.	अं.	
१	१५	विल्वमाषाढके त्यजेत्, मिथुने रविः३६।१६ (रा.७।५१)। षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकाला दि.१२।०० उपरि पुण्याहः, न.आषाढमासारम्भः। शुक्त५२।२२, शिववासः-अमृतयोगः दि.२।५८ या.◆
२	१६	मासादिः।अग्निवासः, अमृतयोगः दि.१२।२६ उपरि, भद्रा ४५।१६ उपरि। ◆ततः सिद्धियोगः।
३	१७	विघ्नराज ४ व्रतं, मुण्डनं-गृहारम्भश्च तृतीयायां दि.१०।०३ यावत्। भद्रा १२।१३ यावत्, शिववासः दि.१०।०३ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.२।२० उपरि। वृषे शुक्र ७।५३।
४	१८	गृहारम्भः पञ्चम्यां दि.७।४४ उपरि। शिववासः, अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१२।५२ यावत्। पञ्चकारम्भः(भदवा) दि.१२।५२ उपरि।
५	१९	विवाहः धनिष्ठायां। षष्ठीतिथिमानं ५५।२६ रा.३।२१। शिववासः प्रा.५।३६ यावत् ततः अग्निवासः, भद्रा ५६।४२ उपरि।
६	२०	दग्धतिथि रा.२।२१ उ., अमृतयोगः प्रा.५।३६ यावत्। भद्रा २४।५२ यावत्।
७	२१	दग्धतिथि रा.१।१७ या., शिववासः,अग्निवासः, सिद्धियोगः रा.१।१७ यावत्।
८	२२	विवाहः दशम्यां रा.१२।४२ उपरि।
९	२३	विवाहः दिवारात्रौ, पञ्चक(भदवा) सामाप्तिः दि.१०।१७ उपरि।
१०	२४	योगिनीएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। विवाहः अश्विन्यां दि.११।१५ यावत्। आर्द्रायां रविः ३७।५१(रा.८।१७),
११	२५	यवचूर्णेन पारणं, शिववासः, अग्निवासः,
१२	२६	प्रदोष १३ व्रतं, विवाहः त्रयोदशीरोहिण्यां च। सिद्धियोगः रा.३।२० यावत्, पूर्व-दक्षिणयात्रा दि.२।१४ उ. रा.३।२० यावत्, भद्रा५५।२७ उपरि।
१३	२७	प्रदोष१४ व्रतं, अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.४।२६ यावत्, भद्रा २७।३५ उपरि।
१४	२८	श्राद्धादौ अमावस्या, शिववासः,
१५	२९	आषाढ़ी अमावस्या स्नानदानादिः, शिववासः-अग्निवासः प्रा.७।०० यावत् ततः अमृतयोगः।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारणी चक्रम

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान घं.मि.	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
१ बु.	११।१८।४२।१५	१।०६।४५।०२	११।१३।११।०६	००।२८।२३।२४	६।२८।०५।१७	६।२८।४६।२६	४७।०५	३।१५	५।११	७।२४	६।४२	११।५८	१४।१३	१६।३०	१८।४७	२०।५२	२२।३८	०।०६	१।३८
२ गु.	११।१९।२५।१६	१।११।०६।५६	११।१३।१६।१३	००।२६।३५।०८	६।२८।०३।३५	६।२८।४६।१५	४७।०६	३।११	५।०७	७।२०	६।३८	११।५४	१४।०६	१६।२६	१८।४३	२०।४८	२२।३४	०।०५	१।३४
३ शु.	११।२०।०८।१७	१।१२।२८।५०	११।१३।२७।१७	०१।००।४६।५२	६।२८।०१।५३	६।२८।४३।०४	४७।०६	३।०७	५।०३	७।१६	६।३४	११।५०	१४।०५	१६।२२	१८।३६	२०।४४	२२।३०	०।०१	१।३०
४ श.	११।२०।५१।१८	१।१३।५०।४३	११।१३।३५।२१	०१।०१।५८।३६	६।२८।००।११	६।२८।३६।५४	४७।०६	३।०३	४।५६	७।१२	६।३०	११।४६	१४।०१	१६।१८	१८।३५	२०।४०	२२।२६	२३।५७	१।२६
५ र.	११।२१।३४।१६	१।१५।१२।३६	११।१३।४३।२५	०१।०३।१०।२०	६।२७।५८।२६	६।२८।३६।४४	४७।०६	२।५६	४।५५	७।०८	६।२६	११।४२	१३।५७	१६।१४	१८।३१	२०।३६	२२।२२	२३।५३	१।२२
७ चं.	११।२२।१६।४२	१।१६।४६।०१	११।१३।५०।१३	०१।०४।२२।०८	६।२७।५६।०३	६।२८।३३।३३	४७।०६	२।५५	४।५१	७।०४	६।२२	११।३८	१३।५३	१६।१०	१८।२७	२०।३२	२२।१८	२३।४६	१।१८
८ मं.	११।२२।५६।०५	१।१८।२५।२६	११।१३।५७।०१	०१।०५।३३।५६	६।२७।५३।३७	६।२८।३०।२२	४७।०६	२।५१	४।४७	७।००	६।१८	११।३४	१३।४६	१६।०६	१८।२३	२०।२८	२२।१४	२३।४५	१।१४
९ बु.	११।२३।४१।२८	१।२०।१।५१	११।१४।०३।४६	०१।०६।४५।४४	६।२७।५१।११	६।२८।२७।११	४७।०६	२।४७	४।४३	६।५६	६।१४	११।३०	१३।४५	१६।०२	१८।१६	२०।२४	२२।१०	२३।४१	१।१०
१० गु.	११।२४।२३।५०	१।२१।३८।१६	११।१४।१०।३७	०१।०७।५७।३२	६।२७।४८।४५	६।२८।२४।००	४७।०६	२।४३	४।३६	६।५२	६।१०	११।२६	१३।४१	१५।५८	१८।१५	२०।२०	२२।०६	२३।३७	१।०६
११ शु.	११।२५।०६।१२	१।२३।१४।४१	११।१४।१७।२४	०१।०६।०६।२०	६।२७।४६।२०	६।२८।२०।४६	४७।०६	२।३६	४।३५	६।४८	६।०६	११।२२	१३।३७	१५।५४	१८।११	२०।१६	२२।०२	२३।३३	१।०२
१२ श.	११।२५।४८।२४	१।२४।५१।०५	११।१४।२४।११	०१।१०।०२।०८	६।२७।४३।५५	६।२८।१७।३६	४७।०६	२।३५	४।३१	६।४४	६।०२	११।१८	१३।३३	१५।५०	१८।०७	२०।१२	२१।५८	२३।२६	०।५८
१३ र.	११।२६।३०।५६	१।२६।२७।२६	११।१४।३०।५८	०१।११।३२।५५	६।२७।४१।३०	६।२८।१४।२६	४७।०६	२।३१	४।२७	६।४०	८।५८	११।[illegible]	१३।२६	१५।४६	१८।०३	२०।०८	२१।५४	२३।२५	०।५४
१४ चं.	११।२७।१२।४३	१।२८।१२।४५	११।१४।३६।३१	०१।१२।४८।११	६।२७।३८।२८	६।२८।११।१८	४७।०५	२।२७	४।२३	६।३६	८।५४	११।१०	१३।२५	१५।४२	१७।५६	२०।०४	२१।५०	२३।२१	०।५०
३० मं.	११।२७।५४।३०	१।२६।५८।०१	११।१४।४२।०४	०१।१४।०३।२७	६।२७।३५।२६	६।२८।०८।०७	४७।०४	२।२३	४।१६	६।३२	८।५०	११।०६	१३।२१	१५।३८	१७।५५	२०।००	२१।४६	२३।१७	०।४६
३० बु.	११।२८।३६।१७	२।०१।४३।१७	११।१४।४७।३७	०१।१५।१८।४३	६।२७।३२।२४	६।२८।०४।५६	४७।०३	२।१६	४।१५	६।२८	८।४६	११।०२	१३।१७	१५।३४	१७।५१	१६।५६	२१।४२	२३।१३	०।४२

५ रवी वल्ली ८।३६।४८।०६ अयनांशाः २२।५०।५६

सू ४बु ३शु. रा.२ गु.मं. ल.१ १२चं. ५ श ११ ६ ७ ८ के. ९ १०

१३ रवी वल्ली ८।३६।४८।१३ अयनांशाः २२।५०।५८

सू ४बु च.३शु. रा.२ गु.मं. ल.१ १२ ५ श ११ ६ ७ ८ के. ९ १०

विविधः-ग्रहस्थितिवशेन वृष्टिविचारः-बुधः शुक्र समीपस्थः करोत्येकार्णवा महीं । तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्। पुरतः पृष्ठतो भानुःशुभा यदि समीपगाः। तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चेते प्रतिलोमगा। ग्रहाणामुदये चास्ते राश्यन्तरगतेऽयने। संयोगो वापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते। उदयास्तगतः शुक्रः बुधश्च वृष्टिकारकः। चलत्यंगारके वृष्टिः ध्रुवावृष्टिश्शनैश्चरे । वारिपूर्णा महींकृत्वा पश्चात्संचरतेगुरुः। शुक्रे वास्तमिते मन्दे त्रिविधोऽपि प्रजायते।

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ बु.	दि.८:३७-१०:१६ दि.१२:०१-१:४३।	रा.१२:०१-१:१६ रा.२:३७-३:५४।
२ गु.	दि.३:२६-६:५०।	रा.१२:०२-१:१६ रा.३:५३-५:१०।
३ शु.	दि.८:३६-१२:०२।	रा.६:२६-१०:४४।
४ श.	प्र.५:१०-६:५३ दि.१:४४-३:२६ सं.५:०८-६:५०।	सं.६:५०-८:०८ रा.१:१९-२:३६ रा.३:५३-५:१०।
५ र.	दि.१०:१९-१:४४।	रा.१०:४४-१२:०२ रा.१:१९-२:३६।
७ चं.	दि.६:५३-८:३६ दि.३:२६-५:०८।	रा.१०:४४-१२:०२ रा.२:३६-३:५३।
८ मं.	दि.६:५३-८:३६ दि.१:४४-३:२६।	रा.८:०८-६:२६।
९ बु.	दि.८:३६-१०:१६ दि.१२:०२-१:४४।	रा.१२:०२-१:१६ रा.२:३६-३:५३।
१० गु.	दि.३:२६-६:५०।	रा.१२:०२-१:१६ रा.३:५३-५:१०।
११ शु.	दि.८:३६-१२:०२।	रा.६:२६-१०:४४।
१२ श.	प्र.५:१०-६:५३ दि.१:४४-३:२६ सं.५:०८-६:५०।	सं.६:५०-८:०८ रा.१:१९-२:३६ रा.३:५३-५:१०।
१३ र.	दि.१०:१९-१:४४।	रा.१०:४४-१२:०२ रा.१:१९-२:३६।
१४ चं.	दि.६:५३-८:३६ दि.३:२६-५:०८।	रा.१०:४४-१२:०२ रा.२:३६-३:५३।
३० मं.	दि.६:५३-८:३६ दि.१:४४-३:२६।	रा.८:०८-६:२६।
३० बु.	दि.८:३६-१०:१६ दि.१२:०२-१:४४।	रा.१२:०२-१:१६ रा.२:३६-३:५३।

सूर्यनक्षत्राणि-रोहिणी-मृगशिरा पूर्वोत्तरफल्गुनी-हस्त-चित्रा- स्वाती - विशाखा-अनुराधा- ज्येष्ठा-मूल-शतभिषोत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्क्षाणि, शेषाणि चन्द्रनक्षत्राणि ज्ञेयानि। एतत्फलम-चन्द्रे सूर्यर्क्षगे वृष्टिः सूर्ये चन्द्रर्क्षगे सति। उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत्। तावेव यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते। नक्षत्राणां पुरूषादिसंज्ञा-मूलादीनि चतुर्दशर्क्षाणि पुरूषसंज्ञकानि, आद्रार्दिदश स्त्रीसंज्ञकानि,विशाखादि त्रीणि नपुंसकानि। तत्र पुंस्त्रीयोगे सुवृष्टिः, स्त्रीनपुंसकयोगे स्वल्पवृष्टिरन्यथा वृष्टेरभावः।

मूलविचारः- ज्येष्ठा/मूल ति.१ बुध दि.५।३६ यावत्।
रेवती/अश्विनी ति.९ बुध दि.६।५७ तः ति.११ शुक्र दि.११।१५ यावत्।

नैवेद्यक सम्बन्ध :-गीता२,अध्याय१२,श्लोक१३।

श्रीकृष्ण भगवान् कहै छथि, जे व्यक्ति हमर देल वस्तु हमरा अर्पण नहि कय स्वतः स्वयं भक्षण करेत छथि से चोर थिकाह।

इष्टान्भोगान् हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः। तैर्दत्तान्प्रदायैभ्यो यो भुंक्ते स्तेन एव सः।। यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः। भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।।

अर्थात् यज्ञसँ शेष बाँचल अन्न खायबाला श्रेष्ठ पुरुष सब पापसँ मुक्त भऽ जाइत छथि। जे पापी अपन शरीर पोषणक हेतु पकबै छथि से पापकेँ भक्षण करैत छथि।

भोजन विधि :-हस्त-पाद प्रक्षालन कय दुइ बेरि आचमन कय भोजनक स्थानमे आसनपर बैसि जल लय चतुष्कोन मण्डल करी, तकर मध्यमे परसल अन्न हर्षपूर्वक देखि-

ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धावनामासि प्रियन्देवानामन धृष्टन्देवयजन्मसि। ई मन्त्र पढ़ि प्रणाम कय दहिना भागमे जाहि रूपेँ कुलाचार हो तदनुसार नैवेद्य राखि उत्सर्ग करी, बहुत बयक्ति ९ ठाम नैवेद्य राखि- ॐ विष्णवे नमः, ॐ दुर्गायै नमः, ॐ गणपतये नमः। ॐ इन्द्राय नमः, ॐ चन्द्राय नमः, ॐ अर्काय नमः, ॐ अग्नये नमः, ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ वसुभ्यो नमः। एहि मन्त्रें उत्सर्ग करैत छथि।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा। एहि मन्त्रें जलप्राशन कय-
ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा।
एहि मन्त्रें पंचग्रास कय यथारुचि भोजन कय-
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।।
एहि मन्त्रे पुनः जलप्राशन करी। अतः पर उठि विशेष रूपें हस्त ओ मुखक प्रक्षालन कय दुई बेरि आचमन कए दहिना पैरक अंगुठाक मूल पर- ॐ अंगुष्ठमात्रः पुरुषो अंगुष्ठं च समाश्रितः।
ईशः सर्वस्य जगतः प्रभुः प्रीणातु विश्वभुक्।।
एहि मन्त्रे जलप्रक्षेप कए-
ॐ विष्णुः समस्तेन्द्रियदेहदेही प्रधानभूतो भगवान्यथैकः।
सत्येन तनन्नमशेषमेतदारोग्यदं मे परिणाममेतु।।
ॐ विष्णुरातो यथैवात्रं परिणामञ्च वै यथा।
सत्येन तेन मद्भुक्तं जीर्य्यत्वन्नमिदं तथा।
एहि दुइ मन्त्रे उदर स्पर्श कए मुखशुद्धि ताम्बूलादि ग्रहण कए संध्याकाल मे सन्ध्यावन्दन कए पहरक बाद भोजन करी।

आषाढ़शुक्लपक्षः

शक १९४४, संवत्२०७९, सन् १४२८, उत्तरायणं, उत्तरगोलः, ग्रीष्म ऋतुः, पश्चिमे कालः, शुद्धः।
दिनांक ३० जूनतः १३ जुलाई यावत् सन् २०२२ इ। पूर्वोदितः गुरुः, पूर्वोदितः शुक्रः।

तिथयः	दिनानि	तिथिमानानि द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	नक्षत्रमानानि समा.कालः द. प.	घं. मि.	योगाः	योगः समा.कालः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः राशिः द. प.	समाप्तिकालः घ. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सूर्योदयः घं. मि.	सूर्यास्तः घं. मि.	रा.	दिनांकाः ने.	अं.	आषाढ़शुक्लपक्षः
१	गु.	०९।३६	दि.६।०२	पुनर्वसु	४७।२०	रा.१२।०७	ध्रुव	११।३६	वव ९।३६	मिथुन ३०।४१	सं.५।५१	२।१४।३३।५१	३४।०५	५।११	६।४६	९	१६	३०	ग्रीष्मनवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, चन्द्रदर्शनं मु.३० सौम्यशृंगफलं साम्यम्। सौराठ-ससौला सभारम्भः, देवादिप्रतिष्ठा-मुण्डनं-नमाकरणं-अक्षरारम्भः-विद्यारम्भः-कर्णवेधः द्वितीयायां। वधूप्रवेशः। ←
२	शु.	१५।५२	दि.११।३१	पुष्य	५३।१९	रा.२।३०	व्याघात्	१३।०७	कौलव १५।५२	कर्क	अहोरात्रं	२।१५।२०।४३	३४।०४	५।११	६।४६	१०	१७	१	जुलाई७, जगन्नाथरथयात्रा,समुद्रस्नानं श्रीजगन्नाथदर्शनं, मुण्डनं, नामकरणं, अक्षरारम्भः, विद्यारम्भः,कर्णवेधः, देवादिप्रतिष्ठा,वृक्षादिरोपणं,विपणि, स्वार्मासेवारम्भः, यानादिचालनं, शिववासः दि.११।३१ यावत्,◆
३	श.	१८।३४	दि.१२।३६	आश्लेषा	५८।३२	रा.४।३६	हर्षण	१४।०६	गर १८।३४	कर्क ५८।३२	रा.४।३६	२।१६।१७।३५	३४।०३	५।११	६।४६	११	१८	२	श्रीगणेश ४ व्रतं। .। अग्निवासः, सिद्धियोगः दि.१२।३६ उपरि, भद्रा ५०।१० उपरि।
४	र.	२१।४६	दि.१।५४	मघा	६०।००	अहोरात्रं	वज्र	१२।२१	भद्र २१।४६	सिंह	अहोरात्रं	२।१७।१४।२७	३४।०२	५।१२	६।४८	१२	१९	३	विवाहः पञ्चम्यां, करमूले पुलिकमूलबन्धनं, शिववासः-अग्निवासः-अमृतयोगः दि.१।५४ उपरि, भद्रा २१।४६ यावत्। ◆ पश्चिमां विना यात्रा दि.११।३१ उ. रा.२।३० यावत्। अश्विन्योमेपे च मंगल ४७।०६।
५	चं.	२३।५३	दि.०२।४५	मघा	०२।३८	प्रा.६।१२	सिद्धि	१४।४४	वालव २३।५३	सिंह	अहोरात्रं	२।१८।११।१७	३४।०१	५।१२	६।४८	१३	२०	४	उपनयनं, विद्यारम्भः, शिववासः, अग्निवासः-अमृतयोगः दि.२।४५ यावत् ततः सिद्धियोगः, उत्तर-यात्रा प्रा.६।१२ उपरि दि.२।४५ यावत्।
६	मं.	२४।४२	दि.०३।०४	पूर्वाफाल्गुनी	०५।३७	दि.७।२६	व्यतीपात्	१२।०९	तैतिल २४।४२	सिंह २१।०२	दि.१।३७	२।१९।६।०७	३४।००	५।१२	६।४८	१४	२१	५	उपनयनं, विद्यारम्भः, शिववासः, अग्निवासः-अमृतयोगः दि.२।४५ यावत् ततः सिद्धियोगः, ... शिववासः दि.६।०२ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१२।०७ यावत् ततः गुरुपुष्ययोगः, पश्चिम यात्रा रा.१२।०७ या. ततः दक्षिणां विना यात्रा।
७	बु.	२४।१३	दि.०२।५३	उत्तराफाल्गुनी	०७।१८	दि.८।०७	वरीयान्	०९।३३	वणिज २४।१३	कन्या	अहोरात्रं	२।२०।०४।५७	३३।५८	५।१२	६।४८	१५	२२	६	शिववासः दि.३।४ यावत् ततः अग्निवासः-अमृतयोगः। ←अग्निवासः, शिववासः दि.६।०२ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.१२।०७ यावत् ततः गुरुपुष्ययोगः, पश्चिम यात्रा रा.१२।०७ या. ततः दक्षिणां विना यात्रा।
८	गु.	२२।३०	दि.०२।१३	हस्त	०७।४६	दि.८।१९	परिघ	०५।५७	वव २२।३०	कन्या ३७।२४	रा.८।११	२।२१।०१।४७	३३।५६	५।१३	६।४७	१६	२३	७	गृहारम्भः-गृहप्रवेशः-मुण्डनं- विवाहः-विपणि-नामकरणं-कर्णवेधः-देवादिप्रतिष्ठा सप्तम्यां, दग्धतिथि दि.२।५३ उ.,सिद्धियोगः दि.२।५३ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.८।०७ उपरि,♍
९	शु.	१९।३८	दि.०१।०४	चित्रा	०७।०३	दि.८।०२	शिव	०१।२४	कौलव १९।३८	तुला	अहोरात्रं	२।२१।५८।३६	३३।५४	५।१३	६।४७	१७	२४	८	सिद्ध ५४।३७, दग्धतिथि दि.२।१३ या., अमृतयोगः दि.२।१३ यावत् ततः शिववासः-अग्निवासः। ♍पुनर्वसवो रवि ४१।५७(रा.६।५९),भद्रा २४।१२ उ ५३।२२यावत्।
१०	श.	१५।४७	दि.११।३१	स्वाती	०५।२०	दि.७।२१	साध्य	४९।५६	गर १५।४७	तुला ४८।२३	रा.१२।३४	२।२२।५५।२५	३३।५३	५।१३	६।४७	१८	२५	९	महानवमी व्रतं। मुण्डनं-गृहप्रवेशः-विवाहः-देवादिप्रतिष्ठा-विपणि-वृक्षादिरोपणं दशम्यां, वधूप्रवेशः। सौराठ-ससौला वैवाहिक समासमाप्तिः, शिववास-अग्निवासः-अमृतयोगः दि.१।०४ यावत् ततः दक्षिणयात्रा।
११	र.	११।४०	दि.९।५४	विशाखा	०२।४४	दि.६।१९	शुभ	४३।१३	भद्रा ११।४०	वृश्चिक	अहोरात्रं	२।२३।५२।१४	३३।५२	५।१४	६।४६	१९	२६	१०	विजयादशमी, नवरात्रव्रतस्य पारणं, देवीविसर्जनं, गृहप्रवेशः स्वात्यां दि.७।२१ यावत्। रैवतमन्वादिः। अग्निवासः-अमृतयोगः दि.११।३१ उपरि, भद्रा ४३।४६ उपरि।
१२	चं.	०४।४३	दि.०७।०७	ज्येष्ठा	५५।४२	रा.३।३०	शुक्ल	३६।०३	बालव ४।४३	वृश्चिक५५।४२	रा.३।३१	२।२४।४९।०८	३३।५१	५।१४	६।४६	२०	२७	११	हरिशयनीएकादशी११ व्रतं सर्वेषाम्। चातुर्मास्यव्रतारम्भः। करमूले पुलिकमूलबन्धनं, अनुराधानक्षत्र ५६।४४ रा.३।५५, शिववासः-पश्चिम-उत्तरयात्रा दि.९।५४ उपरि, भद्रा ११।४० यावत्।
१३	मं.	००।४२	प्रा.५।३०	मूल	५१।३७	रा.१।५३	ब्रह्म	२९।३५	तैतिल ००।४२	धनु	अहोरात्रं	२।२५।४६।०२	३३।५०	५।१४	६।४६	२१	२८	१२	वासुदेव१२, यवचूर्णेनपारणं, प्रदोष १३ व्रतं। गृहप्रवेशः मूले रा.३।३० उपरि। शिववासः, अग्निवासः, पश्चिम-उत्तरयात्रा दि.७।०७ उपरि,
१५	बु.	४७।२७	रा.१२।१२	पूर्वाषाढ़ा	४७।२४	रा.१२।१२	ऐन्द्र	२०।५५	भद्रा २०।३०	धनु	अहोरात्रं	२।२६।४२।५६	३३।४८	५।१४	६।४६	२२	२९	१३	प्रदोष १४ व्रतं, चतुर्दशीतिथिमानं ५२।५१, शिववासः प्रा.५।३० यावत् भद्रा ५३।३३ उ.। मिथुने शुक्रः ४।४५। आषाढीपूर्णिमा१५ स्नानदानादिः, गुरुपूर्णिमा, गुरुव्यासयोः पूजनं, चाक्षुषमन्वादिः,सन्१४३० सालसंज्ञकवर्षारंभः, अग्निवासः, पूर्वयात्रा रा.१२।१२ यावत्, भद्रा २०।३० यावत्,

मूलविचारः- आश्लेषा/मघा ति.२ शुक्र रा.२।३० तः ति.५ चन्द्र प्रा.६।१२ यावत्।
ज्येष्ठा/मूल ति.११ रवि ति.६।७६ तः ति.१३ मंगल रा.१।५३ यावत्।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

तिथि दिन	भौम राश्यादि	बुध राश्यादि	गुरुः राश्यादि	शुक्रः राश्यादि	वक्री शनि राश्यादि	केतु राश्यादि	मिश्रमान
१ गु.	११।२६।१८।०४	२।०३।२८।३२	११।१४।५३।१०	१।१६।३३५।६	६।२७।२६।२२	६।२८।०१।४५	४७।०२
२ शु.	११।२६।५६।५१	२।०५।१३।४७	११।१४।५८।४३	१।१७।४६।१४	६।२७।२६।२१	६।२७।५८।३४	४७।०१
३ श.	००।०१।२३।२५	२।०६।५९।०२	११।१५।०४।१६	१।१९।०४।२६	६।२७।२३।२०	६।२७।५५।२४	४७।०१
४ र.	००।०२।०४।२२	२।०८।४४।१७	११।१५।०६।४८	१।२०।१६।४४	६।२७।२०।१६	६।२७।५२।१४	४७।०१
५ चं.	००।०२।४५।१६	२।१०।३४।३४	११।१५।१४।१७	१।२१।२८।३६	६।२७।१६।४८	६।२७।४६।०३	४७।००
६ मं.	००।०३।२६।१६	२।१२।२४।५१	११।१५।१८।४६	१।२२।३७।३३	६।२७।१३।१७	६।२७।४५।५२	४६।५६
७ बु.	००।०४।०७।१३	२।१४।१५।०८	११।१५।२३।१४	१।२३।४६।२७	६।२७।०६।४६	६।२७।४२।४१	४६।५८
८ गु.	००।०४।४८।१०	२।१६।०५।२५	११।१५।२७।४२	१।२४।५५।२१	६।२७।०६।१५	६।२७।३६।३०	४६।५७
९ शु.	००।०५।२०।०७	२।१७।५५।४२	११।१५।३२।१०	१।२६।०४।१५	६।२७।०२।४४	६।२७।३६।१६	४६।५७
१० श.	००।०६।१०।०४	२।१६।४५।५६	११।१५।३६।३८	१।२७।१३।०६	६।२६।५६।१३	६।२७।३३।०८	४६।५७
११ र.	००।०७।००।०१	२।२१।३६।१६	११।१५।४१।१६	१।२८।२२।०३	६।२६।५५।४२	६।२७।२६।५८	४६।५७
१२ चं.	००।०७।४६।५८	२।२३।२६।३३	११।१५।४३।४४	१।२६।३७।३३	६।२६।५१।३४	६।२७।२६।४६	४६।५६
१३ मं.	००।०८।३६।५५	२।२५।१६।५०	११।१५।४६।२२	२।००।५३।०३	६।२६।४७।२७	६।२७।२३।३५	४६।५५
१५ बु.	००।०६।२६।५२	२।२७।०७।०७	११।१५।४६।००	२।०२।०८।३३	६।२६।४३।२०	६।२७।२०।२४	४६।५४

४ रवौ वल्ली ८।३६। ४८।२०
अयनांशाः २२।५०।५६

३ शु.
गु. ल.१
४ बु
रा. २ मं
१२
सु
५
श ११
८ के.
१०
चं. ६
७
९

४ रवौ वल्ली ८।३६। ४८।२०
अयनांशाः २२।५०।५६

२
ल.१ रा. मं
गु. १२
११
३ सू. शु.
४ बु
श १०
५
७
के.
६
९
चं. ८

दैनिकलग्नसारणी चक्रम

मिश्रमान	मे. अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	मि.अं. घं.मि.	क.अं. घं.मि.	सिं.अं. घं.मि.	कं.अं. घं.मि.	तु.अं. घं.मि.	वृ.अं. घं.मि.	ध.अं. घं.मि.	म.अं. घं.मि.	कु.अं. घं.मि.	मी.अं. घं.मि.
४७।०२	२।१५	४।११	६।२४	८।४२	१०।५८	१३।१३	१५।३०	१७।४७	१९।५२	२१।३८	२३।०६	०।३८
४७।०१	२।११	४।०७	६।२०	८।३८	१०।५४	१३।०९	१५।२६	१७।४३	१९।४८	२१।३४	२३।०५	०।३४
४७।०१	२।०६	४।०२	६।१५	८।३३	१०।४९	१३।०४	१५।२१	१७।३८	१९।४३	२१।२९	२३।००	०।२९
४७।०१	२।०२	३।५८	६।११	८।२९	१०।४५	१३।००	१५।१७	१७।३४	१९।३९	२१।२५	२२।५६	०।२५
४७।००	१।५८	३।५४	६।०७	८।२५	१०।४१	१२।५६	१५।१३	१७।३०	१९।३५	२१।२१	२२।५२	०।२१
४६।५६	१।५४	३।५०	६।०३	८।२१	१०।३७	१२।५२	१५।०९	१७।२६	१९।३१	२१।१७	२२।४८	०।१७
४६।५८	१।५०	३।४६	५।५९	८।१७	१०।३३	१२।४८	१५।०५	१७।२२	१९।२७	२१।१३	२२।४४	०।१३
४६।५७	१।४६	३।४२	५।५५	८।१३	१०।२९	१२।४४	१५।०१	१७।१८	१९।२३	२१।०९	२२।४०	०।०९
४६।५७	१।४२	३।३८	५।५१	८।०९	१०।२५	१२।४०	१४।५७	१७।१४	१९।१९	२१।०५	२२।३६	०।०५
४६।५७	१।३८	३।३४	५।४७	८।०५	१०।२१	१२।३६	१४।५३	१४।११	१९।१५	२१।०१	२२।३२	०।०१
४६।५७	१।३४	३।३०	५।४३	८।०१	१०।१७	१२।३२	१४।४९	१७।०६	१९।११	२०।५७	२२।२८	२३।५७
४६।५६	१।३०	३।२६	५।३९	७।५७	१०।१३	१२।२८	१४।४५	१७।०२	१९।०७	२०।५३	२२।२४	२३।५३
४६।५५	१।२६	३।२२	५।३५	७।५३	१०।०९	१२।२४	१४।४१	१६।५८	१९।०३	२०।४९	२२।२०	२३।४९
४६।५४	१।२२	३।१८	५।३१	७।४९	१०।०५	१२।२०	१४।३७	१६।५४	१८।५९	२०।४५	२२।१६	२३।४५

दैनिक अर्धप्रहरा

तिथि, दिन	दिन का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट	रात्रि का अर्धप्रहरा घण्टा मिनट
१ गु.	दि.३।२६-६।५०।	रा.१२।१-१।१९।रा.३।५३-५।११।
२ शु.	दि.८।३६-१२।०२।	रा.८।२६-१०।४४।
३ श.	प्रा.५।११-६।५४ दि.१।४३-३।२५ सं.५।०७-६।४६।	सं.६।४८-८।०७ रा.१।१९-२।३७ रा.३।५४-५।११।
४ र.	दि.१०।१६-१।४३।	रा.१०।४३-१२।०१ रा.१।१९-२।३७।
५ चं.	दि.६।५४-८।३६ दि.३।२४-५।०६।	रा.१०।४३-१२।०० रा.२।३६-३।५४।
६ मं.	दि.६।५४-८।३६ दि.१।४२-३।२४।	रा.८।०६-६।२४।
७ बु.	दि.८।३६-१०।१८ दि.१२।००-१।४२।	रा.१२।००-१।१८ रा.२।३६-३।५४।
८ गु.	दि.३।२४-६।४८।	रा.१२।००-१।१८ रा.३।५४-५।१३।
९ शु.	दि.८।३७-१२।०१।	रा.६।२५-१०।४३।
१० श.	प्रा.५।१३-६।५५ दि.१।४३-३।२५ सं.५।०६-६।४७।	सं.६।४७-८।०६ रा.१।१९-२।३७ रा.३।५५-५।१३।
११ र.	दि.१०।१९-१।४३।	रा.१०।४३-१२।०१ रा.१।१९-२।३७।
१२ चं.	दि.६।५५-८।३७। दि.३।२५-५।०६।	रा.१०।४३-१२।१ रा.२।३७-३।५५।
१३ मं.	दि.६।५६-८।३८। दि.१।४३-३।२४।	रा.८।०५-६।२४।
१५ बु.	दि.८।३८-१०।२०। दि.१२।०२-१।४३	रा.१२।२-१।२० रा.२।३८-३।५६।

शयन विधि:-

पादप्रक्षालन कए अंगपोछाँ पैर पोछि उत्तम ओछाओन पर जाय-ॐ नमो नन्दीश्वराय नमः। ई मन्त्र ७ वा ३ बेरि जपि-

ॐ अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महामुनिः।
कपिलो मुनिरास्तीक, पञ्चैते सुखशायिनः।।
ॐ असितं चार्तिमन्तञ्च सुनीथं चापि यः स्मरेत्।
दिवा वा यदि वा रात्रौ नास्य सर्पभयो भवेत्।।
यो जरत्कारुणाज्जातो जरत्कारौ महायशाः।
आस्तीकः सर्पसत्रे वः पन्नगान्यो ह्यरक्षयत्।।
तं स्मरन्तं महाभागा न मां हिंसितुमर्हथ।
सर्पापसर्प भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष।।
जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर।
आस्तिकेति वचः श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्तते।।
शतधा भिद्यते मूर्ध्ना शिंशवृक्षफलं यथा।।

इत्यादि मन्त्र क स्मरण कए विष्णुभगवानकें प्रणाम कए कुलदेवता, इष्टदेवताक स्मरण करैत शयन करी।

• गायत्री मन्त्र जल मे नहि जपी-
न गायत्रीं जपेद् विद्वान् जलमध्ये कथंचन।
यतः साग्निमुखी प्रोक्तेत्याहुः केचिन्महर्षयः।।

पञ्च महायज्ञ :-

तासां क्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः।
पञ्चक्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम्।।
अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।

अर्थ-चूल्हि(ईंधन जरैलासँ), जाँत पिसलासँ, बाढ़नि लगेला सँ, ऊखरि(कूटलासँ) जलक स्थान (जलपात्र) क नीचा जीवकें दबि गेलासँ एहि पाँचो स्थान मे जे जीव मरि जाइत अछि। ओहि पापक नाश हेतु निम्नलिखितानुसार करक चाही।
(१) वेद पुराण पढ़व ब्रह्मयज्ञ थिक, (२) श्राद्ध तथा तर्पणसँ पितरके तृप्त करव पितृयज्ञ, (३) देवताक पूजा अग्नि होम ब्रह्मयज्ञ, (४) वलि वैश्वदेव करव भूतयज्ञ, (५) अतिथि सत्कार मनुष्य यज्ञ थिक।

मौन

पुरीषे मैथुने होमे प्रस्रवे दन्तधावने।
स्नान भोजन जाप्येषु सदा मौनं समाचरेत्।।

अर्थ- मल, मूत्र, मैथुन, होम, लघुशंका, दन्तधावन, स्नान, भोजन एवं जप करक समय मौन रहबाक चाही।

विविधः-आषाढ़े शकुनविचारः-आषाढ़कृष्णाष्टम्यां चन्द्रोदये मेघे वृष्टिरुत्तमा सुभिक्षं चान्यथा दुर्भिक्षं,तथैव कृष्णनवम्यां मेघे विद्युति सत्यां सुवृष्टिः। आषाढ़शुक्लद्वितीयायाम् नवम्याञ्च शुभग्रहवारो वृष्टिकारकः समर्घकारकश्च। पूर्णिमायामाषाढे पूर्वाषाढ़े सति सुभिक्षं, प्रजापीडा च उत्तराषाढे। आषाढ़शुक्लद्वितीयायां जगन्नाथ रथयात्रा- तद्दिने रथस्थरागावलोकिनो नैव विपद्यते। पूर्णिमायां वायुपरीक्षणम्- तत्र पूर्वपश्चिमवायुकोणोत्तरैशानवायौ धान्यः उत्पत्तिः। सुवृष्टिः प्रजासुखञ्च जायते, तदितरवायौ भीतिः दुर्भिक्षादिकञ्चेति। आर्द्रानक्षत्रस्थेसूर्येपायसभोजनमहत्वम्- आर्द्रायाः प्रथमेपादे क्षीरमश्नाति यो नरः। अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति। क्षीरम् अत्र पायसम् इति।

आषाढ़ शुक्लपक्षे रविवासरे करमूले पुलिकमूलबन्धन मन्त्रः-शुचिसितदिन करवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्य। एवं कृते सर्पभयं न जायते। चातुर्मास्य व्यतीते तु मुक्तिस्तस्य कराद् भवेत् इत्यनेन कार्तिकशुक्ल द्वादश्यां तस्य करान्मुक्तिः।

इष्टकालराश्यंशतले घटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतञ्च **प्रथम लग्नसारणी** यद्राशिभागस्य तले स्थितं सर्वत्तदेव लग्नं च कलानुपातात्।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
३	४७	५४	०१	०८	१६	२३	३०	३७	४६	५४	०३	११	१९	२८	३६	४४	५२	०४	१०	१८	२६	३५	४३	५१	००	०८	१६	२५	३३	४२
३८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	२२	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	०४
वृष	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
४	५०	५८	०७	१५	२३	३२	४०	४९	५८	०६	१६	२६	३६	४६	५६	०६	१८	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	२१	३१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
५	४१	५१	०१	११	२१	३१	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४९	००	१२	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४३	५४	०६	१७	२९	४०	५२	०३
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	०२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	०४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	०६	३२
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
५	१४	२५	३७	४९	००	१२	२३	३५	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५	०७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३७	४१
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	०६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	०४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
५	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	०७	१८	२९	४०	५२	०३	१४	२५	३७	४७	५१	११	२२	३३	४४	५६	०७	१८	२९
४७	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	१६	३२	४५	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
५	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	५६	०७	१८	३०	४१	५२	०३	१५	२६	३७	५९	००	११	२२	३४	४५	५६	०७
३८	८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	४२	०४	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
५	१९	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४०	५२
३८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	४८	३२	०६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	०४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
५	०४	१५	२७	३८	५०	०१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२७	३९	५०	०२	१३	२५	३६
४७	०२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	२६	५२	१८	२४	१०	३६	०२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	०४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	०६	३२
धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	१९	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३८	४९	५९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०९	१९	३०	४०	५०
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
५	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	१९	२७	३६	४४	५२	०१	०९	१७	२६	३४	४३	५१	५९	०८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	०६	१५
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२२	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	०४
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
४	२३	३१	४०	४८	५६	०५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	०५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	०३	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	०१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	१६	३२	४८	०४	४०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	५८	४०	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	१	१	२	०२	२	२	२	२
३	०९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	००	०७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	०५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	०३	१०	१८	२५	३२	३९
३८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२

लग्नसारणीदेखने की रीति

जिस समय लग्न सारणी से लग्न देखने की आवश्यकता हो तो उस समय का इष्ट काल बना कर उसमें उस दिन का सूर्य स्पष्ट लिखा होता है। सूर्य स्पष्ट जितने राशि पर जितने अंश पर हो उसको लग्न सारणी में देखे कि उस राशि के सामने और उतने अंशो कोष्टक के नीचे जो घटी पल हो उसमें अपने इष्टकाल के घटी पल जोड़ दें वो लग्न के घटी पल बन जायेंगे तो यह घटी पल लग्न सारणी में जिस राशि के सामने और जितने कोष्ट के नीचे मिलेंगे। वही लग्न राशि अंशादि होंगे। यथा– इष्टकाल १४।२३ है और स्पष्टसूर्य उस दिन ६।२६।१०।५४ है। लग्न सारणी में ६राशि के सामने और २६ अंश के नीचे ३९।०६ है। अब ३९।०६को इष्टकाल के १४।२३ जोड़ दिया तो ५३।२९ घट्यादि हुए इनको लग्न सारणी में देखा तो ९राशि १८ अंश के नीचे ५३।३४ लिखा हुआ है अर्थात् ९।१८।५३।३४ लग्न स्पष्ट हुआ।

नतसाधनानपेक्षिता–दशमलग्नानयनसारिणीयम् **दशम लग्नसारणी** विलग्नलग्नांशसमानकोष्ठाद्यः फलं तद्दशमं निरुक्तम्

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
२७८	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृष	८	८	८	८	९	९	९	०९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
२९९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५८	०९	२०	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६	०७	१८	२९	४०	५०	०१	१२	२३	३३
	१४	१२	३०	००	०६	०४	०२	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	६	५२
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
३२३	४४	५५	०६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	०४	१५	२६	३६	४७	५८	०९	१९	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६
	३८	२४	१०	५६	४२	४८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
३२३	७	१८	२९	३९	५०	०१	१२	२३	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
२९९	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	०८	१७	२६	३६	४५	५४	०३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	०८	१८	२८	३६	४५
	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	१४	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	३०	३६	५२
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
२७८	५५	०४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५५	०४	१४	२३	३२	४१	५१	००	०९	१९	२८	३७	४६	५६	०५	१४	२३
	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
२७८	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७
	०८	२४	४०	५६	१२	१८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
२९९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५८	०९	२०	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६	०७	१८	२९	४०	५०	०१	१२	२३	३३
	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
३२३	४४	५५	०६	१६	२७	३८	५१	००	१०	२१	३२	४३	५३	०४	१५	२६	३६	४७	५८	०९	१९	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
३२३	०७	१८	२९	३९	५०	०१	१२	२३	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१२	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
२९९	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	०८	१७	२६	३६	४५	५४	०४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	०८	१८	२७	३६	४५
	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	०	००	१	१	१	१	१	१	०२	२	२	२	०२	२	२	३	३	३
२७८	५५	०४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५५	०४	१४	२३	३२	४१	५१	००	०९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२

ॐ लग्नको घटाकर, राशि में ३०से गुणा कर अंश को जोड़ दे फिर जो आये उसको ६ से भाग देने पर जो लब्धि आये वो अंश होंगे जो शेष बचे उसे पुनः ६०से गुणा करके फिर ६ से भाग दे वो घड़ी होंगे इस तरह क्रमशः जो लब्धि आये वो ही पष्ट्यांशः होगा।

दशम लग्न बनाने की रीति

-जिस समय दशम सारणी से दशम स्पष्ट लग्न करना हो तो सबसे प्रथम लग्न स्पष्ट के राशि अंश से घटी पलों में से घटी पल जितने हो दशम सारणी से उस कोष्टक में देखें कि घटी पल कहां पर है वही दशम लग्न स्पष्ट होगा।

यथा– प्रथम लग्न स्पष्टः४।२६।२७।४०है तो लग्न स्पष्ट के घड़ी पल २७।४०को दशम लग्न सारणी में देखों तो पता चला कि २७।४० १राशि २५अंश पर आया तो यह दशम स्पष्ट हुआ इसमें ६ राशि जोड़न से चतुर्थ लग्न होगा। चतुर्थ लग्न में प्रथम ॐ

वेलान्तर सारणी

मास	जन.	फर	मार्च	अप्रै	मई	जून	जुला	अग	सित	अक्टू	नव	दिस
दिनांक	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
१	-३	-१४	-१२	-४	+३	+२	-३	-६	+०	+१०	+१६	+११
२	-४	-१४	-१२	-४	+३	+२	-४	-६	+०	+१०	+१६	+११
३	-४	-१४	-१२	-४	+३	+२	-४	-६	+०	+११	+१६	+११
४	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+११	+१६	+१०
५	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+११	+१६	+१०
६	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+१२	+१६	+९
७	-६	-१४	-११	-२	+३	+२	-५	-६	+२	+१२	+१६	+९
८	-६	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-६	+२	+१२	+१६	+९
९	-७	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-६	+२	+१२	+१६	+८
१०	-७	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-५	+३	+१३	+१६	+८
११	-८	-१४	-१०	-१	+४	+१	-५	-५	+३	+१३	+१६	+७
१२	-८	-१४	-१०	-१	+४	+१	-५	-५	+३	+१३	+१६	+७
१३	-८	-१४	-१०	-१	+४	+०	-६	-५	+४	+१३	+१६	+६
१४	-९	-१४	-१०	-१	+४	+०	-६	-५	+४	+१४	+१६	+६
१५	-९	-१४	-०९	+०	+४	-०	-६	-५	+४	+१४	+१६	+५
१६	-१०	-१४	-९	+०	+४	-०	-६	-४	+५	+१४	+१६	+५
१७	-१०	-१४	-९	+०	+४	-०	-६	-४	+५	+१४	+१५	+४
१८	-१०	-१४	-९	+०	+४	-१	-६	-४	+५	+१५	+१५	+४
१९	-११	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-४	+६	+१५	+१५	+३
२०	-११	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-४	+६	+१५	+१५	+३
२१	-११	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-३	+७	+१५	+१४	+२
२२	-११	-१४	-७	+१	+४	-१	-६	-३	+७	+१५	+१४	+२
२३	-१२	-१४	-७	+१	+३	-२	-६	-३	+७	+१५	+१४	+१
२४	-१२	-१३	-७	+२	+३	-२	-६	-३	+८	+१६	+१४	+१
२५	-१२	-१३	-६	+२	+३	-२	-६	-२	+७	+१६	+१३	+०
२६	-१२	-१३	-६	+२	+३	-२	-६	-२	+८	+१६	+१३	-०
२७	-१२	-१३	-६	+२	+३	-२	-६	-२	+९	+१६	+१३	-१
२८	-१३	-१३	-५	+२	+३	-३	-६	-२	+९	+१६	+१२	-१
२९	-१३	-१२	-५	+३	+३	-३	-६	-१	+९	+१६	+१२	-२
३०	-१३	०	-५	+३	+३	-३	-६	-१	+१०	+१६	+१२	-२
३१	-१३	०	-५	०	+३	०	-६	-१	०	+१६	०	-३

देशान्तर एवं वेलान्तर संस्कार प्रकारः

सम्पूर्ण भारत में स्टैण्डर्ड समय समान ही है। इसके अनुसार एक ही समय हरेक जगह ५या ७ बजते हैं। परन्तु स्थानीय समय प्रत्येक जगह के भिन्न-भिन्न होते हैं। अतः स्थानीय समय बनाने के लिये वेलान्तर और देशान्तर ये दो संस्कार(जोड़ना या घटाना) करना चाहिए। जैसे १ मार्च को कटिहार के इष्टकाल में १२ मिनट वेलान्तर ऋण एवं २०मिनट ४० सेकेण्ड देशान्तर धन कर देंगे तो देवघर का स्थानीय समय हो जायेगा।

देशान्तर साधन- १.(८२।३०-इष्टस्थान का रेखांश)४= इष्टस्थानिक मिनटात्मक रेखांश ऋण। यथा-दिल्ली-रेखांश ७७।१८।(८२।३०-७७।१८= ५।१२)४ =२०।४८ दिल्ली का रेखांश ऋण।

२. (इष्टस्थान का रेखांश –८२।३०)४= इष्टस्थानिक मिनटात्मक रेखांश धन। यथा-पटना-रेखांश८५।१३। (८५।१३-८२।३०= २।४३)४ =१०।५२ पटना का रेखांश धन।

डॉ.बाबूलाल मिश्रः द्वाराप्राप्त-श्लोकाः

सन्ध्या दानं जपश्चैव देवतानां च पूजनम्।
वैश्वदेवं तथातिथ्यं षट्कर्माणि दिने दिने॥

•••••

दैवाधीनं जगत् सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः।
ते मन्त्राः ब्राह्मणाधीनाः तस्माद् ब्राह्मणदेवताः॥

•••••

शान्ताः सन्तः सुशीलाश्च सर्वभूतहिते रताः।
क्रोधं कर्तुं न जानन्ति एतद्ब्राह्मणलक्षणम्॥

•••••

पाठकाः पाठकाश्चैव ये चान्ये शास्त्रचिन्तकाः।
सर्वे व्यसनिनो मूर्खाः यः क्रियावान् स पण्डितः॥

नक्षत्र मेलापक चक्रम् पार्श्वे कन्यानक्षत्राणि उपरि वरनक्षत्राणि

नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृति.१	कृति.३	रो.	मृग.२	मृग.२	आर्द्रा	पुन.३	पुन.१	पुष्य	श्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.१	उ.फा.३	हस्त	चित्रा २	चित्रा २	स्वाति	विशा.३	विशा.१	अनुराधा	ज्ये.	मूल	पू.षा.	पू.षा.३	उ.षा.१	उ.षा.३	श्रव.१	श्रव.२	धनि.२	धनि.२	शत.	पू.भा.३	पू.भा.१	उ.भा.	रेव
अश्वि.	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१८	२२॥	३१॥	२७	२०॥	२६	१७॥	११	०६	१३	२२॥	२६।	२२।	१६॥	२६॥	१५	१३	२६	२७	२४॥	२६	२६	२४	२१	२१	१५	१६	१४॥	२४॥	२६
भरणी	३४	२८	२६	१६	२२।	१४॥	१७	२६	२६	३०॥	२३॥	२४॥	२१	१६	२८	२१॥	१६	०६	१४॥	२६।	२२।	१६॥	१७॥	१६॥	२०	१६	२०	२७	२८।	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२॥	१६॥	२८
कृति.१	२७॥	२७॥	२८	१६॥	०६	१५॥	१६	२०	२१	२५॥	२६॥	२३॥	१७॥	२१	२२	१५॥	१५॥	१८॥	२७॥	१५॥	१६।	१६॥	२०॥	२६॥	२४॥	१८	१६	१४	१५॥	११॥	१०॥	२५	२५	२७	१६॥	१७॥	१६॥	११॥
कृति.३	१८॥	१८॥	१६	२८	१६	२५॥	१६॥	१७।	१८॥	२२	२३	२०	१६॥	२३	२४	२१	२१	२३॥	२२॥	१०॥	१४।	२१॥	२५॥	३१॥	२०	१२॥	१३॥	०६॥	१४	११	१०	२२॥	२६॥	३१	२३॥	२०	२२	१४
रोहिणी	२३॥	२३॥	१०	१६	२८	३६	२७	२३।	२३॥	२७	२८	१२	१२॥	२६॥	२८	२५	२६	२०	१६	१५॥	०६।	१६॥	३०॥	२४॥	१४	१६	२०	१२॥	१७	१६	१८	२०	२६	२४॥	३०॥	२७	२६	१६
मृग.२	२३॥	१३॥	१८॥	२८॥	३४	२८	२०	२५	२३॥	२६	२०	२२	२१॥	१७॥	२५॥	२३॥	२७	१३	१२	२५	१७।	२३॥	२२॥	२५॥	१५	१२	११	१८	२१॥	२४॥	२४।	१३	१६	२७	२६॥	२६	१७	२७
मृग-२	२७	१८	२१	१८॥	२५।	२०	२८	३३	३१॥	१६॥	१३	१५॥	२४	२०॥	२८॥	३०॥	३४	२१	१४	२७	१६।	१४	११	१३	२३	१६	१८	२४	२०॥	२५	२५	१२	१३	२१	२३॥	२७॥	१७	२७
आर्द्रा	१६	२७	२१	१८॥	२४।	२६	३४	२८	२५	१३	२०॥	१३॥	२३॥	२६॥	२२॥	२४॥	२४॥	२७	२०	२७	२०	१३॥	१७	०४	१६	२८	२७	२७	२२।	२२॥	२२।	१७	१८	११	१६	१६	२७	२७
पुन-३	१६	२६	२२	१६॥	२३।	२४॥	३२।	२४	२८	१६	२३	१६॥	२२॥	२७॥	२१॥	२३॥	२४॥	२५॥	१८॥	२७	२१	१३॥	२०॥	०५	१३	२७	२६	२७	२२।	२२॥	२३।	१७॥	१८॥	११	१७	१६॥	२७॥	२८
पुन-१	२१॥	२८॥	२५॥	२०	२४	२५	१६	१०।	१४॥	२८	३५	२८॥	१५॥	२०	१४॥	१७	१८	२०॥	२०	२७	२०	१६	२६	१०॥	०८	२१	२१।	२१॥	२६।	२५	२७	२१	१२॥	०७॥	११	१७	२५	२५॥
पुष्य	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२४	१७	१०	१८	२१॥	३५	२८	३०	१८॥	१४॥	२३॥	२६	२७	१२	११॥	२६	२१	२०	१६	२२	१७	११	११॥	२२॥	२६	२४	२५	१३	०४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७
श्लेषा	२५	२३॥	२२॥	१६	१२	२१	१३	१२	१५	२८॥	८	२८	१५	१५॥	१७॥	२०॥	२०	२६	२५॥	११॥	१६।	१५॥	२०	२६	२२॥	१६	१६।	०८॥	१२	१३	१३	२७	१८॥	१८॥	१२॥	१८॥	२०	१२
मघा	२१	२१	१७॥	१८॥	११॥	१६॥	२२।	२२।	२१॥	१६॥	१८॥	१६	२८	३०	२६॥	१६॥	१६॥	२२॥	२५॥	११॥	१७।	२४॥	२६॥	३४	२४	२०	२१	११॥	०५।	०५॥	०४।	१८॥	२४॥	२५॥	१८॥	१८॥	१८॥	१२
पू.फा.	२७	१६	२१	२२	२५।	१७॥	२०।	२८।	२७।	२२॥	१६॥	१६॥	३०	२८	३४	२४	२२॥	०८॥	११॥	२५।	१६।	२६।	२४॥	२४॥	१६	१६	१६	२७	२१	१६॥	१८॥	०४॥	११॥	१६॥	२४॥	२३॥	१६॥	२४॥
उ.फा.१	१८॥	२७	२२	२३	२७	२५॥	२८।	२१।	२१॥	१६॥	२५॥	१८॥	२६॥	३४	२८	१८	१६॥	१४॥	१७॥	२६।	१७।	२४॥	३०॥	१६॥	१०॥	२६	२७	२८	२२	२१	२०	११॥	१८॥	१२॥	१६॥	१५॥	२६॥	२४॥
उ.फा.३	१३	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	३०।	२२।	२३॥	१६॥	२८॥	२१॥	१७॥	२५	१६	२८	२५॥	२४॥	१६॥	२५।	१६।	१८	२७	१३	१५॥	२६।	२८।	२६॥	२६	२५	२५	१६॥	१६॥	१०॥	१४॥	१८	२६॥	२७
हस्त	१०	२०	१६॥	२१	२६	२६	३३	२२।	२२॥	१६॥	२८॥	२१॥	१७॥	२२॥	१७	२६	२८	२७	१६	२६।	१७।	१६॥	२६	१२	१४	२७	२६	२७॥	२३	२४	२४	१६	१६	०८॥	१४॥	१६।	२७॥	२७
चित्रा२	१३	०६	१६	२५॥	२०	१२	१६	२६	२४॥	२०॥	१२॥	२६॥	२३॥	०६॥	१५॥	२४॥	२७	२८	२०	१६	२६।	२८	११	२५	२८	१४	१३	२१	१७॥	१६	१६	१८	१८	२४	१८॥	२२।	११	२१
चित्रा२	२२॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	२०	१८॥	२०	१२	२६	२५॥	१०॥	१७॥	१७॥	२०	२१	२८	२७	३४।	२४॥	०७॥	२१॥	२८	१४	१३	२१	२५॥	२७	२७	२६	२०	२६	२०॥	१५।	०४	१२
स्वाती	२७॥	२६॥	१७॥	१२॥	१६॥	२७	२७	२६	२६।	२८	२८	१५॥	१३॥	२५॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१	२८	२८	२०	१०	२३॥	१८॥	२३	२७	२६	१८	२२।	२३॥	२३॥	२७	२१	२०	२५	१६॥	२०	१३
विशा३	२२॥	२२॥	२०॥	१५॥	१०॥	१८॥	१६॥	२१	२१	२२॥	२१॥	१६॥	१७॥	१६॥	१८॥	१७॥	१८॥	२७॥	३४॥	१८	२८	१८	१७	२०॥	२८	२२	२१	१३	१७॥	१७॥	१७॥	३२॥	२६	२६	२२	१६॥	१३॥	०५
विशा१	१६॥	१६॥	१४॥	१६॥	१४॥	२२॥	१३	१४।	१४॥	६	१८	१५॥	२१॥	२३॥	२१॥	१८	१६	२८	२३॥	०८	१७	२८	२७	३१॥	२३॥	१६॥	१६।	०६॥	१२	१२	१२	२७	२७	२६॥	२२॥	२१	१८	०६॥
अनुरा	२४॥	१४॥	१६॥	२४॥	२७।	२०॥	११	१६	२१॥	२६॥	१८	२१	२४॥	२०॥	२६॥	२६	२७	१२	०७॥	२२।	१७	२८	२८	३१	१६॥	१४॥	१४।	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४॥	२४	१८	२७
ज्येष्ठा	१२	१८॥	२४॥	२६॥	२२।	२२॥	१३	०३	०६	१०॥	२०	२६	३१॥	२३॥	१६॥	१३	१२	२५	२०॥	२६।	२०।	३१॥	३०	२८	१५	१७॥	१७।	१७॥	२०	२०	२०	२६	२५	१८	११	०६	२१	२१
मूल	१२	२०	२४॥	१६	१३	१४	२१	१५	१२	०८॥	१७॥	२४	२५	१६	०६॥	१३	१३	२७	२७	२१	२७	२४॥	१६॥	१६	२८	१७	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१५॥	२१॥	२८।	२१॥	१६॥	१६॥	२५॥	२७॥
पू.षा.१	२६	१८	१८	१२॥	१६	११	१६	२७	२७	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१६	२५	२८।	२७	१२	१२	२७	२०	१६॥	१८॥	१७॥	२८	१७	२७	३३	२३	२३॥	२३।	०८॥	१६॥	२३॥	३१॥	३२॥	२३॥	३२
पू.षा.३	२७	२०	१६	१३॥	२०	१२	१८	२६	२६	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१६	२७	२७	२६	११	११	२६	१६	१८॥	१८॥	१६॥	२७	१८	२८	३४	२४	२४॥	२३।	०८॥	१५॥	२२॥	२६॥	३२॥	२३॥	३२॥
उ.षा-१	२५॥	२७	१४	०८॥	११॥	१८	२४	२६	२६	२३॥	२४॥	०६॥	११॥	२७	२८	२८।	२७॥	२०	२०	१६	१२	११॥	२५॥	१६॥	२५॥	३३	३४	२८	१८	१६	१५	१५॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३२॥	२३॥
उ.षा-३	२८	२६॥	१६॥	१४	१७	२२॥	२०।	२२।	२२।	२७	२८॥	१३	०६॥	२२	२३	२६	२५	१७॥	२४॥	२३।	१६।	१४	२८	२२	१६॥	२६	२५	१६	२८	२६	२५	२५॥	१७॥	१७॥	३३॥	३०॥	३२॥	२३॥
श्रवण१	२८	२७	१४॥	१२	१८	२७	२४	२१।	२१॥	२७	२५	१५	०५॥	१६॥	२०	२४	२५	१६	२६	२३।	१६।	१४	२८	२३	१७॥	२३॥	२४।	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८॥	२३॥	३१॥	३०॥	२२॥
श्रवण२	२७	२६	१३॥	१०	१७	२६	२३।	२१	२३।	२८	२६	१५	०६॥	१८॥	२०॥	२३॥	२४॥	१८॥	२५॥	२३	१६	१४	२८	२२	१६	२३	२५।	१५	२४	२७	२८	३०	२०॥	१८	२३	३६॥	३१॥	२४॥
धनि.२	२०॥	१०॥	२६	२३॥	२०	१२	०८	१७।	१७॥	२२	१३	२८	१८॥	०५॥	१२॥	१६	१८	१६॥	२३	२६	३०	२८	१४	२६	२१	०६	०६।	१६॥	२५॥	२८	२८	२८	१८॥	२३॥	२१	२६॥	१५॥	२२॥
धनि.२	२०	११	२६	३०॥	२७।	१६	१०	२०	१६	१४	०५	२०	२५॥	११॥	१६॥	१७॥	२१	१८	१६	२२	२५।	२७	१२	२६	२६॥	१७॥	१६।	२३॥	१८॥	२१	२१	२१	२८	३३	२८॥	१८	०७	१४॥
शतभि.	१५	२१	२८	३२॥	२५।	२५	१८	१०	१०	०७॥	१५	२०	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	०८॥	२६	२६	१६	२६	२६॥	२१	१६	२२॥	२४॥	२३।	२३॥	१८॥	१८॥	१८॥	२५	३३	२८	१६	०६।	१७	१६॥
पू.भा-३	१८	२५	२०	२४॥	३१।	३१॥	२४।	१७	१७	१३॥	२०॥	१४	१६॥	२५॥	१७॥	१५॥	१७॥	१८॥	१६॥	२८	२१	२१॥	२७॥	१२	१५॥	३१॥	३०।	२६॥	२४	२५॥	२५॥	२०॥	२७॥	१६	२८	१८॥	२३॥	२०॥
पू.भा-१	१४॥	२१॥	१६॥	१६	२६	२६	२५।	१८	१८	१८	२५	१८॥	१६॥	२२॥	१४॥	१६॥	१८॥	१६॥	१२॥	१६	१४	२१	२७	११॥	१५	३१	३१॥	३०॥	२८॥	२६॥	३०॥	२५॥	१७	०७॥	१६॥	२८	२३	३०॥
उ.भा.	२४॥	१५॥	१८॥	२१	२५	१७	१६।	२५।	२७	२६	१६	२०	१७॥	१५॥	२५॥	२७।	२६	०६॥	०५	१६॥	१२	१६	२०	२२	२४	२२	२२।	३१॥	२६॥	२८॥	२६॥	१४॥	०६	१६॥	२१॥	३३	२८	३५
रेवती	२५	२४॥	११॥	१४	१७	२६	२५।	२४।	२५।	२४॥	२७॥	१३	१२	२२	२२॥	२४॥	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	०५।	१२॥	२७	२२	२७	३०॥	३०	२१	१६	२०॥	२२॥	२२॥	१४	१६	१८	२६॥	३३	२८

अक्षांस-रेखांश एवं देशान्तरसारणी

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से
आरा	२५ ।३४	८४ ।३२	+ ०८ ।०८
औरंगाबाद	२४ ।४५	८४ ।२५	+ ०७ ।४०
कटिहार	२५ ।३०	८७ ।४०	+ २० ।४०
कमतौल	२६ ।२०	८५ ।५०	+ १३ ।२०
कहलगाँव	२५ ।१६	८७ ।१७	+ १६ ।०८
क्वाथ	२५ ।२०	८४ ।१६	+ ०७ ।०४
खगड़िया	२५ ।३१	८६ ।२७	+ १५ ।४८
गया	२४ ।४६	८५ ।०१	+ १० ।०४
गोगरी	२५ ।२८	८६ ।३८	+ १६ ।३२
गोपालगंज	२६ ।२८	८४ ।२६	+ ०७ ।४४
छपरा	२५ ।४७	८४ ।४७	+ ०६ ।०८
जमालपुर	२५ ।१६	८६ ।३२	+ १६ ।०८
जयनगर	२६ ।३६	८६ ।०८	+ १४ ।३२
जहानाबाद	२५ ।१३	८४ ।५९	+ ०६ ।५६
जोगबनी	२६ ।२३	८७ ।१६	+ १६ ।०४
झञ्झारपुर	२६ ।१६	८६ ।१७	+ १५ ।०८
टेकारी	२५ ।४०	८५ ।१२	+ १० ।४८
डुमराँव	२५ ।३३	८४ ।१२	+ ०६ ।४८
दरभंगा	२६ ।१०	८५ ।५४	+ १३ ।३६
दानापुर	२५ ।३८	८५ ।०५	+ १० ।२०
देहरी	२४ ।५३	८४ ।१४	+ ०६ ।५६
धंगाइन	२५ ।१४	८४ ।१३	+ ०६ ।५२
दुमका	२४ ।३०	८७ ।२०	+ १६ ।२०
नवादा	२४ ।५३	८५ ।३५	+ १२ ।२०
नालन्दा	२५ ।०७	८५ ।२५	+ ११ ।४०
नौगछिया	२५ ।२४	८७ ।०६	+ १८ ।२४
पुपरी	२६ ।२८	८५ ।४२	+ १२ ।४८
पटना	२५ ।३७	८५ ।१३	+ १० ।५२
पारसनाथ	२४ ।००	८६ ।११	+ १४ ।४४
पूर्णिया	२५ ।४६	८७ ।३१	+ २० ।०४
फार्बेसगंज	२६ ।१८	८७ ।१६	+ १६ ।०४
बगहा	२७ ।०८	८४ ।०४	+०६ ।१६
बक्सर	२५ ।३४	८४ ।०१	+ ०६ ।०४
बरौनी	२५ ।२८	८५ ।५६	+ १३ ।५६
बहेड़ी	२५ ।५७	८६ ।०३	+ १४ ।१२
बाँकीपुर	२५ ।३६	८५ ।०७	+ १० ।२८
बाढ़	२५ ।२	८५ ।४३	+ १२ ।५२

देशान्तर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि से
विरौलसुपौल	२५ ।५७	८६ ।१५	+ १५ ।००
बेगूसराय	२५ ।२५	८६ ।०८	+ १४ ।३२
बोधगया	२४ ।४१	८५ ।०८	+ १० ।०८
बेनीपट्टी	२६ ।२७	८५ ।५४	+ १३ ।३६
बेतिया	२६ ।४८	८४ ।३३	+ ०८ ।१२
भागलपुर	२५ ।१५	८७ ।०२	+ १८ ।०८
मधुबनी	२६ ।२१	८६ ।०७	+ १४ ।२८
मधेपुर	२६ ।११	८६ ।२३	+ १५ ।३२
मधेपुरा	२५ ।५७	८६ ।५१	+ १४ ।२४
मुँगेर	२५ ।२४	८६ ।५६	+ १७ ।५६
मुजफ्फरपुर	२६ ।०७	८५ ।२७	+ ११ ।४८
मोकामा	२५ ।२४	८५ ।५५	+ १३ ।४०
मोतिहारी	२६ ।४०	८४ ।५५	+ ०६ ।४०
रक्सौल	२६ ।५८	८४ ।५८	+ ०६ ।५२
राजगीर	२५ ।०१	८५ ।२६	+ ११ ।४४
रोसड़ा	२५ ।४५	८६ ।०२	+ १४ ।०८
लालगंज	२५ ।५२	८६ ।१०	+ १४ ।४०
लौकहा	२६ ।३३	८६ ।२८	+ १५ ।५२
शेखपुरा	२५ ।०६	८५ ।५३	+ १३ ।३२
समस्तीपुर	२५ ।५५	८५ ।५०	+ १३ ।२०
सहर्षा	२५ ।५४	८६ ।३६	+ १६ ।२४
सासाराम	२४ ।५७	८४ ।०३	+ ०६ ।१२
सिमरियाघाट	२५ ।२५	८६ ।००	+ १४ ।००
सीतामढ़ी	२६ ।३४	८५ ।३०	+ १२ ।००
सीवान	२६ ।०२	८४ ।००	+ ०६ ।००
सुगौली	२६ ।४७	८४ ।४८	+ ०६ ।१२
सोनपुर	२५ ।४०	८५ ।०२	+ १० ।०८
हाजीपुर	२५ ।४१	८५ ।४	+ १० ।१७
गढ़वा	२४ ।१०	८३ ।५२	+ ०५ ।२८
गिरिडिह	२४ ।१०	८६ ।२१	+ १५ ।२४
गोविन्दपुर	२३ ।५१	८६ ।३४	+ १६ ।१६
घाटशिला	२२ ।३५	८६ ।२८	+ १५ ।५२
चतरा	२४ ।१२	८४ ।५६	+ ०६ ।४४
चायबासा	२२ ।३३	८५ ।५+	+ १३ ।२४
जमशेदपुर	२२ ।४८	८६ ।११	+ १४ ।४४
झरिया	२३ ।५०	८६ ।३३	+ १६ ।१२
डाल्टेनगंज	२४ ।०२	८४ ।०४	+ ०६ ।१६
डोरण्डा	२३ ।२२	८५ ।२२	+ ११ ।२८

झारखण्ड

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से.
तिलैया	२४ ।२०	८५ ।३१	+ १५ ।[illegible]
देवघर	२४ ।२६	८६ ।४३	+ १६ ।५२
धनबाद	२३ ।४७	८६ ।३०	+ १६ ।००
पकौर	२४ ।३८	८७ ।५४	+ २१ ।३६
पलामू	२३ ।५२	८४ ।१७	+ ०७ ।०८
पालकोट	२२ ।५२	८४ ।४१	+ ०८ ।४४
पोराहाट	२२ ।३६	८५ ।२८	+ ११ ।५२
बरवा	२३ ।१०	८४ ।१६	+ ०७ ।०४
वसिया	२२ ।५२	८४ ।५३	+ ०६ ।३२
बोकारो	२३ ।५१	८६ ।०२	+ १४ ।०८
मधुपुर	२४ ।१८	८६ ।३७	+ १६ ।२८
मानखेरी	२३ ।४०	८४ ।३३	+ ०८ ।१२
मेस्सनजोर	२४ ।०५	८७ ।२१	+ १६ ।२४
मैथन	२३ ।५४	८६ ।५४	+ १७ ।३६
राँची	२३ ।२३	८५ ।२३	+ ११ ।३२
राजमहल	२५ ।०३	८७ ।५३	+ २१ ।३२
रामगढ़	२३ ।३८	८५ ।३४	+ १२ ।१६
लोहरदग्गा	२३ ।२६	८४ ।४२	+ ०८ ।४८
सरायकेला	२२ ।४२	८५ ।५८	+ १३ ।५२
सारण्डा	२२ ।१६	८५ ।१५	+ ११ ।००
साहबगंज	२५ ।१३	८७ ।४०	+ २० ।४०
सिन्दरी	२३ ।३६	८६ ।३१	+ १६ ।०४
हजारीबाग	२३ ।५६	८५ ।२५	+ ११ ।४०

उत्तर प्रदेश

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.से.
अयोध्या	२६ ।४७	८१ ।१२	- ५ ।१२
आगरा	२७ ।६	७८ ।००	- १८ ।००
आजमगढ़	२६ ।०३	८३ ।१०	+ २ ।४०
इटावा	२६ ।४६	७९ ।०२	- १३ ।५२
इलाहाबाद	२५ ।५७	८१ ।५०	- ०२ ।४०
कानपुर	२६ ।२८	८० ।४१	- ०७ ।१६
काशी	२५ ।१८	८३ ।००	+ २ ।००
गाजियाबाद	२८ ।४०	७७ ।२६	- २० ।१६
गाजीपुर	२५ ।३४	८३ ।३६	+ ०४ ।२४
गोरखपुर	२६ ।४५	८३ ।२३	+ ०३ ।३२
चित्रकूट	२५ ।१३	८० ।४८	- ०६ ।४८
जौनपुर	२५ ।४४	८२ ।४१	+ ०० ।४४
झाँसी	२५ ।२७	७८ ।३४	- १५ ।४४
देवरिया	२६ ।३१	८३ ।४८	+ ०५ ।१२
प्रतापगढ़	२५ ।५२	८२ ।०२	- ०१ ।५२

देशान्तर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.स
[illegible]	[illegible]	७६ ।२४	- १२ ।२४
बलिया	[illegible]	[illegible]	- ०६ ।३६
बस्ती	[illegible]	[illegible]	[illegible]
बाँदा	२५ ।[illegible]	[illegible]	[illegible]
मथुरा	२७ ।२८	७७ ।१०	- १८ ।[illegible]
लखनऊ	२६ ।५०	८० ।५४	- ०६ ।२४
वृन्दावन	२७ ।३३	७७ ।४४	- १६ ।२०
सहारनपुर	२९ ।५८	७७ ।३३	- १९ ।४८
सुल्तानपुर	२६ ।१५	८२ ।०४	- ०१ ।४४

मध्य प्रदेश

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.स
इटारसी	२२ ।३०	७७ ।५५	- १८ ।२०
उज्जैन	२३ ।०६	७५ ।४३	- २७ ।०८
कटनी	२३ ।४७	८० ।२७	- ८ ।१२
ग्वालियर	२६ ।१४	७८ ।१०	- १७ ।२०
नीमच	२४ ।२७	७४ ।५२	- ३० ।३२
भोपाल	२३ ।१६	७७ ।३६	- १६ ।३६
रीवा	२४ ।३१	८१ ।१६	- ०४ ।४४
विदिशा	२३ ।३२	७७ ।५१	- १८ ।३६
सतना	२४ ।३४	८० ।५५	- ०६ ।२०

अन्य स्थान

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.स
अकोला	२० ।३२	७७ ।०५	-२१ ।४०
अजमेर	२६ ।२२	७४ ।४०	-३१ ।२०
आन्ध्रप्रदेश	१६ ।००	८० ।००	-१० ।००
अम्बाला	३० ।२०	७६ ।५५	-२२ ।२०
अहमदाबाद	२३ ।०२	७२ ।३६	-३८ ।३६
अमृतसर	३१ ।३८	७४ ।५३	-३० ।२८
आसनसोल	२३ ।४२	८६ ।५८	+१७ ।५२
उड़ीसा	२१ ।१७	८५ ।३०	+१२ ।००
ऋषिकेश	३० ।०७	७८ ।१६	- १६ ।५६
केदारनाथ	३० ।४४	७९ ।०३	- १३ ।४८
कर्नाटक	१२ ।००	७६ ।००	-१४ ।००
कोचीन	९ ।५८	७६ ।१५	-२५ ।००
कॉचीपुरम	१२ ।५०	७९ ।४२	-११ ।१२
कोटा	२५ ।१०	७५ ।५२	-२६ ।३२
कोयम्बटुर	११ ।००	७६ ।५६	-२२ ।१६
कटक	२० ।२६	८५ ।५२	-६ ।२८
केरल	१० ।००	७६ ।२५	-२४ ।२०
कलकता	२२ ।३२	८८ ।३०	+२० ।००
कश्मीर	३४ ।३०	७६ ।३०	-२४ ।००
गोत्री	३० ।५६	७९ ।०२	-१३५२

स्थान	अक्षांश	रेखांश	दि. मि.स
गढ़वाल	३० ।१३	७९ ।३०	-१२ ।००
गुजरात	[illegible]	७२ ।३०	-४० ।००
गोहाटी	२६ ।१०	[illegible]	+३० ।००
चण्डीगढ़	३० ।[illegible]	[illegible]	-२२ ।२४
जालन्धर	३१ ।२०	७५ ।३४	-२७ ।४४
जम्मू	३२ ।४३	७४ ।५२	-३० ।३२
तंजोर	१० ।४७	७९ ।०८	[illegible]
तिरुचिरापल्ली	१० ।५०	७८ ।४२	-१५ ।१२
तिरुपति	१३ ।४०	७९ ।२०	-१२ ।४०
तिरुवनन्तपुरम	०८ ।३१	७७ ।००	-२२ ।००
दार्जिलिंग	२७ ।०३	८८ ।१८	+२३ ।१२
दिल्ली	२८ ।३५	७७ ।१८	-२० ।४८
द्वारका	२२ ।१४	६८ ।५८	-५४ ।०८
नागपुर	२१ ।०४	७९ ।१३	-१३ ।०८
नासिक	२० ।००	७३ ।५०	-३४ ।४०
देहरादून	३० ।१९	७८ ।०३	-१७ ।४८
नैनीताल	२९ ।२३	७९ ।२७	-१२ ।१२
पटियाला	३० ।०१	७६ ।२८	-२४ ।०८
पानीपत	२९ ।२०	७७ ।०६	-२१ ।३६
पूणे	१८ ।३१	७३ ।५३	-३४ ।२८
पुरी	१९ ।४८	८५ ।५०	+१३ ।२०
बीकानेर	२८ ।०२	७३ ।२२	-३६ ।३२
बंगलूर	१२ ।५८	७७ ।३६	-१६ ।३६
भुवनेश्वर	२० ।१५	८५ ।५०	+१३ ।२०
मुम्बई	१९ ।००	७२ ।५५	-३८ ।२०
रामेश्वरम	०९ ।१८	७९ ।१८	-१२ ।४८
रुद्रप्रयाग	३० ।१६	७८ ।५९	-१४ ।०४
हरिद्वार	२९ ।५८	७८ ।०९	-१० ।२४
हलद्वानी	२९ ।१३	७९ ।३१	-११ ।५६
लुधियाना	३० ।५५	७५ ।५१	-२६ ।३६
वडोदरा	२२ ।१८	७३ ।१३	-३७ ।०८
शिमला	३१ ।०१	७७ ।१५	-२१ ।००
श्रीनगर	३४ ।०६	७४ ।४८	- ३० ।४८
सूरत	२१ ।१०	७२ ।५९	-३८ ।३६
होशियारपुर	३१ ।३२	७५ ।५७	-२६ ।१२
हावड़ा	२२ ।३६	८८ ।१९	+२५ ।१६
हैदराबाद	१७ ।२६	७८:२७	-१६ ।१२

शतपदचक्रम्

नक्षत्र वर्णाः	चु.चे.चो.ला.	ली.लू.ले.लो.	अ.ई.उ.ए.	ओ.वा.वी.वू	वे.वो.का.की	कू.घ.ङ.छा	के.को.हा.ही.	हू.हे.हो.डा.	डी.डू.डे.डो.	मा.मी.मू.मे.	मो.टा.टी.टू.	टे.टो.पा.पी.	पू.ष.ण.ठ.	पे.पो.रा.री.	रु.रे.रो.ता.	ती.तू.ते.तो.	न.नी.नू.ने.	नो.या.यी.यू.	ये.यो.भा.भी	भू.धा.फा.ढा.	भे.भो.जा.जी.	खी.खू.खे.खो.	गा.गी.गू.गे.	गो.सा.सी.सू.	से.सो.द.दी.	दु.थ.झ.ञ.	दे.दो.चा.ची.
नक्षत्रम्	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
राशिः	मेष	मेष	मेष-१ वृष-३	वृष	वृष-२ मिथुन-२	मिथुन	मिथुन-३ कर्क-१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह-१ कन्या-३	कन्या	कन्या-२ तुला-२	तुला	तुला-३ वृश्चिक-१	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	धनु-१ मकर३	मकर	मकर-२ कुम्भ-२	कुम्भ	कुम्भ-३ मीन-१	मीन	मीन
वर्णः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय-१ वैश्य-३	वैश्य	वैश्य-२ शूद्र-२	शूद्र	शूद्र-३ विप्र-१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय-१ वैश्य-३	वैश्य	वैश्य-२ शूद्र-२	शूद्र	शूद्र-३ विप्र-१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य-२ शूद्र-२	शूद्र	शूद्र-३ विप्र-१	विप्र	विप्र
वश्यः	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद-२ मानव-२	मानव	मानव-३ जल-१	जलचर	जलचर	वनचर	वनचर	वनचर-१ मानव-३	मानव	मानव	मानव-३ कीट-१	कीट	कीट	मानव	मानव।। चतु.३।।	चतुष्पद	चतु.१।। जल.२।।	जलचर-२ मानव-२	मानव	मानव-३ जलचर-१	जलचर	जलचर
युंजा	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	पूर्व
हंसक (तत्त्व)	अग्नि	अग्नि	अ१. भू३	भूमि	भूमि२ वायु२	वायु	वायु३ जल१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अग्नि१ भूमि३	भूमि	भूमि२ वायु२	वायु	वायु३ जल१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अग्नि१ भूमि३	भूमि	भूमि२ वायु२	वायु	वायु३ जल१	जल	जल
योनिः	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
योनिवैरः	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गो	अश्व	गो	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीशः	भौमः	भौमः	भौमः-१ शुक्रः-३	शुक्र	शुक्रः-२ बुधः-२	बुधः	बुधः-३ चन्द्र-१	चन्द्रः	चन्द्रः	सूर्यः	सूर्यः	सूर्यः-१ बुधः-३	बुधः	बुधः-२ शुक्रः-२	शुक्रः	शुक्रः-३ भौमः-१	भौमः	भौमः	गुरुः	गुरुः	गुरुः-१ शनिः-३	शनिः	शनिः	शनिः	शनिः-३ गुरुः-१	गुरुः	गुरुः
गणः	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

१ वर्णस्य गुणाः।। वरस्य

(।। कन्यायाः ।।)

वर्णाः	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
विप्र	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्यगुणाः वरस्य

वश्य	चतु.	मा.	जल	वन	कीट
चतु	२	१	१	०	१
मानव	१	२	।।	०	१
जलचर	१	।।	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

३ तारागुणाः वरस्य

(।। कन्यायाः ।।)

ता	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
२	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
३	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
४	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
५	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
६	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
७	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
८	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
९	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३

५ ग्रहमैत्रीगुणाः वरस्य

ग्रह	सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.
सू.	५	५	५	४	५	०	०
च.	५	५	४	१	४	।।	।।
मं.	५	४	५	।।	५	३	।।
बु.	४	१	।।	५	।।	५	४
बृ.	५	४	५	।।	५	।।	३
शु.	०	।।	३	५	।।	५	५
श.	०	।।	।।	४	३	५	५

७ राशिकूटगुणाः वरस्य

(।। कन्यायाः ।।)

राशयः	१ मे	२ वृ	३ मि	४ क	५ सिं	६ कं	७ तु	८ वृ	९ ध	१० म	११ कुं	१२ मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

४ योनिकूटगुणाः वरस्य

(।। कन्यायाः ।।)

	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	१	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	२	२	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	३	३	३	१	३	०	३	०
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	२	०
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गो	३	२	३	२	२	२	२	४	३	१	२	२	२	३
महिष	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	३
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	२	२	३	१	२	२	२	४

जन्म राशेः सायुररिष्टदवर्षाणि

राशिः	अरिष्टदवर्षाणि	आयु
मेषः	१।१३।५०।६२	७५
वृषः	३।६।८।३३।४६।५२।६३	७५
मिथुनम्	६।१०।११।१८।२४।५३।६३	७५
कर्कः	१।१९।२२।२७।३५।४५।५५।६०	७०
सिंहः	१।१०।१५।२५।४५।५१।६१	६५
कन्या	१।३।१३।२६।३३।४३	६८
तुला	२।४।१६।२१।३३।४१।५१।६१	६५
वृश्चिक	३।७।८।१३।३२।३५।४५।६३	७५
धनुः	३।१०।१२।१६।२३।३६।४७।६७	९५
मकरः	३।१०।२२।३३।४२।५१।५६।६१	१००
कुम्भः	१८।३२	६१
मीनः	१८।३३	६१

जन्म लग्नात् सायुररिष्टदवर्षाणि

राशिः	अरिष्टदवर्षाणि	आयु
मेषः	४।११।१६।४४।५८	१००
वृषः	१।२८।३३।४४	६०
मिथुनम्	१।१०।१४।३८।५८	६४
कर्कः	५।२५।४०।४८।६२	१००
सिंहः	५।१३।२८।३६।४८	६३
कन्या	४।१६।२३।३६।४५	१००
तुला	१५।३१।३५।५४।६२	७५
वृश्चिक	११।२८।३८।५२।६२	१००
धनुः	२।८।१०।१८।३१।३८।४२।६७	८१
मकरः	५।१३।२७।३६।५७।६२	८५
कुम्भः	२।२८।३३।४८।६४	६०
मीनः	१।८।१३।३६।४८	८३

६ गणगुणाः

(।। कन्यायाः ।।)

गण	दे.	मा	रा.
दे.	६	५	०
मा.	५	६	०
रा.	०	०	६

८ नाडीगुणाः

ना	आ.	म.	अ.
आ.	०	८	०
म.	८	०	८
अ.	८	८	०

अष्टौ वर्गास्तदीशाश्च

अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
सर्प	मूषक	मृग	मेष

नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रम्

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	बृहः	शुक्रः	शनिः
मित्राणि	चं.मं.बृ	सू.बु.	सू.च.बृ	सू.शु.	सू.च.मं.	बु.श.	बु.शु.
समाः	बुधः	मं.बृ. शु.श.	शुक्रः शनि	मं.बृ. शनि	शनि	म. बृहः	गुरुः
शत्रवः	शु.श.	×	बुधः	चन्द्र	बु.शु.	सू.चं.	सू.च.

राहुकेत्वोः शनिवत्। सू.श.रा.के. ३।६।८।११ चं.२।३।११मं.३।६।११ बु.बृ.१।२।३।४।५।६।९।१०।११ शु.१।२।४।५।९।१०।११ उक्तस्थानस्थग्रहांकान् संयोज्य विवाहलग्ने ग्रहबलविश्वा बोध्याः। लग्नेशनवमांशेशौ १।४।७।१०।११ स्थौ सर्वदोषनाशकौ भवतः।

विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिः

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	गुरुः
शुभ	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।९।११
पूज्यः	१।२।५।७।९	१।२।५।९	१।३।६।१०
निन्द्य	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२

विवाहे रेखाप्रदग्रहाः

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श	ग्र.
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	सं.

विवाहे पञ्चशलाकाचक्रम्

भ कृ रो मृ आ पु पु श्ले म पू. उ. ह. चि. स्वा वि अनु ज्ये मू पू. उ. अ. श्र. ध. श. पू. उ. रे. अ.

गरुडादिवर्गवशेन शुभाशुभज्ञान प्रकारः

नाम-ग्राम-दिशाऽद्यक्षरवशेन शरसंख्यान् संयोज्याष्टभिर्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-शनि- बृहस्पति- राहु-शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः, पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति। स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्माद्दिग्वर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तद्दिशि यद्गृहं तन्न शुभप्रदम्। अतएव स्ववर्ग-मित्रवर्गादिग्गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासो मध्यमः, शत्रुदिग्गृहवासश्च हानिकर इति।

गरुडादिवर्गचक्रम्

वर्गेशः	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष
शरसंख्या	८	५	६	४	७	१	३	२
वर्गनाम	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्गदिक्	पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई
वर्गशत्रुः	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्गसमः	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार
वर्गमित्रम्	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह

आयुर्विचारः-

लग्नसप्तमयोरन्यतरास्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां,लग्नेशाष्टमेशाभ्यां, लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णयम्। प्रकारत्रयेष्येकरूपायुष्यागतं तदेव ग्राह्यम्। विभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम्। त्रयाणां विसंवादे लग्नहोरालग्नायुर्ग्राह्यम्। विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्यो वली, समे जन्मलग्ने द्वादशेश-षष्ठेशयोर्यो वली तस्य केन्द्रे स्थित्या दीर्घायुः, पणफरे मध्यायुः,आपोक्लिमे चाल्पायुः। इत्यमेवात्मकारकवशेनापि। १,८ ईशयोः कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव। विषमे जन्मलग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि चैकादशे भवेत्तर्हि कारकायुषि केन्द्रे दीर्घायुः, पणफरे मध्यमायुरापोक्लिमे चाल्पायुः। यदि लग्नेशाष्टमेशदशमेशाः केन्द्रत्रिकोणलाभगास्तदा दीर्घायुर्योगः। यदि लग्नेशः सूर्यस्य मित्रन्तदा दीर्घायुर्योगः समश्चेन्मध्यमायुर्योगः, शत्रुस्तदाऽल्पायुर्योगः। पूर्वोक्तचक्रद्वारा प्रकारत्रयेण दीर्घायुर्योगे प्राप्ते १२० वर्षाणि, प्रकारद्वयेन१०८ वर्षाणि, प्रकारेणैकेन९६ वर्षाणि आयुः। एवमेव मध्यायुष्यपि प्रकारत्रयादिवशेन क्रमशः ८०, ७२, ६४ वर्षाण्यायुः। अल्पायुष्यपि ४०, ३६, ३२ वर्षाण्यायुरिति।

आयुःस्थानमारकादिस्थानञ्च -

अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तमञ्चैव मारकस्थानमुच्यते। क्वचित् षष्ठाष्टमव्ययेशदशास्वपि मारकसम्भवः। मारके मारकान्तरमशुभम्, परस्परं षष्ठाष्टमेशयोर्दशान्तर्दशा न शुभा। लग्नेशपञ्चमेशनवमेशानां दशा शुभा, त्रिषडायेशानां च पापाख्या। व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानानन्तरानुगुण्येन साहचर्याद्वा फलदा। चतुर्थेशसप्तमेश- दशमेशानां दशा मध्यफलदा स्थानान्तरवशेन शुभाशुभफलप्रदा च। अष्टमेशदशा पापफलदा, परं स्थानान्तर-शुभाशुभवशेन शुभपरमाशुभफलदेति।।

गरुडादिवर्गवशेन शुभाशुभज्ञानप्रकारः

नाम-ग्राम-दिशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसंख्यान् संयोज्याष्टभि-र्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-शनि-बृहस्पति-राहु-शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः, पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति। स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्माद्दिग्वर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तद्दिशि यद्गृहं तन्न शुभप्रदम्। अतएव स्ववर्ग-मित्रवर्गदिग्गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासो मध्यमः, शत्रुदिग्गृहवासश्च हानिकर इति।

गरुडादिवर्गचक्रम्

वर्गेशः	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष
शरसंख्या	८	५	६	४	७	१	३	२
वर्गनाम	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्गदिक्	पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई
वर्गशत्रुः	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्गसमः	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार
वर्गमित्रम्	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह

त्रिपताकिचक्रे ग्रहस्थापनम्– सैका गताब्दसंख्या या विभक्ता नवभिस्ततः। शेषांके जन्मनि गताच्चन्द्र-राशिरिह न्यसेत्।। शेषग्रहाशचतुर्भक्तशेषसंख्यासु विन्यसेत्। त्रिपताके वर्षलग्नमादौ स्थाप्यौ विधूदयौ।। शुभैर्वृद्धिः शुभफली पापैः पापफलप्रदी।।

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिवा	सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्रौ	बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.

वर्षमुन्थानयन–(गतवर्षसंख्या+जन्मलग्नसंख्या)÷१२। एकादिशेषे मेषादिमुन्थाराशिः। वर्षेशनिर्णयः–वर्षलग्नेश-जन्मलग्नेश-मुंथेश-त्रिराशिपति- दिवाद्विराशीश- रात्रौचन्द्रराशीशेषु लग्नद्रष्टा सर्वाधिकबलवत्तरो वर्षेशः।

गोचरफलबोधकचक्रम्

भावाः	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
तनुः	स्थानहानिः	सौख्यम्	बन्धनम्	भयम्	अभयम्	शत्रुनाशः	नाशः	कष्टम्	रोगः
धनम्	भयम्	धनम्	धननाशः	धनाप्तिः	धनाप्तिः	धनागमः	हानिः	धनम्	धननाशः
सहजः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	भीतिः	लाभः	शोकः	लाभः	नैरुज्यम्	सुखम्
सुहृद्	मानहानिः	रोगः	भयम्	धनम्	धनहानिः	लाभः	शत्रुवृद्धिः	शत्रुवृद्धिः	भीतिः
सुतः	दैन्यम्	कार्यसिद्धिः	धनक्षयः	रोगः	पुत्रसुखम्	पुत्राप्तिः	धनपुत्रनाशः	शोकः	शोकः
रिपुः	विजयः	शत्रुभयम्	विजयः	अलाभः	शोकः	शत्रुभयम्	द्रव्यलाभः	धनम्	धनाप्तिः
जाया	भ्रमणम्	लाभः	व्ययः	विग्रहः	मानम्	अशोकः	स्त्रीकष्टम्	हानिः	दुर्गतिः
मृत्युः	पीडा	कष्टम्	कष्टम्	लाभः	क्लेशः	विपत्तिः	शत्रुभयम्	रोगः	राजभयम्
धर्मः	धर्महानिः	मानम्	पीडा	रोगः	धर्मरतिः	लाभः	धर्महानिः	पापरतिः	बन्धनम्
कर्म	कार्यसिद्धिः	सुखम्	शोकः	सुखम्	उन्नतिः	दैन्यम्	दौर्मनस्यम्	वैरम्	शोकः
आयः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	सौख्यम्	लाभः	धनाप्तिः	आयुर्वृद्धिः	सौख्यम्	सुयशः
व्ययः	कष्टम्	व्ययः	हानिः	नाशः	चिन्ता	हानिः	हानिः	शोकः	धनक्षयः

गोचरफल-बोधकचक्र

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	स्थानहानि	सौख्य	बन्धन	भय	अभय	शत्रुनाश	नाश	कष्ट	रोग
धन	भय	धन	धननाश	धनाप्ति	धनाप्ति	धनागम	हानि	धन	धननाश
सहज	धन	लाभ	धनाप्ति	भीति	लाभ	शोक	लाभ	नैरुज्य	सुख
सुहृद्	मानहानि	रोग	भय	धन	धनहानि	लाभ	शत्रुवृद्धि	शत्रुवृद्धि	भीति
सुत	दैन्य	कार्यसिद्धि	धनक्षय	रोग	पुत्रसुख	पुत्राप्ति	धनपुत्रनाश	शोक	शोक
रिपु	विजय	शत्रुभय	विजय	अलाभ	शोक	शत्रुभय	द्रव्यलाभ	धन	धनाप्ति
जया	भ्रमण	लाभ	व्यय	विग्रह	मान	अशोक	स्त्रीकष्ट	हानि	दुर्गति
मृत्यु	पीड़ा	कष्ट	कष्ट	लाभ	क्लेश	विपत्ति	शत्रुभय	रोग	राजभय
धर्म	धर्महानि	मान	पीड़ा	रोग	धर्मरति	लाभ	धर्महानि	पापरति	बन्धन
कर्म	कार्यसिद्धि	सुख	शोक	सुख	उन्नति	दैन्य	दौर्मनस्य	वैर	शोक
आय	धन	लाभ	धनाप्ति	सौख्य	लाभ	धनाप्ति	आयुर्वृद्धि	सौख्य	सुयश
वय	कष्ट	व्यय	हानि	नाश	चिन्ता	हानि	हानि	शोक	धनक्षय

जन्म कालिक ग्रहों का भावफल(स्त्रियों के लिये)

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	विधवा	अल्पायु	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	शत्रुनाश	नाश	कष्ट	रोग
धन	दुः ख	पुत्रवती	दुःखिता	सौभाग्यवती	सौभाग्यवती	धनागम	हानि	धन	धननाश
सहज	पुत्रवती	धनाढ्या	पुत्रिणी	धनवती	पुत्रवती	शोक	लाभ	नैरुज्य	सुख
सुहृद्	दरिद्रा	दुर्भगा	अल्पसन्तति	सुखी	सुखी	लाभ	शत्रुवृद्धि	शत्रुवृद्धि	भीति
सुत	सन्ताननाश	कन्याधिक	पुत्रमरण	उत्तमसुख	उत्तमसुखी	पुत्राप्ति	धनपुत्रनाश	शोक	शोक
रिपु	धनवती	विधवा	धनयुक्त	क्लेशप्राप्ति	धनवती	शत्रुभय	द्रव्यलाभ	धन	धनाप्ति
जया	रोगिणी	प्रवासिनी	स्वामीनाश	क्षय	भयबन्धन	अशोक	स्त्रीकष्ट	हानि	दुर्गति
मृत्यु	विधवा	अतिकष्ट	धनवती	स्वजनवियोग	स्वजनवियोग	विपत्ति	शत्रुभय	रोग	राजभय
धर्म	धर्मनिष्ठा	पुत्रवती	कर्मकारिणी	उत्तमभोग	धर्मवृद्धि	लाभ	धर्महानि	पापरति	बन्धन
कर्म	परिश्रमी	व्यभिचारिणी	मृत्यु	धनवती	पतिधनी	दैन्य	दौर्मनस्य	वैर	शोक
आय	पुत्रवती	लक्ष्मीवती	पुत्रवती	सुखी	आयुष्मती	धनाप्ति	आयुर्वृद्धि	सौख्य	सुयश
वय	अतिव्ययी	दिनान्धा	वन्ध्या	सुपुत्रवती	सुशीला	हानि	हानि	शोक	धनक्षय

राशीनां स्वामिचरादिसंज्ञाघातादिचक्रम्

राशि	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
पति	म	शु	बु.	च	सू	बु	शु	मं.	वृ	श	श	वृ
संज्ञा	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि
प्रकृ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वा	स	क	पि	वा	सम	क
आकृ	ह्रस्व	ह्र	सम	सम	दीर्घ	दी	दी	दी	स	स	ह्र	स
जाति	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि
घामा	का	मार्ग	आषा	पो	ज्ये	भा.	मा	आ	श्रा	वै	चै.	फा
घाति	नन्दा	पूर्णा	भद्रा	भद्रा	जया	पूर्णा	रिक्ता	नन्दा	जया	रिक्ता	जया	पूर्णा
दिन	र.	श.	चं.	बु.	श	श	बृ.	शु.	शु	मं	वृ	शु
नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु	मू.	श्र	श	रे.	म.	रो.	आ	श्ले
योग	वि.	सु.	प.	व्या	धृ	शु.	शुक्ल	व्य	वज्र	वै	गं	वज्र
करण	बव		च	ना	बव	कौ	तै	ग	तै	श.	वणि	वि
प्रहर	१	[illegible]	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पु.चं.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
स्त्रीचं.	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

ग्रहाणामुच्चादिबोधकचक्रम्

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा	के
उच्च	मे १०	वृ ३	म२८	कं१५	क५	मी२७	तु२०	मि	ध
नीच	तु १०	वृश्चि३	क२८	मी१५	म५	कं२७	मे२०	ध	मि
मूत्रि	सि	वृष	मे	कं	ध	तु.	कु	कु	सि
जातिः	क्ष	वै	क्ष	शू	ब्रा	ब्रा	चा	चा	चा
दिक्	पू	वा	द	उ	ई	अ	प	नै	नै
भाग्य	२२वर्ष	२४व	२८व	२२व	१६व	२५व	३६व	४२व	४८व
प्रकृतिः	पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	वात	वात	वात	वात
पुसंज्ञा	पु	स्त्री	पु	नपुं	पु	स्त्री	नपुं	नपुं	पु
आकृति	ह्र	ह्र	ह्र	ह्र	दीर्घ	ह्र	दी	दी	दी

कारकग्रहाः- ग्रहेषु रावांधिकांशवानात्मकारकस्तन्न्यूनांशक्रमेणामात्य- भ्रातृमातृपितृ-पुत्रज्ञातिकारकाः ज्ञेयाः। अंशसाम्ये कलाधिक्यं, कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम्।

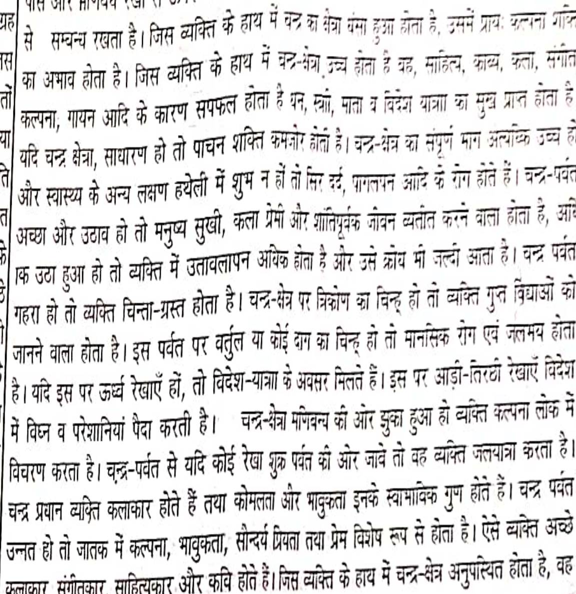
स्थिरकारकाः- तन्वादिभावानां क्रमेण सूर्य-गुरु-कुज-चन्द्रबुध- गुरु-भौम-शुक्र-शनि-सूर्यगुरु- रविबुधगुरुशनि-गुरु-शनयः स्थिरकारकाः भवन्ति।

स्वर्णादिचरणकजन्मज्ञानम्-जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १।६।११ स्थिते स्वर्णपादे, २।५।९ स्थिते रजतपादे, ३।७।१० स्थिते ताम्रपादे,४।८।१२ स्थिते च लौहपादे जन्म ज्ञेयम्। **आर्द्रादिद्वादशनक्षत्रेषु**- रजतपादे, ज्येष्ठादिसप्तसु स्वर्णपादे, पूर्वभाद्रादिपञ्चसु ताम्रपादे, कृत्तिकादित्रिषु लौहपादे जन्म भवति।

तेषां फलम्-स्वर्णपादेत्युत्कृष्टं, रजतपादे शोभनं, ताम्रपादे मध्यमं लौहपादे च हीनफलमिति।

हस्तरेखा-(हथेली में ग्रह पर्वत (Mounts) व उनका पफल)

हथेली में ग्रहों के पर्वतों का भी विशेष महत्त्व रहता है। अगर जन्म कुण्डली में कोई ग्रह बलवान होता है तो उस जातक की हथेली में भी उस ग्रह का पर्वत उभरा और स्पष्ट होता है। जिस व्यक्ति को अपनी जन्म-तिथि अथवा जन्म समय का ज्ञान नहीं होता, उस व्यक्ति की हथेली पर पर्वतों के आधर पर सही जन्म-कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। अंगूठे से जन्म लग्न मालूम किया जाता है। प्रथम अंगुली (तर्जनी) से बृहस्पति की स्थिति, मध्यमा से शनि, व अनामिका से सूर्य की स्थिति मालूम कर कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। तर्जनी के नीचे के स्थान को बृहस्पति का पर्वत कहते हैं। मध्यमा अंगुली के नीचे के स्थान को शनि का पर्वत कहते हैं। अनामिका अंगुली के नीचे के भाग को सूर्य पर्वत कहते हैं और कनिष्ठिका अंगुली के नीचे के स्थान को बुध पर्वत कहते हैं। अंगूठे के नीचे हथेली पर जो जीवन रेखा से घिरा हो उसे शुक्र पर्वत कहते हैं। उसी के बाँयी ओर हथेली में ऊँचे उठे पर्वत को चन्द्र पर्वत कहते हैं। हृदय रेखा के नीचे और मस्तिष्क रेखा के ऊपर ऊँचे उठे भाग को मंगल का प्रथम क्षेत्र कहते हैं। शुक्र पर्वत के ऊपर और बृहस्पति, को मंगल का द्वितीय क्षेत्र कहते हैं। इस प्रकार सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र शनि के एक-एक ग्रह पर्वत तथा मंगल के दो ग्रह पर्वत हथेली में होते हैं। हथेली का मध्य भाग जो थोड़ा धंसा होता है उसे करतल मध्य कहते हैं। हथेली के मध्य भाग की अपेक्षा ग्रह पर्वत ऊँचे उठे होते हैं। अंग्रेजी में इन पर्वतों को डवनदजे कहते हैं।



सूर्य पर्वत (Sun Mount) यह पर्वत अनामिका अंगुली के नीचे होता है। सूर्य पर्वत उन्नत होने पर जातक उत्साही, कला प्रेमी, शिल्पविद्या में निपुण, भावुक, धनवान्, उदार होता है। अगर सूर्य का पर्वत धंसा हुआ हो तो उस जातक में उत्साह की कमी होती है और उसकी बुद्धि भी तेज नहीं होती। उसे सामाजिक कार्यों में प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती। यदि क्रास का चिन्ह हो तो अनावश्यक बदनामी प्राप्त होती है। यदि सूर्य पर्वत हथेली में साधरण रूप से उच्च हो तो काव्य-कला सौन्दर्य इत्यादि में अभिरूचि होती है। जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य का पर्वत उच्च हो उसे यश व प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और वह ध्नवान होता है। सूर्य का पर्वत उठा हुआ हो तो व्यक्ति लेखक, यशस्वी, सुखी एवं बुद्धिमान होता है। सूर्य के पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह हो तो जातक उच्च राज्यधिकारी, सरकारी क्षेत्रों में लाभान्वित, उच्च पदाधिकारी या लेखक अथवा कलाकार होता है। सूर्य-पर्वत पर बिन्दु या वृत्त का चिन्ह शुभ नहीं माना जाता। जिस व्यक्ति के हाथ में यह पर्वत हो ही न उसका जीवन साधारण सा होता है। इस पर्वत से प्रतिभा, यश, सम्मान, सुख व सफलता की जानकारी प्राप्त होती है। अगर सूर्य-पर्वत बुध पर्वत के साथ मिला हो तो ऐसे जातक नम्र स्वभाव वाले, वाहनादि सुखों से युक्त, ईमानदार, व्यवहार दक्ष होते हैं। यदि स्त्री के हाथों में यह लक्षण हों तो रूपवती, पति से प्रीति रखने वाली, हंसमुख व सुशीला होती है। सूर्य पर्वत पर अगर दो खड़ी रेखाएँ हों तो वह महाधनी होता है। अगर सूर्य का पर्वत शनि की ओर झुक जाए तो व्यक्ति एकान्तप्रिय व उदासीन होता है कभी-कभी निराशावादी बन जाता है।

चन्द्र पर्वत (Moon Mount) दाहिने हाथ में आयु रेखा से बाँयी और भाग्य रेखा के पास और मणिबंध रेखा से ऊपर चन्द्र पर्वत होता है। चन्द्र क्षेत्र सौन्दर्य-प्रियता, कल्पना काव्य, साहित्य आदि से सम्बन्ध रखता है। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र का क्षेत्र धंसा हुआ होता है, उसमें प्रायः कल्पना शक्ति का अभाव होता है। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र-क्षेत्र उच्च होता है वह, साहित्य, काव्य, कला, संगीत, कल्पना, गायन आदि के कारण सफल होता है धन, स्त्री, माता व विदेश यात्रा का सुख प्राप्त होता है। यदि चन्द्र क्षेत्र, साधारण हो तो पाचन शक्ति कमजोर होती है। चन्द्र-क्षेत्र का संपूर्ण भाग अत्यधिक उच्च हो और स्वास्थ्य के अन्य लक्षण हथेली में शुभ न हों तो सिर दर्द, पागलपन आदि के रोग होते हैं। चन्द्र-पर्वत अच्छा और उठाव हो तो मनुष्य सुखी, कला प्रेमी और शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला होता है, अति उठा हुआ हो तो व्यक्ति में उतावलापन अधिक होता है और उसे क्रोध भी जल्दी आता है। चन्द्र पर्वत गहरा हो तो व्यक्ति चिन्ता-ग्रस्त होता है। चन्द्र-क्षेत्र पर त्रिकोण का चिन्ह हो तो व्यक्ति गुप्त विद्याओं को जानने वाला होता है। इस पर्वत पर वर्तुल या कोई दाग का चिन्ह हो तो मानसिक रोग एवं जलभय होता है। यदि इस पर ऊर्ध्व रेखाएँ हों, तो विदेश-यात्रा के अवसर मिलते हैं। इस पर आड़ी-तिरछी रेखाएं विदेश में विघ्न व परेशानियां पैदा करती है। चन्द्र-क्षेत्र मणिबन्ध की ओर झुका हुआ हो व्यक्ति कल्पना लोक में विचरण करता है। चन्द्र-पर्वत से यदि कोई रेखा शुक्र पर्वत की ओर जावे तो वह व्यक्ति जलयात्रा करता है। चन्द्र प्रधान व्यक्ति कलाकार होते हैं तथा कोमलता और भावुकता इनके स्वाभाविक गुण होते हैं। चन्द्र पर्वत उन्नत हो तो जातक में कल्पना, भावुकता, सौन्दर्य प्रियता तथा प्रेम विशेष रूप से होता है। ऐसे व्यक्ति अच्छे कलाकार, संगीतकार, साहित्यकार और कवि होते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र-क्षेत्र अनुपस्थित होता है, वह कठोर हृदय का होता है।

मंगल पर्वत (Mars Mount) मंगल के दो क्षेत्र होते हैं। पहला हथेली में बुध पर्वत एवं हृदय रेखा के नीचे एवं चंद्र पर्वत के ऊपर मंगल का स्थान है। दूसरा मंगल पर्वत बृहस्पति पर्वत के नीचे होता है जहाँ से जीवन-रेखा प्रारम्भ होती है। यह जीवन रेखा के अन्दर और शुक्र पर्वत की समाप्ति पर होता है। मंगल प्रधान व्यक्ति साहसी,निडर तथा शक्तिशाली होते हैं। जिनके हाथों में मंगल पर्वत बलवान होता है वे प्रभुत्वाकांक्षी, परिश्रम के कामों में दक्ष, लड़ाई-झगड़े में उत्साही होते हैं। धीरजता तथा साहस इनका प्रधान गुण होता है। नैतिक बलशाली, चंचल प्रकृति के सैनिक होते हैं। यदि मंगल पर्वत बहुत अधिक ऊँचा हो तो वह व्यक्ति दुराचारी, अकारण क्रोध करने वाला, समाज-विरोधी, निर्दयी होता है। ऐसे व्यक्ति स्वभाव से लड़ाकू तथा अपनी बात को जबरदस्ती मनवाने के आदी होते हैं। यदि मंगल का पर्वत नीचा हो तो व्यक्ति में सहन-शक्ति की कमी होती है, नास्तिक, डरपोक तथा शान्त विचार का होता है। यदि मंगल पर्वत का झुकाव शुक्र क्षेत्र की ओर होता है तो यह निश्चित समझना चाहिए कि उस व्यक्ति में सद्गुणों की अपेक्षा दुर्गुण विशेष होंगे। ऐसे व्यक्ति झूठी शान-शौकत, व्यर्थ का आडम्बर तथा प्रदर्शन प्रिय होते हैं। यदि मंगल पर्वत या राहु के पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति यु(कुशल, दृढ़-निश्चयी, उत्तम सेनापति अर्थात् प्रबन्धन क्षमता से युक्त होता है। मंगल पर्वत यदि बुध की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अच्छी राय देने वाला, सलाहकार होता है। यदि मंगल पर्वत पर आड़ी-तिरछी रेखाएं हों और उनसे जाल-सा बन गया हो तो निश्चय ही उसकी मृत्यु दुर्घटना के फलस्वरूप होती है। मंगल का पर्वत यदि अशुभ, निर्बल हो तो ऐसे व्यक्ति को तीव्र ज्वर, पित्त विकार, शस्त्र, शत्रु, चोर व राजा से भय प्राप्त होता है। रक्त-विकार से पीड़ा होती है। यदि मंगल पर्वत भली प्रकार से विकसित हो तथा साथ ही हथेली का रंग भी लालिमा लिए हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही ऊँचा पद प्राप्त करता है। संघर्षों एवं बाधाओं के बावजूद वह अपने लक्ष्य तक पहुँच जाने में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

वस्तुतः मंगल पर्वत से ही व्यक्ति साहसी, निर्भीक और स्पष्टवक्ता बनता है।

बुध पर्वत (Mercury Mount)– कनिष्ठिका ऊँगली के नीचे (मूल में) हृदय रेखा या मंगल पर्वत के ऊपर जो स्थान है उस स्थान को बुध पर्वत कहते है। यह पर्वत भौतिक सम्पदा एवं भौतिक समृद्धि का सूचक है। बुध का क्षेत्र अच्छा हो तो व्यक्ति को व्यापारिक एवं वैज्ञानिक कार्यो में सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, ज्योतिषी, धनी एवं कवि होता है। कानून का ज्ञाता, लेखक एवं हंसमुख प्रकृति का भी होता है। यदि बुध पर्वत अत्यन्त ऊंचा हो तो वह ठग, चालाक, धुर्त, विश्वासघाती और लफंगा भी होता है। ऐसे व्यक्ति धन के पीछे पागल रहते है। यदि बुध पर्वत नीचा हो तो अप्रसन्न, आलसी, धनहीन एवं मन्दबुद्धि होते है।

यदि बुध पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में आसानी से सफलता प्राप्त कर सकता है। ऐसे व्यक्ति व्यापार कुशल, प्रतापी चिकित्सक, वकील, ज्योतिषी आदि होता है। ऐसे व्यक्ति विद्या-व्यसनी होते हैं। यदि बुध पर्वत मंगल पर्वत की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त हंसमुख प्रकृति का होता है। यही फल मंगल, बुध दोनों के उच्च होने का भी समझना चाहिए। जिन व्यक्तियों के बुध व गुरु के पर्वत समान रूप से ऊँचे उटे हों, वे विद्याभ्यासी, संगीत प्रिय, सफल साहित्यकार, पत्रकार, लेखक होते हैं। श्रमवान और उद्यमी होते है। मान-सम्मान प्राप्त करने वाले होते हैं। बुध व शुक्र का पर्वत समान रूप से ऊँचे हों तो वह विलक्षण ज्ञान वाला, शृंगार प्रिय और संतति सुख से पूर्ण होता है।

जिनके हाथों में बुध पर्वत सही रूप से विकसित होता है, वे मनोविज्ञान के क्षेत्र में माहिर होते हैं। ऐसे व्यक्ति अवसरवादी एवं भौतिकवादी कहे जाते हैं। धन-संचय करने में वे उचित-अनुचित आदि का कोई ख्याल नहीं रखते। यदि बुध पर्वत पर कोई तिरछी रेखा आई हो तो उसे गुप्त परेशानी होती है। यदि इस पर त्रिकोण Δ का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति यशस्वी, मान प्रतिष्ठा वाला या व्यापारी होकर प्रचुर धन पैदा करता है। यदि बुध पर्वत पर दो चार खड़ी रेखाएँ हों तो वह डॉक्टर या औषधि संग्रहकर्ता होता है। यदि बुध का पर्वत ऊँचा उठा हुआ कुछ चौरस दिखे तो वह ज्योतिषी होता है। यदि हथेली पर बुध पर्वत का अभाव हो तो उसका जीवन दरिद्रता में ही व्यतीत होता है। लम्बी उंगलियों के साथ विकसित बुध पर्वत हो तो वह व्यक्ति स्त्रियों के प्रति विशेष आसक्ति रखने वाला होता है।

यदि बुध पर्वत अपने आप में पूर्णतः श्रेष्ट एवं विकसित हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

बृहस्पति क्षेत्र (Jupiter Mount)– तर्जनी अँगुली के मूल भाग में राहु पर्वत के ऊपर शनि पर्वत के पास जो स्थान है उसे गुरु का क्षेत्र या गुरु पर्वत कहते है। हथेली में गुरु का पर्वत उच्च हो तो उस व्यक्ति में देव-तुल्य सभी गुण पाए जाते हैं। ऐसा व्यक्ति तेजवान, ओजस्वी, दर्शनीय विद्वान्, उदार, ज्योतिषी, अध्यापक होता है। वह धनधान्य युक्त, सदाचारी, सत्यवक्ता होने के साथ-साथ जहाँ स्वयं की उन्नति करता है, वहाँ दूसरों को उन्नति देने में सहायक रहता है। यदि गुरु का पर्वत अत्यन्त उच्च हो तो व्यक्ति आडम्बर वाला, मिथ्याभिमानी, स्वार्थी, धोखा देने में चतुर तथा स्वेच्छाचारी होता है।

यदि गुरु पर्वत अल्पविकसित या अविकसित होता है तो उन व्यक्तियों में उपर्युक्त गुणों की न्यूनता समझनी चाहिए। विपरीत योनि के प्रति इनके मन में कोमल भावनाएँ होती हैं। यदि गुरु पर्वत का झुकाव शनि की ओर हो तो ऐसा व्यक्ति चिन्तनशील तथा अपने ही कार्यो में लगा रहने वाला परन्तु जीवन में सफलता न मिल पाने के कारण धीरे-धीरे उसमें निराशा की भावना आने लगती है। यदि गुरु पर्वत राहु पर्वत की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति धूर्त तथा रोगी होता है। यदि गुरु, शुक्र का पर्वत एक समान ऊँचा हो तो ऐसा व्यक्ति असत्य वक्ता, शत्रु-युक्त, अविचारी, झगडालू तथा स्त्रियों के साथ रहकर भी उनसे कम प्रीति वाला होता है। यदि गुरु पर्वत निम्न तथा शनि पर्वत ही अधिक उटा हो तो वह समाज व घर वालों से घृणा करता है। तथा इन दोनों के एक समान ऊँचे होने पर धैर्यवान्, भाग्यवान और अदृष्टवादी होता है।

अगर वृहस्पति-क्षेत्र पर क्रास का चिन्ह हो तो जातक धार्मिक क्षेत्र में बहुत ऊँचा उठ जाता है। उसका वैवाहिक जीवन सानन्द रहता है। यदि गुरु पर्वत पर सीधी रेखा हो तो ऐसा व्यक्ति यशस्वी होता है परन्तु बहुत सी रेखाएं होने पर अपयश प्राप्त होता है। गुरु पर्वत पर त्रिकोण चिन्ह हो तो व्यक्ति सात्विक विचार, चतुर व कुशल होता है। यदि त्रिकोण के साथ सूर्य रेखा भी हो तो ऐसा व्यक्ति संस्था का मंत्री होता है। गुरु के पर्वत पर तारा का चिन्ह हो तो अच्छा फल देता है किन्तु परिवार की ओर से परेशानी कारक होता है। यदि गुरु के पर्वत पर गुणा (क्रास) का चिन्ह हो तथा तर्जनी के मूल में स्पष्ट हो तो उस व्यक्ति का विवाह सम्पन्न एवं कुलीन घराने में होता है। ऐसे व्यक्ति ससुराल पक्ष से सहयोग प्राप्त कर अच्छी उन्नति प्राप्त कर लेते हैं। गुणा का चिन्ह या अत्यन्त सूक्ष्म होने पर उसके मस्तक पर चोट चपेट आदि से कोई घाव अवश्य हो जाता है।

यदि व्यक्ति की उँगलियाँ नुकीली हों या गुरु पर्वत विकसित हो तो वह व्यक्ति अंधविश्वासी होता है। वर्गाकार उँगलियों के साथ विकसित गुरु पर्वत हो तो वह जीवन में निरंकुश तथा अत्याचारी बन जाता है। यदि उँगलियाँ लम्बी हों तो वह व्यक्ति अपव्ययी तथा भोगी होता है। यदि गुरु पर्वत अशुभ हो तो उसे कुष्ट, चर्म, क्षय-रोग, गठिया, पीलिया तथा फेफड़े सम्बन्धी रोग रहता है।

वस्तुतः गुरु पर्वत जीवन में अत्यधिक सहायक तथा उन्नति की ओर अग्रसर करने वाला पर्वत कहा गया है।

शुक्र पर्वत (Venus Mount)– अंगूठे के नीचे और जीवन रेखा के भीतर का भाग शुक्र क्षेत्र कहलाता है। शुक्र पर्वत से सौन्दर्य प्रियता, काम वासना, संगीत प्रियता, स्वास्थ्य, संतान उत्पन्न करने की शक्ति का विचार किया जाता है। अगर किसी व्यक्ति के हाथ में शुक्र का पर्वत उठा हुआ न हो तो उस व्यक्ति में उपर्युक्त गुण न्यून मात्रा में होता है। शुक्र क्षेत्र का साधारण उच्च होना अच्छा है। साधारण उच्च होने पर जातक में उपर्युक्त सभी गुण पाये जाते हैं।

शुक्र का अति उच्च होना अशुभ होता है। अति उच्च होने पर मनुष्य अत्यधिक विलासी, व्यभिचारी व कामुक होता है। शुक्र पर्वत उठावदार व शुभ होने पर व्यक्ति निरोगी होता है, और वह सुख-शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। उसकी ललित कला में अधिक रूचि होती है। यदि शुक्र पर्वत धंसा हुआ अथवा गहरा हो तो वह व्यक्ति नपुंसक होता है तथा धातु रोग से ग्रसित होता है। शुक्र पर्वत पर व्रत या विन्दु के चिन्ह अशुभ होते हैं। शुक्र क्षेत्र से कोई रेखा वृहस्पति की ओर जाये तो उस व्यक्ति को यश, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यदि कोई रेखा शुक्र से निकल कर भाग्य रेखा को काटे तो धन हानि होती है। शुक्र पर्वत हथेली में अनुपस्थित होने पर व्यक्ति निर्मोही हो जाता है। वह उदासीन व सन्यासी बन जाता है। हाथ में शुक्र पर्वत अच्छा होने पर चेहरा लावण्यमय व प्रभावशाली होता है।

शनि पर्वत (Saturn Mount)– यह मध्यमा अंगुली के नीचे होता है। एकान्त-प्रियता, परिश्रम-शीलता व किसी वस्तु का गंभीरता पूर्वक अध्ययन इसके स्वाभाविक गुण है। यदि शनि पर्वत अत्यधिक उन्नत हो तो उस जातक पर शनि का प्रभाव अधिक रहता है। अतः वह मनुष्य चिन्तायुक्त व दुःखी रहता है तथा अधिकतर दुःखी होता है। अगर शनि का क्षेत्र साधरण उन्नत हो तो वह जातक विचारशील होता है। अगर शनि का पर्वत पिचका हुआ हो तो उस मनुष्य का स्वास्थ्य खराब रहता है व विशेष रूप से वह पित-वात रोग का रोगी होता है। शनि का पर्वत उठावदार व शुभ हो तो उस व्यक्ति का जीवन सुखी होता है। आवश्यकता से अधिक उठा हुआ हो तो वह एकान्त-प्रिय और वैराग्य की भावना रखने वाला होता है। शनि का पर्वत गहरा होने पर मनुष्य का जीवन दुःखी होता है और वह कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। जिस व्यक्ति के शनि पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह हो, वह यौगिक क्रियाओं और गुप्त विद्याओं को जानने वाला होता है। शनि पर्वत पर वृत या विन्दु के चिन्ह दुःख व दरिद्रता के चिन्ह होते हैं। शनि पर्वत प्रधान व्यक्ति एकान्त-प्रिय होने के कारण भीड़ से बचना चाहते है। शनि क्षेत्र प्रधान व्यक्ति प्रायः इन्जिनियर, जादूगर, साहित्यकार व वैज्ञानिक होते हैं। नृत्य, गान, संगीत इत्यादि में इनकी रूचि नहीं होती है। ये सदेहशील प्रकृति के व्यक्ति होते हैं। शनि क्षेत्र अत्यधिक विकसित होने पर जातक आत्महत्या तक कर लेता है। वे स्वभाव से उदासीन व चिड़चिड़े होते है। जिस व्यक्ति के हाथ में शनि पर्वत वृहस्पति की ओर झुका हुआ हो तो श्रेष्ठ होता है। उस व्यक्ति में वृहस्पति के गुणों का समावेश हो जाता है। वह व्यक्ति उन्नतशील वन जाता है। सूर्य की ओर झुका हुआ होने पर व्यक्ति निष्क्रिय व उदासीन हो जाता है। शनि क्षेत्र पर रेखाएं शुभ होती है परन्तु चिन्ह जैसे वृत आदि अशुभ माने गए है।

ऊपर संक्षेप में भिन्न ग्रह क्षेत्रों के लक्षण और फल बताये गये हैं। किसी हाथ में एक, किसी में दो, किसी में तीन ग्रह क्षेत्र उच्च रहते हैं। इसलिए अलग-२ फलों का मिलान पर, परिणाम में जो फल आवे, वह कहना चाहिए।

विवाह सम्बन्धी योग–

(१) यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो और वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है।

(२) यदि स्त्री के दाएँ हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायक प्राप्त होती है।

(३) यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उदित होकर गुरु-पर्वत पर गइ हो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है। उसे सुख, यश एवं विदेश-गमन आदि के लाभ प्राप्त होते हैं।

(४) यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय-रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है।

(५) यदि हृदय रेखा गुरु क्षेत्र से उदय हो तथा चन्द्र से निकलती हुई भाग्य रेखा आकर हृदय-रेखा में विलीन हो गई तो ऐसी स्त्री को अत्यधिक प्रेम करने वाला पति प्राप्त होता है।

(६) यदि हृदय-रेखा शृंखलाकार होकर बीच में शनि-क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नही रहती।

(७) यदि भाग्य-रेखा, चन्द्र क्षेत्र से प्रारम्भ होकर सुन्दर गहरे रूप में वृहस्पति के क्षेत्र तक चली जाये तो उस स्त्री का अपने पति अथवा किसी अन्य पुरुष की सहायता से भाग्योदय होता है।

(८) यदि किसी विवाह-रेखा स्पष्ट तथा सुन्दर हो, साथ ही चन्द्र क्षेत्र से आई हुई कोई प्रभाव रेखा भाग्य रेखा में आकर मिल जाये तो ऐसी स्त्री का विवाह किसी धनी कुल में होता है। उसे अपने सम्बन्धियों के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति के सहयोग से भाग्योदय होता है।

(९) यदि विवाह-रेखा में से पतली-पतली शाखायें निकलकर हृदय रेखा की ओर गई हो तो ऐसी स्त्री के पति का स्वास्थ्य खराब रहने के कारण दाम्पत्य सुख में बाधा होती है।

कालसर्प योग–चामत्कारिक शुभ फल भी देता है

कालसर्प योग जन्म कुण्डली में उस स्थिति में बनता है, जब कुण्डली में समस्त ग्रह राहु-केतु के एक ओर स्थित होते हैं। ज्योतिष जगत में 'कालसर्प योग' के विषय में बड़ी चर्चाएं हैं। प्राचीन विचारधारा के ज्योतिर्विदों का कहना है कि प्राचीन ग्रन्थों में कालसर्प योग का कहीं उल्लेख नहीं है। आधुनिक ज्योतिर्विद जातक के जन्माङ्ग में कालसर्प योग की जो स्थिति बताते हैं, वह स्थिति पहले भी होती थी, जिसे राहु की दशा कहा जाता था। अति प्राचीन ज्योतिर्विदों ने 'कालसर्प योग' शब्द का प्रयोग नहीं किया। परन्तु महर्षि पराशर एवं वराह मिहिर ने अपने ग्रन्थों में 'सर्प योग' की चर्चा की है। वृहज्जातक तथा वृहत् पराशर होराशास्त्र में– योग: प्रोक्तकाल सर्पश्च......॥ एवं 'राहुकेतुमध्ये ग्रहा सर्वे विन्दन्ति काल सर्प संज्ञक: तथा काल सर्पयोगस्य विषविपात जीवने भयावह पुन: पुनरपि शोकं च। मानसागरी के अध्याय ४ में स्पष्ट उल्लेख है कि **"लग्नाच्च सप्तमे स्थाने शनि राहु संयुतौ। सर्पेण बाधा तस्योक्ता शय्यायां स्वपतोऽपिच॥४10॥"** यदि सप्तम भाव में शनि राहु के साथ हो तो उस जातक की मृत्यु 'सर्पदंश' से होती है। इसी सर्प योग को हम **'कालसर्प योग'** भी कहते हैं।

[राहु वायुकारक, छाया व अशुभ ग्रह होते हुए भी प्राणी को दुःखों की अग्नि में तपाकर उसे कुन्दन की भान्ति निखारने एवं परिष्कृत करने का कार्य करता है। दुःखों से व्याकुल होकर ही मनुष्य की शक्तियाँ का स्मरण करता है।]

कुछ विद्वान लोग यह प्रश्न करते हैं कि 'कालसर्प योग' अस्तित्व में कैसे आया? तो यह प्रश्न अनुचित नहीं है क्योंकि अधिकांश ग्रन्थों में 'सर्प योग' की तो चर्चा है किन्तु 'कालसर्प योग' की नहीं। 'काल' शब्द जोड़ दिया जाए, तो साधारण प्राणी के मस्तिष्क में उसका प्रथम अर्थ 'मृत्यु' ही आएगा और जब 'काल' शब्द के साथ 'सर्प' जुड़ा हो, तब तो प्रथम दृष्ट्या जातक भयभीत हो जायेगा। समाज में सामान्य रूप से 'काल' और 'सर्प' दोनों प्रथमतः भयावह ही हैं। यह तो उसे धैर्य बँधाने और समझाने पर ही समझ में आयेगा कि 'काल' का अर्थ है समय और 'सर्प' हमारे पूज्य देवता हैं, नाग की पूजा और शिव भक्ति से हमें ऊर्जा प्राप्त होकर मन को शान्ति मिलती है। राहु-केतु की महादशा एवं कालसर्प/पितृदोष से पीड़ित जातकों की ऊर्जा शक्ति क्षीण हो जाती है। इसलिए नाग पूजा एवं शिवभक्ति का विधान हमारे शास्त्रों ने सुझाया है। इससे जातक को आने वाले कष्टों से राहत होगी।

राहु-केतु छाया ग्रह हैं। जैसे प्राचीन चरक संहिता में कैंसर एवं एड्स जैसे रोगों का उल्लेख नहीं है, परन्तु ये रोग नहीं है, ऐसा नहीं माना जा सकता। इसी प्रकार कालसर्प योग जब सभी सात ग्रह राहु और केतु या केतु या राहु के मध्य आ जाते हैं, तो राहु के प्रभाव से अन्य ग्रह निष्प्रभावी हो जाते हैं और राहु का अधिक प्रभाव आता है, जन्मकुण्डली में कालसर्प योग का निर्णय करते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। राहु या केतु के साथ अन्य ग्रहों का सहचर्य की स्थिति में भाव-स्पष्ट कर लिए जाएँ तो इस योग में और भी अधिक स्पष्टता आ जाएगी। जैसे-लग्न भाव से निर्मित कालसर्प योग में यदि राहु के साथ मंगल या कोई भी ग्रह है तथा उसके भोगांश राहु से अधिक हैं तो कालसर्प योग दोषपूर्ण नहीं होगा, बल्कि योगकारक बनता है। कुछ विद्वान तो इसे भंग कालसर्प दोष की कुण्डली मानते हैं।

वैदिक रूप से राहु का अधिदेवता काल, प्रति अधिदेवता सर्प है, जबकि केतु का अधिदेवता चित्रगुप्त एवं प्रतिअधिदेवता ब्रह्माजी हैं। कालसर्प योग से सम्बन्धित जन्मकुण्डलियों के अध्ययन करने पर यह दिखाई पड़ता है कि कुछ कालसर्प योग से युक्त जातक असहनीय कष्ट झेल रहे हैं और कुछ उत्तरोत्तर समृद्धि, वैभव प्राप्त कर रहे हैं। व्यक्ति जब पद, प्रतिष्ठा, धन, परिवार आदि के मद में चूर हो जाता है, तब वह अपने सम्माननीय माता-पिता, पितर तथा आश्रित अन्य लोगों को सम्मान न देकर उनसे सम्मान कराने की इच्छायें रखता है और उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है, उसी का प्रभाव अगले जन्म में कालसर्प योग के रूप में आता है। इसके विपरीत अपने माता-पिता आदि की यथाशक्ति सेवा करते हैं, उन्हें कालसर्प योग अनुकूल हो सुखी बनाता है।

सामान्यतः कालसर्प योग का प्रभाव जीवनपर्यन्त रहता है, परन्तु राहु अथवा केतु की दशा/अन्तर्दशा में इसके प्रभाव, पफलों का प्रादुर्भाव होते देखा जा सकता है। एक अन्य मान्यतानुसार कालसर्प योग यदि किसी

जातक की कुण्डली में प्रथम छः भावों में दनता हो, तो उसे जीवन के पूर्वा(भाग में विशेष संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहता है। इस स्थिति में राहु सप्तम में तथा केतु लग्न भावस्थ होगा।इ इसी भान्ति यदि राहु और केतु के मध्य सभी सातों ग्रह सप्तम भाव से द्वादश भावों के बीच पड़ते हों, तो तत्सम्बन्धित योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य को जीवन का उत्तरा(भाग विशेष कठिन परिस्थितियों में से गुजारना पड़ता है। ध्यान रहे, इस योग की गणना राहु से लेकर केतु तक करनी चाहिए।

कालसर्प का शुभाशुभ फल द्वादश भावों में राश्यानुसार अलग-अलग होता है।

१. **अनन्त कालसर्प योग**- प्रथम व सातवें भाव से निर्मित कालसर्प योग मनुष्य के व्यक्तित्व, शरीर, सिर, आत्मा एवं पिता की माता दादी इ पर जीवन पर्यन्त प्रभावी रहता है। ४२ वर्ष की आयु तक अथवा राहु की महादशा में विशेष प्रभाव देखा जा सकता है।

अशुभ प्रभाव- शरीर रोग, कष्ट व मानसिक तनाव अधिक रहता है। जीवन में संघर्ष अधिक करना पड़ता है। वैवाहिक जीवन में असन्तोष बना रहता है। जातक जीवन पर्यन्त उदर विकार से पीड़ित रहता है। बचपन में अथवा बड़े होने तक पेट में कीड़े होते हैं। प्रायः इसको शौच सम्बन्धी कष्ट बना रहता है। यह तब और भी अधिक प्रभाव होता है, जब लग्न एवं राशि एक ही हो। जातक को स्वप्न में सूर्य एवं मृतु लोग की आत्माएँ दिखती हैं।

शुभ फल- यदि यह अनन्त कालसर्प योग वृष एवं मिथुन, सिंह राशि पर आता है, तब राजयोगकारक भी होता है। जातक प्रायः विदेश गमन भी करता है। **रविसेतोदये राहौ राजभोगाय सम्पदि**।। वैद्यनाथ। गुप्त युक्तियों द्वारा लाभ व उन्नति प्राप्त करने वाला, बाहरी तौर पर सज्जन परन्तु भीतर से चालाक प्रवृत्ति का होगा।

२. **कुलिक कालसर्प दोष**- द्वितीय व आठवें भाव से निर्मित कालसर्प दोष में यदि राहु अशुभ हो, तो जातक को कुटुम्ब एवं धन सम्बन्धी उलझनों का सामना रहता है। अत्यन्त कठिन एवं विषम परिस्थितियों में निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। गुप्त रोग होने की संभावना रहती है। जातक प्रायः अपनी वाणी पर संयम नहीं रख पाता। कभी-कभी मुख सम्बन्धी रोग, गले या श्वास सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हो।

शुभ फल- अचानक धन की प्राप्ति होती है। गढ़ा धन, लॉटरी, सट्टा आदि से भी धन का आगम हो सकता है। परिवार ख्याति प्राप्त एवं संयुक्त होता है। जातक धन की अपेक्षा कीर्ति को अधिक मूल्यवान समझता है।

३. **वासुकि कालसर्प योग**- तृतीय एवं नवम भाव में निर्मित इस योग से अपने निकटस्थ भाई-बन्धुओं के कारण ही विविध परेशानियों का सामना करना पड़ता है। विदेशों में अथवा भ्रमणशील घूमने-फिरनेइ के कार्यों द्वारा धनार्जन होता है।

शुभ प्रभाव- तृतीयेश उच्च स्थानस्थ होकर भाग्येश, पंचमेश या राज्येश से युति होने पर एवं राहु के तृतीय भाव में वृष या मिथुन या कन्या राशिस्थ होने पर अखण्ड साम्राज्य प्रदान करता है। राजनीति में विशेष सफलता देता है। भाई-बहन होते है तथा उनसे सहयोग भी प्राप्त होता है। यदि गुरु की दृष्टि भी हो तो पराक्रम में वृ(तथा भाई-बन्धुओं का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। जातक का सम्पर्क एवं सम्बन्ध उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ भी रहता है, जिनसे जातक लाभान्वित भी होता है। शुभफल का अनुभव स्त्री राशियों में प्राप्त होता है। अशुभ फल का अनुभव पुरुष राशियों में प्राप्त होगा।

४. **शंखपाल कालसर्प योग**- चतुर्थ व दशम भावों द्वारा निर्मित कालसर्प योग का प्रभाव जातक की माता, स्थायी सम्पत्ति, पैतृक सम्पत्ति, वाहन-सुख एवं शरीर में पेट पर पड़ता है। चतुर्थेश निर्बल हो एवं राहु नीच राशिस्थ होने से जातक को आराम कम व संघर्ष अधिक रहता है। माता-पिता एवं परिवार के निमित्त परेशानियाँ होती हैं। आय में अनिश्चितता रहती है। जातक

को पथरी एवं किडनी आदि उदर विकार होते हैं। जातक घरेलू परिस्थितियों के प्रति असन्तुष्ट रहता है।

शुभ फल- इसके विपरीत उच्च राशिस्थ राहु होने एवं चतुर्थेश के बलिष्ठ होने पर यह योग पूर्ण शुभ तो नहीं, अपितु अल्प शुभफली बन जाता है। जन्म स्थान छोड़ने पर जातक सुखी रहता है तथा माता को कष्ट के बावजूद सुख प्राप्त होता है। , , , एवं कन्या राशि में शुभ फल प्राप्त होते हैं।

५. **पद्म कालसर्प योग**- पंचम व एकादश भावों के मध्य कालसर्प योग का प्रभाव शिक्षा, संतान, श्रम का मूल्यांकन, मान-सम्मान, पेट विशेषकर लीवर एवं आँत पर पड़ता है। पंचमेश नीच, वक्री, अस्त या अन्य निर्बल भावों में स्थित हो तथा राहु नीच राशि धनु या शत्रु राशि में हो तथा किसी शुभ ग्रह की दृष्टि भी न हो तो जीवन के पूर्वा(भाग में अत्यन्त कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। कोई भी विशेष कार्य पूर्ण होने से पूर्व विघ्न या रुकावटें पैदा हों। आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहती है। सन्तान उत्पत्ति में विलम्ब अथवा कन्या सन्तान अधिक हों। उच्च-विद्या में विघ्न-बाधाएं अथवा अधूरी शिक्षा रहती है।

शुभ फल- पंचमेश उच्च राशि एवं बलिष्ठ स्थिति में होने एवं उच्च राशि या शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट होने पर यह योग अनेक गुप्त विद्याओं का ज्ञान कराता है। संतान-उत्पत्ति के बाद क्रमिक उन्नति हो। मंगल-राहु योग हो तो जातक कूटनीति का प्रयोग करता है। भृगुसूत्र के अनुसार पंचम में यदि राहु हो तो मनुष्य को पुत्र सुख नहीं मिलता, सर्प के शाप से पुत्र का नाश होता है। नागदेव की पूजा करने से पुत्र प्राप्ति होती है।

६. **महापद्म कालसर्प योग**- षष्ट स्थान में राहु होने पर योग बनता है। इसका प्रभाव रोग, शत्रु, मामा और मौसी पर पड़ता है। षष्ठेश निर्बल एवं पापग्रस्त या राहु नीचस्थ होने से जातक गुप्त रोग एवं गुप्त षड्यन्त्र का शिकार होता है अथवा मामा/मौसी की अकाल मृत्यु होती है। वृथा खर्च, मानसिक तनाव व गुप्त शत्रु-भय, मातुल ;मामाकेद्ध पक्ष को अनिष्टकर, दाँतों व नेत्रों सम्बन्धी रोग भय। प्रगति कठिनता से हो पाती है।

शुभ फल- षष्ठेश उच्च राशिस्थ, बलिष्ठ तथा राहु उच्च राशिस्थ होने से शत्रु स्वयं ही ;निजी कारणों सेद्ध दूर हट जाते हैं। विदेश गमन भी होता है। जातक तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने बु(-चातुर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर शत्रुओं को परास्त करने वाला होता है।

७. **तक्षक कालसर्प योग**- राहु के सप्तम भाव में होने पर यह योग बनता है। इसका प्रभाव वैवाहिक जीवन, मित्र, सांझेदारी, दादा पर पड़ता है।

सप्तमेश द्व, , वें अथवा अशुभ भावस्थ या राहु नीच राशिस्थ होने से वैवाहिक विलम्ब, विवाह होने पर वैवाहिक सुख में कमी, व्यवसाय में सांझेदारी के कार्यों में विघ्न-बाधाएँ एवं धोखा, अत्यधिक परिश्रम द्वारा ही धन, आय के साधन हों। स्त्री/पति की ओर से परेशानी अथवा वैवाहिक जीवन में कलह-क्लेश हो।

शुभ फल- सप्तमेश शुभ हो तो जातक का एक जगह सम्बन्ध छूटने के बाद वैवाहिक सुख प्राप्त होता है। स्त्री राशि का राहु शुभ फल करता है। विवाह जल्दी होता है।

८. **कर्कोटक कालसर्प योग**- राहु के अष्टमस्थ होने से यह योग बनता है। अशुभ होने पर क्लिष्ट रोग का भय, मानसिक तनाव, आर्थिक तंगी व घरेलू उलझनें अधिक हों।

शुभ फल- अष्टमेश शुभ भावस्थ हो, या राहु उच्च राशिस्थ, शुभ दृष्ट हो तो जातक दीर्घजीवी होता है तथा जीवन के उत्तरा(में भूमि, मकान, वाहन एवं सुयोग्य सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति होती है।

९. **शंखनाद कालसर्प योग**- नवम व तृतीय भाव में निर्मित कालसर्प योग में भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाएँ पैदा होंगी। लाटरी, सट्टे में धन का अपव्यय तथा किसी नजदीकी बन्धु द्वारा विश्वासघात हो। मनमाना आचरण करने से प्रवृत्त।

शुभ प्रभाव- जातक स्वाभिमानी, जादू, यंत्र-मंत्र, तन्त्र, ज्योतिष, लाटरी-शेयर आदि विषयों में रुचि रखने वाला, जातक ऐसी योजनाओं के संचालक होते हैं। जिनमें धन की वृ(अचानक होती है।

१०. **पातक कालसर्प योग**- दशम एवं चतुर्थ भावों में निर्मित इस योग से जातक अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् जीवन में उन्नति करता है। आयु के उत्तरार्ध भाग में ही सफलता मिलती है। पिता के सुख में कमी करता है। झूठे आरोप झेलने पड़ते हैं।

शुभ प्रभाव- जातक उच्च प्रतिष्ठित संस्थान में महत्वपूर्ण पद प्राप्त करता है तथा अपनी योग्यता के बल पर भूमि, आवास, स्त्री आदि सुखों को प्राप्त करता है।

११. **विपाक्त कालसर्प योग**- एकादश व पंचम भाव से सम्बन्धित कालसर्प योग के कारण जातक पिता या संतान पक्ष के कारण चिन्तित, गुप्त आर्थिक, परेशानियाँ, प्रथम कन्या संतान की संभावना, पारिवारिक सुख एवं सहयोग में कमी, अत्यधिक परिश्रम करने पर भी धन लाभ के सम्बन्ध में असन्तोष बना रहता है।

शुभ प्रभाव- लाटरी, सट्टा, शेयर द्वारा आकस्मिक धन लाभ, अनेक यात्राओं द्वारा धन लाभ एवं ऐश्वर्य प्राप्त करता है। अरिष्टनाशक एवं सौभाग्य में वृ(कारक होता है।

१२. **शेषनाग कालसर्प योग**- द्वादश भाव में राहु होने पर यह योग बनता है। जातक को शिर, नेत्रादि के कारण कष्ट, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला धन का वृथा खर्च अधिक होता है। कुसंगति के कारण व्यसन आदि का भी शिकार हो सकता है।

शुभ प्रभाव- यदि व्ययेश शुभ भावस्थ हो तो जातक अपने जन्म स्थान से दूर जाकर भाग्योदय प्राप्त करता है। आध्यात्म, धार्मिक, लेखन, ज्योतिष के क्षेत्र में विशेष रूचि रखेगा।

कालसर्प का मुख राहु होता है। यदि राहु बली हो तथा उस पर शुभ और योगकारक ग्रहों का प्रभाव हो, तो कालसर्प योग जातक को अतीव उन्नति देता है। किसी भी जन्मकुण्डली में उच्चस्तरीय सफलता के लिए केवल किसी एक योग पर निर्भर रहना शास्त्रासम्मत नहीं है। उच्चस्तरीय सफलता के लिए लग्न का बली और शुभ प्रभाव में होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि लग्न बली हो, तो जातक की कुण्डली में विद्यमान् सामान्य शुभ ग्रहयोग भी जातक को अच्छी प्रगति देते हैं। इसके विपरीत लग्न के निर्बल होने पर जातक की कुण्डली में विद्यमान ग्रहयोग उच्चस्तरीय सफलता नहीं दे पाते। कालसर्प योग के शुभफलदायक होने की स्थिति में लग्न की बलवत्ता को ध्यान में रखना भी आवश्यक है। कालसर्प योग जिन स्थितियों में विशेष शुभ फलदायक सि(होता है, उसके लिए योग की स्थिति एवं कुण्डली में विद्यमान् योग कारक ग्रहों के परस्पर सम्बन्ध को अवश्य देखना चाहिए।

जिन लोगों की कुण्डलियों में यह योग मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या और मीन राशिस्थ राहु से बनता है, उनके मन-मस्तिष्क और हृदय में गुह्य ज्ञान, अंतर्दृष्टि और प्रेरणाओं का अनूठा संगम होता है। जो उनके जीवन में उत्कर्ष के व्यापक अवसर प्रदान करते हैं। ऐसे मनुष्यों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी होता है। वे समाज कल्याण हेतु तत्पर, व्यवहार-कुशल और त्याग करने की भावना रखते हैं। उनकी लयव(और यर्थाथवादी सोच होती है। लोगों में अपने नाम के प्रचार से उनके अहं और मन को संतुष्टि मिलती है।

(1)**उदाहरणार्थ**- (१) लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की कुण्डली में कालसर्प योग के बावजूद वे दूरदर्शिता और दृढ़ व स्थिर मानसिकता के व्यक्तित्व से लव् एक महान् पुरुष थे। उनके जैसा गृहमंत्री आज तक नहीं हुआ। उनकी कुण्डली में सप्तम भाव में बुध आदित्य योग एवं धन भाव में रुचक और शश योग हैं। लग्नेश बली है। जिनकी कालसर्प के द्वारा कोई हानि नहीं हुई।

अनेक उच्चस्तरीय एवं सुप्रसि(व्यक्तियों की कुण्डली में कालसर्प योग देखने में आया है। उदाहरणार्थ- सचिन तेंदुलकर, धीरू भाई अम्बानी, सुश्री लता-मंगेशकर, हिटलर, मोरारजी देसाई इत्यादि।

(2) **उदाहरण कुण्डली**- (२) संलग्न कुण्डली प्रसि(उद्योगपति स्व. धीरू भाई अम्बानी की है, जिनके जन्मांग में समस्त ग्रह तृतीय के राहु तथा नवम के केतु के बीच हैं। कालसर्प योग का मुख तृतीय भाव में शनि की राशि तथा राहु के नक्षत्र में है। तृतीयेश शनि द्वितीय भाव में स्वगृही है। इस प्रकार कालसर्प का मुख राहु बली तथा शुभ स्थिति में है एवं उसका सम्बन्ध लग्न भाव से है, जो कि आर्थिक जगत में शीर्ष सफलतादायक है, इस प्रकार कालसर्प का मुख राहु धन उगलता रहा। तृतीय भाव में इसकी स्थिति स्वपराक्रम को बढ़ाने वाली तथा जुझारू प्रवृत्ति की द्योतक है। इस कालसर्पयोग का शुभ फल लग्न की बलवत्ता ने बहुत बढ़ा दिया। लग्नेश गुरु भाग्येश सूर्य के नक्षत्र में स्थित होकर दशम भावस्थ होना, लग्न में भाग्येश सूर्य और उसका मित्र चन्द्रमा स्थित है। लग्नेश और भाग्येश का नक्षत्र सम्बन्ध तथा भाग्येश की लग्न में स्थिति लग्न को बली और इन्हें प्रबल भाग्यवान बनाया। इस प्रकार श्री अम्बानी की कुण्डली में उच्च सफलतादायक ग्रह योग विद्यमान थें, जिन्हें कालसर्प योग ने और भी ऊँचाईयों तक पहुँचाया।

(3) **उदाहरण कुण्डली**-(३) संलग्न जन्मांग प्रसि(अभिनेता अनिल कपूर की है, जिन्होंने फिल्मी जगत में अच्छी पहचान बनाई। इनका जन्म कुम्भ लग्न के मिथुन नवांश में हुआ था। कर्कोटक नामक, अष्टमस्थ राहु तथा द्वितीयस्थ केतु के मध्य सभी ग्रह बैठे हैं। लग्नेश शनि एकादश भाव में तथा द्वितीयेश ;वाणी का कारकद्ध गुरु बुध के साथ है। कला का कारक शुक्र भाग्य भाव में स्वगृही है, जिसने कपूर जी को वास्तव में कलाकार बनाया। स्पष्ट है, अष्टम भाव में कन्या राशिस्थ राहु ;नवांश में भाग्य स्थानद्ध कोई अशुभ/अरिष्ट प्रभाव प्रदान नहीं कर रहा। यद्यपि अष्टमस्थ राहु उत्तम फल नहीं देता परन्तु शुभ-अशुभ परिणाम राशि, बल तथा अन्य ग्रहों की दृष्टि के अनुसार प्रदान करता है। अतः कर्कोटक नामक कालसर्प योग से भय में न आएँ, यदि अष्टमस्थ राहु शुभ होगा तो निश्चय ही लाभकारी परिणाम देगा।

वास्तव में राहु वायुकारक, छाया व अशुभ ग्रह होते हुए भी प्राणी को दुःखों की अग्नि में तपाकर उसे कुन्दन की भान्ति निखारने एवं परिश्रौत करने का कार्य करता है। दुःखों से व्याकुल होकर ही मनुष्य प्रभु की शक्तियों का स्मरण करने लगता है।

वल्लभ भाई पटेल
31 अक्तू. 1875 ई.
6-00 सायं, लगभग
गुजरात

2	12 रा.	3	1
11	10 मं. श.	4	7 सू.बु.शु. गु.
5	9	6 के.	8 चं.

स्व. धीरू भाई अंबानी
28-12-1932
प्रातः 6-31 बजे
जन्मस्थान-गुजरात

10 श.	8 गु.	9 बु.	11 रा.
सू. चं.	7	12	6 गु.
3	5 मं. के.	2	4

अनिल कपूर
24-12-1959
12-00 दोपहर
मुम्बई



संक्षिप्त वैतरणी दान-पितृ के लिए-

भगवानक स्मरण कय शुद्ध भय तेकुशा, फूल, अक्षत लय ॐ कृष्णगव्यै नमः तीन बेरि गायपर, कुशपर ॐ ब्राह्मणाय नमः तीन बेरि, तकरा बाद गाय के जल सँ सिक्त कय पढ़ी- ॐ उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम्। दातारं त्रायते यस्मात्तस्माद्वैतरणी स्मृता।। ॐ यमद्वारे महाघोरे कृष्णा वैतरणी नदी। तां सन्तर्तुं ददाम्येतां कृष्णां वैतरणीं च गाम्। ईमन्त्र पढ़ी ओकरा बाद तेकुशातिलजल लय संकल्प करी- ओमद्य अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः यमद्वारस्थित- वैतरणी नदी- सुखसन्तरणकाम इमां गां रुद्रदैवतां यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे। गौदान ग्रहण केनिहार ओं स्वस्ति कहथि। फेरि तेकुशातिलजलद्रव्यादि लय दक्षिणा कराथि- ओमद्य कृतैतत्कृष्णगवीदान-प्रतिष्ठार्थमेतावद् द्रव्यमूल्यकहिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे। ओकरा बाद दान ग्रहण कयनिहार व्यक्ति ओं स्वस्ति कहि दक्षिणा ग्रहण कराथि। शूद्र के ओं के स्थान पर नमः पढ़ावक चाही। गायक अभाव में एतावद् द्रव्य मूल्यक कृष्ण गव्यै नमः पढ़ी। (माता के लेल संकल्प में मात्र गात्रस्य स्थान में गोत्रायाः आ पितुः अमुक शर्मण क स्थान में मातुः अमुकी देव्याः होयत शेष सब कर्म यथावत होयत।)

दशगात्र(दशदिन) पिण्डदान विधिः-

रात्री दाहश्चेत्तर्हि न रात्री पिण्डदानं भवति अग्रिम दिवसे एव पिण्डद्वयं देयम्। क्रमः-१.ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः शिरः पूरक प्रथमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। २.ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः कर्णाक्षिनासापूरक द्वितीय पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ३.ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः गलांसभुजवक्षः पूरक तृतीयपिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ४.ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः नाभिलिंगगुदपूरक चतुर्थः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ५.ओं अद्य अमुक-गोत्र- पितरअमुकप्रेत एषः जानुजंघापादपूरक पञ्चमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ६.ओं अद्य अमुक गोत्र पितरअमुकप्रेत एषः सर्वमर्मपूरकः षष्ठः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ७.ओं अद्य अमुक-गोत्र-पितरअमुकप्रेत एषः सर्वनाडीपूरकः सप्तमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ८.ओं अद्य अमुक-गोत्र- पितरअमुकप्रेत एषः नखदन्तलोमादिपूरक अष्टमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। ९.ओं अद्य अमुक-गोत्र- पितरअमुकप्रेत एषः वीर्यपूरकः नवमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। १०.ओं अद्य अमुक-गोत्र-पितरअमुकप्रेत एषः पूर्णतत्तृप्तताक्षुद्विपर्यय पूरकः दशमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

संक्षिप्त दाह-संस्कार-विधि--

स्नान कय नव श्वेत वस्त्र धारण कय पूर्वमुँह बैसि हाथ में तेकुशा लय नव माँटिक पात्र में जल भरि शव के दक्षिण मुँह कय- ॐ गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः। कुरु क्षेत्रञ्च गंगाञ्च यमुनाञ्च सरिद्वराम्। कौशिकीं चन्द्रभागाञ्च सर्वपापप्रणाशिनीम्। भद्रावकाशां सरयूं गण्डकीं तमसां तथा धैनवञ्च वराहञ्च तीर्थं पिण्डारकम् तथा। पृथिव्यां यानि तीर्थानि चत्वारः सागरास्तथा। मनसँ जल में तिर्यक ध्यान करैत ओहि जल सँ शवके स्नान करा नूतन वस्त्रद्वय, यज्ञोपवीत, पुष्प, चन्दनादिसँ अलंकृत कय चितापर कुश ओछा पुरुष के अधोमुख(नीचामुँह) स्त्री के उपर मुँह(चित्त) उत्तर शिरकय सुतावी तकरा बाद अपसव्य कय दक्षिण मुँह भय वाम हाथ में सात बन्धन सँ बान्हल उल्का ग्रहण करी-- ॐ देवाश्चाग्निमुखाः सर्वे कृतस्नपनं गतायुषमेनं दहन्तु। मनमे ध्यान करैत- ॐ कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता। मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्। धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान्व गच्छतु। ई दूनु मन्त्र पढि तीन बेर शव के प्रदक्षिणा करैत जरैत उल्का सँ मुँह में मुखाग्निदी, तकरा बाद खढ़ आ काठादि सँ चिता जरावी आओर अन्त में एक कबूतरक बराबरि अवशेष बचावी, तकरा बाद एक प्रदेशक बराबरि सात टा काठी लय जरैत चित्ता में पाछाँ मुँह - 'ॐ क्रव्यादय नमस्तुभ्यं' ई मन्त्र पढि सातो काठी चित्तापर फेकि दी। तकरा बाद- 'ॐ अहरहर्नयमानो गामश्वं पुरुषं पशुम्। वैवश्वतो न तृप्यति सुराररिव दुर्मतिः।' ई मन्त्र पढी यमगाथा गबैत(यमक गुणगान) बच्चा सब के आगा वृद्ध लोकनि ओकर पाछाँ-पाछाँ पैर सँ पैर नहि सटय(ऐंरी-गोरी) एहि प्रकारें जलाशयादि जाकय स्नान करथि - ॐ अद्य अमुक गोत्र अमुकप्रेत एष तिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। एहिं मन्त्र के पढि तिलांजलि देवाक चाही। स्त्री लोकनि लेल- ॐ अद्य अमुकगोत्रे अमुकप्रेते इ पढवा क चाही। भीजले वस्त्र धारण कयने कर्त्ता सहित सभ गोटें कर्त्ताक दुआरि पर जाय ॐ लौहवद् दृढकायोस्त ई मन्त्र सँ लौह स्पर्श करी तकरा बाद ॐ अश्मेव स्थिरो भूयासम् ई मन्त्र सँ पाथर स्पर्श तकर बाद ॐ अग्निर्नः शर्म यच्छतु अग्नि स्पर्श, तकर बाद जलक स्पर्श कय तीत नीमक पात(मिर्च) आदि खाय अपन व्यवहारक अनुसारें अपना घर जयवाक चाही

आंगनमे अन्तिम संस्कार-

आंगनमे तुलसी लगाइक गोबरसँ ठाँव कए गंगाजलसँ स्थान कें सींचि कुशक आसन पर मरण भेनिहार व्यक्तिकें उत्तर शिर कए सुताए वैतरणीदान कराओल जाइत अछि। गाय व गायके अभाव में ओकर मूल्य दान कएल जाइतअछि। दानक विधि स्थानीय पण्डितक अनुसार करी। वाराहपुराणक एहन वचन सुनैत छी- कण्ठस्थानगो जीवो भीतो विभ्रान्तमानसः। ज्ञात्वा तु विह्वलं तत्र शीघ्रं निस्सार्यते गृहात्। कुशास्तरणशायी स दिशः सर्वास्तु पश्यति।।

अशौचसंकरविचार(एक अशौच के मध्य मे द्वितीय अशौच विचार):-

ब्राह्मणों को सम्पूर्ण अशौच के बीच में ५ दिन तक,क्षत्रियों को ६दिन तक,वैश्यों को७दिन तक एवं शूद्रों को१५दिन तक यदि सजातीय(परिवार के सात पुस्त तक का किसी और का भी मृत्यु हो जाए) द्वितीयसम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो प्रथमाशौच की शुद्धि के साथ-साथ दोनो की शुद्धि तथा साथ-साथ श्राद्ध होता है। यदि सम्पूर्णाशौच के मध्य ब्राह्मण को ६ से ९ दिन तक, क्षत्रियों को ७से ११दिन तक,वैश्यों को८ से १४दिन तक तथा शूद्रों को१६से२९दिन तक के बीच में सजातीय(परिवार)द्वितीय सम्पूर्णाशौच (दशदिनात्मक अशौच)प्राप्त हो तो द्वितीयाशौचान्त होने पर दोनों की शुद्धि तथा श्राद्ध साथ-साथ होता है। यदि क्षौरकर्म के दिन५६दण्ड रात्रि के अन्दर सजातीयशौचान्तर प्राप्त हो तो द्वितीय मृत्यु के तीसरे दिन दोनों का क्षौर तथा चौथे दिन श्राद्ध होता है।

यदि क्षौरकर्म के दिन५६दण्ड के बाद द्वितीय सम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो द्वितीय मृत्यु के चौथे दिन दोनों का क्षौर तथा पाँचवें दिन श्राद्ध होता है। आद्यश्राद्धसंकल्पानन्तर द्वितीय तादृशाशौच प्राप्त हो तो आद्य श्राद्ध हो जाता है परञ्च सपिण्डन,द्वितीय के आद्य श्राद्धदिन होता है। सपिण्डनदिन,संकल्प से पूर्व द्वितीय तादृशाशौच प्राप्त होने पर द्वितीय के आद्य श्राद्धदिन सपिण्डन होना चाहिए। सम्पूर्णाशौच के मध्य में त्रिरात्राशौच तथा मरणाशौच के मध्य जननाशौच की मान्यता नहीं होती। त्रिरात्रिशौच के मध्य द्वितीय त्रिरात्राशौच हो जाय तो द्वितीय त्रिरात्राशौचानुसार दोनों की शुद्धि होती है।

कन्यामरणाशौच-

सभी वर्णो को जन्म से दो वर्ष तक सद्यःशौच। उसके बाद विवाहवधि त्र्यहाशौच। विवाह के बाद पितृगृह अथवा स्वामी के घर में कन्या मृत्यु से माता-पिता को तीन अहोरात्र अशौच एवं स्वामी के घर में विहित स्ववर्णानुसार अशौच एवं श्राद्ध।

संकल्पित व्रत अशौच में भी करना चाहिए-

व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमे तथार्चने।
आरब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम्।।

जैसाकि विष्णुपुराण का वचन है- न"न व्रतिनां व्रत"व्रतिनाम अर्थात् आरम्भित अनुष्ठान में,न व्रतः अर्थात् अशौच प्रतिरोधक नहीं होता है। व्रत,यज्ञ,विवाह और हवन,अर्चन,जप,आरम्भ कर देने पर सूतक नहीं लगता और यदि आरम्भ नहीं किया गाया हो तो सूतक लगता है। यज्ञारम्भ किसे कहे- आरम्भो वरणं यज्ञे संकल्पो व्रतजापयोः। नान्दीश्राद्धं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रिया।।(हारीतः)

अशौचव्यवस्था-

ब्राह्मण-ब्राह्मणों को जन्म से षाण्मासाभ्यन्तर शरीरान्त होने पर सद्यः शौच एवं मृत शरीर का भूमि में निक्षेपण(गाड़)देना चाहिए। सात महीने से लेकर दो वर्ष के अन्दर शरीरान्त होने पर एकाहोरात्र अशौच तथा मृत शरीर को भूमि में निक्षेपण(गाड़)करादे। तीसरे वर्ष से लेकर षड्वर्षपर्यन्त तीन अहोरात्र अशौच तथा अग्निसंस्कार,पिण्डोदक क्रिया एवं चौथे दिन ब्राह्मण भोजन। उसके बाद यज्ञोपवीत हुआ हो अथवा नहीं सबों को दशाहाशौच(दशदिन तक अशौच) एवं श्राद्ध करना शास्त्रीय विधान है। क्षत्रिय-क्षत्रियों को षाण्मासाभ्यन्तर ब्राह्मणवत्। सात मास से लेकर दो वर्ष तक दो रात्रि अशौच एवं भूमिनिक्षेपणमात्र तीन वर्ष से लेकर षड्वर्षपर्यन्त षड् अहोरात्र(६दिन)अशौच, अग्निसंस्कार एवं पिण्डोदकक्रिया उसके बाद अग्निसंस्कार, द्वादशाहाशौच एवं श्राद्ध। वैश्य- वैश्यों को जन्म से षाण्मासपर्यन्त ब्राह्मणवत्। उसके बाद दो वर्षो तक भूमि निक्षेपण एवं तीन दिन अशौच, उसके बाद षड्वर्षपर्यन्त नौ दिन तक अशौच, अग्निसंस्कार एवं पिण्डोदक क्रिया। उसके बाद सम्पूर्ण पञ्चदशाहाशौच अग्निसंस्कार एवं श्राद्ध। शूद्र- शूद्रों को षाण्मासपर्यन्त ब्राह्मणवत,उसके बाद दो वर्ष तक पाँच दिन अशौच एवं भूमिनिक्षेपण। उसके बाद षड्वर्षपर्यन्त अविवाहित मृत्यु से ५ दिन तथा विवाहित मृत्यु से द्वादशाहाशौच, अग्निसंस्कार एव पिण्डोदक क्रिया उसके बाद सम्पूर्ण तीस दिन अशौच,अग्निसंस्कार एवं श्राद्ध करना ।

रवियोग-मू.चि.

सूर्यभाद्वेदगोतर्कदिग्विश्वनखसम्मिते।
चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसंघविनाशकाः।।

सूर्य जिस नक्षत्र पर हो, उस नक्षत्र से वर्तमान चन्द्र नक्षत्र-४, ६, ९, १०, १३,२० रवि योग होता है। यह रवियोग दोष के समूह को नाश करता है।

द्विपुष्करयोग-

२,७,१२ तिथि, शनि, मंगल, रवि वार, धनिष्ठा, चित्रा,मृगशिरा नक्षत्र तीनों का जब योग हो तो द्विपुष्कर नामक योग होता है, यह द्विपुष्कर योग मृत्यु,विनाश और वृद्धि में द्विगुण फल देता है।

त्रिपुष्कर योग-

२,७,१२ तिथि, शनि, मंगल,रवि वार विशाखा, उ.फा. पू.भा.,पुन.,कृ.,उ.षा.नक्षत्र तीनों का जब योग हो तो त्रिपुष्कर नामक योग होता है, यह त्रिपुष्कर योग मृत्यु,विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है।

किसदिन क्या करें?

रविवार में कृत्य-राज्याभिषेक,उत्सव, यात्रा,नौकरी, गोक्रय - विक्रय,अग्नि सम्बन्धी कार्य,मंत्र, औषध-निर्माण, औषधभक्षण, शस्त्रसम्बन्धी कार्य,सोना,तांबा,उन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य,युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करना चाहिए। सोमवार में कृत्य- जलोत्पन्न वस्तु,रस से उत्पन्न वस्तु,शंख,मुक्ता,चांदी, उख,गुड़,चीनी,आदि भोज्यपदार्थ, वृक्षरोपण,आभूषण, गीत-नृत्य,यज्ञ,दूध- दही- घृत सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, फूल तथा अक्षरारम्भ। मंगलवार में कृत्य- सेना-सम्बन्धी,विष-सम्बन्धी,शस्त्र-सम्बन्धी, घात,संग्राम, शठता,दम्भ- पाखण्ड, धातु, सोना तथा मूंगा आदि। बुधवार में कृत्य- टेनिंग,व्यापार,अध्ययन, कला,शिल्प,खेल, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी,सोना,कॉसा, सन्धि, व्यायाम और विवाहादि कार्य। गुरुवार में कृत्य- धर्म- अनुष्ठानादि कार्य पौष्टिककर्म, विद्या,मांगल्य,सोना,गृह सम्बन्धी कर्म,वस्त्र, यात्रा, रथ आदि कार्य। शुक्रवार में कृत्य-स्त्री-सम्बन्धी,शय्या,मणि रत्न,सुगन्ध, वस्त्र,उत्सव,आभूषण, भूमि व्यापार,गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, आदि कार्य शनिवार में कृत्य-लोहा,पत्थर,सीसा, रांगा-सम्बन्धी, अस्त्र -शस्त्र,नौकरी,पापकर्म चोरी, मिथ्या, विष सम्बन्धी,आसव,गृह प्रवेश,हाथी को बझाना,दीक्षा(मन्त्र ग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करना चाहिए।

आनन्दादियोगचक्रम

योगनाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फलम्
आनन्दः	अश्विनी	मृगशिरा	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा	शतभिषा	सिद्धिः
कालदण्डः	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूर्वाभा.	मृत्युः
धूम्रः	कृतिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उत्तराभा.	दुःखम्
धाता	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा.	विशाखा	पूर्वाषा.	धनिष्ठा	रेवती	शुभः
सौम्यः	मृगशिरा	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा.	शतभिषा	अश्विनी	सुखम्
ध्वांक्षः	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूर्वाभा.	भरणी	हानिः
केतुः	पुनर्वसु	पूर्वाफा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उत्तराभा.	कृतिका	दुःखम्
श्रीवत्सः	पुष्य	उत्तराफा.	विशाखा	पूर्वाषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	सम्पत्तिः
वज्रः	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा	शतभिष	अश्विनी	मृगशिरा	हानिः
मुद्गरः	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूर्वाभा.	भरणी	आर्द्रा	नाशः
छत्रम्	पूर्वाफा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उत्तराभा.	कृतिका	पुनर्वसु	सम्मान
मित्रम्	उत्तराफा.	विशाखा	पूर्वाषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	पुष्टिः
मानसम्	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा.	शतभिष	अश्विनी	मृगशिरा	श्लेषा	सुखम्
पद्मः	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूर्वाभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	लाभः
लुम्बः	स्वाति	मूल	श्रवण	उत्तराभा.	कृतिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा.	हानिः
उत्पातः	विशाखा	पूर्वाषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा.	नाशः
मृत्युः	अनुराधा	उत्तराषा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	श्लेषा	हस्त	मृत्युः
काणः	ज्येष्ठा	अभि.	पूर्वाभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेशः
सिद्धिः	मूल	श्रवण	उत्तराभा.	कृतिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा.	स्वाति	सिद्धिः
शुभः	पूर्वाषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा.	विशाखा	शुभः
अमृतम्	उत्तराषा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	सम्मानं
मुशलम्	अभि.	पूर्वाभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	लाभः
गदः	श्रवण	उत्तराभा.	कृतिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा.	स्वाति	मूल	हानिः
मातंगः	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा.	विशाखा	पूर्वाषा.	वृद्धिः
राक्षसः	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा.	कष्टम्
चरः	पूर्वाभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	सिद्धिः
सुस्थिरः	उत्तराभा.	कृतिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा.	स्वाति	मूल	श्रवण	शुभः
प्रवर्द्धमानः	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा.	विशाखा	पूर्वाषा.	धनिष्ठा	सुखम्

वास्तु विचार

ग्रामवास.विचार–मस्तकक पञ्चलाभाय मुखे त्रीणि धनक्षयः। कुक्षौ पञ्च धनं धान्यं षट्पादे स्त्री दारिद्रता।। पृष्ठे चैक पादहानिर्नाभौ चत्वा रिसंपदः। गुह्ये चैक भयं पीडा हस्ते चैक तु कल्दनम्।। वामे चैक करे भेदो ग्राम चक्रं नरां कृतिः। पणवेश्र्जन्मनक्षत्रं ग्राम नक्षत्रः सदा।।

–ग्राम के नक्षत्र से वास पुरूष के नक्षत्र तक गिने तदनन्तर अधोलिखित चक्र

ग्रा.न.से. पु.ज.न.	५	३	५	५	६	१	४	१	१	१
अवयव	मस्तक	मुख	पेट	पेट	पैर	पीठ	नाभि	गुर्दा	दाया हाथ	वाया हाथ
फल	लाभ	धन हानि	धन धान्य	धन धान्य	स्त्री अभाव	पैर में पीड़ा	धन सम्पति	भय पीड़ा	युद्ध	मत भेद

भूमिपरीक्षण :– गृह निर्माण के पूर्व भूमि परीक्षण आवश्यक है।वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत भूमि शोधन की बहुत सी विधियां दी गयी है। किन्तु लोकव्यवहार में ये विधियां अत्यधिक प्रचलित हैं जो अधोलिखित हैं।

मध्येगृहे हस्तमितं खनित्वा सम्पूरयेत्तांशुभिराश्रुतस्य ।
सम्पूरयित्वा धिकतामुपेतःपांशुर्यदा तद्गृहमुत्तमं स्यात।।
समे समं न्यूनतरे सदेषं न कारयेत्तत्र गृहं बधितु ।

जिस भूमि पर मकान बनाना हो तो उसके बीचों बीच एक हाथ लम्बा,एक हाथ चौड़ा,एक हाथ गहरा गड्ढा खोदना फिर उसी निकली हुई मिटी से उस गड्ढे को भर देना चाहिये यदि गड्ढा भरने से मिट्टी बच जाय तो उत्तम, बराबर हो जाय तो सम और मिट्टी कम हो जाय तो निषिद्ध होता है।इस भूमि पर मकान नहीं बनवाना चाहिये।

तदा निशादौ तत्कृत्वा पानीयेन प्रपूरयेत्।
प्रातर्दृष्टे जले वृद्धिः समः पौ व्रणे क्षयः।।

पूर्व विधि से गढ्ढा खोदकर पानी से सायं काल में पूर्णरूप से भरकर प्रातःकाल देखने पर यदि जल दिखाई पड़े तो शुभ, केवल कीचड़ बचा रहे तो सम और मिटी फट जाय तो भूमि हानिकारक होती है। वास्तुरत्नाकर के अनुसार जिस भूमि पर ओषधियाँ, वृक्ष, लतायें तथा हरी भरी घासें हों एवं भूमि समतल हो.ऐसी भूमि निवास के लिये प्रशस्त मानी गयी है।

गजपृष्ठादि भूमि विचार :– गजपृष्ठ जिस स्थान में दक्षिण, पश्चिम,नैऋत्य और वायव्य कोण की ओर भूमि ऊँची हो उसको गज पृष्ठ कहा गया है। उस भूमि पर घर बनाकर रहने से धन-धान्य, संतान,आयु की वृद्धि होती है।

कूर्मपृष्ठ :जहां की भूमि मध्य में उँच हो और चारों दिशाओं में झुकाव हो,वह कूर्मपृष्ठ भूमि कहलाती है। उस स्थान पर वास करने से नित्य उत्साह, धन-धान्य, संतान,आयु, आरोग्य, यश और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है।

दैत्यपृष्ठ:ईशानकोण,पूर्व और अग्निकोण में भूमि उच्च हो और पश्चिम में नीच हो तो वह दैत्यपृष्ठ कहलाती है। उसमें निवास करने से अशुभ फल मिलता है।

नागपृष्ठ :- जहाँ दक्षिण और उत्तर दोनों दिशा में भूमि उच्च हो, बीच में नीच हो तो वह भूमि नागपृष्ठ कहलाती है। यहाँ वास करने से सभी प्रकार की हानि होती है।

चारों वर्णो के आधार पर भूमि विवेचन:-

मधुरा दर्भसंयुक्ता घृतगन्धा च या मही। अन्तरप्रवणा ज्ञेया ब्राह्मणानां च सा शुभा।। रक्तगान्धा कषाया च शरवीरेण संयुता। रक्ताप्राक्प्रवणज्ञेया क्षत्रियाणां च सा मही।। दक्षिण प्रवणा भूमिर्याऽम्ला दूर्वाभिरन्विता। अन्नगन्धा च वैश्यानां पीत वर्णा प्रशस्यते ।। पश्चिमप्रवणा कृष्णा विकुण्ठा काश संयुता। मद्यगन्धा मही धन्या शूद्राणां कटुका तथा।।

स्पष्टार्थ चक्र

ब्रह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्ण
उत्तरप्लव	पूर्वप्लव	दक्षिणप्लव	पश्चिमप्लव	प्लव
मधुर	कषाय	अम्ल	कटु	रस
घृतगन्ध	रक्तगन्ध	अन्नगन्ध	मद्यगन्ध	गन्ध
दर्भयुक्त	शपतयुत	बूवयुक्त	कशयुक्त	
श्वेतवर्ण	रक्तवर्ण	पीतवर्ण	कृष्णवर्ण	वर्ण

सूर्य-चन्द्र वेध विचार:-चन्द्र वेधी मकान एवं जलाशय सूर्य वेधी शुभ होता है। हद या वाटिका सूर्य एवं चन्द्र वेधी दोनों से शुभ होता है। पूर्व पश्चिम लम्बा मकान सूर्य वेधी और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि एवं सूर्यवेधी मकान में धन- धान्य एवं संतति की क्षति होती है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेध ी दोनो प्रशस्त माना गया है। देवालय आदि के लिये सूर्यवेध और चन्द्रवेध का विचार नहीं होता (वास्तुरत्नाकर)

पिण्ड ज्ञान– मकान की लम्बाई X चौड़ाई = मकान का पिण्ड होता है। **भवन के आय आदि का विचार**:- गृहपिण्ड को नव स्थानों में रखकर क्रम से ८।६।६।८।३।८।८।४।८ इन अंको से अलग अलग दो २ का गुणा करके गुणनफल मे क्रमश-८।७।६।१२।८ ।२७। १५। २७।१२०। इन अंको से भाग देने पर जो शेष बचे वह क्रम से आय, वार, अंश, द्रव्य, ऋण, नक्षत्र, तिथि,योग और आयु होती है। कम आयु वाला मकान शुभ नहीं होता है।

१.आय:- ध्वज ,धूम्र ,सिंह ,श्वान ,वृष ,खर ,गज ,उष्ट्र अथवा काक ये आठ प्रकार के होते हैं इसमें विषम आय १, ३,५,७ हो तो शुभ एवं सम हो २,४,६,८ तो अशुभ होता है।

वार तथा अंश-सूर्य मंगल के वार राशियां और अंश भैषादिवनवांश सर्वदा अग्नि भय करने वाले होते है। तथा शेष ग्रहो का वारादि अभीष्ट सिद्धि दायक होता है।

द्रव्य या धन:-यदि ऋण की अपेक्षा धन अधिक हो तो गृह शुभ होता है। ऋण अधिक हो तो अशुभ होता है।

नक्षत्र-गृह और गृह स्वामी का नक्षत्र एक हो तो गृह स्वामी की मृत्यु होती है।

तिथि :शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ करके अमान्त तक ३० तिथियां होती है, उनमें से ४,६,१४,१६,२४,२७,२६,३० तिथियां अशुभ होती हैं तथा शेष शुभ होती हैं।

योग :-अतिगण्ड, शूल,गण्ड, व्याघात , वज्र, व्यतीपात, परिघ एवं वैधृति ये योग गृह में वर्जित है।

आयु :- दीर्घायु मकान शुभ होता है एवं अल्पायु अशुभ होता है। आयु विहीने गेहे तु दुर्गानं प्रजायते।

राशि :वासकर्ता का नाम राशि से २,६,९,१०,११ स्थानो में ग्राम की राशि हो तो वास कर्ता के लिये वह ग्राम, मुहल्ला शुभ एवं १,३,४,७,८ औरं१२ स्थानो में हो तो अशुभ होता है।

भवन के लाभ आदि का विचार :-अपनी २ वर्ग संख्या को द्विगुणित कर उसमें ग्रामादि वर्ग संख्या को जोड़कर उसमें ८ का भाग देने से जिसका शेष अधिक हो वह ऋणि होता है। अतः वासकर्ता की काकणी से गाँव,मुहल्ला या शाहर की काकणी हमेशा अधिक होनी चाहिये।

स्पष्टार्थ-चक्र

क्र	वर्ग	नामाक्षर	वर्गेश	वर्ग संख्या	वर्ग की दिशा या कोण
१	अवर्ग	अ,इ,उ,ए,ऐ,ओ,औ	गरूण	१	पूर्व दिशा
२	कवर्ग	क,ख,ग,घ,ङ.	मार्जार	२	अग्नेय कोण
३	चवर्ग	च,छ,ज,झ,ञ	सिंह	३	दक्षिण
४	टवर्ग	ट,ठ,ड,ढ,ण	श्वान	४	नैर्ऋत्य कोण
५	तवर्ग	त,थ,द,ध,न	सर्प	५	पश्चिम
६	पवर्ग	प,फ,ब,भ,म	मूषक	६	वायव्य कोण
७	यवर्ग	य,र,ल,व	मृग	७	उत्तर
८	शवर्ग	श,ष,स,ह	मेष	८	ईशान कोण

मण्डलानयन:-पिण्ड की लम्बाई + चौड़ाई में नव से भाग देने पर क्रम से १.दाता २.भूपति ३.क्लीव ४.चोर ५.पण्डित ६.भोगी ७.धनाढ्य ८.दरिद्र ६.कुबेर ये नव प्रकार के मण्डल होते है। इनका फल नामके सदृश होता है।

मण्डलेशानयन:-स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुतम्। द्विगुणं चाष्टभिर्भक्तं मण्डलाधिप उच्यते।। इन्द्रो विष्णुर्यमो वायुः कुबेरो धूर्जटिस्तथा। विधाता विघ्नराजश्च मण्डलेशाः प्रकीर्तिताः।। इन्द्र सौख्यं यशो विष्णुर्यमो दुःखं निरन्तरम्।वायश्चोच्चाटनं कुर्यात् कुबेरो धनदो भवेत्।। ६ धूर्जटिः कलहो नित्यं धाता सौख्यप्रवृद्धिदम्। सर्वसिद्धिं गणाधीशः फलमुक्तं मनीषिभिः।।

स्पष्ट चक्र

१	२	३	४	५	६	७	८	शेष
इन्द्र	विष्णु	यम	वायु	धन	महादेव	विधाता	गणेश	देव
सुखद	यश	दुःख	उच्चाटन	कुबेर	कलह	सुखशान्ति	सर्वसिद्धि	फल

आँगन विचार:आँगन की लम्बाई चौड़ाई को आठ से गुणा करके नव से भाग देने पर क्रम से १.तस्कर २.भोगी ३.पण्डित ४.दाक्षा ५.नृपति ६.नपुंसक ७.कुबेर ८. दरिद्र ६.भयदाता ये नव प्रकार के आँगन होते हैं। इनका फल नाम के समान होता है। बीच में आँगन ऊँचा और चारो तरफ नीचा शुभ फल दायक होता है। इसके विपरीत होने पर सन्तान नाशक होता है।

राहु दिशा विचार-देवालय,जलाशय और मकान के नीव खोदते समय राहु की दिशा का विचार आवश्यक होता है।

देवालये गेहे विधौ जलाशये राहोर्मुखं शम्भुदिशोर्विलोमतः।
मीनार्कः सिंहार्कः मृगार्कतस्त्रिभेखाते मुखात्पृष्ठविदिक्शुभाभवेत्।।

नींव या जलाशय आदि खोदते समय राहु के मुख भाग को छोड़कर पृष्ठ भाग से खोदना शुभ होता है।

कक्ष विवेचनं मुहूर्त चिन्तामणौ :-

स्नानाग्निपाकशयनास्त्रभुजश्च धान्यभांडारदैवतगृहाणि च पूर्वतःस्युः।
तन्मध्यततुमथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासाख्यरोदनरतौषध सर्वधाम्।।

स्नान कक्ष :-वास्तुशास्त्र के अनुसार स्नान घर बाथरूम भवन के पूर्व में होना चाहिये। स्नान घर में गिजर बाल सुखाने की मशीन आग्नेय कोण में स्थापित करना चाहिये। कक्ष के फर्श की ढाल उत्तर दिशा या पूर्व दिशा में रखनी चाहिये। शौचालय स्नान कक्ष के अन्दर नहीं होना चाहिये। किन्तु देशकाल के अनुसार स्नान कक्ष में शौचालय रखना हो तो नैर्ऋत्य कोण व दक्षिण दिशा के मध्य तथा नैर्ऋत्य कोण व पश्चिम दिशा के मध्य में बनवाना चाहिये। नल फव्वारा इत्यादि उत्तर पूर्वी क्षेत्र में,हाथ साफ करने के लिये स्थान पश्चिम दिशा में होना चाहिये। यदि कपड़े धोने की मशीन स्नान घर में रखनी है तो केवल दक्षिण पूर्व कोने में रखनी चाहिये।

भोजनालय :- इसके लिये सबसे उत्तम स्थान भवन का अग्नेय कोण में होता है। यह सम्भव न हो सके तो दूसरा स्थान अग्नेय कोण या पूर्व के मध्य में रखना चाहिये। भोजनालय में शुद्धजल हेतु नल ईशान कोण में व पूर्व दिशा के मध्य में गैस सिलेण्डर व गैसचूल्हा अग्नेय कोण में, खाद्यान्न भण्डार पूर्व दिशा में बरतन आदि दक्षिण वायव्य दिशा में रखना चाहिये। भोजन कक्ष पश्चिम दिशा में बनवाना चाहिये। अगर भोजनालय में ही भोजन करना है तो पश्चिम दिशा में उत्तम स्थान माना जाता है। भण्डार रूम स्टोर रूम वायव्य में उत्तम होता है।

शयन कक्ष :-गृह स्वामी का शयन कक्ष दक्षिण व पश्चिम में होना चाहिये। सर्वदा पूर्व या दक्षिण की तरफ शिर करके सोना चाहिये। प्राक्शिरःशयने विद्याद् धनमायुश्च दक्षिणे।
पश्चिमे प्रवला चिन्ता हानि मृत्युरथोत्तरे।।

पूजाघर :-ईशान कोण में देवताओं का वास होता है। इसलिये ईशान में पूजा घर शुभ होता है। पूजा के समय उत्तर दिशा या पूर्वदिशा की तरफ मुख होना चाहिये। पूजा घर में शयन नहीं करना चाहिये। स्थानाभाव में यदि शयन करना हो तो पूजा स्थल पर लाल परदा डाल कर रखें। हवन आदि की व्यवस्था अग्नि कोण में करना चाहिये। पूजा की दीवार एवं फर्श सफेद या हल्के पीला रंग का होना चाहिये। नैऋत्य कोण में अस्त्रशस्त्र कक्ष, अग्नि कोण में बिजली, जनरेटर अर्थात् ऊँर्जा से सम्बन्धित कक्ष, उत्तर दिशा में कोषाघर, वायव्य में पशु गृह, अग्निकोण तथा पूर्व दिशा के मध्य में घृत दधिमथन आदि का कक्ष उत्तर पश्चिम में आतिथि कक्ष या सामान्य कक्ष, नैऋत्य पश्चिम में अध्ययन कक्ष, वायव्य उत्तर में रति कक्ष, ईशान कोण मे चिकित्सा कक्ष, एवं नैऋत्य कोण में प्रसुति कक्ष बनवाना चाहिये।

द्वार विवेचन :-मकान की लम्बाई जिस दिशा में द्वार बनाना हो उस दिशा की लम्बाई बरावर-बरावर नव ६ भाग करके पाँच भाग दाहिने और तीन भाग वायें की तरफ छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिये।

शिलान्यास:पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अंदरपूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिये, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिये।

गृहारम्भे वास्तु पुरूष स्थिति ज्ञानम -गृहारम्भ की तिथि संख्या में ४ जोड़कर दूना करके उसमें गृहपति के नामाक्षर संख्या को जोड़कर ३ का भाग देना,यदि १ शेष बचे तो स्वर्ग में, २ शेष बचे तो पाताल में एव ० शून्य शेष बचे तो मृत्युलोक में वास्तु पुरूष का निवासी होता है। स्वर्ग एवं पताल में वास्तु पुरूष का निवास होने पर लाभ एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा मृत्युलोक में निवास होने पर कष्टदायक एवं मृत्युदायक होता है।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने काब्रह्मा के मन्दिर के बगल में तथा वि णु,सूर्य,शिव-मन्दिर के सामने, जैन-मन्दिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

वास्तुदोष निवारण के उपाय:१.घर में वास्तुदोष होने पर उचित यही है कि उसे यथा संभव वास्तुशास्त्र के अनुसार ठीक करके ध्यान रहे निर्मित मकान का अधिक तोड़ फोड़ करने से वास्तुभंग दोष लगता है, ऐसी स्थिति में उसे बेंच कर दुसरा मकान बनाकर रहना उचित होता है। ऐसा संभव न हो सके तो वास्तुदोष के निवारणार्थ वर्ष में कम से कम एक बार नौराति में दुर्गासप्तशती का पाठ, श्रीरामचरितमानस का पाठ अखण्ड कीर्तन या भागवत यज्ञ आदि अवश्य करें। २.अमावस्या तिथि को गाय के उपले एवं समी की लकड़ी तिल,चावल,जौ,शक्कर,गुग्गुल ,जटामाशी तथा चन्दन चूर्ण मिलाकर गायत्री मन्त्र द्वारा ११०० आहुति करने से वास्तुदोष दूर हो जाता है। यह वर्ष में एक बार करना चाहिये। घर में तुलसी का पौधा लगाने से गृह में सुखशान्ति रहती है।

मिथिला पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक

१. अपराजिता पंचांग
२. वैदेहीकोष पंचांग(मिथिला पंचांग छोटा)
३. वैदेही कैलेण्डर (जनवरी से)
४.मिथिलादेशीय श्रीसत्यनारायणपूजापद्धति
५.मिथिलादेशीय दुर्गापूजनपद्धति
६.श्यामापूजापद्धति
७.नवरात्रपूजन पद्धति
८.लक्ष्मीपूजन-सरस्वतीपूजन पद्धति
९.छन्दोग-वाजसनेयि विवाह पद्धति
१०.छन्दोग-वाजसनेयि उपनयन पद्धति
११.छन्दोग-वाजसनेयि श्राद्धपद्धति
१२.छन्दोग-वाजसनेयि सदाचार पद्धति
१३.सन्ध्या तर्पण छन्दोग आ वाजसनेयि
१४.छन्दोग-वाजसनेयि एकोदिष्ट पद्धति
१५.श्राद्धपद्धति वाजसनेयि आ छन्दोग
१५. मधुश्रावणीकथा
१६. मिथिलाक वार्षिक पावनि तिहार
१७. गीतनाद, व्यवहार गीत, संस्कार गीत,
१८.विद्यापति गीत, विद्यापति भजन।
१९.गृहारम्भ-गृहप्रवेश पूजन पद्धति(यन्त्रस्य)

अथ एतद् सत्तदशत्तमे नूतनतिथिपत्रे मैथिलनिबन्ध-सम्मतसमयशुद्धिव्रत-पर्वविशिष्ट-योग-प्रभृति विषयान् संरस्य समयशुद्धौ विहित-मुहूर्त्तानुसारं विवाहोपनयन-देवादिप्रतिष्ठा-द्विरागमनं-मुण्डनकर्णवेध-यात्रागृहारम्भः- प्रवेशप्रभृति- दिनानि सन्निवेशितानि। तानि च ज्योतिषशोधकेन्द्रस्य इन्द्रजाल(इन्टरनेट) माध्यमेन समायोजित चैत्रशुक्लपक्ष पूर्णिमातिथि मंगलवासरे(२७.०४.२०२१)दिवसीय पण्डित सभयानुमोदितानि। अपि च पञ्चाङ्गेऽस्मिन् वैशिष्ट्यमायातुं स्वकीयाः सम्मतीः संस्कार- प्रकारांश्च सहर्षं प्रेषयन्तु सुधीवराः।

अन्ते चात्र कण्टकजन्यदोषाद् बुद्धिभ्रमदोषाद्वा या अशुद्धयस्ताः पूर्वापरसन्दर्भमवलम्ब्य स्वयमेव संशोध्य व्यवहरन्तु गुणैकपक्षपातिनो विद्वांस इति।

निवेदयतिः- पं.श्रीअजय मिश्रः
मो.९२९९९२४५९८

• यज्ञोपवीत धारण मन्त्र–

• वाजसनेयि-ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

• छन्दोग- ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वोपवीतेनोपनह्यामि

• जीर्णयज्ञोपवीतत्याग मन्त्रः-ॐ एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया, जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्।

• दुर्वाक्षतमन्त्र– ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णूरथेष्ठाः सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।

१४२९ साल के एकादशी

कृष्ण पक्ष			शुक्लपक्ष		
४	अगस्त	बुध	१८	अगस्त	बुध
२	सितम्बर	गुरु	१७	सितम्बर	शुक्र
२	अक्टूबर	शनि	१६	अक्टूबर	शनि
१	नवम्बर	सोम	१५	नवम्बर	सोम
३०	नवम्बर	मंगल	१४	दिसम्बर	मंगल
३०	दिसंबर	गुरु	१३	जनवरी	गुरु
२८	जनवरी	शुक्र	१२	फरवरी	शनि
२७	फरवरी	रवि	१४	मार्च	सोम
२८	मार्च	सोम	१२	अप्रैल	मंगल
२६	अप्रैल	मंगल	१२	मई	गुरु
२६	मई	गुरु	१०	जून	शुक्र
२४	जून	शुक्र	१०	जुलाई	रवि

१४२९ साल के त्रयोदशी

कृष्ण पक्ष			शुक्लपक्ष		
५	अगस्त	गुरु	२०	अगस्त	शुक्र
४	सितम्बर	शनि	१८	सितम्बर	शनि
४	अक्टूबर	सोम	१८	अक्टूबर	सोम
२	नवम्बर	मंगल	१६	नवम्बर	मंगल
२	दिसम्बर	गुरु	१६	दिसम्बर	गुरु
३१	दिसंबर	शुक्र	१५	जनवरी	शनि
२९	जनवरी	शनि	१४	फरवरी	सोम
२८	फरवरी	सोम	१५	मार्च	मंगल
२९	मार्च	मंगल	१४	अप्रैल	गुरु
२८	अप्रैल	गुरु	१३	मई	शुक्र
२७	मई	शुक्र	१२	जून	रवि
२६	जून	रवि	११	जुलाई	सोम

१४२९ साल के चतुर्दशी

कृष्ण पक्ष			शुक्लपक्ष		
६	अगस्त	शुक्र	२०	अगस्त	शुक्र
५	सितम्बर	रवि	१९	सितम्बर	रवि
५	अक्टूबर	मंगल	१९	अक्टूबर	मंगल
३	नवम्बर	बुध	१७	नवम्बर	बुध
२	दिसम्बर	गुरु	१७	दिसम्बर	शुक्र
१	जनवरी	शनि	१६	जनवरी	रवि
३०	जनवरी	रवि	१५	फरवरी	मंगल
१	मार्च	मंगल	१६	मार्च	बुध
३०	मार्च	बुध	१५	अप्रैल	शुक्र
२९	अप्रैल	शुक्र	१४	मई	शनि
२८	मई	शनि	१३	जून	सोम
२७	जून	सोम	१२	जुलाई	मंगल

पूर्णिमा

२२	अगस्त	रवि
२०	सित.	सोम
२०	अक्टूबर	बुध
१९	नवम्ब	शुक्र
१९	दिसम्ब	रवि
१७	जनवरी	सोम
१६	फरवरी	बुध
१८	मार्च	शुक्र
१६	अप्रैल	शनि
१६	मई	सोम
१४	जून	मंगल
१३	जुलाई	बुध

संक्रान्ति

१७	अगस्त	सिंहसंक्रान्ति
१७	सितम्बर	कन्यासंक्रान्ति
१८	अक्टू.	तुलासंक्रान्ति
१७	नवम्बर	वृश्चिकसंक्रा.
१६	दिसम्बर	धनुसंक्रान्ति
१४	जनवरी	मकरसंक्रान्ति
१३	फरवरी	कुंभसंक्रांति
१५	मार्च	मीनसंक्रांति
१४	अप्रैल	मेषसंक्रांति
१५	मई	वृषसंक्रान्ति
१५	जून	मिथुनसंक्रांति

१४२९ साल के पंचक (भदवा)

आरम्भ दिन, समय				⇔ समाप्ति दिन, समय			
२५	जुलाई	रवि	दि.१२।५६	३०	जुलाई	शुक्र	दि.४।२६
२१	अगस्त	शनि	रा.८।५६	२६	अगस्त	गुरु	रा.११।५४
१७	सितम्बर	शुक्र	रा.४।५३	२३	सितम्बर	गुरु	प्रा.७।३६
१५	अक्टू.	शुक्र	दि.१२।५३	२०	अक्टू	बुध	दि.२।४१
११	नवम्बर	गुरु	रा.८।५०	१६	नवम्बर	मंगल	रा.१०।०४
८	दिसंबर	बुध	रा.४।४०	१३	दिसंबर	सोम	रा.शे.५।३६
५	जनवरी	बुध	दि.१२।३४	१०	जनवरी	सोम	दि.१२।४४
१	फरवरी	मंगल	रा.८।३२	६	फरवरी	रवि	रा.८।०८
२८	फरवरी	सोम	रा.४।२८	५	मार्च	शनि	रा.४।०३
२८	मार्च	सोम	दि.१२।२८	२	अप्रैल	शनि	दि.११।१२
२४	अप्रैल	रवि	रा.८।३२	२६	अप्रैल	शुक्र	सं.६।५०
२१	मई	शनि	रा.३।५३	२६	मई	गुरु	रा.२।३२
१८	जून	शनि	दि.१२।५२	२३	जून	गुरु	दि.१०।१७

संवत् २०७८-२०७९ के प्रमुख मुहूर्त्त

• मुण्डन मुहूर्त:- नबम्वर-२२,२४, दिसम्बरः- ८, १०, फरवरीः- २, ३, ७, १०, ११, २१ मार्चः-४, ६ अप्रैलः-१८, २०, मईः- ६, ११, १२, १३, १८, २०। जूनः- १, २, ६, १०, १७। जुलाईः-१, ६, ८।

• उपनयनः- फरवरीः- ३, ११, अप्रैलः- ६, ११। मईः- ५, ११, १२। जूनः- २, ६, १०। जुलाईः- ४।

• विवाहः- नवम्बरः- २१, २२, २६। दिसम्बरः-१, २, ५, ६दि.ल., ८, ६, १३। जनवरीः-२३,२४,२७, फरवरीः-२,६,७,१०,११। अप्रैलः-१७,२०,२१ दि.ल.,२२, २५, २७ सं.ल. २८। मईः- २, ११, १२, १३, १८, २०, २२, २५, २६, २७, ३०। जूनः- १, ५, ६, ६, १०, १३, १६दि.ल., २२, २३, २४दि.ल.२६ जुलाईः-३, ६, ८। सौराठ-ससौला वैवाहिकसभा- ३० जून से ८ जुलाई तक।

• द्विरागमन- नवम्बरः-१६,२१,२२,२४। दिसम्बरः- ५,८,६,१०,१३। फरवरीः- १८, २०, २१। मार्चः- २, ३, ४, ६, ६, १०, १३। अप्रैलः- १७, २०, २१। मईः- २,६,८,११,१२,१३।

• गृहारम्भः- जुलाईः-२६, अक्टूबरः-२०,२५। नवम्बरः- १५, २०, २२, २४। अप्रैलः- १६,१८ मईः- ११, १२, १३। जूनः- १७, १८। जुलाईः- ६।

• गृहप्रवेशः- अगस्तः- १३,१४। नवम्बरः- १०,११,१३,१५। दिसम्बरः- ६,१०,१३। अप्रैलः- १६, मईः- ६, ७,११,१२,१३ जुलाईः- ६,८,६,११।

• देवादिप्रतिष्ठा-फरवरी-२,३,६,७,१०,११ मई-८,१२,१३, जून-१,६,१०,३०, जुलाई-१,६,८।

संवत् २०७८-२०७९ के प्रमुख व्रत,पर्व

२८ जुलाई-	मधुश्रावणीव्रतारम्भ
६ अगस्त	दोलोत्सवारंभ
११ अगस्त	मधुश्रावणीव्रतसमाप्ति
१३ अगस्त	नागपञ्चमी
२२ अगस्त	रक्षाबन्धन,
२२ अगस्त	संस्कृतमहोत्सव
२२ अगस्त	भाद्रीरविव्रतारम्भ
३० अगस्त	श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतं
६ सितंबर	कुशीअमावस्या,
९ सितंबर	हरितालिका व्रत(तीज)
१० सितंबर	चौरचन,गणेशपूजा
१२ सितंबर	भाद्रीरविव्रत समाप्ति
१७ सितंबर	विश्वकर्मापूजा
१८ सितंबर	इन्द्रपूजारम्भ
१९ सितंबर	अनन्त पूजन
२० सितंबर	अगस्त्यार्घदानं
२१ सितंबर	महालयारम्भ,पितृपक्षारम्भ
२५ सितंबर	इन्द्रविसर्जन
२८ सितंबर	जितिया व्रत
६ अक्टूबर	महालयासमाप्तिः
७ अक्टूबर	शारदीयनवरात्रारंभ
११ अक्टूबर	बिल्वाभिमन्त्रण
१३ अक्टूबर	निशापूजा,जागरण
१५ अक्टूबर	विजयादशमी
१९ अक्टूबर	कौमुदी(कोजागरा)
२४ अक्टूबर	करवाचौठ
२ नवंबर	धनतेरस
४ नवंबर	दीपावली,
५ नवंबर	गोवर्धनपूजा,
६ नवंबर	भातृद्वितीया
९ नवंबर	खरना
१० नवंबर	छठपूजा
१३ नवंबर	अक्षयनवमी
१५ नवंबर	देवोत्थान एकादशी।
१७ नवंबर	विद्यापतिस्मृतिदिवस
१८ नवंबर	सामाविसर्जन
२४ नवंबर	विषहरापूजा
५ दिसंबर	हरिशोव्रत
५ दिसंबर	षाण्मासिक रविव्रतारम्भ
६-८दिसंबर	नवान्नपार्वण
८ दिसंबर	विवाहपञ्चमी
१ जनवरी	दसतारकारम्भ
१४ जनवरी	मकरसंक्रान्ति,
३० जनवरी	नरकनिवारणचतुर्दशी
१ फरवरी	मौनीअमावस्या
२ फरवरी	शिशिरनवरात्रारंभ
५ फरवरी	सरस्वतीपूजा
१ मार्च	महाशिवरात्री
३ मार्च	कल्याणेश्वरराज्जनकपुर परिक्रमारम्भ
१७ मार्च	होलीकादाह
१९ मार्च	होली
२ अप्रैल	वसंतनवरात्रारम्भ
७ अप्रैल	चैतीछठ
१० अप्रैल	श्रीरामनवमी,
१४ अप्रैल	सतुआईन
१५ अप्रैल	जुड़शीतल
३ मई	अक्षयतृतीया
८ मई	षा.रविव्रतविसर्जन
१० मई	मैथिलीदिवस
३० मई	वटसावित्रीव्रत,
९ जून	गंगादशहरा
३० जून	ग्रीष्मनवरात्रारंभ
१० जुलाई	हरिशयनीएकादशी
१३ जुलाई	गुरुपूर्णिमा